पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' : व्यक्तित्व और कृतित्व

सम्पादक

नन्द चतुर्वेदी

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

हमारे पुरोधा

पं. गिरिधर शर्मा नवरत्न का द्विवेदीयुगीन साहित्यकारों में बड़े आदर के साथ स्मरण किया जाता है। वे राजस्थान के झालरापाटन के निवासी थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में उनकी चर्चा करते हुए उनके हिन्दी प्रचार प्रयत्नों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। उनके हिन्दीप्रेम ने ही स्व. मदनमोहन मालवीय जी के सामने निर्भीक भाव से यह कहने का बल दिया था कि मैं तो आपका सम्मान तभी करूंगा जबकि हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो जायगा। हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी, प्राकृत, बंगला, अंग्रेजी आदि भाषाओं का उन्हें अच्छा ज्ञान था। अन्य भाषाओं में निष्णात होते हुए भी वे हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। भाषा महिमा का उल्लेख उन्होंने इस प्रकार किया है—

> अंग्रेजी, जमन, फ्रेंच, ग्रीक, लटिन ल्यों
>
> रशियन, जापानी, चीनी, प्राकृत प्रमानी हो
>
> तामिल, तेलगी, तुल, द्राविड़ी, मराठी, ब्राह्मी
>
> उड़िया, बंगाली, पाली, गुजराती खानी हो
>
> जितनी आय अनार्य भाषा जग जाहिर हैं
>
> फारसी, अरबी, तुर्की सब मनु मानी हो
>
> जनम वृथा है तो भी मेरे जान मानवों का
>
> हिन्दी में जनम पाके हिन्दी जो न जानी हो

नवरत्न जी ने हिन्दी, संस्कृत में मौलिक सृजन के साथ-साथ अंग्रेजी, बंगला, संस्कृत, गुजराती, फारसी आदि की श्रेष्ठ कृतियों का हिन्दी में अनुवाद कर हिन्दी व अन्य भाषाओं को समीप लाने का श्रम-साध्य कार्य किया। वे द्विवेदी-युग के उन समर्थ रचनाकारों में से हैं जिन्होंने संकीर्णता की हर सीमा को तोड़ कर उदार दृष्टि का विस्तार किया और हिन्दी को व्यापक सीमान्तों तक फैलाया। सरस्वती, माधुरी, सौरभ, सुधा आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित उनकी रचनाओं और सम्पादकीय टिप्पणियों से ज्ञात होता है कि वे अपने परिवेश और समय की समस्याओं के प्रति कितने जागरूक थे और अंग्रेजों के औपनिवेशिक आतंक का लेखनी के शस्त्र के माध्यम से मुकाबला करते हुए राष्ट्रीयता को सैद्धान्तिक एवं चिंतन के स्तर पर विस्तार दे रहे थे। उन्होंने अपने लेखन से हिन्दी और राष्ट्रीयता का प्रचार किया और अनेक नगरों में हिन्दी समितियाँ स्थापित कर अपने कोष को निरंतर प्रसारित प्रचारित करने के माध्यम

भी स्थापित किये देश जाति भाषा और समाज को प्रगतिपथ पर लाने और उन्नतिपथ पर निरंतर अग्रसरित होते रहने की आकांक्षा को द्विवेदीयुगीन साहित्यकर्मियों ने जो स्वर दिया नवरत्न जी का स्वर उसे और प्रखर प्रभावशाली और धारदार बनाता है साहित्य-सर्जना उनके लिये एक मिशन थी और द्विवेदीयुगीन राष्ट्रीय चेतना और सुधारवादी दृष्टि उनके साहित्य का काम्य थी

राजस्थान की आधुनिक पीढ़ी को नवरत्न जी के साहित्यिक योगदान का ज्ञान या तो बिल्कुल नहीं है अथवा बहुत कम है वे हमारी साहित्यिक परंपरा के ज्योति स्तंभ और मार्गदर्शक पुरोधा थे राजस्थान साहित्य अकादमी ने अपना पुनीत कर्तव्य मानते हुए मधुमती का विशेषांक इसी अभिप्राय से प्रकाशित किया ताकि स्व नवरत्न जी के व्यक्तित्व और कृतित्व का सम्यक आकलन प्रस्तुत किया जा सके यही विशेषांक अब पुस्तकाकार रूप में प्रस्तुत है इसके पूर्व मधुमती का गुलेरी अंक तथा सेठिया अंक भी पुस्तकाकार रूप में प्रस्तुत किये जा चुके हैं अकादमी ने नवरत्न जी की स्मृति में एक फैलोशिप भी स्थापित की है जो उस महान पूर्वज की स्मृति को जीवत बनाये रखने की दिशा में एक छोटा सा प्रयास है

मधुमती के इस विशेषांक की सामग्री जुटाने में नवरत्न जी की विदुषी पुत्री श्रीमती शकुंतला रेणु प युगलकिशोर चतुर्वेदी तथा उनके पौत्र प्रो योगेश शर्मा ने जो सहयोग दिया उसके लिये अकादमी उनके प्रति कृतज्ञ है नवरत्न जी के विपुल साहित्य में से कुछ अंश मात्र ही हम प्रस्तुत कर पाये हैं उनके सम्पूर्ण सृजन को तो अनेक भागों में ग्रंथावलि का प्रकाशन कर ही प्रस्तुत किया जा सकता है

इस विशेषांक का संपादन मधुकर प्रो न चतुर्वेदी ने कर हमारे बोझ को हल्का किया है वस्तुत वे ही नवरत्न जी पर अधिकारिक रूप से कुछ कहने लिखने में सक्षम हैं वे उन्हीं के नगर के निवासी हैं और उन्होंने नवरत्न जी को बहुत समीप से देखा-परखा भी है उन्होंने इस ग्रंथ के संपादन का अनुरोध स्वीकार किया इसके लिये अकादमी उनके प्रति आभारी है

मुझे विश्वास है राजस्थान के इस महान साहित्यकार-पुरोधा पर प्रकाशित इस कृति का सुधिजन स्वागत करेंगे

डॉ प्रकाश आतुर
(अध्यक्ष)

क्रम

श्रद्धा-स्मरण

विवेचना

पुरखों के साहित्य की प्रासंगिकता

पं० गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' का जन्म एक सौ चार वर्ष पहले हुआ था। वे विद्वानों की श्रेष्ठ परम्परा का प्रतिनिधित्व करते थे। उनका सृजन द्विवेदीकालीन जीवन मूल्यों की पहचान कराता है और हिन्दी हिन्दुस्तान के लिए अनोखे मर मिटने जैसे भावों को जन्म देता है। वे बहुत सी भाषायें जानते हैं—संस्कृत, हिन्दी तो जानते ही हैं—गुजराती, बंगला, फारसी, अंग्रेजी, उर्दू भी अच्छी तरह जानने का विश्वास दिलाते हैं। रचना और अनुवाद की इच्छा उनमें एक साथ बलवती रहती है। वे दूसरी भाषाओं के रचनाकारों को जानते हैं और उनकी रचना तथा पुस्तकों का हिन्दी में भाषान्तर करते हैं। अंग्रेजी के बहुत से कवियों, बंगाली, गुजराती के नाटककारों, जैन साधुओं, संस्कृत के प्रसिद्ध कवि माघ, रविबाबू की गीतांजली, फिट्जराल्ड की रुबाइयों और सूफी कवियों की रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद करके उन्होंने न केवल अनुवाद क्षमता का परिचय दिया है बल्कि हिन्दी और दूसरी भारतीय भाषाओं को समीप लाने की कोशिश की है। नवरत्न जी ने संस्कृत में अनेक ग्रंथ लिखे हैं और दूसरी भाषाओं की रचनायें संस्कृत में अनुवादित की हैं। ऐसा करते समय 'संस्कृत में सब कुछ है और नया कुछ नहीं चाहिए' इस जिद को तोड़ने की पहल की है।

आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व के हिन्दी कृतिकारों और साहित्यिक-पत्रकारिता करने वाले सम्पादकों में भाषा-समृद्धि के लिए जो इच्छा रही वह नवरत्न जी में भी थी और उसे पूरी करने के लिये उन्होंने अनुवादादि की व्यावहारिक योजनायें बनायीं। यहाँ उनका मन अंग्रेजी-द्वेष से संतप्त नहीं रहा बल्कि एक गुणग्राहक और विद्वान जैसी दृष्टि भाषायी संकीर्णताओं को लांघती गयी और वे हिन्दी को आधुनिक सोच की बड़ी भाषा बनाने के प्रयत्न में लगे रहे। यहाँ यह तथ्य रेखांकित किया जाना चाहिए कि द्विवेदी जी और उनके मित्र उस भाषा से लड़ रहे थे जो विदेशी हुकूमत और उपनिवेशवादी शासक की भाषा थी, लेकिन उस भाषा में बहुत सा ज्ञान विज्ञान था

और जो हिन्दू सोच की जड़ता को तोड़ रहा था उसमें किसी की दुश्मनी नहीं थी उस ज्ञान को उन्होंने हिन्दी तक आने दिया इस अद्यतन इतिहास बोध वैज्ञानिक सोच और समाज शास्त्रीय ज्ञान को हिन्दी तक लाने की उत्कट इच्छा को उस समय की 'सरस्वती' पत्रिका या समकालीन दूसरी पत्रिकाओं में जैसे सौरभ जो झालावाड़ से प्रकाशित हो रही थी, उनकी सम्पादकीय टिप्पणियों में देखा जा सकता है आधुनिक ज्ञान से लैस होने की इस इच्छा को प गिरिधर शर्मा में भी देखा जा सकता है जो राजस्थान में द्विवेदी जी का काम कर रहे थे और राष्ट्रीय सोच से जुड़े थे

प गिरिधर शर्मा विद्वानों की उस परम्परा म नहीं थे जो सैद्धान्तिक चिन्तन में सब से आगे किन्तु अकर्मण्य होते हैं दरअसल किसी बड़े संघर्ष सिद्धांत या परिवर्तन का पक्ष लेते हुए यह सम्भव नहीं होता कि उसे सोच और कर्म में बांट दिया जाये इसके लिए पूरे और साहसिक संघर्ष की आवश्यकता होती है और तब सोच और तदनुरूप कर्म एक दूसरे के परिपूरक होते हैं नवरत्न जी ने भी ऐसा ही समझा था इसलिए उन्हें यह समझते हुए भी देर नहीं लगी कि हिन्दी के लिए भावावेशपूर्ण कविताएँ ही नहीं लिखनी हैं बल्कि ऐसे मंच और संस्थाओं की स्थापना करनी है जहां से हिन्दी प्रचार का काम निरंतर और नियमित रूप से हो सके अपनी योजना के अनुसार उन्होंने इंदौर भरतपुर और कोटा में हिन्दी समितियां आरम्भ की कि जिससे हिन्दी के कार्य म किसी की इच्छा अनिच्छा का महत्व न रह पाये इस तरह हिन्दी के लिए व्यक्तिगत स्तर पर कविता करना किन्तु निरन्तरता देने के लिए संस्थायें बनाना तत्कालीन और दीर्घकाल की जरूरतों को मिलाना था एक और दृष्टि से देखें तो इन संस्थाओं की स्थापना उस व्यापारिकी का हिस्सा भी था कि जिसमें लम्बे संघर्ष की कल्पना की गयी थी और आवश्यकता पड़ने पर इन्हें किलों की तरह काम लेने की रणनीति भी शामिल थी दुख है कि वे हिन्दी संस्थाएं जो स्वतन्त्रता-संग्राम के अविच्छिन्न हिस्से थे मरणासन्न हो गये हैं और हिन्दी का सवाल स्वाधीनता-संग्राम का हिस्सा न रह कर दम और शातिराना राजनीति का हिस्सा बन कर रह गया है

हिन्दी के सिलसिले में मैं यह याद कर पाता हूं कि 1937 के लगभग झालावाड़ के कवि ब्रजभाषा में कवितायें लिख रहे थे और नवरत्नजी के परिवार वालों को छोड़ कर कोई दूसरा नहीं था जो खड़ी बोली म कविता लिख रहा हो ब्रजभाषा में कवितायें लिखने वाले मधुप और रुद्र लय पर रीझ हुए थे और कवि सम्मेलनों म समस्यापूर्ति का बोलबाला था इस माहौल में ईश्वर दादा पंडित जी के पुत्र हिन्दी म कवितायें पढ़ते तो सभा म अपमानजनक सन्नाटा होता और ब्रजभाषा के रसिक श्रोता उनके वाक्य-पाठ से जल्दी ही उकता जाते लेकिन पंडितजी या ईश्वर दादा इससे म लो

विचलित होते न हार मानते अद्भुत आत्म विश्वास से वे लम्बी-लम्बी कविताएँ पढ़ते थे दरअसल हिन्दी की ऊर्जा और रचना शक्ति को जानते थे और उन्हें यह विश्वास था कि वे नयी कविता के मसीहा हैं उस समय मैं यह नहीं जानता था कि इस छोटे से राज्य में भाषा को लेकर कैसा विग्रह चला था पुरानी साहित्य मण्डलियाँ कितने आग्रह से जमे रहने का प्रयत्न कर रही थीं लेकिन पंडित जी ईश्वर दादा शकुन्तला जीजी जानती थीं कि खड़ी कविता का चलन होने वाला है उसके लिए ब्रजभाषा उपयुक्त नहीं है हिन्दी ही उपयुक्त है वे हिन्दी को मजबूत बना रहे थे वे हिन्दी के बिना स्वतन्त्रता की कल्पना ही नहीं करते थे और ऐसे मोर्चे पर डटे थे जहाँ से एक जनान्दोलन शुरू होता था जिसकी जड़ जमीन में बहुत गहरी उतर रही थी मुझे आज यह प्रतीत होता है कि हमने भारतीय भाषाओं की चिन्ता छोड़ कर स्वतन्त्रता की बुनियादी लड़ाई को शिथिल कर दिया है उसका परिणाम यह हुआ है कि हमारे कस्बों शहरों में संस्कार-हीन अंग्रेजी स्कूलों की संख्या मकड़ों तक पहुँच गयी है और हिन्दी के स्कूल गरीब और अनाथ बच्चों के स्कूल हो कर रह गये हैं

पंडित जी ने कविताएँ ही नहीं गद्य भी लिखा दरअसल वे गद्य भाषा को दो प्रयोजनों के लिए परिष्कृत कर रहे थे एक प्रयोजन तो यह था कि गद्य-भाषा सर्जनात्मक कला शैलियों और समीक्षा के लिए पुख्ता हो जाये और दूसरा यह कि वह राज-काज लोक-व्यवहार शिक्षा-संस्कृति बोल चाल की प्रामाणिक और संस्कारशील भाषा की तरह पहचानी जा सके उन्होंने आज से 85 वर्ष पहले विद्याभास्कर नामक पत्र निकाला और तरह-तरह का गद्य लिखा लेकिन द्विवेदी लेखक मंडली गद्य भाषा को एक रूप देने में इतनी लगी रही कि पहला प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सका यहाँ तक कि पद्य भी 'इतिवृत्तात्मकता' में सिमिट गया पंडित जी ने हजारों पद्य-पंक्तियाँ इस शैली में लिखीं —

> बजने लगा भड़ाभड़ बाजा चढ़ ब्याह करने पर राजा
> चार जनों ने इन्हें उठाया गली-गली में खूब घुमाया
> देख-देख पुर के नर-नारी खूब हँसे दे-दे कर तारी
> वर राजा तोरन पर आये बेटी ने टोटाभल गाये
> जब देखा वर को कन्या ने लगी रक्त के आँसू पीने
> बोली मैं न विवाह करूँगी यों ही अपना जीवन दूँगी
> मात पिता भाई मतिमान किस को देते कन्या दान ?
> इसका करिये नेक विचार मत करिये यों अत्याचार।
>
> (वृद्ध विवाह)

मा

जो हाथ पैर अपने नहिं हैं हिलाते
खाना बिना श्रम किये डट कर उड़ाते
आलस्य में समय त्यों, अपना बिताते
वे मूढ़, कूप जग से, कर क्यों न जाते ?
है काम एक जिन का सब को सताना
विद्या विहीन रहना बस माँग खाना
बोझा समाज पर भी अपना बढ़ाना
अच्छा न जन्म उनका जग बीच पाना ।

लेकिन साथ ही उन्होंने एक दूसरी रचनात्मक दिशा में काम किया यह काम अनुवाद का था गद्य और पद्य दोनों में उन्होंने ऐसे कवियों की कृतियों का हिंदी रूपान्तरण करना निश्चय किया जो अपनी रचनात्मकता के कारण विश्व विश्रुत थे जैसे रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सूफी कवि बाबा ताहिर अंग्रेजी कवि फिट्जराल्ड गुजराती कवि न्हानालाल दलपतराम गद्य में उन्होंने रविबाबू की चित्रांगदा और कवि न्हानालाल के प्रेमकुंज का अनुवाद किया 'चित्रांगदा' सर्जनात्मक गद्य का अद्वितीय उदाहरण है और प्रेमकुंज के सम्बन्ध में स्वयं न्हानालाल ने लिखा है – कोई विचारक या कोई उपहासशील फिर प्रश्न करेंगे कि हेर-फेर कर फिर वही-की-वही प्रमोन्मत्तता की कथायें ? कवियों को कुछ पता भी है दूसरा ? कुछ गम्भीर कुछ संसार के महाप्रश्न कुछ महत्वपूर्ण सत्त्वमय बोध्य यह तो कुछ भी नहीं और लौट फिर कर पीछे की पीछे वह की वह उन्मत्त बातें इस तरह गिरिधर जी इतिवृत्तात्मक और उपदेशात्मक शैलियों से पैदा हुई अकुलाहट और ऊब कम करते हैं और गद्य के रचनात्मक प्रवाह को अपना गुजराती से लाकर हिन्दी में मिला देते हैं पंडितजी ने [illegible] पुस्तक का भी अनुवाद किया जिसे उन्होंने कठिनाइयों में विद्याभ्यास नाम देकर प्रकाशित किया वास्तव में नवरत्नजी आस्वाद के नये से नये धरातल तलाश करते रहे खुद की तृप्ति के लिए और हिन्दी के उन पाठकों की तृप्ति के लिए भी जिनका द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मक और उपदेशपरक साहित्य शैलियों से थक जाना सम्भव था

साहित्य के प्रयोजनों और उनकी मानवीय हिस्सेदारी से सम्बद्ध एक तथ्य को मैं द्विवेदी कालीन साहित्य से जोड़ना और रेखांकित करना चाहता हूं मैं यह मानता हूं कि हमारे साहित्य इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि कविता और साहित्य एक दम बाहर निकल कर समकालीनता और राजनीति के साथ जुड़ गया हो उस समय के साहित्यकार कुछ भी लिख रहे हों कह रहे हों उन्हें यह स्वीकार था कि वे देश की

स्वाधीनता के लिए लिख रहे हैं और यदि यह राजनीति है तो वे राजनीति कर रहे हैं इन्हें कोई भ्रम नहीं था कि वे शाश्वत रचना य लिख रहे हैं और इनकी सिद्धि धर्म अर्थ काम मोक्ष इनमें से कोई एक या एकाधिक है वे राजनीतिक स्वाधीनता के लिए दीवाने थे और खो पाने के लिए कविता जेल मृत्यु या जो भी कुछ हो करने या होने देने के लिए तत्पर थे इस लोक के लिए लिखने का उ होंने संकल्प लिया था और जनताकाक्षाओं की रचना रूपों भ बाँध कर वे सतुष्ट थे ऐसा करते समय उन्हें कुछ दिखावा पान सैद्धान्तिक दावे करना नापसद था स्वाधीनता की रचना लिखते हुए वे किसी पार्टी के साहित्यकर्मी नहीं थे और न किसी पार्टी मेनिफेस्टो की दलीलों को साहित्य वृत्त में बांध रहे थे उ होंने शाश्वत और सामयिक कविता के तर्क को ध्वस्त कर दिया था उन रचनाकारों की सामर्थ्य यह थी कि वे बड़ी और मानवीय राजनीति की कविता कर रहे थे या साहित्य लिख रहे थे लेकिन उसके लिए व्याख्यान देने की उन्हें आवश्यकता नहीं थी द्विवेदी काल के साहित्य से मेरी यह समझ बनी है कि यदि हमारी राजनीति बड़ सरोकारों से जुड़ी है और हमारे सामाजिक सरोकार ि दरगी पर्याय तथा काल किया क जाता रूपों को पहचानते हैं तो हम महत्वपूर्ण और विश्वसनीय साहित्य लिख सकते हैं

पिछले दिनों स हित्य र जनीति और पार्टी रिश्तों को लेकर जितनी हलचल हुई है उससे साहित्य रचना में कोई खास पतापन आया नहीं लगता क्योंकि यह हलचल एक खास किस्म के लोगों द्वारा चल ई जाती है जिन्हें यह घमड होता है कि वे दृष्टि देते हैं साहित्यकार के लिये आज का समय मामूली नहीं है और दूसरा कोई कारण भी नहीं है कि वह दुनिया से निश्चित और बेखबर हो जावे लेकिन दुख यह है कि हमारी सारी चिन्ताएं विभाजित और हमारे हितों की विशाम हैं इन चिन्ताओं के चलते हम विपन्न लोगों के साथ कम और सम्पन्न लोगों के साथ प्राय होते हैं हमारी यह पहचान भी धुधली होती जा रही है कि साहित्य लेखन की धुरी एक व्यापक सवेदनशीलता है

द्विवेदी युग म इसी सवेदनशीलता की धु ी पर राष्ट्रीयता की सहस्रधारा बानी जाह्नवी नही है यह बहुत बड़ विशाल भूखण्ड को सींचती रही है इसी क्रम में कभी सुधारवादी (जसे नवरत्न यो न पत्नी के लिये लिखी है अड ही सवेरे उठ निर्मल होकर नित्य पति को ह लाऊ महाऊ कुकुम लगाऊ मैं पढ़ लिख लोक-लाय कर पति तब तक बतरसी याव ी रसोई भोजन बनाऊ मैं भोजन सुरुचि कर पति के उपाय कर सुनाऊ मधुर बात हिय हुलसाऊ मैं नवरत्न प्र ए प्यारे पति को एक त मे दे रम्य कला कौशल की परीक्षा दिखाऊ मैं) कभी पुरान वर्णाश्रम की वापसी पर

आधारित कभी उथल-पुथल मचा देने वाली, कभी राम और कभी कृष्ण के जीवन चरित्रों पर केन्द्रित, कभी जासूसी और कभी मानों में झूलती रमती कथाकृतियां लिखी गयी हैं, तब हमारे लिए इस युग का यह अनुभव सार्थक है कि एक बार रचनाकार कर्त्ता के विकीर्ण होने के साथ साथ नाना-रूपों में लेखन विकसित होता है जिसका एक बहुत बड़ा जीवनानुभव ही जो कि रच सकता है। क्या इस समय द्विवेदी काल जैसा बड़ा जीवनानुभव हमारे पास है ? हां है 'भय और पराधीनता से मुक्ति'। आज यह सहस्रों रचनाओं में व्यक्त है। वह किसी पार्टी का नहीं है, वह उन सब मनुष्यों का है जो बराबरी के पक्ष में हैं और सम्पत्ति के सामाजीकरण को चाहते हैं।

द्विवेदी-युग और नवरत्न जी के साहित्य में हम यह देखते हैं कि संवेदनशीलता के बड़े पक्ष पर आधारित होते हुए भी निजता रहित दीर्घायमन्य है और कुछ विषयों के आस-पास चक्कर काटता है। यह दरअसल साहित्य का सार्वकालिक सवाल है जिसका कुछ सम्बन्ध तत्काल से होता है, उस तत्काल से ज्यादा ही जो एक बड़े मानवीय-दुःख से निवृत्त होना चाहता है और कुछ परम्परा से भी जिसके अंतर्गत साहित्यकार जीवनानुभव चुनता है और कलाभ्यास से जुड़ जाता है। लेकिन यह स्वीकार करने जैसी बात नहीं है कि निजता के अभाव में बहुत-सा श्रेष्ठ जीवनानुभव निरर्थक हो जाता है और कलाकृतियां वांछित प्रभाव से रहित होती नजर आती हैं।

नवरत्न जी और उनके साथ राजस्थान की साहित्य-यात्रा का एक युग समाप्त हो गया है लेकिन यह महायात्रा ही है क्योंकि उनका युग हिन्दी के उस बड़े और विशाल साहित्यिक प्रयत्नों से जुड़ा है जिसमें राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए मनुष्य बेझिझक प्राणोत्सर्ग के लिये खड़ा था और जिसके बदले में उसने कभी कुछ नहीं चाहा।

पं. गिरिधर शर्मा और दूसरे पुरोधाओं को जिन्होंने देश और साहित्य के लिए साहस, तत्परता और निरन्तरतापूर्वक लिखा है, हमने धीरे-धीरे विस्मृत होने दिया है लेकिन उनकी प्रासंगिकता और पुनर्मूल्यांकन का काम छोड़ कर हम अपनी लोकतन्त्रक साहित्यिक परम्पराओं को नहीं जान पायेंगे।

हमें यह आशा करना चाहिए कि देश की अग्रणी साहित्यिक संस्थाएं, विश्वविद्यालय और अकादमियां उन पुरखों के साहित्य पर शोध-खोज कराने में सक्षम होंगी क्योंकि उन्हें काल के अंधेरे में विलुप्त होने देना हानिकर होगा, खास तौर पर उस समय जबकि हमारी साहित्यिक-यात्राएं 'लोक-नाथ' से जुड़ रही हों और हम साहित्य और सामाजिक 'रिश्तेदारी' की तलाश में गंभीरता से लगे हों।

नन्द चतुर्वेदी

३ कवि की रसानुभूति

जहा जहाँ देखो वहीं वहीं भीले ताल भरे
किसी कोन दुख पानी देत तरसन को
देख पड़े चारो ओर हरी भरी खेती बाड़ी
लोकन को भाय गयो बड़े अरसन को
सुन पड़े मीठी मीठी नीकी केका मोरन की
हुई काम रुच्यो घनश्याम दरसन को
हिये उमगाय रह्यो आनंद समावे नहीं
अद्भुत प्रभाव है ये तेरे बरसन को

४

जीवन मे सर्वोत्तम काम करने को है तू
मान ले यही तू रहा क्यों पुरुषन को
मधुर मधुर [illegible] बाते सुनने को पाये कान
ध्यान देके काव्य सुन कवि सरसन को
आने प्रेम आरम लगा पिय मुख देखो कर
जस्यो करा बैन प्रिय चित्त परसन को
नैन पे मिले है पिय दरसन को प्यारे रस
नीर पे मिली है रस बैन बरसन को

वही है हमारो रंग वही है हमारो ढंग
वही है हमारो सारो हाल-आसन को
ज्ञान विज्ञान कला कौशल से मतलब हमें
दूर हाथवारो है हमारे परसन को
बड़े बूढ़े चले वैसे चले क्यों न हिन्दी हैं
काम क्या है हमें नये यंत्र परसन को
चलैगो हमारो गाड़ी आर मद्धे चाल को ही
रहैगो हमारो हाल वही बरसन को

निहारकरे

अपनी यह रंजत आप करते अपना सब काम समुझाकरे
बस आलस में न पड़े, छेनइ काम साहस से जो निहारकरे
नहि काम करे पुरुषारथ से [illegible] जनम वि हारा करे
हमि भारत भारत होके रहे इसका कुछ किम निहारा करे

ज म 6 जन 1881 ई मृत्यु 1 जुलाई 1961 ई

समाधि-लेख

अनुचित सत्ता वशीभूत हो शीश झुकाना
कायरता का काम सदा जिसने था जाना
रहा सदा स्वाधीन किया निज मन का चाहा
दिया सत्य उपदेश उच्चतर चरित निबाहा
दुखो से न डिगा न फला सुख मे आ कर
सोता है इस ठौर वही कवि गिरधर नागर

प्रस्तावना

व्यहृत या अगडम बगडम लिखने वाले बहुत से होते हैं लेकिन जिन्दगी की बुलन्दगियों के लिये लिखने वाले बहुत नहीं होते वे कृतिकार कुछ ही होते हैं जो जीवन के महान् तथ्यों को पहचानते हैं और इसलिए विचार लिखते हैं कि उनकी पच्चीकार भुलभुलैयों में कहीं खो न जाये बल्कि सत्यों के साथ जुड़कर लिखते हुए वे बड़े होते हैं

द्विवेदी जी के समय में बहुत सी बातें हुई हैं उनमें से बहुत सी भारतेन्दु के समय में हुईं और उन्हें द्विवेदी जी ने विशद रूप दिया और कुछ द्विवेदी जी के समय में ही हुईं भाषा के साथ एक बड़ी समस्या जिसे युग और मनुष्य का प्रश्न सम्बन्ध भी कह सकते हैं द्विवेदी जी के समय का सबसे बड़ा साहित्य सरोकार है

समय की जरूरत के साथ द्विवेदीकाल का घनिष्ठ सम्बन्ध है लेकिन एक विशद विचार धारा के साथ जिसमें राष्ट्रीयता की सब से बड़ी लहर उठती और मिल जाती है उसकी विशिष्ट पहचान बनती है उस युग के बड़े और छोटे कवि हर धड़कन के साथ राष्ट्रीय स्वाधीनता का आह्वान करते हैं किसी प्रकार का रचनाकार हो कवि गद्य-लेखक कथा-गाथाकार उपन्यास लेखक इतिहास संस्कृति-परम्परा का व्याख्याकार या चन्द्रकान्ता सन्तति का लेखक कहीं का रचनाकार हो मध्यप्रदेश राजस्थान उत्तरप्रदेश या बिहार भारत के छोर-छोर मिलाता कहीं का एक निरन्तर इच्छा का सगुण साहित्य लिख रहा था राष्ट्रीय धारा का ओजस्वी इतिहास इस तरह एक दो नहीं सहस्रों रचनाकारों द्वारा लिखा जा रहा था उसमें एक थे गिरिधर शर्मा नवरत्न

गिरिधर जी ने मुट्ठी भर साहित्य नहीं लिखा है और न मुट्ठी भर लोगों के लिए लिखा है हजारों के लिये लिखे इस साहित्य में हजारों की स्वच्छ व प्रबल सी हजारों सपने और कथ्य में कविता गद्य अनुवाद संस्कृत उर्दू हिन्दी सभी में स्वाधीन मनुष्य का सन्धान था

वह मनुष्य कैसा था? उनकी कविता कैसी थी—व्यक्तित्व और कृतित्व—दोनों दृष्टि से कुछ जानकारी आवश्यक है

व्यक्तित्व के सम्बन्ध में उनकी आत्मकथा के प्रामाणिक लेख हैं—कुमारी [illegible] रेणु और शान्तिदेवी साधिका के कृतित्व उनका है गुण धर्म नाना ग्रंथों की रचना करने वाले को इसी तरह दिखाया जा सकता है

शकुन्तला 'रेणु'

परिचय: स्मृति-यात्रा

श्री गिरिधर शर्मा का जन्म पिता श्री ब्रजेश्वरजी शर्मा के घर, माता सौ पन्ना देवी की कुक्षि से, ज्येष्ठ शु 8 स 2038 वि तदनुसार दि 6 जून 1881 ई रविवार को सिंह लग्न म, झालरापाटन मे हुआ

विद्वान् पिता ने बालक गिरिधर की शिक्षा का प्रबन्ध घर पर ही अनेक शिक्षा गुरुओ को नियुक्त करके किया ये गुरुजन उन्हे हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, फारसी आदि विभिन्न भाषाओ की शिक्षा प्रदान करते थे प्रारम्भिक नीव दृढ हो जाने के पश्चात् उनको पढने के लिये जयपुर भेज दिया जहा उन्होने प्रभाकर श्री कान्हजी व्यास तथा परम वेदज्ञ द्रविड श्री वीरेश्वरजी शास्त्री के पास विशेष रूप से संस्कृत पञ्च-काव्य तथा संस्कृत व्याकरण (महाभाषा) का अध्ययन किया इसके पश्चात् वे काशी (बनारस) चले गये जहा उन्होने म म प गंगाधरजी शास्त्री से संस्कृत साहित्य एव दर्शन का विशिष्ट अध्ययन किया काशी स शिक्षा समाप्त कर वे 19 वर्ष की अवस्था मे झालरापाटन लौट आये

जन्म से प्रश्नोरा नागर गुजराती होने पर भी बचपन से ही पण्डितजी का हिन्दी पर स्वाभाविक अनुराग था इस अनुराग को उनके देशप्रेम ने अधिक परिपुष्ट किया

वे एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व एवं प्रतिभा लेकर जन्मे थे परतन्त्र भारत की तत्कालीन अपयोदशा को देख कर उनका अन्तर द्रवित हो गया उन्होंने भारती के द्वारा भारत की सेवा का बीड़ा उठाया उन्होंने देखा कि प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र की अपनी एक भाषा है और उसी भाषा के माध्यम से बच्चे का परिपूर्ण शिक्षण होता है भारत ही एक ऐसा अभागा देश है जिसकी अपनी कोई एक राष्ट्रभाषा नहीं है और हिन्दी भाषा में बालकों के—देश की भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण सम्बन्धी कोई सामग्री भी नहीं है उनका स्वाधीन मन इस ओर सन्नद्ध हो गया उन्होंने भारत राष्ट्र की एक राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार एवं साहित्य संवर्द्धन का संकल्प लिया उन्होंने जिस भी साहित्य में सुन्दर कृतियां देखीं उनका रूपान्तर हिन्दी में किया और दूसरों को प्रेरणा देकर करवाया द्विवेदी मण्डल के वे एक प्रतिष्ठित साहित्यकार थे

सन् 1912 ई में उन्होंने झालरापाटन में श्री राजपूताना हिन्दी साहित्य सभा की स्थापना की जिसके संरक्षक झालावाड़ नरेश श्री भवानी सिंह जी बने इस सभा का उद्देश्य हिन्दी भाषा की हर तरह से उन्नति करना और हिन्दी भाषा में व्यापार वाणिज्य कलाकौशल इतिहास विज्ञान वैद्यक अर्थशास्त्र समाजनीति राजनीति पुरातत्व साहित्य उपन्यास आदि विविध विषयों पर अच्छे अच्छे ग्रन्थ प्रकाशित कर सस्ते मूल्य पर बेचना था इस सभा के मानद सदस्य बम्बई के सुप्रसिद्ध जन साहित्यकार श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह थे खेद है कि इस सभा का सारा संचित धन स्व सेठ लाल चन्द जी सेठी की फर्म में डूब गया और उनके पौत्र सेठ सुरेन्द्र कुमार जी व तेज कुमार जी सेठी इस सम्पत्ति पर अपना अधिकार जमाये बैठे हैं यह सभा अब मृत घोषित हो गई और इसके द्वारा प्रकाशित साहित्य—जिसमें प गिरिधर शर्मा जी नवरत्न की अलभ्य कृतियाँ भी हैं—अब स्व सेठ लाल चन्द जी व नेमी चन्द जी सेठी के झालरा *पाटन स्थित पुस्तकालय में दीमकों की ग्रास बनी हुई है*

सन् 1912 में ही आपने भरतपुर में हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना करके वहाँ के कार्यकर्ताओं को हिन्दीभाषा की अभिवृद्धि प्रचार प्रसार एवं साहित्य संवर्द्धन का कार्य सौंपा इस सभा की स्थापना में सबसे पहले चन्दा देने वालों में सबसे प्रथम महानुभाव श्री नवरत्न जी थे विद्वद्वरेण्य श्री युगल किशोर जी चतुर्वेदी महाभाग ने यह सुन्दर जानकारी अपनी बातचीत के दौरान दी थी इस प्रकार वे हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के प्रथम संस्थापकों में रहे

अपने वर्षों के निरंतर प्रयास व परिश्रम से आपने प्रबल मराठा विरोध को

ने भरतपुर में अनुरोध किया कि वे गीतांजलि को देववाणी संस्कृत में भी अनुवादित करें। रवि का स्वप्न साकार हुआ संस्कृत में गीतांजलि तैयार हो गई। इतना ही नहीं उन्होंने रवि बाबू की अन्य कृतियों को भी मूल बंगला भाषा से हिन्दी में रूपान्तरित किया है जिनमें गार्डनर, क्रीसेंट मून, फ्रूटगेदरिंग, चित्रा (बागवान, बालक, फल सचय, चित्रांगदा) प्रमुख हैं। बागवान तो कलकत्ता में हिन्दी की पहली काव्यकृति है। महाकवि निराला ने परिमल के प्रथम संस्करण की भूमिका में सादर इसका उल्लेख किया है।

संस्कृत के अतुकान्त छन्दों में उनका 'सावित्री' खण्ड काव्य हिन्दी 'प्रिय प्रवास' से भी पूर्व की रचना है जो साहित्य इतिहास के प्रकाश में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। स्व. डा. सुधीन्द्र ने अपने गवेषणापूर्ण ग्रन्थ 'हिन्दी कविता में युगान्तर' में इसका विवरण प्रस्तुत किया है।

सौराष्ट्र गुजरात के कवि सम्राट श्री नान्हालाल दलपतराम कवि की काव्य प्रतिभा को उन्होंने हिन्दी भारती को भेंट किया है। इसके साथ ही संस्कृत के माघ काव्य तथा भर्तृहरि के नीतिशतक को भी उन्होंने क्रमशः हिन्दी तथा गुजराती काव्य में अनूदित किया।

अंग्रेजी काव्य की सुन्दर पुष्पावलियों का भी उन्होंने चयन किया और उनसे हिन्दीभारती का भण्डार बढ़ाया। शैली, कीट्स, वर्ड्सवर्थ, बायरन, शेक्सपीयर, मिल्टन, टेनीसन आदि कवियों की कविताओं के अतिरिक्त उन्होंने गोल्डस्मिथ के प्रसिद्ध काव्य हरमिट को संस्कृत व हिन्दी में रूपान्तरित किया तथा महाकवि ग्रे के सुप्रसिद्ध काव्य एलिजी का संस्कृत भाषान्तर करुणप्रशस्ति के नाम से किया। यथार्थ में एलिजी (शोक काव्य) नाम को सार्थक करने वाली हिन्दी में किसी कृति का प्रणयन अभी तक नहीं हुआ (गुजराती में ऐसी कृति स्मरण संहिता है, खबरदार कवि की दर्शनिका भी ऐसा ही शोक काव्य है) अपने परम प्रिय गुणज्ञ भक्त शिष्य झालावाड़ नरेश्वर स्व. श्री राजेन्द्रसिंह देव सुधाकर के अवसान पर उन्होंने शोक-काव्य लिखा जो अंग्रेजी में प्रचलित शोक काव्य (Elagy) के नियमों पर आधारित हिन्दी की पहली कृति है।

आपने ही अंग्रेजी की 'सॉनेट' को हिन्दी लक्षणों में गूंथ दिया और इस प्रकार के काव्यों को 'चतुष्पदी' नाम दिया। वे प्रत्येक वस्तु के अभिनव प्रयोगकर्ता रहे।

पण्डित गिरिधर शर्मा अखिल भारत के महान् स्वप्न द्रष्टा रहे। देश में अपने 'हिन्दी विश्वविद्यालय' बने यह उनकी प्रबल महत्वाकांक्षा रही। उन्होंने अ. भा. हिन्दी

शक्तिमत्ता को सिद्ध कर दिखाया शुभभावना की बोधक अपनी नीति लिखी— नवरत्न नीति नागरिक शास्त्र लिखा— नागरतन्त्रम् युग बोधिनी प्रश्नोत्तर रत्नमाला लिखी और संस्कृत एवं प्राकृत साहित्य में आर्या एवं गाथा सप्तशती की कड़ी को आधुनिक युग से जोड़ने वाली कृति की रचना गिरिधर सप्तशती के नाम से की इनके अतिरिक्त भी उनकी अन्य संस्कृत रचनाएँ हैं (1) षड्दर्शनपुष्पगुच्छ कारनवरत्नम् अमदेस आदि अमरसूक्तिसुधाकर (उमर खय्याम की रुबाइयों का संस्कृत भाषान्तर इतनी ख्याति पाया कि उसे पढ़कर बर्लिन यूनीवर्सिटी के संस्कृत के प्रोफेसर जर्मन विद्वान नवरत्नजी से मिलने नवरत्न सरस्वती भवन में पधारे तथा प्रेम पूर्वक गृह गृहस्थों का आतिथ्य ग्रहण कर गये—

ऐसी एक जीवन्त प्रतिभा थे प गिरिधर शर्मा नवरत्न साहित्य के वे परम यशस्वी वाचस्पति ही थे सन् 1938 ई में वे नितान्त प्रज्ञाचक्षु हो गये किन्तु उस अवस्था में भी उनका स्वाध्याय लेखन मनन चिन्तन कभी न छूटा अपनी प्रज्ञाचक्षु अवस्था में ही उन्होंने शेख सादी की अमर कृति करीमा का हिन्दी गुजराती एवं संस्कृत भाषा में रूपान्तर किया वे भाषा एवं ऐक्य एवं संस्कृति के आदान प्रदान में साहित्यिक सुविचारों के योगदान को स्वीकार करने वाले सच्चे अर्थों में मानवतावादी महामानव थे

जून सन् 1944 ई में अपने ज्येष्ठ पुत्र सुयोग्यतम वाणी वरदायिनी के अनन्य उपासक प ईश्वरलाल शर्मा रत्नाकर की रुग्णावस्था में उपचार हेतु उज्जैन पधारे वहां भी उनका अनुसंधान कार्य जारी हो गया उन्होंने चाणक्यसूत्र की बहुमूल्य कृति खोज निकाली और सूत्रों को कारिकाबद्ध कर दिया इस प्रकार उन्होंने विपुल साहित्यसर्जना की जिसका संरक्षण एवं प्रसारण आपभारत का गौरव है

आषाढ़ कृ 3 सं 2018 वि (तदनुसार 1 जुलाई 1961 ई) के दिन ब्राह्ममुहूर्त में ये महर्षि इहलीला समाप्त कर यशोदेह से अमर हो गये

झालरापाटन

शान्ति साधिका

अंतिम दिन

प्रभात के 3 बज चुके थे पिता श्री की नित्य साधना का समय होने को आया कि सर्वोदय के प्रतिष्ठापक संत श्री विनोबा तथा अन्य नेता गोकुल भाई भट्ट श्री जवाहरलाल जैन आदि मेरे पिता श्री से मिलने के लिये आ पहुंचे

यहाँ पर आपके मेल मिलाप वार्तालाप आपसी विचारों के आदान प्रदान को लेकर विशुद्ध स्नेह की पावन गंगा लहरा उठी सम्पूर्ण वातावरण नैसर्गिक सुख से भर गया संत विनोबा और मेरे पिता आलिंगन—बद्ध हो गये मानों युगों-युगों के बिछुड़े बान्धवों का पुन मिलन हुआ हो

सन 47 से पहले की बात है जब संत श्री विनोबा द्वारा चलाये गये भू-दान आन्दोलन को लेकर राजस्थान के सर्वोदयी नेता श्री सिद्धराज ढड्ढा अपनी पार्टी सहित हमारे घर—नवरत्न सरस्वती भवन झालरापाटन—पधारे तो सब प्रथम मेरे पिता श्री ने सम्मान सहित (अपने लिए एक इन्च भूमि भी नहीं रखते हुए) अपने चारो गाँव इस पुनीत यज्ञ के लिए सहर्ष समर्पित कर दिये यह कहते हुए कि मेरे गाँव के किसान सदैव सुखी रहें

अब अर्थाभाव के कारण हमारे घर की व्यवस्था गड़बड़ा गयी तो मेरी मातु-श्री कुछ विचलित सी हो चली किन्तु मेरी छोटी बहिन शकुंतला एवं सब भाई-बहिनों ने आश्वासन दिया—माँ ! आप किंचित भी चिन्ता न करें ! दुनिया के सभी लोग क्या जागीरदार हैं ? पिता श्री ने अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है

तदुपरान्त सन् 47 में मेरे छोटे भाई परमेश्वर लाल शर्मा ने नगर परिषद झालरापाटन में सचिव पद पर काम करना शुरू कर दिया और बड़े भैया ईश्वरलाल रत्नाकर ने जयपुर आकर चाचाजी श्री हीरालाल शास्त्री द्वारा स्थापित ज्ञान मंदिर के अध्यक्ष पद का कार्य भार संभाल लिया मेरी छोटी बहिन शकुंतला अध्यापिका हो गयी

मेरे पिता श्री की अद्वितीय राष्ट्रीय साहित्यिक सेवाओं को लेकर तत्कालीन अकादमी अध्यक्ष श्री जनार्दन राय नागर ने आपको विद्वद्वृत्ति से सम्मानित किया जो आपको आजीवन प्राप्त होती रही इस वृत्ति को आपने नये नये साहित्यिक प्रकाशनों को मंगवाने तथा अन्य साहित्यिक अभिरुचियों के संवर्द्धन में व्यय किया

मेरे पिता महाराज राणा झालावाड़ नरेश श्री भवानीसिंह देव के परम प्रिय एवं माननीय गुरुदेव थे उनका पिताजी पर दृढ़ विश्वास था अत आप जो कोई कार्य करते मेरे पिता श्री की राय से ही करते ऐसे अपने परम विश्वस्त गुरुदेव को महाराज राणा ने विद्वज्जनों के बीच सम्मान सहित ताजीम दी महाराज राणा ने स्वयं अपने हाथों से गुरुदेव गुरुश्री बहुमूल्य पोशाक धारण करवाई और स्वर्ण कड़ा पांव में पहना कर विनम्रतापूर्वक प्रणाम किया यहाँ पिता श्री का स्नेहपूरित वरद-हस्त उठा और अपने परम प्रिय शिष्य के मस्तक पर फिरने लगा इस प्रकार गुरु शिष्य के अलौकिक स्नेहमय व्यवहार से उपस्थित सज्जन वृन्द आनन्दित हो गये

पिता श्री के विषय में श्री माणिक्यलाल वर्मा ने प्रशंसा भरे शब्दों में कहा था कि नवरत्नजी वास्तव में राजस्थान की राजनीति के आधार स्तम्भ थे पिता श्री ने जीवन भर नैतिक मूल्यों राष्ट्रीयता और हिन्दी राष्ट्रभाषा के लिये संघर्ष किया यही उनकी राजनीति थी उसी के वे स्तम्भ रहे

मेरे पिता श्री पर झालावाड़ नरेश महाराज भवानीसिंह का अनन्य विश्वास था, यह मैं एकाधिक बार लिख चुकी हूं अत जब वे अपने रोग निदान के लिए विदेश यात्रा पर जाने लगे तो जहाज में बैठने से पूर्व बम्बई बन्दरगाह पर अपने परम विश्वस्त गुरुदेव से विनयपूर्वक बोले—देवा ! मैं तो जा रहा हूं, सो अब लौटूंगा नहीं और यह

राजेन्द्र (बाद में महाराज राणा राजेन्द्रसिंह जी 'सुधाकर') आपकी शरण में है, इसे भी आप अपने दोनों बच्चों के समान ही समझना

ऐसा कहने के साथ उन्होंने युवराज से कहा—बेटे ! मैं तो आपका नाम का बाप हूं ये गुरुदेव तुम्हारे धर्म पिता हैं सो जो कोई राज्य-न्याय या अन्य कार्य आरम्भ करो तो गुरुदेव की सम्मति लेकर करना

फिर पिता से कहा—गुरुदेव सम्भालो अपना बच्चा ! नमस्कार गुरुदेव अलविदा भारत ! गुरुदेव अलविदा

पिता श्री ने राजकुमार को हृदय से लगा लिया महाराज श्री की दीर्घायुकामना की और हृदय मजबूत रखने का आग्रह किया कहा—राजेन्द्र ईश्वर और कान्ति की तरह हैं अपने प्राण रहते इन्हें कष्ट नहीं होने दूंगा और न कुमार्गगामी बनने दूंगा

महाराज श्री अपनी आकुल-व्याकुल स्थिति में ही जहाज पर चढ़े और कभी अपने प्रिय गुरुदेव की ओर कभी अपने एकमात्र प्रिय पुत्र राजेन्द्र को देखते देखते दृष्टि से ओझल हो गये महाराज श्री को गले का कैन्सर हो गया था अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच भी नहीं पाये कि यात्रा के तीसरे दिन ही स्वर्गवासी हो गये उनका दाह-संस्कार ससम्मान अदन में कर दिया गया

इस अशुभ समाचार से झालावाड़ में हाहाकार मच गया पिता श्री ने बिलखते राजकुमार को अपनी छाती से लगा लिया आवागमन की रहस्य-लीला को समझाते हुए धैर्य दिया वे कई महीनों तक उनके साथ रहे मैं भी पिता के साथ कोठी पर रहने लगी

महाराज राजेन्द्रसिंह अपने पिता श्री के समान विद्याप्रेमी प्रगतिशील दृष्टिवाले सुकवि थे वे कवियों का आदर करते थे और कवि-सम्मेलन तथा मुशायरों में सक्रिय हिस्सा लेते हिन्दी में 'सुधाकर' तथा उर्दू में मशहूर उपनाम से लिखने वाले महाराज राजेन्द्रसिंह ने हिन्दी, ब्रजभाषा तथा उर्दू में सहस्रों रचनायें लिखकर ख्याति अर्जित की कवि सुधाकर भगवान् कृष्ण के अनन्य उपासक थे वे भगवान् कृष्ण की सेवा स्वयं अपने हाथों से करते थे

सन् '43 की बात है हरतालिका तीज के दिन पाटन तथा छावनी के घर-घर में जागरण हो रहा था मेरे पिता श्री कोठी पर ही थे महाराज ने एक नयी कविता बनाकर पिता जी को सुनायी पिता श्री ने सराहना करते हुए कहा—खूब, बहुत

सुन्दर भावपूर्ण रचना है महाराज ! कोई विशेष कमी नहीं इसमें ! ऐसा कहने के साथ ही पिता जी ने रचना में आवश्यक सुधार करवा दिया बाद में गुरु शिष्य मिलकर इस भजन की पंक्तियों को देर तक गाते रहे कुछ समय बाद सुधाकर देव नित्य कर्म से निवृत होने के लिए चले गये

मुश्किल से पन्द्रह मिनिट हुए होंगे कि वह हादसा हो गया जिससे सारा राज्य और हाड़ौती का साहित्य जगत् स्तब्ध रह गया 42 वर्ष की अल्पायु में ही महाराज राजेन्द्रसिंह सुधाकर की हृदयगति रुक जाने से मृत्यु हो गयी युवराज हरिश्चन्द्रसिंह इस जगत् में पितृहीन अकेले रह गये पिता श्री ने तरुण महाराज हरिश्चन्द्रसिंह को धैर्य दिया लेकिन स्वयं इस शोक से टूटने लगे उनकी दुनिया भी निरवलम्ब हो गयी

सन् 58 में राजस्थान साहित्य अकादमी ने आपका सम्मान करना चाहा और बड़े आदर के साथ आमन्त्रित किया किन्तु आपने अस्वीकार कर दिया सन् 56 में मेरे अग्रज पं ईश्वरलाल शर्मा रत्नाकर का अकाल निधन हो गया था इस शोक ने बाबूजी को जर्जर कर दिया उनके पास अब कहीं आने जाने के लिए उत्साह नहीं रहा था पुत्र की मृत्यु ने उन्हें स्थित प्रज्ञ बना दिया था अब वे अपना अधिकांश समय भगवद् चिन्तन लेखन मनन में ही व्यतीत करने लगे

पुत्र शोक कितना दाहक कितना हृदय विदारक कितना असह्य होता है यह भुक्त भोगी ही जानता है लेकिन ऐसी अवसाद की घड़ियों में भी पिता श्री ने अपने आपको पूर्ण संयत रखा जिस समय मेरे अग्रज की अर्थी उठाई जाने लगी तो बाबूजी ने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया और गम्भीरतापूर्वक केवल इतना ही कहा वाह ! ईश्वर ! तुम भी मुझे छोड़कर जा रहे हो ! ठीक है ! जाओ ! परमात्मा तुम्हारी आत्मा को शांति दे परम शान्ति और फिर मौन हो गये

अपने समाधि स्थल पर अंकित करने के लिए उन्होंने निम्न कविता लिखी —

अनुचित-सत्ता वशीभूत हो शीश झुकाना ।
कायरता का काम सदा जिसने था माना ॥
रहा सदा स्वाधीन किया निज मन का चाहा ।
दिया सत्य उपदेश उच्चतर चरित निबाहा ॥
दु खों से नहीं डिगा न फूला सुख में आकर ।
सोता है इस ठौर वही कवि गिरिधर नागर ॥

लेकिन मेरे लिए बाबूजी 'दुःख-सुख समाचरेत्' रहने वालों में थे मैंने उन्हें श्रद्धा अर्पित करते हुए लिखा

> *पायाँ सूँ हरखे नहीं, खोयाँ ना अकुलाय ।*
> *पायाँ, खोयाँ इक सम सो नर सिद्ध-सुभाय ।*

पुनश्च—

अपनी 81 वर्ष की जन्म तिथि पर बाबूजी ने अपनी कुलदेवी का अर्चन किया और हाथ जोड़कर नमन करते हुए कुछ समय प्रार्थना की थोड़े समय बाद आपकी तबियत खराब हो गई आपको भी कैंसर की बीमारी ने आ घेरा था

वृद्धावस्था, पुत्र-शोक की असह्य वेदना क्षीण काया और कैंसर जैसे रोग के भयंकर कष्ट ने एक साथ ही आपको विचलित कर देना चाहा किन्तु आप हर परिस्थिति में अविचलित रहे

जून का महीना बाबूजी के लिये बड़ा दुःखदाई रहा पिता श्री की रुग्णता का समाचार पा कर डा साहब श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने आपका सही उपचार और चौबीसों घंटे देख भाल करने के लिये प्रख्यात वैद्य श्री किशनलालजी को नियुक्त किया

30 जून को जब मैं अपने स्कूल के सत्रारम्भ पर उपस्थिति देने के लिये जयपुर रवाना होने लगी तो पिता श्री से अनुमति लेने के लिये गई मैंने कहा—बापूजी ! मैं जयपुर जा रही हूं कल ही लौट आऊंगी इस पर उन्होंने स्नेह से मेरे सिर पर हाथ फेरा और अस्फुट वाणी में बोले जिसे मैं समझ न सकी

चलते समय मेरी मातु श्री ने मुझ से कहा—शान्ता ! क्या राधागोपाल जी (मेरे पति) उपाध्याय जी से कह कर किसी योग्य डाक्टर को अपने साथ नहीं ला सकेंगे ?

मैंने उत्तर दिया—माँ ! आप चिन्ता न करें हम कल ही डाक्टर सा को लेकर आपकी सेवा में पहुंच रहे हैं

दूसरे दिन प्रातः 1 जुलाई को 6 बजे मैं जयपुर पहुंची मेरे पति मेरी मातु श्री की इच्छानुसार उत्तम डाक्टर के प्रबन्ध के लिये डा सा श्री उपाध्याय जी के पास गये, किन्तु आपके कुछ कहने के पूर्व ही श्री उपाध्याय जी ने व्याकुल वाणी में कहा—पांडे *साहब ! परम हंस नवरत्न जी हम सब को* छोड़ कर चले गये रेडियो पर समाचार प्रसारित हो गये

—

9 बजे सूचना केन्द्र में शोक-सभा मनाई गई पिता श्री का एक बड़ा भव्य चित्र लगा हुआ था मैं उसी चित्र के सामने जा खड़ी हुई इस पर डा साहब ने आकर मुझे कलेजे से लगा लिया और मेरे सिर पर स्नेह से हाथ रखते हुए धैर्य दिया बोले बेटी! तुम इस बात को न भूलो कि तुम एक परम धीरवर तपस्वी की सुपुत्री हो और मेरे छलकते हुए आंसुओं को पोंछ डाला

उसी दिन मैं सपरिवार अपनी शोक-संतप्ता मातु श्री के पास पहुंचने के लिए जयपुर के रवाना हो गई

यह इस नगरी में शोक-प्रकट करने वालों का तांता बंधा हुआ था सम्पूर्ण वातावरण क्रन्दनमय था

ऐसी अवसाद की घड़ियों में झालावाड़ की राजमाता अपनी गुरुमाता को धैर्य बंधाने के लिये आई किन्तु दोनों पति विछोह से संतप्त महिलायें निःशब्द एक दूसरे को देखती हुई आंसुओं से तर-बतर हो गई

1 जुलाई 1961 को प्रातः 4 बजे मेरे परम तपस्वी पितर समाधिस्थ हो गये

ऐसे पुण्यवान सिद्ध कवियों के लिये श्रद्धांजलि न शोक ही रहा है—नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयम्

ब्रज-भाषा

ज्ञान को भान उग्यो जग मंडल
  भारत के जन क हे जागो ना
काहे विलंब करो शुचि काल में,
  काहे अकर्म ने दूर भगो ना
काहे तजो नहि आलस को पुनि
  कर्म के मारग काहे पगो ना
काहे करो नहि कारज नूतन
  काहे स्वदेश के नेह लगो ना

सीरी सिरी पो ी पीरी जोति की सी फीकी नारी
  मान सुकुमारी ताहि अगना बनावेंगे
रहेंगे विलास में रचे ही दिन रात सदा
  बल के विनाश की न बात मन लावेंगे
चपल शक्तिहीन उदासीन पराधीन
  अपाहिज मंद मूढ़ सतति बढ़ावेंगे

कहावेंगे बालपिता पालेंगे पुरानी रीति
छोड़ेंगे न बाँकी चाल मान को निभावेंगे

काहू के चलत बाण काहू के कृपाण चलें
काहू के सुमाला तेग, बल्लम कटारी है
काहू के तमचा चलें चल बन्दूकें काहू की
तोपें चलि के काहू की करें गोलाबारी है
अस्त्र चलें शस्त्र चलें चाल चलें नाना देश
भारत है पराधीन वीरता व धारी है
बातन की बातन में दुश्मन उड़ा देंगे
लम्बी चौड़ी तीखी जीभ चलती हमारी है

दिखावैं जगत् रूप देवैं अगन तपन को
जा सौं नरनाह ! कौन जन सुख पावे ना ?
उक्तियाँ कविन्दन की मधुर-मधुर भाखैं
सो सौ बार पूछे हू बतावें उस्तावें ना
विश्व के महान् भरिमान विद्वानन की
बानियाँ सुनावें सरसावें गरवावें ना
ऐसे शात ऐसे साधु ऐसे गुरु पुस्तक हैं
बन्द हू किये त जो न उन मन लावें ना

कीज सदा श्रम के शुभ काज
मनोहर ज्ञान सुधा रस पीज
पीज महावचनामृत देश की
उन्नति मे अपनो चित दीजै
दीज सब कर दूर स्वदोषन
निबलता हि विराजन कीज
कीज महापुरुषारथ लल जू
भारत को न कलंकित कीजै

जय किसान

जय किसान जय जय किसान
शीलवान
सद्गुण निधान
कहें कुछ भी मूढ़ लोग
तू साधे पर कर्म योग
शीत ग्रीष्म वर्षा महान्
सहता सब तन पर महान्
जय किसान जय जय किसान

सन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते

है गीता का गूढ़ ज्ञान
तू इस पर चलता सुजान
गिरिधर जो जन हैं महान्
करते तेरा कीर्तिगान
जय किसान जय जय किसान
(सरस्वती सितम्बर 1914)

अन्योक्ति

सारंग छन्द
नैसर्गिक उद्यान लगाने में चतुराई
माली ने तरु रोप रोप परिपूर्ण भलाई
बाल बबूल पर किन्तु दया इसने न दिखाई
एक ओर कर दिया कोण म की न सिचाई
नवरत्न किसी का भाग यह हो महान् लहरायगा
कर सौरभमय उद्यान सब सुमन छटा दरसायगा

आततायियो के प्रति

अगणित गिन-गिन दे गया ह्यूमो दुख,
 दुरजन कर्जन ने क्रूरता पसार ली।
एमसन सभा सभा तोड़ने का तांता
 फूलर ने फूलशाही अपनी बघार ली।
एवटन धाजो ने लाजपत दूर किये
 फजर औ हेयर ने घूम-धाम धार ली।
कहे लाल कवि दुष्ट मिटो न तो घाटा दम
 भारत की जान जानवालें ने मार ली।

कौमी एकता

जाना नहीं अच्छा कभी जमियों के मन्दिर मे,
किसी भाँति अच्छी नहीं कृष्ण की उपासना ?
शम्भू का स्मरण किये होता जाता क्या है
राम नाम लिये से क्या सिद्ध होगा कमना ?
हैं म्लेच्छ, मुसलमान हिन्दू वह काफिर हैं
ऐसी हो परस्पर मे बुरी जहाँ भावना ?
प्रेम न हो आपस का एका फिर क्यो कर हो,
क्यो न भोगे हिन्द माता नई-नई यातना ?

जरा सी सीख लो मौला!
ये अच्छी हैं जुबा हिन्दी

सुनो ए हिन्द के बच्चों तुम्हारी है जुबा हिन्दी
तुम्हारा हो यही नारा हमारी है जुबां हिन्दी
पढ़ो हिन्दी लिखो हिन्दी करो सब काम हिन्दी मे
सजक दिरवश तुम्हारा हो प्रथा सर्जे बयां हिन्दी
मिली है पारसी अरबी मिली है प्राकृतो देशी
भरी माला खयालों से तुम्हारी महरबां हिन्दी

जुबानें शोक से सीखो जहां भर की बढ़ जाओ
मगर है शर्त यह पहले बनो तुम राज दां हिन्दी
इधर गिरिधर उधर गांधी इधर टंडन उधर काका
लगाते चार हूं मिलजुल यही धुन जर मा हिंदी
हजारों लफ्ज़ घ पैंगे भले आ जाय क्या डर है
पचा लेगी उन्हें हिन्दी कि है जिन्दा जुबां हिन्दी
यहां ही क्या वहां भी जा खुदा तक से कहा मैंने
जरा सी सोच लो मौला ! ये अच्छी है जुबां हिंदी
सुना-सुनकर उठा-उठकर हंसा-हंस कर बका-बककर
गले मिल यों कहा हक ने ये मन्जी है जुबां हिंदी
ये तेरा हक है कहने का तू हक पर है हकीकत में
कलन्दर दोस्त ! तेरी ये बड़ी प्यारी जुबां हिन्दी
कलन्दर मुर्शिदे कामिल बड़ हो साफगो हो तुम
जुबां है हिन्द की हिन्दी पढ़ेगा सब जहां हिन्दी

स्वदेश महिमा

मेरा देश देश का मैं देश मेरा जीवन प्राण
मेरा सनमान मेरे देश की बड़ाई में ॥
जियूंगा स्वदेश हित मरूंगा स्वदेश काज
देश के लिए न कभी करूंगा बुराई मैं ॥
भीषण भयकर प्रलय में भी भूल के भी
भूलूंगा न देश हित राम की दुहाई मैं ॥
जब लों रहेगी सांस सबस भी लटा दूंगा
ईश को भी भुला दूंगा देश की भलाई में ॥
चर्चा जहां देश की हो मेरी जीभ वहीं खुले
और नहीं खुले कहीं खुन भी खुदाई में ॥
मेरे कान मान सुने आवे देश भक्त के
और गान आवे कभी मेरे ना सुनाई में ॥
मेरे अग रग चढ़ एक देश प्रेम को हो
और रग मग हो के डूबे आ तराई में ॥
मेरो धन मेरो तन मेरो मन मेरो जीवन
मेरो सब लगें प्रभो ! देश की भलाई में ॥

बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु पर

अहह वज्र गिरा — गिर ही पड़ा
हृदय आज फटा — फट ही चला
वह गया द्विजराज — गया — गया

तिलक आज गया — उठ ही गया
भरत भू जननी अब क्या कहे ?
किस प्रकार महा दुख को सहे ?
हृदय का नरनाथ गया — गया
तिलक आज गया — उठ ही गया

सदा मोहन शोक मना रहे
नयन मोहनदास भरा रहे
सुमति पंडित बाल गया — गया
तिलक आज गया — उठ ही गया

वह स्वराज्य महा पथ दर्शक
प्रभु परायण नीति पयोनिधि
वह महा मति कृष्ण सखा महान
तिलक आज गया — उठ ही गया

वह रहस्य प्रकाशक बुद्धिमान
वह महागुन भारत मात का
वह शिरोमणि मानव जाति का
तिलक आज गया — उठ ही गया

कलम के बल से लड़ता रहा
प्रबल गर्जन भी करता रहा
मुकुट केसरि जो न हटा कभी
तिलक आज गया — उठ ही गया

धवल की अति हृदय सुभा गया
करम के रण बीच जुभा गया
कठिन भारत के इस काल में
तिलक हाय गया — उठ ही गया

लोरी

सोजा बेबी सोजा, सोजा चन्दा सोजा
सोजा भैया सोजा, सोजा, सोजा सोजा
जल्दी सोना जल्दी जगना, यह सिद्धान्त बनाना अपना
बुद्धिमान, निरोग गुणाकर, हो तू श्रीयुत विद्या सागर
तेरा मधुर-मधुर मुसकाना है मेरा अनमोल खजाना
तेरे मुख की सुन्दरता पर, करूं हजारों चांद निछावर
तू मेरी आंखों का तारा, तू मेरे प्राणों का प्यारा
ईश्वर करे चिरायुष तुझ को सुदृढ़, धर्मी, विज्ञानी तुम को
देख सके न तुझे कायरता, निशिदिन तुझ में रहे वीरता
तेरे साथ के जो बच्चे हों, सभी एक से एक भले हों
तेरे पूर्वज सूज्ञ हुए हैं वेद विज्ञ नीतिज्ञ हुए हैं
राजाओं के मुकुट हुए हैं, जन-मण्डल के पूज्य हुए हैं
तू उनसे भी आगे बढ़ना, विद्या भी पढ़ना
आविष्कार सैकड़ों करना, जन्मभूमि मां के दुःख हरना
करना ऐसे काम मनोहर, गर्व करें भारतवासी नर
जन्मभूमि फूली न समावे, नई नई सुख-सम्पत्ति पावे
सोजा बेबी सोजा सोजा चंदा सोजा
सोजा भैया सोजा, सोजा, सोजा सोजा

(सरस्वती 1913 में प्रकाशित)

सुख का सिद्ध मंत्र

सुख के लिए हुआ घर बाहर
गया हंस वेलों के पास
वन उपवन, गिरि, खेत विहङ्गम
कोई पूर सका नहिं आस

मैं हारा झुंझलाया मैंने
दी सब सुख की आशा छोड़
गंगाजी के तट जा बैठा
लिया जगत से मुख को मोड़

इतने में कुछ मानव आये
बोला पहला उनमें से
भूखा हूं मैं — भोजन दिया तब
जो कुछ वहां बना मुझ से

कहा दूसरे ने—है भाई
बड़ी जरूरत पैसों की
पाकिट से देकर कुछ पैसे
शान्ति हो सकी वैसे की

हमदर्दी के लिए तीसरा
दुख का मारा मेरे पास
खूब सताया खूब थकाया
आया हो अत्यंत उदास

उसकी बात सुन दिल पिघला
आंखों में जल भर आया
जैसे प्रेम के पावन जल से
मैं कुछ शीतल कर पाया

खोज शांति की करता करता
चौथा जन आया सुध भूल
तन मन धन से उसके सारे
किये काम मैंने अनुकूल

ज्योंही शांति इन्होंने पाई
त्योंही मेरे सम्मुख भी
दिव्य मनोहर रम्य रूप धर
आकर खड़ा हुआ सुख भी

बोला मेरे कानों मे यों
हुआ आज से मैं तेरा
तूने अपने शुभ वाणो से
बना लिया मुझको चेरा

गिरधर सुख का सिद्ध मन यह
पाकर मैं हो गया महान
वन, उपवन तरु लता विहग क्या
सुखदायक हो गया जहान

बच्चा

अणु-अणु मे सत, विक्रम विलसित
रेणु रेणु मे अमर प्रताप, जय
कण-कण मे प्रस्फुटित चेतना
परमानन्द रस, जीवन-नर्तन
जिस मही मे, मैं उसका जन्मा
भारत माता का हू बच्चा ॥1॥

एक चक्र का रखने वाला
सुछबि केसरिया श्वेत श्यामला
दिव्य तिरङ्गा मेरा भण्डा
हितकारी मानव-मानव का
इसे भाव से मैं हू झुकता
भारत माता का हू बच्चा ॥2॥

मेरे देश का है यह मान
इसका मुझको है अभिमान

इसके हित हैं मेरे गान
तन मन धन सबस की जान,
मेरा वचन नहीं है कच्चा
भारत माता का हू बच्चा ॥ 3 ॥

मतुल करूंगा नव-नव खोजें
जग खहायगा जिनसे मौजें
व्यय रहेगी नहीं न फौजें
स्नेह मिलन होगा जग भर का
होगा मेरा सोचा सच्चा
भारत माता का हू बच्चा ॥ 4 ॥

सब मेरे हैं, मैं हू सब का
मंथन करूंगा शुद्धि जनमत का
प्रजातन्त्र का प्रमुख मनू या
प्रेम राज्य स्थापित कर दूगा
मैं अपनी धुन का हू पक्का
भारत माता का हू बच्चा ॥ 5 ॥

श्री समर्थ गुरुदेव ज्ञानि वर
दिया जिन्होंने बोध युतत्तर
जिसके अनुसार है सत्कर्मा
'पदरत्न' श्री गिरिधर शर्मा
मैं भी हू अनुगामी इनका
भारत माता का हू बच्चा ॥ 6 ॥

विनय

शून्य द्वार यह बंद मिले तो
    खोल इसे भीतर आना
द्वार तोड़ कर भी प्राणों में
    आ बसना लौट न जाना

झरे न यदि तभी तारों पर
    तेरा मधुर नाम झंकार
तो भी दया दिखा कर रहना
    सखे वहीं लौट न जाना

यदि तेरा स्वागत करने को
    मुझ को नींद न जगने दे
छेड़-छाड़ से मुझे जगाना
    प्यारे पर लौट न जाना

यदि मेरे समरांगन पर
    कोई कभी मिले जन और
मेरे सदा-सदा के जीवन
    त्याग मुझे लौट न जाना

(रवीन्द्रनाथ के नवद्य से)

मुक्ति ? मुक्ति तू कहां पायगा ?

पूजा पाठ भजन आराधन साधन सारे दूर हटा
द्वार बंद कर देवालय के कोने में क्या है बैठा
अंधकार में छुप मन ही मन किसे पूजता है चुप चाप
आंख खोल कर देख यहीं पर कहां देव बैठा है आप
वह तो जा पहुंचा उस थल पर भूमि सुधारें जहां किसान
मार्ग ठीक करने को तोड़ें पत्थर फोड़ें श्रमी महान
गर्मी सर्दी में उनके संग मिट्टी में करता है काम
तू भी वसन छोड़ शुचि सारे आजा तज कर निज आराम
मुक्ति ? मुक्ति तू कहां पायेगा ? मुक्ति कहां तो है किस ठौर
स्वयं सृष्टि बंधन में बांधा सब के संग अब प्रभु फिर और
ध्यान छोड़ दे तज कुसुमों को त्याग वसन लगने दे धूल
उससे एक कर्म योगी बन हो जा बहा स्वेद शुल सुल

गीतांजलि से अनुवादित

प्रार्थना

हे भगवन् तुम से यही
मुझ को प्रभो बल वीर्य दे।
उठ जाय निर्बलता सकल
हिय से मुझे वह धैर्य दे॥

आनन्द से सुख में रहूं
आराम से दुख मैं सहूं।

सुख दुख को सम सा सहूँ
मेरे प्रभो वह वीर्य दे ॥

निष्काम हो संसार की
सेवा करूँ सेवा करूँ ।
यों प्रेम मेरा हो सफल
स्वामी मुझे बल वीर्य दे ॥

मैं दीन हीन दरिद्र को
मानूँ कभी नहिं तुच्छ से ।
उनकी उपेक्षा नहिं करूँ
ऐसा हृदय बल वीर्य दे ।

जो गर्व से उद्धत बने
सत्ताधिकारी मद सने ।
उनको झुकाऊँ मैं न शिर
मुझ को वही बल वीर्य दे ॥

जो नित्य की बातें छिपी
हैं सब में साधारण सुलभ ।
उनसे रहे मेरा हृदय
ऊँचा प्रभो बल वीर्य दे ।

तेरे चरण पर शिर धरे
निशिदिन हृदय[1] मैं थिर रहूँ ।
तव प्रेम के पथ पर चलूँ
ऐसा मुझे बल वीर्य दे ।

(सौरभ 1920 से साभार)

---

[1] रवीन्द्रनाथ ठाकुर की गीतांजलि से

हृदय नृत्य

उछलता करता मधुर नृत्य है
        हृदय, होकर मग्न प्रमोद में
विविध रंग भरे सुर चाप को
        गगन मंडल में जब मैं लखूं
मम शुरू जब जीवन था हुआ
        यह मुझे लगता अतिरम्य था
लग रहा अब भी सुषमा भरा
        तरुण मानव मैं जब हो गया
शिथिल देह बनूं जब वृद्ध हो
        यह मुझे लगियो इस भांति ही
परम सुन्दर चित्त लुभावना
        निधनता मिलियो अथवा मुझे
जनक है शिशु मानव का लसे
        मम सदा यह मानस भावना
सकल वासर जीवन के करो
        निरखते विविध प्रकृतिच्छटा

(1) वर्ड्सवर्थ की कविता का हिन्दी रूपान्तर.

श्री भक्तामर से –

हूं बुद्धिहीन फिर भी बुधपूज्यपाद !
तैयार हूं स्तवन को निर्लज्ज हो के,
है और कौन जग मे तज बालको को
लेना चहे सलिल संस्थित चन्द्रबिम्ब ॥ 3 ॥

तेरी किये स्तुति विभो ! बहु जन्म के भी
होते विनाश सब पाप मनुष्य के हैं
भौंरे समान अतिश्यामल ज्यो अंधेरा
होता विनाश रवि के कर से निशा का ॥ 7 ॥

श्री कल्याण मंदिर से –

"हे नाथ दूर नभ के उड़ते हुए ये
मानो यही कह रहे सुर चामरौघ
जो हैं प्रणाम करते इस नाथ को हैं
वे शुद्धभाव बनके गति उच्च पाते ॥ 22 ॥

आतरलालसा से –

"मेरी इन भावों में प्रभुजी
ऐसी निर्मलता आवे
जिस पर दृष्टि करू उसको ही
निर्मलतर यह कर पावे
शुद्ध मार्ग पर चलने वाला
मानवकुल यह बन जावे
निर्मल होकर शुद्ध भाव से
आत्मभावनायें भावें ॥ 9 ॥

एक वस्तु को अनेक विधि से
परम सुगुरु ने बतलाई
अस्ति नास्ति की रीति अनोखी
भिन्न भिन्न कर समझाई
सारा जगत समझ ले इसको
सबका माया मोह घटे
एकी भाव सकल मे छावे
आपस का सब द्रोह हटे ॥ 10 ॥

जग में स्वच्छ धर्मशासन हो
सब स्वतन्त्र हों नर नारी
शुभदर्शन हों गुणग्राहक हों
होवें परस्पर उपकारी
सुज्ञानी हों सच्चरित्र हों
धार हिये दया भारी
तन से मन से और वचन से
रहें अहिंसा-व्रत धारी

श्री अनन्तवरदन मानस से —

(श्री शान्तिनाथस्तव)

हे शान्तिनाथ भगवान तुझे नमूं मैं
देवाधिदेव जगदीश तुझे नमूं मैं
त्रैलोक्य शान्तिकर देव तुझे नमूं मैं
स्वामिन नमूं जिन नमूं भगवन नमूं मैं ।7।

तू बुद्ध तू जिन मुनीन्द्र विभू स्वयंभू
तू राम कृष्ण जगदीश दयालु दाता
अल्ला रहीम रहमान खुदा करीम
तू गाड तू महम्मद महेश मौला ।8।

है ज्ञानदर्पण महोज्ज्वल नाथ तेरा
आश्चर्यकारक महा जिसमें पड़े हैं—
त्रैलोक्य के सकल भाव त्रिकाल के भी
होवे भविष्य उसमें अति उच्च मेरा ।9।

रत्नकरण्ड श्रावकाचार से —

पूर्ण रीति से पञ्च पाप का
परित्याग करना सज्ञान
मर्यादा के भीतर बाहर
प्रमुख समय पर समता ध्यान
है यह सामायिक शिक्षाव्रत
अणुव्रतों का उपकारक
विधि से अनलस सावधान हो
बनो सदा इसके धारक ।76।

सामायिक के समय नहीं
आरम्भ परिग्रह तजते हैं।
पहनाये हो वसन जिसे
ऐसे मुनि-से वे दिखते हैं।
साम्यभाव स्थिर रख मौनी रह
सब उपसर्ग उठाते है।
गर्मी सर्दी मशक डाँस के
परिषह सब सह जाते हैं ।। 79 ।।

"बारह भावना" से –

अस्थिर भावना

देह गेह सजने मे लगे क्या हो गिरिधर
देह गेह जोबन अस्थिर सब मानिये
पीपल के पात सम कुंजर के कान सम
बादल की छाँह सम इन्हे चल जानिये
बिजली की चमक सी पानी के बुदबुद सी
इन्द्र के धनुष सी ये सम्पति प्रमानिये
दया दान धर्म मे लगा के इसे भली भाति
कीजिये परोपकार, सुख मन मानिये ।।

संवर भावना

तोड डाल भ्रमजाल मोह से विरत हो जा
धर न प्रमाद कभी छोड दे कषाय तू
दूर हो विकार बात करने से विषयो की
माथे पडी सारी सर्द, मत जलाय तू
मन रोक, वाणी रोक, रोक सब इन्द्रियो को
नवरत्न सत्य मान कर ये उपाय तू
बंधेंगे न कर्म नये निरपेक्ष हो के सदा—
कर्तव्य पालन कर, खूब ज्यो सुहाय तू ।।

"श्री भक्तामर समस्या पूर्ति" से –

'यास्मामि किं न भवपारमहं दुरापं
धित्वा त्वदयि चरणौ भवपोत रूपौ

पूर्वोप्यनन्यशरणा बहवो हि तीर्णा
सम्यक प्रणम्य जिनपादयुग युगादौ ।। (1–3)

'सूक्ति मुक्तावली' से –

परिग्रह प्रक्रम

41 अमित परिग्रह नदी पूर जब है चढ़ जाता
मूर्छा भारी उभय धर्म तब भी बह जाता
तब जाता संतोष लोभ छा जाता गिरिधर
मुक्तिनगर का मार्ग डूब जड़ता मे जाता ।। ।। 50 ।।

सत्य प्रक्रम

29 देवाराधन विपद्दलन विश्वास भाजन
मुक्तिमार्ग पाथेय उपद्रवराशि विनाशन
श्री समृद्धि का जनन श्रेयसम्पादक गिरिधर
कीर्ति केलिवन सत्यवचन त्रिभुवन जन पावन ।। ।। 34 ।।

तीर्थङ्करस्तवन" से –

श्री मन्वमादिभगवन्तमहं नमेयम्
भावेन वीरभगवन्तमहं स्मरेयम्
भूय विभो मम मनोरथ सिद्धि रेखा
चन्द्रप्रभ प्रभुमहं सततं स्मरेयम् ।। 1 ।।
देवाधिदेवमजितं सततं भजेयम्
श्री सम्भव जिनवर हृदि भावयेयम् ।। भूयाद् विभो.. ।। 2 ।।

प्राप्यया देवदेवा मे चतुर्विंशतिसम्यका
धन्य प्रभो हरत्वाशु मम मानसगं तम ।। 11 ।।
जिननाममय स्तोत्रं मालपुरपत्तने पुरे
रचितं मधुरत्नेन विदध्यात्पठतां शिवम् ।। 12 ।।

खैयाम की रुबाइयां

हो मधुर रस माध्वमता तरु की छाया हो
सुधापूर्ण हो कुम्भ रोट-टुकड़ा हो न हो
गाती सुमधुर गान विजन मे बैठ पास मम
आह यही तो निर्जन वन है मुझ स्वर्ग सम

कुछ इस जग के भोग भोगने के उत्सुक हैं
और दूसरे स्वर्ग सौख्य को लालायित हैं
नगद ग्रहण कर तू उधार ध्यान लगा मत
है सुहावने ढोल दूर के कभी भुला मत

निकट हमारे गुलाब जग लो मुस्काता है
स्वागत मय है जग मे अभी यह बतलाता है
'दिव्याम्बर की भेंट बाग को करता हूं मैं'
कहता है सब की सब निज श्री देता हू मैं

लौकिक धन पर जिन लोगो के दिल रमे हैं
होते हैं वे धनी शीघ्र निर्धन होते हैं
रेती पर गिर हिम टुकड़ हीरे से चमकें
घड़ी एक फिर मिलें धूल में पिघल पिघल के

जीर्ण शीर्ण है सोच मुसाफिरखाना जग यह
रात दिवस के दो दरवाजे रखता है यह
गाजे-बाजे साथ शाह पर शाह यहाँ पर
आये ठहरे समय बिता सब चले गये फिर

कितने कितने मनुज श्रेष्ठतर सुन्दर प्यारे
काल चक्र ने घूम घूम कर पीसे मारे
पिये एक दो दौर बीच मदिरा के प्याले
और शयन को एक-एक कर और सिधारे

उनके छोड़ हुए सदन में मौज करें हम
उसे सजाता कुसुमचयों से बसन्त हर दम
लो हम भी ये चले यहाँ से सब कुछ तज कर
किसके सुख के लिए नहीं कुछ मालुम, प्रियवर!

हमें योग्य है जब तक जीवें सुख से जीवें
राग रंग में अपना सारा समय बितावें
मिट्टी मिट्टी बीच मिलेगी मरना होगा
गान तान बिन सुरा पिया बिन विनाश होगा

आया हूँ मैं यहाँ कहाँ से और किस लिए
जल सा कल-कल करता बरसा किस रस्ते से
और चला फिर किधर और क्यों पवन वेग से
इसका पाया भेद नहीं कुछ भी अन्तर में

बिन पूछे ही यहाँ कहाँ से आया हूँ मैं
बिन पूछे ही कहाँ यहाँ से जाता हूँ मैं
ला ला प्याला सुरा सुरा ला। भूलूँ पी क्यों
अविनयपन के उदय हुए स्मृति के दुखड़ों को

(फिट्ज़जेरल्ड के अंग्रेजी अनुवाद के
आधार पर भावान्तरित)

विद्याभास्कर का सम्पादकीय

विद्याभास्कर द्वितीय वर्ष मे पदार्पण करते हुए अपने कृपालु पाठकों का अभिनन्दन करता है कई एक कारणों से विद्याभास्कर बन्द हो जाता परन्तु ईश्वर की कृपा से इसकी बाधायें टल सी गईं और फिर इसका प्रकाश हुआ

हम अपने सहयोगियों को बिना धन्यवाद दिये नही रह सकते जिन्होंने हमारे पत्र की प्रशसा कर हमारे उत्साह को बढ़ाया जिसमें हम सरस्वती जैनगजट श्री वेङ्कटेश्वर, भारत जीवन परोपकारी राघवेन्द्र अनाथ रक्षक के सम्पादक महोदयों के विशेष कृतज्ञ हैं

विद्याभास्कर इस बात का हर्ष प्रकट करता है कि श्रीमान् झालावाड नरेश ने विद्याभास्कर के दूसरे वर्ष में पदार्पण करने के पहले ही अपने राज्य में नागरी का प्रचार करने की आज्ञा दे दी

21 अप्रैल को जयपुर दर्बार को L L D की पदवी मिली है विद्याभास्कर आशा करता है कि अब जयपुर नरेश और भी अधिक प्रचार की ओर ध्यान देंगे जयपुर दर्बार चाहें तो विद्या सम्बन्ध में राजपुताने में और राजपुताने से ही क्यों भारत भर मे युगान्तर मे उपस्थित कर सकते हैं जहा तक हम जानते हैं जयपुर दर्बार हिन्दी को प्रेम की दृष्टि से देखते हैं आशा है महाराज हिन्दी की ओर अपनी उदार सहायता का स्रोत बहायेंगे और तमाम हिन्दी सेवकों के स्नेह भाजन बनेंगे क्योंकि जयपुर महाराज के उदार-दान की धूम है हिन्दी भी महाराज के उदार दान की प्रतीक्षा करती है एल एल डी का अर्थ हिन्दी मे व्यवहार नीति विशारद होता है सो महाराज की व्यवहार नीतिज्ञता जगत्प्रसिद्ध है इसी पर एडिनबरा युनिवर्सिटी ने यह पदवी आपको दी है जयपुर भवन में A G G महोदय ने बड़ी प्रशसा कर महाराज को उक्त पदवी से विभूषित किया है महाराज को बधाई है

(सन् 1908 भाग 2 सख्या 1 2 3 4
फरवरी, मार्च, अप्रल, मई)

प्राचीन भारत में राज्याभिषेक।

(1) प्रस्तावना

इस समय दिल्ली में आनन्द छाया हुआ है बड़े बड़े राजे महाराजे इकट्ठे हुए हैं देश देशान्तर तक के मनुष्य आये हुए हैं जिधर देखो उधर ही आनन्द की बधाइयाँ बज रही हैं अनेक भद्र पुरुष सरकार से निमन्त्रित हुए हैं अनेक स्वयं उत्सव देखने गये हैं क्योंकि 12 दिसम्बर को स्वर्गीया राजराजेश्वरी महारानी विक्टोरिया के पौत्र और स्वर्गीय सम्राट सप्तम एडवर्ड के पुत्र श्रीमान् पंचम जार्ज का भारत साम्राज्य-सम्बन्धी अभिषेक है एतएव प्राचीन भारत में किस तरह राज्याभिषेक होता था यह मैं इस शुभावसर पर बतलाना चाहता हूं

(2) चुनाव

प्राचीन नरेश जब राज्य करते करते वृद्ध हो जाते थे और अपने पुत्र को राजकार्य अच्छी तरह चला सकने योग्य देखते थे तब उसे युवराज बना देते थे और उस पर राज्य का भार देकर स्वयं एकान्त सेवन करते हुए प्रभु भजन में अपना समय व्यतीत किया करते थे युवराज केवल उन्हीं की इच्छा से नहीं चुना जाता था इसके लिए ब्राह्मणों से अधीन मण्डलेश्वरों से तथा प्रजा से भी सम्मति ली जाती थी इस विषय

में लोकमत का बड़ा आदर किया जाता था यदि पुत्र राजा बनने योग्य न होता था तो उसका परित्याग कर दिया जाता था चाहे फिर वह औरस ही क्यों न हो

> औरसानपि पुत्रान्हि त्यजन्त्यहितकारिणः
> समर्थान् सम्प्रगृह्णन्ति अनारापि नराधिपा ।।
>
> (वाल्मीकि)

जब दशरथ जराजीर्ण हो गये और उन्होंने राम को युवराज करना चाहा तब उन्हें लोकमत लेना पड़ा था उन्होंने अनेक नरपालों को बुलवाया उनका यथेष्ट सत्कार किया उनके पास बहुमूल्य वस्तु और अलंकार आदि भेजे उनका यथायोग्य सम्मान कर के उनसे वे मिले —

> नानानगरवास्तव्यान् पृथग्जानपदानपि ।
> समानिनाय मेदिन्य प्रधानान्पृथिवीपतीन् ।।
> तान् वेश्मनानाभरणैयथाह प्रतिपूजितान् ।
> ददर्शालंकृतो राजा -- -- ।।
>
> (वाल्मीकि)

— —

इसके बाद दरबार किया गया भांति भांति के आसनों पर सब राजा और रईस इस तरतीब से बिठाये गये कि सबके मुख दशरथ की ओर रहें वहां पर वही महिपाल थे जो लोकसम्मत थे और जो वहां आने योग्य थे —

> तत' प्रविविशु सर्वे राजानो लोकसम्मता ।
>
> अथ राजवितीर्णेषु विविधेष्वासनेषु च ।
> राजानमेवाभिमुखा निषेदुर्नियता नृप ।।
>
> (वाल्मीकि)

दरबार म नगर के मुख्य निवासी और प्रजाजन भी थे सबके सामने दशरथ ने प्रस्ताव किया कि मैं अब वृद्ध हूं राम सुयोग्य हैं मैं इसे युवराज किया चाहता हूं यदि मेरी यह सम्मति ठीक हो तो आप सब अनुमति दीजिए और जो ठीक न हो तो कहिए मैं क्या करूं ? यह काम मैं पुत्र प्रीति के वशीभूत होकर कर रहा हूं, पर यदि यह ठीक न हो तो और कोई राज्य के हित की बात सोचिए —

> यदीद मेऽनुरूपार्थ मया साधु सुमन्त्रितम् ।
> भवन्तो मेऽनुमन्यन्ता कथं वा करवाण्यहम् ।
> यद्यप्येषा मम प्रीतिर्हितमन्यद्विचिन्त्यताम् ।।
>
> (वाल्मीकि)

उपस्थित दरबारियों ने राजा के भाव को समझ लिया उन्होंने आपस में सलाह की यह कहा गया कि दशरथ अब वृद्ध हो गये हैं इन्हें शान्ति मिलनी चाहिए राम शासन में योग्य है अच्छी तरह विधिपूर्वक उसने विद्या पढ़ी है त्याग देना जानता है सज्जन है मधुरभाषी है प्रजा के सुख से सुखी होने वाला है सत्यवादी है जितेन्द्रिय है पराक्रमी है बुद्धिमान् है प्रसन्नमुख है गांव या नगर के लिए लड़ाई करना जाता है तो जीत कर ही लौटता है लौट कर आते समय नगरनिवासियों से आत्मीयजन की तरह कुशल समाचार पूछता है मुस्करा कर बात करता है व्यर्थ किसी पर कृपा नहीं करता और न व्यर्थ किसी पर क्रुद्ध ही होता है नीतिज्ञ है धीर है गम्भीर है प्रजापालन के तत्वों को खूब जानता है मोह में फसने वाला नहीं है तीनों लोकों को भोगने में समर्थ है प्रजा के हित के सभी गुण इसमें मौजूद हैं बड़ों की सेवा करता है सबको कल्याण का मार्ग बतलाता है

अन्त को सब एकमत हुए उन्होंने दशरथ को सम्मति दी कि महाराज आप वृद्ध हैं राम का अभिषेक कर दीजिए हम सब चाहते हैं कि महापराक्रमी राम की महागज पर सवारी निकाली जाय और उस पर छत्र लगाया जाय इत्यादि —

> स ब्राह्मणा जनमुख्याश्च पौरजानपदै सह ।
> समेत्य मन्त्रयित्वा तु समतां गतबुद्धय ॥
> ऊचुश्च मनसा ज्ञात्वा वृद्धं दशरथं नृपम् ।
> अनेकवर्षसाहस्रो वृद्धस्त्वमसि पार्थिव ।
> स रामं युवराजानमभिषिञ्चस्व पार्थिवम् ।
> इच्छामो हि महाबाहुं रघुवीरं महाबलम् ।
> गजेन महता यान्तं रामं छत्रावृताननम् ॥
>
> (वाल्मीकि)

प्राचीन भारत में प्राय इसी तरह चुनाव हुआ करते थे और इस प्रकार का चुनाव होने से सब प्रसन्न रहते थे कभी किसी को किसी प्रकार की शिकायत का मौका न मिलता था राजसूययज्ञादि में जितने मनुष्य निमन्त्रित होते थे उनका सारा खर्च सम्राट की ओर से ही दिया जाता था उनके रहने खाने पीने मनोरंजन आदि का सारा प्रबन्ध भी सम्राट के नियत किये हुए सचिवों ही करते थे बड़ी धूमधाम से उत्सव किया जाता था सब कोई राजा के मेहमान होते थे

(3) अभिषेक क्रिया

इस प्रकार चुनाव हो चुकने पर स्थिर नक्षत्र में शुभ मुहूर्त आने पर उस भाग्यशाली व्यक्ति को विश सरसों के अभिमन्त्रित तैल से मालिश कर स्नान कराते थे

एक दिन पहले उसे सस्त्रीक उपवास करना पड़ता था स्नान कर के वह सब प्राणियों को अभयदान देता था इन्द्र के निमित शान्ति की जाती थी इसके बाद फिर सुगन्धित तेल से मर्दन करके वह स्नानागार में लाया जाता था वहां पर्वत के ऊपर की मिट्टी से उसके सिर को बामी की मिट्टी से कानों को देवस्थान की मिट्टी से मुख को हाथी के दान्तों से खुदी हुई मिट्टी से भुजाओं को इन्द्र-धनुष के नीचे की मिट्टी से ग्रीवा को राजाङ्गण की मिट्टी से हृदय को गंगा यमुना के संगम की मिट्टी से उदर को तालाब की मिट्टी से पीठ को नदी-तीर की मिट्टी से पसलियों को गौशाला की मिट्टी से जंघाओं को गजशाला की मिट्टी से जानु को अश्वशाला की मिट्टी से पिंडलियों को और रथ के पहिये के नीचे की मिट्टी से चरणतलों को मलते थे तदनन्तर सारी मिट्टियों को मिलाकर समस्त शरीर को मलते थे इसके बाद उसे सिंहासन पर बिठा कर घी दूध दही शक्कर और मधुमिश्रित पञ्चामृत से उसका अभिषेक किया जाता था तदनन्तर सर्वौषधि मिले हुए जल से स्नान कराया जाता था जिन घड़ों से स्नान कराया जाता था वे सोने के होते थे और उनमें सहस्रधार थ होती थीं पुरोहित मन्त्रपाठ करते अभिषेक करते थे तीर्थ और समुद्रों से अभिषेक के लिए जल लाया जाता था सब जलाशयों का पानी भी उसमें रहता था अभिषेक के समय मन्त्र पढ़ जाते थे उनका आशय —

प्रजापति ने जिस पवित्र जल से सोम वरुण इन्द्र मनु को राजा बनाया-अभिषेक किया था उसी राष्ट्र को बढ़ाने वाली और राष्ट्र को अमर रखने वाली जलधारा से तुझे राष्ट्रोचित बल के लिए सम्पत्ति के लिए यश के लिए और धान्यादि की समृद्धि के लिए मैं (पुरोहित) अभिषिक्त करता हूं तू महा राजाधिराज हो इत्यादि —

इमा आप शिवतमा
इमा राष्ट्रस्य भेषजी
इमा राष्ट्रस्य वर्द्धिनी
इमा राष्ट्रभृतोऽमृता
याभिरिन्द्रमभ्यषिञ्चत् प्रजापति
सोम राजान वरुणं यम मनु
ताभिरद्भिरभिषिञ्चामि त्वामहं
राज्ञां त्वमधिराजो भवेह
बलाय श्रियै यशसेऽन्नाद्याय।
महान्त त्वा महीनां
सम्राजं चर्षणीनां
देवी जनित्र्यजीजनत्
भद्रा जनित्र्यजीजनत्

इसके बाद वस्त्र व रत्न की जाती थी तिलक किया जाता था भाई बान्धवों में से योग्य पुरुष उस व मर्म आदि लगाते थे छत्रपात्र तैलपात्र आदि का दान होता था प्रमुभोज होते थे भांति भांति से दान किये जाते थे सब लोग नमस्कार करते थे—

राजाधिराजाय प्रसह्याय साहिने
नमो वय दश्मणाय कुर्महे
समे कामान् कामकामाय मह्य
कामेश्वरी वैश्रवणो ददातु
वैश्रवणाय कुबेराय महाराजाधिराजाय नम
(राज्याभिषेकपद्धति)

इसके अनन्तर बड़े ठाठ से हाथी पर सवारी निकलती थी शहर अच्छी तरह सजाया जाता था जगह-जगह अगर जला कर सुगंधि की जाती थी ध्वजा-पताकायें और बन्दनवार लटकाई जाती थीं झरोखों से स्त्रियां भी सम्राट पर पुष्पों की वर्षा करती थीं—

हम्यवातायनस्थाभिर्भू पिताभि समन्तत ।
कीर्यमाण सुपुष्पौघययौ स्त्रीभिररि दम ।
(वाल्मीकि)

भारत में अनेक सम्राट हुए हैं—कोई दुष्टों का नाश करके अपनी भुजा के बल से कोई प्रजा-पालन करने की सुन्दर विधि से और कोई तपोबल से —

जित्वा जयुयान यौवनाश्वि पालनाश्च भगीरथ ।
कार्तवीर्यस्तपोबलात् (?)
(महाभारत)

भारत ने सदव ही वीरों और योग्य व्यक्तियों को हृदय से अपना राजा माना है और उनका यथेष्ट सम्मान भी किया है यदि कोई राजमद से उन्मत्त होकर अपने कर्तव्य से विमुख हो गया तो वह मारा गया बहुत दिन तक वह अपने आसन पर नहीं जम सका भारत सदव न्याय का पक्षपाती रहा है आशा है हमारे नवीन सम्राट भी भारत का शासन न्यायपूर्वक करेंगे

वर्तमान अभिषेक क्रियाय प्राचीन क्रियाओं से कहां तक मिलती जुलती हैं इसका मिलान पाठक स्वयमेव कर सकते हैं क्योंकि वे अक्टोबर की सरस्वती में वर्तमान अभिषेक की क्रिया का हाल पढ़ चुके हैं

श्री गिरिधर शर्मा
(सरस्वती दिस 1911 में प्रकाशित)

कालिदास और भवभूति

कवि इस संसार में बड़ी से बड़ी ईश्वरीय महाशक्ति है वह परमात्मा का प्रेषित किया हुआ एक दिव्यदूत है वह इस जगत् के मनुष्यों के हृदयों में उत्साह उत्पन्न कर नवजीवन का संचार करने वाला महापुरुष है कवि अपनी कृति के द्वारा नीचों को उच्च दुश्चरित्रों को सच्चरित्र कायरों को शूरवीर भयभीतों को साहसी बनाने और अन्याय को दूर कर न्याय का साम्राज्य स्थापित करने के लिए दिव्यलोक से अवतीर्ण होते हैं बहुत से कवि ऐसे होते हैं जो केवल अपने देश और अपने ही काल के होते हैं ऐसे कवि चिरस्थायी कवियों की गणना में नहीं आ सकते और पीछे समय में भुला दिये जाते हैं किन्तु कोई कोई भाग्यवान् कवि ऐसे होते हैं जो अपने देश और अपने ही काल के नहीं होते वे सब देश और सब काल में पूजे जाते हैं वे सूर्य की भाँति प्रकाशमान होते हैं और उनके गुण गान सब जगह होते हैं उनके वचनों की दिव्य कान्ति से सब काल के और सब देशों के मानव-हृदयों में अनन्त प्रकाश फैलता है उनकी कीर्ति अजर और अमर होती है ऐसे ही कवियों के लिए कहा गया है कि—

> *जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।
> नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम् ।
> (भर्तृहरि)

---

* वे सुन्दर रचना करने वाले रससिद्ध कवीश्वर जिनके यशरूपी शरीर में न जरा का भय है और न मरण का—सदा सर्वत्र जयशाली हैं

—लेखक

ऐसे कृति विश्व की अनमोल सम्पत्ति हैं आज मैंने जिन कवियो के सम्बन्ध मे कुछ लिखने का विचार किया है वे ऐसे ही कवि थे कालिदास और भवभूति बड़े ही प्यारे नाम हैं ये कवि भारत के गौरव और सरस्वती के कृपापात्र थे कवि-कुल के मुकुट थे संस्कृत साहित्योद्यान मे कालिदास और भवभूति कवितारूपी जातिलता के दो मनोहर पुष्प हैं दोनो ही अपने स्वाभाविक सौन्दर्य से काव्य-रस-वासना-विदग्ध रसिकों को मोहित करने वाले हैं दोनों ही अपने दिव्य सौरभ को दूर दूर तक फैला कर काव्यरसलोलुप मधुकरो को अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं जिन मधुकरो को लालित्यमय भीनी भीनी मधुर सौरभ पसन्द है वे प्रथम पुष्प पर रसपान कर प्रेमोन्मादपरायण होते हैं और जिन्हे माधुर्य के साथ तीव्र सौरभ पसन्द है वे दूसरे पुष्प पर झूमते हैं *कल्हण के द्वारा उद्धृत की गई "गौडवहो' के कर्ता कविपतिराज के* समकालिक कवि कमलायुध की गाथा क्या विस्मृत की जा सकती है—

"भवभूइ जलहि निग्गय
कव्वामयरसकणा इव फुरन्ति ।
जस्स विसेसा अज्जवि
वियडेसु कहाणि वेसु"

भिन्नरुचिर्हि लोक के अनुसार जिसे जिस प्रकार का पुष्परस-पराग पसन्द है वह उसी का सग्रह करता है जिन्हें दोनो रस पसन्द हैं वे दोनो ओर आकृष्ट होते हैं—झुक पड़ते हैं कभी इस रस का पान किया तो कभी उसका इतना होने पर भी यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि 'कविकुलगुरु कालिदासो विलास' का कविकुलगुरु का पद तो कालिदास को ही शोभा देता है देशी या विदेशी अर्वाचीन या प्राचीन सब विद्वानो ने भी कालिदास को ही अग्रस्थान दिया है और दे रहे हैं और भवभूति को ? भवभूति भी कुछ कम नही है कालिदास के साथ ही भवभूति का नाम लिया जाता है और यह बात है भी सत्य कि यदि कालिदास की तुलना की जा सकती है तो भवभूति से ही यदि हम कविता के सब अगो पर विचार करें तो कालिदास बहुत बढ़ हुए हैं, परन्तु नाटक के विषय मे भवभूति कुछ कम नही इतना ही क्यो, संस्कृत विद्वानो के मत मे भवभूति का "उत्तर रामचरित-कालिदास के नाटक से बढ़कर है—उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते" मैं इस लेख मे यह बताना चाहता हू कि कौन सा कवि किस किस बात मे एक दूसरे से बढ़ जाता है—

रचना-शैली

दोनों कवियो के काव्यों को मिलाकर पढ़ने से जो बात सबसे पहले समझ मे आती है वह यह है कि कालिदास की रीति या शैली प्रसादगुण सम्पन्न है । इसमे

लम्बे-लम्बे समास हैं और न क्लिष्ट कल्पनायें भाषा अत्यन्त सरल है बनावटी वेशभूषा का नाम नहीं शब्दों का ठिकाना नहीं जटिलता को जगह नहीं न समास प्रचुरता है और न है चित्रदारुणता सर्वत्र स्वाभाविक सौन्दर्य टपका पड़ता है 'किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्' का मूर्तिमान उदाहरण है परन्तु भवभूति की शैली की यह दशा नहीं है वह ओजोगुणयुक्त और क्लिष्ट है भाषा लम्बे-लम्बे समासों से पूर्ण है और जटिल है जिस समय भवभूति हुए वह बाण के प्रभाव से परिपूर्ण था इस समय के प्रभाव से बचना भवभूति के लिए सम्भव न था अस्तु एक साधारण संस्कृतज्ञ भी कालिदास की भाषा को समझ सकता है, परन्तु भवभूति की भाषा उसके लिए लोहे के चने होगी कालिदास की कविता का आस्वाद रसभरी के समान लिया जा सकता है परन्तु भवभूति की कविता का आस्वाद मिश्री की मिठाई के आस्वाद के समान लेना होगा कालिदास के सम्बन्ध में रसिक कवि आचार्य गोवर्धन ने लिखा है—

'साकूतमधुरकोमलविलासिनीकण्ठकूजितप्राये ।
शिक्षासमयेऽपि मुदे रसलीला कालिदासोक्ति ॥

कोई भी भाषा क्यों न हो उसकी कविता का यथार्थ आनन्द तो तभी आ सकता है जब उस भाषा का बहुत अच्छा ज्ञान हो परन्तु कालिदास की कविता का कुछ-कुछ आनन्द प्रौढ़ ज्ञान हुए बिना भी विद्यार्थीगण उठा लेते हैं इसीलिए कालिदास की कविता को रसभरी की उपमा मैंने दी है रसभरी को मुख में डालते ही जैसे सारे मुख में रस भर जाता है वैसे ही कालिदास की कविता सुनते ही अलौकिक आनन्द आ जाता है भवभूति की कविता के सुनते ही यह बात नहीं पैदा होती उसके समझने में श्रम पड़ता है उतना ही जितना कि मिश्री की मिठाई के खाने में वह मिठाई चबा चबाकर खाने के बाद आनन्ददायिनी है भवभूति की कविता सोच समझ कर कालिदास अनायास लिखते गये हैं और भवभूति ने खूब सोच-सोचकर लिखा है

भाषा

दोनों की भाषा एक प्रकार की नहीं है भवभूति ने भाषा को अपने अधीन किया है ऐसा ज्ञात पड़ता है कि भाषा उनके सामने हाथ जोड़े खड़ी है भवभूति की भाषा में यह खूबी है कि वह रस के अनुकूल है भवभूति जिस रस का वर्णन करते हैं वह उनकी भाषा से अच्छी तरह प्रकट होता है भवभूति की रसानुकूलता के कुछ उदाहरण देता हूं—

*"यथेन्दावानन्द व्रजति समुपोढे कुमुदिनी
तथैवास्मिन दृष्टिर्मम कलहकाम पुनरयम ।
झणत्कारक्रूरक्वणितगुणगुञ्जद्गुरुधनु—
र्धृतप्रेमा बाहुर्विकचविकरालोल्वणरस ॥
(उ रा च 5-26)

संस्कृत-भाषा के मर्मज्ञो से छिपा नहीं है कि यहा पूर्वार्द्ध मे वात्सल्यरस की छटा है और उत्तरार्द्ध मे वीरता की इस वर्णन के अनुकूल कोमल और कठोर शब्दावली का प्रयोग कवि ने किया है जिसकी बार-बार प्रशसा करनी पडती है उत्तर रामचरित के दो-तीन अनुवाद हिन्दी मे हुए हैं उनमे सबसे अच्छा अनुवाद स्वर्गीय सत्यनारायण कविरत्न का है, परन्तु उसमे भी मूल की वह छटा कहा ? भवभूति ही हैं, देखिए—

**आजिह्वायावलयितोत्कटकोटिदंष्ट्र-
मुद्गारिघोरघनघर्घरघोषमेतत् ।
ग्रासप्रसक्तहसदन्तकवक्त्रयन्त्र-
जृम्भाविडम्बिविकटोदरमस्तु चापम् ॥
(उ 4-29)

---

*जिमि सरत प्रफुल्लित कुमुदिनी को लखित पूनम चंद ।
तिमि भरत हिय म दरस जाको अति प्रमत्त आनंद ॥
झनझनात झनझन करत बहु गुन गुरु गंभीर धनु छोड़ ।
गहि ताहि यह भुज वीर रस भरि समरप्रिय पुनि होइ ॥
(स्वर्गीय कविरत्न सत्यनारायण का अनुवाद)

**सनन सतरा जीह लहराति चचला सी
उत्कटकोटि विकराल दाढ जा की है।
घोर घन घर्रर घोर जा टकोरन की
गजगौनी अट्टहासी रनग छाकी है॥
विकट उदर वारो खचत तनत गोई
मानो जमुहाई लेन परचंडता की है।
विश्वहि ग्रसन काज उद्यत ये चाप मम
भारे आज जम की सदाप छवि वारी है॥
(स्वर्गीय सत्यनारायण कविरत्न)

*भ्रणाभ्रणितकरणिकाक्षितकिंकरणीक घनु-
स्वनद्गुरुगुणाटनीकृतकरालकोलाहलम्।
वितत्य किरतो शरानविरतस्फुरच्चूडयो-
र्विचित्रमभिवर्द्धते भुवनभीममायोधनम्॥
(उ 6 ।)

इस पद्यावली के पद-पद से वीर रस प्रकट होता है पढने मात्र से सहृदयों के रोम रोम मे शौर्य का सचार होता है ऐसा जान पडता है मानो श्राखो के सामने युद्ध हो रहा है बाणों की सनसनाहट श्रौर धनुष के टकार से सुनाई पडते हैं कालिदास की भाषा म यह विविधता नही वह तो सदा मधुर और सदा कोमल है वीररस का वर्णन हो या शृगार का करुण का वर्णन हो या श्रौर कुछ यह तो सदा कोमल सदा सौन्दर्यमयी श्रौर सदा माधुर्यभरी ही रहेगी आप उसमें कर्कशता न पायेगे वह परुषता को जानती ही नहीं वह कठोरता को पहचानती ही नहीं रघु के दिग्विजय को पढिए, इन्दुमती को विवाह कर लाते हुए मार्ग मे राजाओं के साथ हुए अज के युद्ध को देखिए कालिदास की भारती आपको कोमल ही देख पडेगी—

गात्रमवमत्य कुसुमात्स्वपान्त
प्रस्वापन स्वप्ननिवृत्तलौल्य ।
(रघुवश)

× × ×

सा प्रियोपात्तरसेऽधरोष्ठ
निवेश्य दध्मौ जलज कुमार ॥
(रघुवश)

इत्यादि कोमल पदावली तो स्मरण म है न ? इस युद्ध-वर्णन में भी यहाँ हमारे रसीले कालिदास ने मोहनास्त्र से ही काम लिया है विवाह के मगल-प्रसग के बाद हत्याकाण्ड न होने देना एक खूबी भी है प्रियोपात्तरस अधरोष्ठवाला कुमार मोहनास्त्र

*मन कमन कवन गम मद्दित जल विकरीम विसाल।
जुग छोर सन लगि आसु गुन मनि सरति भयद मराल॥
धनु तानि मल सर तजत जिन मिष निरत चपन भार।
यह भयद अद्भुत दिन दोउन मचि अरा युद्ध अपार॥
(स्वर्गीय सत्यनारायण कविरत्न)

का प्रयोग करे यह एक रसिक-कलाविधान अवश्य है परन्तु वीर रस के वर्णन में क्या ऐसे ही प्रयोग उपयुक्त होंगे ? कालिदास का वश होता तो कदाचित् वे वीर युद्ध वर्णन में भी कुसुमों के ही शर चलाते अस्तु शृंगार और करुण के वर्णन में दोनों कवियों ने रस के उपयुक्त शब्दों का विन्यास किया है—

*सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति ।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥
(अभिज्ञान शाकुन्तल)

**अधाम्बुशिशिरीभवत्प्रसृतमन्दमन्दाकिनी-
मरुत्तरलितालकाकुलललाटचन्द्रद्युति ।
अकुङ्कुमकलङ्कितोज्ज्वलकपोलमुत्प्रेक्ष्यते-
निराभरणसुन्दरश्रवणपाशमुग्धं मुखम् ॥
(उ रा च 6-37)

---

*जदपि घिरो है चहूँ ओर तें सिवारन तें
तदपि सरोज अति सुन्दर दिखात है ।
मलिन महा है तोहू उज्जल सुधाकर कौं
सुखमा अनोखी श्यामताई प्रकटात है ॥
वल्कल की खानन के बने भये वस्त्र तऊ
यह सुकुमारी नारी परम सुहात है ।
स्वाभाविक सुन्दरता दई ने दई है जिन्हें
कौन वस्तु नाहिं तिन्हें भूषित बनात है ॥ (सेवक)

दोहा

**कुंकुम मलेन जासु तउ उज्ज्वल अमल कपोल ।
श्रमसीकर सीतल भयो जो अनुपम अनमोल ॥ 1 ॥
मन्द मन्द लगि पवन जहँ मन्दाकिनि को आय ।
प्यारी घुँघराली अलक आँसु देयो बिचलाय ॥ 2 ॥
ललित ललाट मयंकद्युति आकुल लहि तिल भार ।
लहलहाति चुइ सी परी इत उत चलि बहु बार ॥ 3 ॥
निराभरन अति तउ सुभग अस तुम्हरो मुखचन्द ।
सुरति करिके हिय में अजहुँ भरत छनिक आनन्द ॥ 4 ॥

दोनो कवियो के दोनो पदो मे उचित शब्दो का प्रयोग है दोनों पद्य अनूठे हैं; तथापि पहले पद्य मे कालिदासता लहरा रही है और दूसरे पद्य में भवभूतिपन छटा दिखला रहा है

स्वाभाविक वर्णन

स्वाभाविक वर्णन करने की शैली भी दोनों कवियो की पृथक पृथक है भवभूति प्रकृति का जैसे का-तैसा चित्र आखों के सामने खड़ा कर देते हैं वे उस वर्णन में कालिदास की भाति उपमा, उत्प्रेक्षा आदि की प्रभा नहीं प्रकट करते देखिए—

*निष्कूजस्तिमिता क्वचित्क्वचिदपि प्रोच्चण्डसत्त्वस्वना ।
स्वेच्छासुप्तगभीरभोगभुजगश्वासप्रदीप्ताग्नय ।।
सीमान प्रदरोदरेषु विरलस्वल्पाम्भसो या स्वय ।
तृष्यद्भि प्रतिसूर्यकैरजगरस्वेदद्रव पीयते ।।

(उ 2-16)

---

*ये जनस्थान सीमा महान ।
जहं सघन गहन वन विद्यमान ।।
निःशब्द शान्तिमय कहु अखण्ड ।
वनजन्तु नाद सों कहु प्रचण्ड ।।
जहं स्वपसपात रसना अपार ।
तिन तप्त सांस सन कहु विशाल ।
जरि उठत भयंकर ज्वालमाल ।।
दै गई भूमि जहँ पै दरार ।
दीसत कछु जल तिन मझार ।।
अजगर-श्रम-सीकर मासमान ।
प्यासे गिरगट तिहि करत पान ।।

(स्वर्गीय सत्यनारायण)

*इह समद शकुन्ताक्रान्तवानीरमुक्त
प्रसवसुरभिशीतस्वच्छतोया वहन्ति ।
फलभरपरिणामश्यामजम्बूनिकुञ्ज
स्खलनमुखरभूरिस्त्रोतसो निर्झरिण्य ॥
(उ 2—20)

**पुरा यत्र स्त्रोत पुलिनमधुना तत्र सरिता
विपर्यास यातो घनविरलभाव क्षितिरुहाम् ।
बहोर्दृष्ट कालादपरमिव मन्ये वनमिद
निवेश शैलाना तदिदमिति बुद्धि द्रढयति ॥
(उ 2—27)

---

*यहि बेंतस बल्लरि पै अब बैठि
कलोल भरे मृदुबोल सुनावें,
तिन सों झरे पुष्प सुगंधित तोय
बहें अतिशीतल हीतल भावें,
फल पुञ्ज पकेनि के कारन श्यामल
मंजुल जम्बु निकुञ्ज लखावें
उनमें रुकि के करि घोर घनी
झरनानि के स्रोत समूह सुहावे,
(स्वर्गीय सत्यनारायण)

**सोहत हो प्रथम जहाँ पैसरि-सोत मंजु
तहाँ अब विपुल पुलिन दरसावें है ।
विरल हो प्रथम विपिन रूखा घनो भयो
जहाँ घनो तहाँ अब विरल दिखावे है ।
बहु दिन पाछे विपरीत चिह्न देखन सों
यह कोऊ भिन्न वन याकू जिय भावे है ।
पहाड़ के तहाँ पे किन्तु अचल-मंडल हेरि
सोई पंचवटी' बिसवास न रहावे है ॥
(स्वर्गीय सत्यनारायण)

*एते ते कुहरेषु गद्गदनदद्गोदावरीवारयो
मेघालम्बितमौलिनीलशिखरा क्षोणीभृतो दक्षिणा।
अन्योन्यप्रतिघातसङ्कुलचलत्कल्लोलकोलाहल-
रुत्तालास्त इमे गभीरपयसः पुण्याः सरित्सङ्गमाः॥

(उ 2-30)

× × ×

परन्तु कालिदास का प्राकृतिक वर्णन बिल्कुल और तरह का है उनका उद्देश्य दृश्य का केवल चित्र उतार देना ही नहीं है वे उन भावों का वर्णन करते हैं जो किसी दृश्य के देखने पर कवि के हृदय में उठते हैं कुमारसम्भव का हिमालय वर्णन पढ़िये वह केवल पर्वत का चित्र नहीं है वह कवि का सवारा हुआ अद्भुत सौन्दर्यमय अनुपम देवतात्मा नगाधिराज हिमालय है हिम भी उसके सौभाग्य का लोप करने वाला नहीं है वह तो इन्दु के किरणों में निमज्जित हो जानेवाले अंग के समान है इतना सुंदर पर्वत-वर्णन विश्वभर के साहित्य में कदाचित् ही हो माघ का पर्वत वर्णन भी सुन्दर है और भवभूति का भी भवभूति का देखिए—

दोहा

*जिन कुहरनि गदगद नदति गोदावरि की धार।
शिखिर श्याम घन लखत सों ते दक्षिनी पहार॥
करत कुलाहल दूरि सों चपल उठन तरंग॥
एक दूसरी सों जहाँ आइ परैं टकराय॥
अति अगाध विलसत सलिल छटा अटल अभिराम।
मन भावन पावन परम ते सरितगन धाम॥

(स्वर्गीय सत्यनारायण)

*प्रथमभिनवमघस्यामन्तोत्तु मगानु—
मदमतरमयूरीमुक्तसक्षवत्तनेक ।
शकुनिशबलनीडानोकहास्निग्धवर्षा
वितरितवहुदरमा पर्वत ग्रीरिमङ्गो ॥

परन्तु कालिदास का वर्णन अपूर्व है अनन्य है भवभूति के प्राकृतिक वर्णन को एक चित्र मे बता सकते हैं परन्तु कालिदास के वर्णित गुण को बतलाने के लिए अनेक चित्र बनाने पड़ेंगे या एक सेनोमेटोग्राफ का फिल्म तयार करना होगा। फिर भी वह दृश्य यथार्थ रूप रूप मे दिखलाया जा सकेगा या नहीं सन्देह रह जाता है देखिए—

**ग्रीवाभङ्गाभिराम मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टि
पश्चार्धेन प्रविष्ट शरपतनभयाद्भूयसा पूर्वकायम्।
दर्भैरर्धावलीढै श्रमविवृतमुखभ्रंशिभि कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुत वाद्वियति बहुतर स्तोकमुर्व्यां प्रयाति

(अभिज्ञान-शाकुन्तलम्)

---

*अति ऊचे उठे गिरि शृगन प घन
श्याम घटा छवि छाइ रही
भर मोदमयी मदमत्त मयूरी
निरतर कूक मचाई रही
खगनीड विचित्र धरैं तरु पगनि
जातन शोभ बढाइ रही
सुषमा सो मनौ यस पवत मान
मनोहर ननमु भाइ रही

(स्वर्गीय सत्यनारायण)

**देखे रथ को हरिण विलोकत
लखि पहुरा ग्रीव स्यन्दन को
चाल उतावल ग्रीवा मोरत
नेकहु बाण लगन के भय से
आगे पिछलो गात सिकोरत
छिन छिन मग म श्रमित मुख से
दाभ गिराय चला पुनि दौरत
लखौ कुलाच भरत अब वसौ
भूतल माहि न निज पग जोरत ॥

(स्वर्गीय पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र विद्यावारिधि)

कालिदास के स्वाभाविक वर्णन में आप अच्छे-से अच्छे वर्णन पायेंगे परन्तु वे उप
उत्प्रेक्षा उपमा आदि से सवारे हुए हुए प्रकृति के नग्न सौंदर्य का कालिदास वर्णन न करेंगे वे प्रकृति का वर्णन करेंगे—खूब करेंगे परन्तु बनी ठनी प्रकृति को बतलायेंगे उनके मेघदूत और ऋतु-संहार क्या हैं ? अनमोल काव्य-ग्रन्थ हैं प्राकृतिक दृश्यों के बड़े सुन्दर वर्णन हैं परन्तु हैं सभी वियोगियों के हृदय में प्राकृतिक दृश्यों के देखने पर—उठनेवाले भावों की कल्पना प्रसूत उत्तमोत्तम मधुरतम शब्दराशियां ! सभी हृदय के भावों की रमणीयता शब्दमूर्तियां !

भावचित्रण

हृदय के भिन्न-भिन्न भावों और विचारों को शब्दों द्वारा प्रकट करने में कालिदास भवभूति से बढ़ हुए हैं शृंगार करुण और वात्सल्य प्रभृति रसों और भावों की भवभूति की अपेक्षा कालिदास विशेष पहचानते हैं शकुन्तला की विदाई का प्रसंग करुण का अनुपम उदाहरण है कवित्व शक्ति की पराकाष्ठा का नमूना है कोई भी सहृदय ऐसा न होगा कि इस प्रसंग को पढ़कर तन्मय न हो जाय कवि के प्रकृति-प्रेम और मनुष्य हृदय के गूढ़तम भावों की अभिज्ञता पर मुग्ध न हो और कल्पनाचातुर्य की प्रशंसा करते करते थक न जाय अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम् के कहने वाले कवि का करुण रस-वर्णन कुछ कम नहीं जिसके लिए सहृदय कवि कुल कलाधर आचार्य गोवर्द्धन को कहना पड़ा कि—

भवभूते सम्बन्धाद्भूधरभूरेव भारती भाति ।
एतत्कृतकारुण्ये किमन्यथा रोदिति ग्रावा ॥

परन्तु विचारपूर्वक देखा जाय तो करुण रस के वर्णन में भी कालिदास ही बढ़कर जान पड़ेंगे वे कितनी ही बातों का वर्णन करते हुए अपने आप को भूल जाते हैं और इसी तन्मयता में वर्ण्य विषय का अभिन्न अंग न हो जाता है यही कारण है कि उत्तर रामचरित में करुण की धारा भले ही बहाई हैं तथापि शकुन्तला के चौथे अंक में जितना करुण रस उमड़ पड़ता है उतना करुणाजनक वर्णन उत्तर रामचरित में नहीं यह नहीं लिखते हुए मेरी लेखिनी रुकती है ऊपर पढ़ते समय के अश्रुपात अभी भूलने भी नहीं पाये हैं परन्तु शकुन्तला की बिदाई का करुण दृश्य तो हृदय में अंकित है यह मिट नहीं सकता कण्व के आश्रम को छोड़कर पतिगृह जाती हुई शकुन्तला का विलाप सखियों और आश्रम के मृग के साथ उसका प्रेम-व्यवहार अपने हाथों से सींची हुई लतिकाओं और पौधों के पास से रोते रोते बिदा लेना वनवासी और तपस्वी कण्व मुनि के वात्सल्य और ममतामय हृदय का वियोग से दुखी होना नयनों में अश्रु और मुख में शिक्षा भरे उपदेश—ये सब एक से-एक अधिक करुण दृश्य हैं अनुपम हैं—अनन्य हैं कालिदास नियन्देह किसी न किसी कन्या को बिदा कर चुके होंगे

नहीं तो ऐसा सजीव वर्णन मिलना दुर्लभ—अत्यन्त दुर्लभ था। अथवा उनकी खूबी ही इसी में है। कुछ भी हो यह करुण रस का आदर्श है अत्युत्कृष्ट वर्णन है 'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्रापि च शकुन्तला तत्रापि चतुर्थोऽङ्क' तो स्मरण है न ? कालिदास जो बात थोड़े में शब्दों में कह देते हैं भवभूति बहुत बढ़ा कर उसे कह पाते हैं भवभूति के पात्र करुणा के प्रदेश में आकर अत्यधिक विलाप करते हैं तब कालिदास के पात्र दो चार आँसू टपका कर थोड़ी मर्मान्तिक बातें करते हुए चुप हो जाते हैं ये थोड़ी सी बातें जो प्रभाव डालती हैं वह प्रभाव लम्बी-लम्बी बातों का नहीं पड़ता

कल्पनाशक्ति

कालिदास की कल्पनाशक्ति अत्यन्त उच्चकोटि की है और वह ऊँचे-से ऊँचे पर विहार करती है कालिदास अपने काव्यों को अलङ्कारों से सजाने में बड़े ही निपुण हैं उपमा तो उन्हीं पर निछावर हो गई है उपमा कालिदासस्य तो जानते हैं न ? कालिदास की उपमा का साम्य अन्यत्र दर्शन न देगा भवभूति कल्पना में इतना उच्च विहार नहीं करते—कर नहीं सकते प्राकृतिक वर्णनों में क्या और क्या मनोभावों के वर्णन में भवभूति उपमादि अलङ्कारों का बहुत उपयोग नहीं करते करना नहीं चाहते भवभूति के नाटकों में 2–4 ऐसे स्थल हैं जो कालिदास की उपमा का स्मरण कराते हैं अधिक नहीं बात यह है कि भवभूति रस वर्णन में ऐसा तन्मय रहते हैं कि वे अपनी शब्द प्रतिमा को अलङ्कारों से सजा ही नहीं सकते उसे सवारने का ध्यान ही उन्हें नहीं रहता

शृङ्गार–रस

कालिदास का शृङ्गार रस प्राय कामोत्तेजित विकारों से उत्पन्न होता है और कहीं-कहीं तो अश्लील तक हो गया है कुमारसम्भव के 8वे सर्ग के वर्णन को कौन अच्छा कहेगा ? यद्यपि ऐसे ही कारणों से अनेक टीकाकारों ने उन्हें बुरा भला कहा है और यह भी सम्भव है कि उन्होंने सात सर्ग ही लिखे हों परन्तु यह अवश्य कहा जा सकता है कि कहीं कहीं वे आदर्श से गिर गये हैं किन्तु भवभूति का शृङ्गार अत्यन्त पवित्र है ऐसा पवित्र वर्णन करने वाला दूसरा कवि हुआ ही नहीं रस और पवित्रता के अनमोल वर्णन करने के कारण भवभूति का उत्तर चरित अलङ्कार का दृष्टान्त है—रस साहित्य के हिमालय का शिखर है

पात्र–कल्पना

भवभूति के पात्र आदर्श पात्र हैं किसी पात्र को आप लीजिए सर्वसाधारण के लिए वह आदर्श ही सिद्ध होगा आदर्शता के शिखर से वह कभी नीचे नहीं गिरता राम पत्नीव्रत और साथ ही आदर्श राजा हैं और सीता आदर्श स्त्री और आदर्श पत्नी वसिष्ठ आदर्श विद्वान् और आदर्श गुरु हैं यहाँ तक कि दुर्मुख भी अपने आदर्श पात्र

से पृथक नहीं होता परन्तु कालिदास के पात्र ऐसे नहीं वे ससारलभ्य साधारण पात्र हैं और साधारण मनुष्यों जैसे ही काम करते हैं इतना ही नहीं वे साधारण मानव प्रकृति के समान ही अपने भावों को प्रकट करते हैं कालिदास का दुष्यन्त एक धर्म प्रेमी साधारण रसिक राजा है और शकुन्तला एक साधारण ससारलभ्य स्त्री परन्तु यह भारत के दुष्यन्त को या शकुन्तला को जो कालिदास ने नवीन रूप दिया है वह अनुपम है मैं यह कहना नहीं चाहता हूं कि कालिदास के पात्र मानवीय हैं और भवभूति के आदर्श देवी।

दृश्य काव्यों का विशेषत्व

भवभूति के नाटक पढने में जितने मनोहर हैं उतने रगभूमि पर देखने में नहीं वे नाटक होने पर भी श्रव्य काव्य की श्रेणी के अधिक अन्तर्गत हैं परन्तु कालिदास के नाटक रगभूमि पर अपना अद्भुत रग जमाते हैं ऐसी छटा दिखलाते हैं कि देखते ही बन पड़े सच बात तो यह है कि कालिदास के नाटकों के लिए ही दृश्य काव्य का प्रयोग यथार्थ है

उपसहार

इस लेख में मैंने इस बात का यत्न किया है कि तुलनात्मक रीति से कालिदास और भवभूति के सम्बन्ध में अपने विचारों को प्रकट करूं सस्कृत भाषा के ये दोनों विश्वविख्यात कवि शिरोमणि हैं इनके सम्बन्ध में जो कुछ मुझे उचित जचा वह भावुकवृन्द की सेवा में भेंट किया है इनकी कोटि का कोई तीसरा कवि दृष्टिगोचर नहीं होता माघ भारवि बाण दण्डी मयूर क्षेमेन्द्र गोवर्द्धन जयदेव जगन्नाथ प्रभृति अवश्य महान् कविवर हैं परन्तु कालिदास और भवभूति कालिदास भवभूति ही हैं इनकी शक्तियों में इन्हीं का जन्म हुआ है इनकी प्रतिभा इनका भाषाधिकार इनकी प्रौढ़ता इनकी सरलता कोमलता आदि गुण इनके ही थे इनमें किसी में कुछ विशेषता है तो किसी में कुछ परन्तु अपूर्व प्रतिभा का चमत्कार कवित्व शक्ति सारस्य रस सागर का सामर्थ्य चमत्कारिणी मनोहर उक्तियां सुकुमार कलानिधान जैसे इन दोनों कवियों में वस्तुतम है वैसा चमत्कार कोई नये कालिदास और नये भवभूति पैदा हो तो भारतजननी को प कर कौन प्रफुल्लित न होगा इस भारतवसुधरा को शतश वन्दन कोटिश वन्दन । भारतमही कभी सत्कवियों से शून्य न हुई और न होवेगी हो इसमें किन्हीं कवि कोकिल हुए हैं और होंगे ही और कालिदास और भवभूति तो अमर हैं न ? नास्ति येषा यश काये जरामरणज भयम् क्या भुला दिया जा सकता है क्या ही अच्छा हो यदि मेरे देशबन्धु स्थान स्थान पर कालिदाससमिति भवभूतिसभा आदि सस्थाओं की स्थापना कर

(सरस्वती अगस्त 1925 में प्रकाशित)

द्विवेदीजी के संस्मरण

पण्डित श्री महावीरप्रसाद जी द्विवेदी क्या न थे ? वे विनोदशील व्यंग चित्रकार थे सुन्दर गद्य लेखक थे उत्तम पद्य निर्माता थे स्पष्टवादी समालोचक थे सफल सम्पादक थे और थे कलाकोविद् सहृदय पुरुष अनेक महापुरुषों की तरह आपका जन्म गाव (दौलतपुर) मे हुआ था आपकी स्कूली शिक्षा न कुछ के बराबर थी परन्तु स्वाध्याय शीलता के कारण गुजराती मराठी उर्दू बंगाली अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में आपने प्रवीणता पाकर विपुल ज्ञान राशि का सम्पादन किया था आपकी जीवनी अनेक रंगों से रंजित थी और आपका अध्यवसाय कठिनाइयो पर विजय पाने वाला था आप हिन्दी कवियो की अपेक्षा भी संस्कृत कवियो से विशेष परिचित थे और यही कारण है कि हम नैषधचरित चर्चा विक्रमाङ्कदेव चरित्र कालिदास की समालोचना आदि चीजे को पा सके है रघुवंश कुमारसम्भव और किरातार्जुनीय आदि आपकी पुस्तकें हिन्दी जनता को संस्कृत कवियो के रस का आस्वादन कराती रहगी

मैंने आपकी हिन्दी कालिदास की समालोचना हिन्दी शिक्षावली की समालोचना पढ़ी थी और वे मुझे स्वर्गीय राय देवीप्रसाद जी पूर्ण बी ए एल एल बी की साहित्य सुधा नामक समालोचना से कुछ कम न जची थी परन्तु मुझे जिस चीज ने आकृष्ट किया वह द्विवेदी जी की गुणग्राहकता थी जो उन्हो ने संस्कृत के आशुकवि अयोध्यानाथ के विषय मे सन् 1896 के आसपास श्री वेंकटेश्वर मे प्रकट की थी इस लेखमाला को यदि कोई वेंकटेश्वर की पुरानी फाइलो मे से उद्धृत कर प्रकट कर दे तो अच्छा हो इस लेखमाला को पढ़कर मैं मुग्ध हो गया और मेरे चित्त मे जो संस्कृत का प्यार लबालब

भरा था, चमक पड़ा द्विवेदी जी के सम्पादकत्व प्रतिफलन 'सूर्यग्रहणम्, कान्यकुब्जलीलामृतम् कथमहं नास्तिक इत्यादि संस्कृत काव्य और स्व. भारतरत्न अम्बिकादत्त व्यास साहित्याचार्य श्री के सुललित गद्य काव्य शिवराज विजय पर जो हुई गद्यात्मक समालोचना देखने के योग्य है और आपके संस्कृत गद्य पद्य के नमूने हैं

आपका मुझसे सौहार्द था आपने लाला सीताराम जी (जुहीवाले) से यह स्वीकार था कि वे मेरी और पं. पद्मसिंह जी शर्मा की चिट्ठियों को जहां पर द्विवेदी जी हों वहीं पर डाक द्वारा लौटा दिया करें एक बार नौकरी छोड़ देने के बारे में पूछने पर द्विवेदी जी ने मुझे लिखा —

'हमारे अनेक मित्रों ने नौकरी छोड़ देने पर हमें बहुत बुरा भला कहा आपको लिखते तो आप भी खबर लेते

एक दूसरे में आपने लिखा — 'हमारे नौकरी छोड़ देने पर लाला सीताराम जी ने हमें अपने यहीं रख लिया था और 2500) ढाई हजार रुपये इसलिए दिये थे कि हम इनसे अपना काम चलावें और हिंदी की सेवा करें हम लालाजी के यहीं रह गये ऊपर भी हमारे सीताराम हैं और नीचे भी सीताराम, अब तो यह रुपया चुक भी गया है —'

तीस वर्ष पहले अनुमानित सन् 1909 में मैं अपने मामा के पुत्र नारायणसहाय ज्योतिषी को साथ लेकर झालावाड़ के दीवान पं. परमानंद जी चतुर्वेदी (जिनको कि द्विवेदीजी ने शिक्षा समर्पण की है) के आमन्त्रण पर कायमगंज गया था वहां पर लाला छोटेलाल जी 'बार्हस्पत्य' जो संस्कृत फारसी अरबी और अंग्रेजी आदि भाषाओं के एवं उत्कृष्ट विद्वान थे मिले वे द्विवेदी जी की बड़ी प्रशंसा करते थे और खास करके द्विवेदी जी की नियमितता की जहां तक मुझे मालूम है सरस्वती का एक ही अंक युग्मांक के रूप में प्रकाशित हुआ है कदाचित् सन् 1904 में बाकी सदा समय प्रकाशन होता रहा ठीक समय पर काम का सम्पन्न होना स्व. बाबू चिन्तामणि घोष (इण्डियन प्रेस के स्वनामधन्य स्वामी) को भी बहुत पसंद था और द्विवेदी जी कर्तव्यनिष्ठ पुरुष थे मेरे ख्याल में तो इन दोनों कर्तव्यनिष्ठ पुरुषों का प्रभाव 'प्रवासी' और 'माडर्न रिव्यू' के सम्पादक रामानन्द जी चटर्जी पर भी होना चाहिए

कायमगंज से मैं कानपुर गया स्टेशन से सवारी करके जुही गया सामान और अपने मामा के लड़के को बाहर बिठा गया और मैं भीतर जाकर द्विवेदी जी के कमरे में बैठ गया द्विवेदी जी सन् 1906 में मेरा चित्र सरस्वती में लम्बी चौड़ी प्रशंसा के साथ छाप चुके थे मेरा ख्याल है कि हिन्दी लेखक के नाते सरस्वती में भी सबसे

वे हम दोनों के मिलाप से अत्यन्त प्रसन्न थे उत्साह था न था था। प्रेस चलाते थे खुद का कारखाना था खुद देखभाल करते थे मुझ से कहने लगे कि द्विवेदी जी का इस कुटिया में रहना तो परम सौभाग्य की बात है इनके कारण अनायास आप जैसे महानुभावों के दर्शन हो जाते हैं न मालूम कितने कवियों के रसास्वादन से मुग्ध हुए द्विवेदी जी राय देवीप्रसादजी पूर्ण के पास लिवा ले गये और उनके साथ हम लोगों का खूब वार्तालाप हुआ पूर्णजी अच्छे लेखक और सुकवि थे और प. महावीर प्रसाद जी के प्रति उनका बड़ा ही सद्भाव था कालिदास की निरंकुशता और निरंकुशता दर्शन तो साथ-साथ छपे हैं परन्तु क्या ही अच्छा होता कि इन दोनों के साथ ही पूर्णजी की लिखी हुई आत्मारामकी टें टें भी छपी गई होती पूर्ण जी का विपद्विदारणस्तोत्र अब भी भक्ति को गद्गद् किये बिना नहीं रह सकता पूर्णजी की धारावाहिक धारा भी इस लाइन से —

मेरे जान ह्वै है सुकुमारी प्राणप्यारी
सखा सुन्दर सरोजिनी तुषार की सताई सी

हम लोगों को बड़ा ही आनन्द आया था इसी पद्य में वा सी तो वस्तु को मूल से भी अधिक सुन्दर कर देती है यह बात द्विवेदी जी के और मेरे मुंह से सहसा एक साथ निकल पड़ी

मैं तीसरे दिन वापस आया जुही में उस वक्त सवारी न मिलती थी मजदूर के सिर पर सामान रखवाया गया द्विवेदी जी और लाला सीताराम जी दोनों पहुंचाने को आये सीताराम जी को और द्विवेदी जी को मैंने वापस जाने का आग्रह किया किसी तरह लालाजी को तो मैं वापिस भेज सका परन्तु द्विवेदी जी ने एक न मानी वे स्टेशन तक आये और जब तक मैं चलती हुई में नजर आता रहा अपनी स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखते रहे मैं आगरा होता हुआ जयपुर होकर यहां पर (झालरापाटन) आ गया

द्विवेदीजी अपने सुख-दुख की बात मुझ लिखते थे और मेरे सुख दुख की बात मुझसे पूछते थे एक बार अपने भानजे के बम्बई चले जाने के कारण वे बड़े दुखी हुए उन्होंने लिखा— यों हमें का कोई दुख नहीं इण्डियन प्रेस से 50) पेंशन मिलती है और भी कुछ लिखने पढ़ने से मिल जाता है और यदि न भी मिले तो शारीरिक कष्ट को हम कोई कष्ट नहीं समझते (अपूर्ण)

गरीबी विघ्न नहीं है

गरीबी विघ्न नहीं है यह बात जर्मनी के प्रोफेसर हीन के उदाहरण से सिद्ध हो जायगी प्रोफेसर हीन अपने समय के जर्मनी के महा विद्वानों में एक ही गिना जाता था उसके जीवन के पहले तीस साल अप्रसिद्धि में व्यतीत हुए इतना ही नहीं बल्कि महा दरिद्रता के साथ बार-बार विकट संग्राम करने में बीते उसका पिता बड़ा गरीब था और कुटुम्ब बड़ा था वह बहुत परिश्रम करता था तो भी अपने कुटुम्ब का पोषण करने में असमर्थ रह जाता था हीन कहता है कि तभी मेरी बाल समाप्ति है जब मेरी माँ के पास अपने बच्चों को खिलाने के लिये खुराक नहीं होती थी तब उसे बड़ी ग्लानि होती थी तो उसे देखने से जो दुःख की मुद्रा मेरे मन पर पड़ी थी उसकी याद अब भी मुझको बनी हुई है उसे मैंने कई बार देखा है कि मेरे पिता ने दिन रात की सख्त मेहनत से जो माल बनाया है उसकी काफी बिक्री न होने से मेरी माँ रोती भींकती शनिवार की शाम को घर आई है जिस छोटे से गाँव में ये लोग रहते थे हीन उसी गाँव की पाठशाला में पढ़ने को रखा गया उसने अपने बचपन में पढ़ने में बड़ा ही श्रम दिखलाया पाठशाला के अभ्यास में उसने ऐसा श्रम किया कि दस वर्ष की अवस्था का होने के पहले ही वह अपने पड़ोस के एक श्रीमान् गृहस्थ की कन्या को पढ़ना लिखना सिखाकर अपनी फीस आप चुकाने लगा अपनी पाठशाला की

नियत पढ़ाई समाप्त कर लेने पर उसकी इच्छा हुई कि मैं लैटिन सीखूं। इस पाठशाला के एक शिक्षक का पुत्र विश्वविद्यालय मे पढ़ता था। वह उसे चार आने सप्ताह फीस ले लेकर लैटिन भाषा सिखाने को तैयार था परन्तु हीन के पास इतनी भी फीस देने का सुभीता नहीं था। एक दिवस हीन एक सम्बन्धी के यहां रोटी लेने को भेजा गया यह सम्बन्धी धनी था और बवर्ची का काम करता था। हीन अपने महान् लक्ष्य का विचार करता हुआ जा रहा था जिस समय वह अपने रिश्तेदार की दुकान पर पहुंचा उसकी आंखों में आंसू भरे हुए थे। उस श्रेष्ठ स्वभाव वाले पुरुष को जब इसके दुख का कारण मालूम हुआ तब उसने इसकी फीस भर देने की हां कर ली। इसके सुनते ही हीन के हर्ष का ठिकाना न रहा। हर्षोन्मत्त हो फटे-पुराने कपड़े पहिनने वाला यह हीन पीछे फिरो लौटता हुआ दौड़ने लगा। उसके हाथ में से रोटी छूट पड़ी और कीचड़ में लथपथ हो गई। घर के मा बाप इस हानि को सहन नहीं कर सकते थे। अतएव जब उन्होंने इसे धमकाया तब कहीं इसे सुध आई। इसने थोड़े ही समय में लैटिन पढ़ी इतने समय में इसने अपने शिक्षक के समान ही लैटिन का अभ्यास कर लिया।

अब इसके पिता का विचार हुआ कि यदि हीन कोई काम करने लगे तो अच्छा परन्तु हीन की ज्ञान तृष्णा अपार थी। इसी इस समय अपना शौक पूरा करने के साधन भी प्राप्त थे। पास के गांव में इसका एक सम्बन्धी धर्मगुरु का काम करता था उसे हीन के आखिरी गुरु से मालूम हुआ कि हीन बड़ा ही होनहार लड़का है। इसलिए उसने हीन को चेम्नीट्ज के मुख्य विद्यालय में अपने खर्च से भेज दिया। यह मनुष्य बड़ा कम खर्च करने वाला था। अतएव हीन को पूरी पूरी पुस्तकें भी नहीं मिलती थीं वह अपने सहाध्यायियों की पुस्तकें उधार लाकर नकल कर लेता था और इस तरह अपना अभ्यास बढ़ाता था। उस शहर के एक श्रीमान् के लड़के का यह शिक्षक हो गया था इससे कुछ अंश तक इसका काम और भी अच्छी तरह चला।

अब इस बात की आवश्यकता हुई कि यदि वह ज्ञान मार्ग में आगे बढ़ना चाहे तो उसे विश्वविद्यालय में प्रवेश करना चाहिए। उसने लिप्जिग जाने का निश्चय किया जब वह लिप्जिग पहुंचा तब उसके पास केवल तीन रुपये थे। उसके रिश्तेदार ने वचन दिया था कि वह अपनी उदारता जारी रखेगा परन्तु उसके पास से उसे बहुत कम सहायता मिलती थी। इसके सिवा उसे कोई भी मदद न थी। इस वक्त यह सहायता उसे बड़ी देर से मिली और वह भी धड़धड़ाहट और उपालम्भ के साथ। वह जिस घर में रहता था उस घर की दासी ने यदि उस पर दया न की होती तो उसे दुःख के मारे मर जाने की नौबत आ गई होती। उसके पास न द्रव्य था और न पुस्तकें। उसे उसकी कठिनाइयां बढ़ती गईं। यहां तक कि उसकी हिम्मत भी घटती गई। छह महीने तक तो वह सप्ताह में केवल दो रात ही सोता रहा।

इस अर्से मे उसकी स्थिति दिन दिन असहनीय होती गई उसके अध्यापक ने दूसरे शहर मे उसे एक कुनबे म मास्टर की जगह दिलानी चाही उसके लिए वह जगह हर तरह से उपयुक्त थी, पर उसे अपना अभ्यास बढाने योग्य शहर को छोडना पडता था अतएव उसने उस जगह को स्वीकार न किया उसने इन सब सकटो मे रहते हुए भी लिप्जिक म ही रहने का निश्चय किया इस त्याग का फल भी उसे थोडे ही समय मे मिला ऊपर कहे हुए अध्यापक ने इसी शहर मे उसके लिए वैसी ही एक जगह और ढूढ निकाली इससे कुछ समय क लिए उसकी आर्थिक कठिनता दूर हो गई परन्तु वह अत्यन्त कठोर श्रम करके अभ्यास करता था, इससे भयकर व्याधि मे ग्रस्त हो गया और नौकरी से इस्तीफा देकर उसे अलहदा होना पडा इस बीमारी मे उसके पास जो कुछ थोडा सा द्रव्य था वह भी व्यय हो गया और जब वह चगा हुआ तब पहले का सा दरिद्र का दरिद्र हो गया

सकट की इस पराकाष्ठा के समय मे ड्रेस्डन राजधानी के एक उच्चाधिकारी का ध्यान इसके लिखे हुए लैटिन काव्यो की एक प्रति की ओर आकर्षित हुआ इसके मित्रो ने इसे सलाह दी कि यह ड्रेस्डन को जावे क्योकि उनका ख्याल था कि उच्चाधिकारी का आश्रय मिल जाने से उसके घर लक्ष्मी की कमी न रहेगी परन्तु उसके भाग्य मे ऐसा कहा बदा था वह निराशा के लिए बना था उसने प्रवास करने के लिए अपने एक मित्र से कर्ज लिया और वह ड्रेस्डन गया परन्तु उसे वहा उस अधिकारी के पास से सिवा कुछ मधुर वचनो के और कुछ न मिला आखिरकार उसे अपने निर्वाह के लिए अपनी किताब बेचनी पडी और काउन्ट ब्रूहल के पुस्तकालय म 250) रुपये सालाना पर क्लर्की की तुच्छ नौकरी मजूर करनी पडी ऐसा होने पर भी उसे गनीमत होने के कारण रोज का काम किये बाद पुराने विजनामो का भी थोडा सा काम करने को समय मिल जाता था उसने पहले पहल एक फ्रेंच ग्रथ का अनुवाद किया इस अनुवाद से उसे 0)रुपये की प्राप्ति हुई लैटिन भाषा के कवि टिबुलस की एक पुस्तक का विद्वत्तापूर्ण उत्तम सस्करण निकालने के लिए उसे लगभग 250) रुपये की प्राप्ती हुई इस रकम से उसने लिप्जिक म लिए हुए कर्ज को चुका दिया इस समय वह बडी मेहनत से अभ्यास करता था ड्रेस्डन म असख्य पुस्तको का सग्रह होने से उसे अपना अभ्यास बढाने का अच्छा मौका मिला ज्यो त्यो कर वह अपना काम चलाता था परन्तु इस मौके को ही वह अपने श्रम का पूरा बदला समझता था प्राय दो वर्ष तक वह अपनी जगह पर रहा और दो वर्ष मे उसकी तनख्वाह दूनी हो गई परन्तु इसी समय मे सात वर्ष की लडाई के नाम से मशहूर युद्ध का आरम्भ हो गया और उसमे जिस पुस्तकालय मे वह नौकर था उसका भी नाश हो गया हीन को ड्रेस्डन से भाग जाने की नौबत आई और दीर्घकाल तक बिना किसी प्रकार का धन्धा किए

भटकते फिरना पड़ा ड्रेसडेन में उसका कुछ सामान पड़ा था वह उसे लेने लौटा तो उसने देखा कि नगर पर शत्रु गोले बरसा रहे हैं उसका सारा सामान ध्वंस हो गया वह दरिद्र था तो भी उसने एक स्त्री से विवाह किया यह स्त्री उसी कुटुम्ब की कन्या थी जिस घर में वह रहता था उसके कई एक मित्रों ने उसकी प्रशंसा करके उसे एक गृहस्थ की मिल्कियत की व्यवस्था करने की नौकरी दिलवा दी उसने कई साल तक इस जगह काम किया

1763 ई में जब सब ओर शान्ति फैल गई तब हीन ड्रेसडेन गया इस समय उसके दुर्भाग्य का अन्त हुआ उसे गोटिंजेन के विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के अध्यापक की जगह खाली थी वह मिल गई क्योंकि वह सत्पात्रता और योग्यता के लिए प्रसिद्ध हो चुका था अतएव इस जगह के लिए वही सर्वोत्तम समझा गया पन्द्रह वर्ष तक उसने इस जगह काम किया इस समय में एक के बाद एक करके जो पुस्तकें उसने प्रकट की और जो व्याख्यान दिये उनसे वह अपने समय के उत्तमोत्तम विद्वानों का शिरोमणि समझा गया उसके शिष्य उसे अपने पिता के समान सम्मान देकर पूजते थे सन् 1812 में जब उसकी मृत्यु हुई तब वहाँ के तमाम नागरिकों को अनुभव हुआ कि हमारे विश्वविद्यालय का और नगर का एक रत्न खो गया[1]

---

[1]नवरत्नजी ने जार्ज क्रेक की पुस्तक परस्यूट ऑफ नॉलेज अण्डर डिफीकल्टीज का कठिनाइयों में विद्याभ्यास नाम देकर अनुवाद किया था उसी का एक अंश

गिरिधर शर्मा के काव्य में बड़ा मनोहारी प्रकृति चित्रण मिलता है जो नायक-नायिका के सन्दर्भ में दिये गये रीतिकालीन ऋतुवर्णन आदि के समान निर्जीव एवं परम्परा पालन मात्र नहीं है। सरस्वती तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में इनकी कवितायें छपती रहीं इनकी कविताओं का मुख्य विषय स्वदेश प्रेम था इनकी मुख्य मौलिक काव्य-रचना मातृ वंदना है

—डा नगेन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास

परमेश्वर शर्मा

पिता के सम्बन्ध में जो देखा जो सुना

शिवदत्त यदि तू जीवित रहना चाहता है तो इस तेरे बच्चे को पाटनवालों के गोद रख दे इसके पगड़ी योग आ गया है यदि बालक गोद नहीं गया तो तेरी पगड़ी इसके बंधेगी—वृद्ध ज्योतिषी जयपुर निवासी शिवदत्त जी भट्ट से उनके चार वर्षीय एक मात्र पुत्र व्रजेश्वर की जन्म कुंडली देखकर चेतावनी दे रहे हैं झालावाड़ के राजगुरु श्री गणेशराम जी भट्ट का देहावसान हो गया है रियासत की ओर से महाराज श्री पृथ्वीराज जी द्वारा भिजवाया गया स्याना भी इस बीच जयपुर पहुंचा है स 912 में चार वर्ष का व्रजेश्वर भट्ट झालरापाटन आकर झालावाड़ के राजगुरु घराने का स्वामी बनता है माता हीराकुंवर (भट्ट श्री गणेशराम जी की पत्नी) एवं मामा (हीराकुंवर बा के भाई) राजाराम जी की संरक्षणता में बालक पढ़ लिख कर गृहस्थ बनता है

× × ×

'जा न निकल !' पिता के मुख से क्रोधपूर्वक ये शब्द निकल पड़ते हैं

भट्ट व्रजेश्वर अपने तृतीय पुत्र गिरिधर को श्रीमद् भागवत् का अध्यापन कर रहे हैं

सहसा बालक पूछ बैठता है 'पिताजी इस भागवत् में तो लिखा है शौनक

उवाच परीक्षित उवाच यह तो शुकदेव जी की नहीं हुई नहीं हो सकती तो वह भागवत् कौन सी है जो शुकदेवजी ने परीक्षित को सुनाई थी पिता के पास इन तर्कों का उत्तर नहीं है उनका सरल श्रद्धालु मन इस सहज जिज्ञासा को कुतर्क मान कर तिलमिला उठता है और वे बालक को उस दिन फटकार कर भगा देते हैं

× × ×

गिरिधर शर्मा की बचपन से ही अध्ययन में रुचि है दादी माँ हीराकुंवर बा की गोद में बैठ कर सुनी गई अपने पूर्व में अपठित प्रपितामह बलदेव भट्ट की ज्ञान प्राप्ति निमित्त की गई साधना की कहानी का गहरा प्रभाव मन में है शौक और भी है दंड बैठक लगाना भारी मुद्गर फिराना घंटों तैरना व शतरंज खेलना अत्यन्त प्रिय हैं परन्तु सब से अधिक रुचिकर तो है पुस्तक झालरापाटन के मदरसे में दर्जा सोयम ( ) तीन तक अध्ययन कर जयपुर में समवयस्का पत्नी गोमती देवी के साथ बैठ कर प्रभुदत्त का हुआ व्यास के सान्निध्य में साहित्य व व्याकरण का अध्ययन किया है पत्नी के देहावसान के बाद अध्ययनार्थ काशी आ गये हैं गुरु शिवकुमार जी शास्त्री इस शिष्य से अत्यन्त प्रसन्न हैं गुरुजी ने प्रसन्न हो कर एक दिन शिष्य मंडली के बीच कहा भी है—नवरत्नो हि घर में होने वाली दुर्घटनाओं के समाचार मिलते रहे हैं किन्तु अध्ययन अविच्छिन्न भाव से चल रहा है पिता के देहावसान का समाचार वज्रपात के समान आया मन निराशा से भर उठा व आत्म हत्या की तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई स्वयं के शब्दों में मैं गंगा के जल में उतरता चला गया छाती तक गहराई में पहुंच कर सोचा कि आगे छलांग लगा कर प्रवाह में अपने शरीर को विसर्जित कर दूं कि एक आवाज आई *ठहर ! अभी बहुत काम करना है मैं जैसे सोते से जाग पड़ा व बाहर निकल आया*

× × ×

काशी छोड़कर पाटन आना अनिवार्य हो गया है घर में वृद्धा माता विधवा भाभी व छोटा भाई है भवन व राज रियासत छोटी सी रह गई है पुराने राजा जालिमसिंह द्वितीय को अंग्रेजों ने गद्दी से उतार कर काशी भेज दिया है नये राजा श्री मदनसिंह के प्रति जनता में रोष है व स्वयं भी मौके न हैं एकाएक किसी पर विश्वास नहीं करते रियासत के साथ लोगों में चली गई जागीरी भूमि के एवज में नई भूमि दी है वह उजाड़ है संचित सम्पत्ति—सिक्कों के गहने—पिता के ऊपर अन्तिम क्रियाओं में खर्च किए गए हैं परिवार की अभावग्रस्त स्थिति को सुधारने में दोनों भाई मग्न हैं छोटा भाई जागीर में प्राप्त ऊसर भूमि को सुधारने-संवारने में बड़ा भाई विद्या के प्रसार में एवं राजदरबार में पारिवारिक परम्परानुसार राजगुरुत्व को सम्पन्नता प्रदान करने में

× × ×

श्री भवानीसिंह जी शासक नरेश हैं वे कसौटी पर कसने के आदी हैं बाहर से एकाधिक विद्वान झालावाड बुलाये गये हैं नरेश के सम्मुख नित्य विद्वन्मण्डली जुटती है शास्त्रचर्चा काव्यपाठादि होते हैं इस विद्वत्समाज में अस्तित्व ही नहीं बनाये रखना है वर्चस्व भी स्थापित करना है कभी के अधूरे छोड़े अध्ययन की क्षतिपूर्ति निमित्त घर पर स्वाध्याय दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है सैकड़ों ग्रंथों का प्रवाह आता चला जाता है नियमित स्वाध्याय गुरुता प्रदान करता है

× × ×

प्रसिद्ध डिंगल कवि मुरारीदास जी राजसभा में आये हैं कदाचित् झालावाड़ में राजकवि का आसन ग्रहण करने की आशा में वे डिंगल भाषा की क्षमता का पक्ष समर्थन गर्वपूर्वक करते हैं गिरिधर शर्मा कहते हैं कि संस्कृत की सी क्षमता किसी अन्य भाषा में नहीं है बातचीत के दौरान मुरारीदास जी कह उठते हैं — संस्कृत में छंद तो डिंगल का लिख लोगे पर वयणसगाई कहां सूं लावोगा? अगले दिन समागम में डिंगल के छोटियाला साणोर एवं प्रहास साणोर छंद में वयण सगाई का निर्वाह करते हुए संस्कृत गीत गिरिधर शर्मा से सुन कर मुरारीदास जी स्तब्ध रह गये हैं*

× × ×

श्री भवानीसिंहजी अंग्रेजी साहित्य के प्रशंसक हैं प्राचीन संस्कृत साहित्य के प्रति उनकी धारणा है कि उसमें अधविश्वासपूर्ण असंभव सी कथायें मात्र हैं गिरिधर शर्मा का कथन है कि उसमें जीवन के लिए प्रेरणा के साथ ही साथ रसात्मक ललित अंश यहां अन्य साहित्य की तुलना में बहुत अधिक है उनका आग्रह है कि भवानीसिंह जी संस्कृत साहित्य का अध्ययन करें श्री भवानीसिंह जी को केवल रात के समय ही फुरसत मिल सकती है गिरिधर शर्मा का डेरा कोठी पृथ्वीविलास के एक कमरे में पड़ जाता है एक कुकर है जिसमें दाल चावल दलिया बन सकता है अपने हाथ से भोजन बनाकर खाना व रात के बारह बजे तक संस्कृत के चुने हुए ग्रंथों का अध्यापन यह क्रम लम्बे समय तक चलता है

× × ×

28 वर्ष की अवस्था में 1 वर्ष की बालिका से विवाह हुआ है अब वधू ससुराल आ गई है जीविका के निमित्त शंकर देव गुप्ता का चूरा चना चूरण की

---

*ये तीनों गीत सद्वृत्तपुष्प में प्रकाशित हैं

मात्रा प्रत्य व्यक्तियों को दी गई मात्रा से अधिक है चूरण एक दम फाँक कर नाकर मुह बिगाड़ता है खूब जोरों से थूकता है व राजा को गालियाँ निकालता है इन्हीं के बहुत से के बीच चूरण लीला समाप्त होती है

× × ×

झालरापाटन में कोई नामी कवि रहते हैं ? सुकवि के सपादक श्री गयाप्रसाद शुक्ल सनेही अपने शिष्य श्री जगदम्बा प्रसाद हितैषी सहित कानपुर से आये हैं पौनो शर्मा जी के पास बैठे हुए पूछ रहे हैं

क हैया शर्मा जी आवाज देते हैं और एक युवक हाथ में झाड़ू लिये हुए भीतर से आकर सामने खड़ा हो जाता है सनेही जी आश्चर्य से देखते हैं

यह आपके घर में झाड़ू निकालने वाला कवि कान्ह है ?

क हैया सनेही जी को अपनी कविता सुना और घर का सेवक परन्तु शर्माजी ने ज्येष्ठ पुत्र ईश्वरलाल का अभिन्न मित्र कन्हैयालाल कायस्थ बड़ जोश के साथ अपनी रचना सनेही जी को सुना रहे हैं सुकवि में समस्या पूर्ति के छपने पर सनेही जी को लिखा गया छदोबद्ध उपालभ भी उसमें है लानत तुझ पर मरे सनेही जो न छपे मेरी मधुशाला

गुरुदेव ने यह चीज मगाई है राजमहल से आया हुआ सेवक एक कागज का पुर्जा देता है जिसमें लिखा गया है द्राक्षासव अनवर नरेश जयसिंह झालावाड़ नरेश श्री राजेन्द्रसिंह जी के सम्मान बन कर आये हुए हैं महफिल जमी हुई है शराब का दौर चल रहा है अलवरेन्द्र ने शर्माजी से भी पीने का आग्रह किया है शर्माजी ने कहा है मैं पिऊगा लेकिन अपनी स्पेशल सेवक घर से द्राक्षासव की शीशी ले आया है शर्माजी स्वय भी पी रहे हैं और अलवरेन्द्र का प्याला भी उसी से भर रहे हैं

गुरुदेव आप क्या खा रहे हैं भीतर से आ कर कुर्सी पर बैठते हुए महाराज राजेन्द्रसिंह जी नेत्रहीन गुरु से पूछते हैं

महाराज यह सुदर्शन चूरण है मलेरिया की बहुत अच्छी दवा है—कुनेन से अभी कभी बहरापन व सिर में चक्कर आने की शिकायत हो जाती है लेकिन इससे नहीं होती

गुरुदेव ! थोड़ा मुझे भी दीजिए चूरण बेहद कड़वा है चखकर राजा ने पूरी पुड़िया ही माग ली है

भाया ! देखो गुरुदेव कितना बढ़िया चूरन लाते हैं ये हैं रियासत के दीवान भाया शादीलालजी महाराज हाथ से मिला चूरन मुंह में रखकर मुंह दबाये चुपचाप बैठ हैं

इसी समय आते हैं बाबू अमरनाथ गंभीर गंभीर देखा गुरुजी कितना बढ़िया चूरन लाये हैं गंभीरजी भी चूरन मुंह में डाल बैठ जाते हैं एक-एक कर दरबारी आते जा रहे हैं राजा के दिये चूरन को मुंह में दबाये बैठ हैं वह भी तो कथा !

और अब आता है शंकर सेठ (महाराज का विदूषक) जो उनके पुत्रों को शिक्षा देते हैं मन को आघात लगता है और गिरिधर शर्मा अर्थ की दुनिया में प्रवेश करते हैं रूई के मुआयदे के सौदों में काम कर कुछ दिन बाद सेठ विनोदीराम बालचंद की दुकान (बंकिंग फर्म) पर दस हजार रुपया जमा करते हैं एक बार लगा चस्का लम्बी अवधि तक चलता रहता है परंतु उतनी ही आकस्मिकता से रुक भी जाता है

X X X

हम दुनिया का आठवां आश्चर्य देख रहे हैं इन्दौर के डाक्टर शर्माजी की स्वास्थ्य परीक्षा कर कह रहे हैं उन्हें कफ में खून आता है डाक्टरों का कहना है आप को इस समय बिस्तर पर होना चाहिए परंतु आप इतनी दौड़ धूप कर रहे हैं आपका फेफड़ा इतना खराब हो चुका है कि आप ६ मास से अधिक जीवित नहीं रह सकते *सम्भवतः टी बी के कीटाणुओं का नहीं अपितु Ca के कीटाणुओं का है फिर भी* है तो संक्रमण ही" स्वयं शर्माजी के शब्दों में मैं बम्बई गया और वहां भट्टजी से मिला उन्होंने मुझे च्यवनप्राश व्याघ्री हरीतकी अवलेह एवं द्राक्षासव का सेवन करने की सलाह दी औषधियां मैंने सेरों नहीं मनों की मात्रा में खा डालीं फिर इन्दौर के डाक्टरों को बतलाया उन्होंने कहा अब आप इस बीमारी से तो मरोगे नहीं और किसी बीमारी से ही मर सकते हैं

X X X

मरे से पड़ा गिरिधर शर्मा जी को जन्म बावला है अब मुसलमान बादशाह है झालरापाटन के मिट्ठ विश्विद्यालय भी धनवान मनीषी घर में आकर कह रहे हैं यही खबर भोलेकुआ भी पहुंचती है जिसे सुन कर चूड़ावत सरदार लाला भूरजी एकदम चल पड़ते हैं शर्माजी के घर पहुंच कर देखते हैं कि वास्तव में ताजी जो आये हुए हैं व कलमे का प्याला तैयार किया जा रहा है चूंड सरदार की खिंची हुई तलवार देख कर काजी जी भाग गये हैं व शर्माजी रह गये हैं प्रभाव स्तब्ध

X X X

देखा। गुरु चेलों में ही ठनेगी तो काम कैसे चलेगा? और मसविदा भी तो आपका ही तैयार किया हुआ था। कौंसिल से लौट कर महाराज भवानीसिंह गिरिधर शर्मा से कह रहे हैं विधवाओं की दशा सुधारने हेतु एक कानून कौंसिल में पेश हुआ था जिसका मसविदा तैयार किया था गिरिधर शर्मा ने परन्तु राय के लिए पेश किये जाने पर विरोध भी किया था कानून पास हो गया किन्तु सर्वसम्मति से नहीं एक मत के विरोध सहित गुरुदेव का कहना था 'महाराज मसविदा तैयार किया था आप का आदेश पालन करने के लिये परन्तु कौंसिल में आपने जब राय मांगी तो मैंने अपनी स्वतन्त्र राय दी विधवाओं की दशा का सुधार किसी सरकारी कानून द्वारा नहीं अपितु सामाजिक विचार क्रान्ति द्वारा होना चाहिए

× × ×

सेठ जी ये पण्डितज्यो से ज्यादा मूंडे मत लगाओ नी तो कोई दन रुप्या पासो भी नगदो देगा—सेठ विनोदीराम बालचंद की फर्म के मुनीम अपने सेठ जी को सलाह देते हैं पडज्यो अर्थात् पंडित गिरिधर शर्मा पर किस्त बांध दी थी

भजी ये क्या है हम से पूछा जिसका ले लेते हैं दो नहीं आज ही जेल जा रहे हैं

राजा के मुंह बरबस फूट पड़ा अरे ये मुझ से नहीं कहते उत्तर था—'कहा उससे जाय जो जानता न हो जो सब कुछ जानता है उससे क्या कहा जाय?

× × ×

राजन आप के राज्य में एक विद्वान् इतना कष्ट पा रहा है मुझे इस बात का खेद है कहो तो मैं उसे अपने राज्य ले जाऊं नाथद्वारा के पीठाधीश्वर झालावाड़ आये हुए हैं व भवानीसिंह जी से कह रहे हैं महामना मदन मोहन मालवीय ने भी महाराज से आग्रह किया है कि गिरिधर शर्मा को हिन्दू युनिवर्सिटी में संस्कृत विभागाध्यक्ष के रूप में नियुक्त करने की अनुमति प्रदान करें महाराज को ये दोनों प्रस्ताव स्वीकार नहीं हैं उपजाऊ भूमि के स्थान पर उपजाऊ भूमिवाला गडारी नामक ग्राम जागीर में स्वीकृत किया गया है परन्तु इस बीच प्यारा भाई देवलोक वासी हो चुका है

× × ×

महीने का सन्टर में 20) मासिक पर नौकरी कुछ वर्षों से चालू है पर दीवान श्री परमानन्द कुछ नाराज हैं क्योंकि गिरिधर शर्मा रोज दोपहर में पड़ा भर नींद

निकालते हैं दो आदमियों का काम सुपुर्द कर दिया गया है परन्तु फिर भी वे सोते पाए गये एक और आदमी का काम दे दिया गया है अर्थात अन्य व्यक्तियों की तुलना में तिगुना कर दिया गया है फिर भी सोना नहीं छूटा काम का चेकिंग किया गया धरा हुआ कोई काम नहीं बार बार चेकिंग काम पूरा कहां-पूरा

× × ×

आज घर में आटा नहीं है चोकर को पीस कर एक मोटी रोटी सेकी गई है छोटा भाई कहता है दादा ! तू खाले बडा भाई कहता है भाई तू खाले' दोनो भूखे सो जाते हैं

× × ×

अस्तित्व के लिए अथक परिश्रम पुस्तकों का अनुवाद कर प्रकाशकों को बेचना बम्बई से पत्र आया है आपने जो 200/ की वी पी द्वारा पुस्तक भेजी है उसे छुडाने में हम असमर्थ हैं हमारा स्वल्प का छोटा सा प्रेस है परिवार के व्यक्ति ही मिल कर कम्पोज व छपाई का काम करते हैं किसी प्रकार काम चला पा रहे हैं यदि आप 50/ में वी पी छोडने के लिये पोस्ट ऑफिस को लिखें तो बडी कृपा हो आग्रह स्वीकार करते हुए पोस्ट आफिस को लिख दिया गया है जो कुछ राशि प्राप्त हो उसी से काफी सहारा परिवार को मिलेगा

× × ×

अर्जी में क्या है यह तो हम से पूछो

दरबार राजदरबार में गिरिधर शर्मा के वाल्य की शुरुआत हो रही है कि इसी समय श्री धनीराम जी बोल उठते हैं ये दीवानी अदालत के आदमी हैं इनकी अदालत में पेश हुए मुकदमे को खारिज करने आये हैं भट्ट चन्द्रशेखरजी के समय के 200/ उधार की वसूली के लिए पत्र इस गुरु ने र वादी का कहना था कि यदि इन्हें जेल की सजा सुना दी जाये तो रकम अभी वसूल हो सकती है गिरिधर शर्मा का कहना था कि हमें रकम देने में इनकार नहीं है परन्तु एक मुश्त नहीं दे सकते किश्तों में चुका सकते हैं न्यायाधीश ने वादी की मांग अस्वीकार कर दी

× × ×

'पण्डितजी परनाम

कौन है भाई ?

मैं हू मोहम्मद हुसेन यहा मोहरी के स्कूल मे हैडमास्टर हू आप से सस्कृत पढना चाहता हू

भाई सस्कृत से पहले हिन्दी पढो और अरबी फारसी के विद्वान् मुन्शी मोहम्मद हुसन कादिर भाई नियमित विद्यार्थी बन गये राष्ट्र भाषा प्रचार समिति की निरन्तर परीक्षाय दी और श्री श्रीपाद दामोदर सातवलेकर की सस्कृत पाठमाला के 24 भाग मगवा कर पढे झालरापाटन से मन्दसौर स्कूल के तबादले का आदेश आया तो त्याग पत्र देकर छोटी सी दुकान खोल ली परन्तु हिन्दी सस्कृत का अध्ययन नहीं छोडा गुरु के आग्रह को स्मरण मे रखते हुए सात वर्ष तक परिश्रम करते हुए बहिन शकुन्तला व भाई परमेश्वर के सहयोग से 'दीवाने हाफिज' का फारसी से हिन्दी मे तरजुमा किया

× × ×

पण्डितजी महाराज को राजा है राजा !

महाराज श्री राजेन्द्रसिंह 43 वर्ष की अल्पायु मे दिवगत हो चुके हैं। उनके पुत्र श्री वीरेन्द्र सिंह (श्री हरिश्चन्द्र सिंह) अब नरेश हैं 'सुधाकर व आनन्द कला' का प्रकाशन चल रहा है शर्माजी अपने छोटे पुत्र के साथ रोज जैन प्रेस जाकर पुस्तक के मुद्रण कार्य की देख रेख करते हैं प्रूफ सुनना सशोधन करवाना व मुद्रण आदेश देना प्रेस के समय के बाद ड्योढी पर उपस्थित होते हैं सध्या के समय श्री हरिश्चन्द्र जी घूमने निकलते हैं तो शर्मा जी के पास आते हैं और शर्मा जी आशीर्वाद पूर्वक उनकी पीठ पर प्यार भरा हाथ फेरते हैं यह क्रम चार पाच दिन चला है कि आज हरिश्चन्द्र जी के घूमने चले जाने के बाद ड्योढी के मुसाहिबजी शर्माजी के व्यवहार पर प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं जो आख महाराज राजेन्द्रसिंह के जीवनकाल मे शर्माजी के तेज से अभिभूत विनीत नम्र रहती थी वे ही आज अमर्ष से भरी हुई तिरस्कार प्रदर्शित कर रही हैं शर्माजी चुप हैं और चारा भी क्या है ? बडा परिवार है बडा पुत्र रोगो से आक्रान्त है वह बचपन से ही अस्वस्थ है बीच मे राज्य सेवा में नियुक्त भी हुआ परन्तु बीमारी के कारण निभा नहीं पाया तो क्या राजाश्रय छोडा जा सकता है ? सहन करना ही होगा प्रिय शिष्य सुधाकर की रचना सुधाकर काव्य मसि एव मधुशाला मधुबाला का प्रकाशन कार्य भी तो करना है

× × ×

समय पलट गया है भालावाड मे अब कवि सम्मेलन और साहित्यिक समारोह नहीं होते श्री राजेन्द्रसिंह जी के परिजन भी बिखरते जा रहे हैं शर्माजी का समय अब घर पर ही साहित्य साधना मे व्यतीत हो रहा है श्रीमद् भागवत का पद्यानुवाद भारतीय षट्दर्शन की दोहावलिया चाणक्य सूत्रकारिका गीताञ्जलि का संस्कृत अनुवाद आदि बहुत कुछ है करने को मुल्ला मोहम्मद हुसन रोज ही या जाते हैं कुरान शरीफ की सूरे फातिहा का संस्कृत भाषान्तर शंकराचार्य कृत चर्पट पञ्जरिका का उर्दू तर्जुमा शेख सादी के करीमा का संस्कृत हिंदी व गुजराती मे भाषान्तर और भी न जाने क्या-क्या बोलते हैं परिवार वाले पत्नी पुत्री शकुन्तला विमला पुत्र परमेश्वर जो भी उपलब्ध हैं लिखते है रात्रि को सोते हैं तो पेंसिल व कागज लेकर रात मे जो भाव उठते है तो स्वयं टेढे मेढे अक्षरो मे लिख लेते हैं सवेरे पुत्र को या पुत्री को पुर्जा देते हैं, सुनते हैं आवश्यक हो तो बतलाते हैं व लिखवा लेते हैं

×　　　×　　　×

भारत आजाद हो गया है सारा देश खुशिया मना रहा है शर्माजी की वाणी फटती है — आह ! मुझ को हो रही है वेदना देख भारत के बलात् जाते किये

धर्म निरपेक्षता की बात पर प्रतिक्रिया होती है —

ऐश्वर्य मात्रमिच्छन्ति ते जना नष्ट दृष्टय ।
धर्म हीनस्य राष्ट्रस्य का शक्ति जीवन स्थिरम् ॥

×　　　×　　　×

'मुझे गुरुजी के चरणो के पास बैठा दे' शर्माजी अपने पुत्र से कहते हैं

वे अपने श्रद्धेय गुरु श्री गिरधरजी शास्त्री महिडे के दर्शन करने उनके निवास स्थान पर आये हैं साथ म पत्नी छोटा पुत्र एवं ज माता राधागोपाल पड्या न है गुरुजी भी नेत्रहीन हैं स्वयं भी हैं एवं अपरा म रहते हैं इस समय व भोजन कर सो रहे हैं आहट पाकर पूछते हैं कौन है ?

कोई नहीं बोलता

शर्माजी नीचे बैठ कर गुरुजी के पैर पकड लेते हैं गुरुजी क्रोधपूर्वक लात जमा कर पूछते हैं कौन है दुष्ट ! बोलता क्यों नहीं ?

'गिरिधर है महाराज

अरे ! गिरिधर ! रतन ! झालरापाटन वाना !! गुरुजी उठ बठते हैं कुशल क्षेम आदि वर्ता के उपरान्त गुरुजी कहते हैं अजी गिरिधर ! बोले क्यो नही ? लाल क्यों आई ?

उत्तर था महाराज ! यह प्रसादी जीवन मे कब मिलती ?

× × ×

महगाई बढती जा रही है जागीर की बधी हुई आमदनी के सिवाय आय का अन्य कोई साधन नहीं है छोटे पुत्र को म्युनिसिपल बोर्ड झालरापाटन म राज्य सेवा मे नियुक्ति मिली है उसे 35/ मासिक मिलते हैं राजस्थान सरकार ने जागीरो का प्रबध अपने हाथ मे ले लिया है वसूली तहसील करती है प्रतिशत काट कर राशि जागीरदार को दे दी जाती है परन्तु वह कब मिले निश्चित नहीं है

× × ×

बडे पुत्र ईश्वरलाल को लोकवाणी प्रेस में 125/- मासिक पर काम मिला है वह अपने परिवार सहित जयपुर चला आया है इधर राजस्थान सरकार ने जागीरो को पुनग्रहीत कर लिया है अब जागीरदारो को मुआवजा मिलेगा कब ? जब उनके मामलों पर विचार कर लिया जावेगा

× × ×

म्युनिसिपल बोर्ड में सचिव पद तोड दिया है अत छोटे पुत्र की नौकरी छूट गई है पुन नियुक्ति के लिए दौड धूप करने पर शिक्षा विभाग म सहायक अध्यापक पर नियुक्ति मिली है पुत्री शकुन्तला भी स्थानीय बालिका विद्यालय में सहायक अध्यापिका है

× × ×

पुत्र ईश्वरलाल का लोकवाणी प्रेस का काम समाप्त हो गया है अब उसे लालचन्द जी सेठी की अध्यक्षता म सचालित विनोद मिल्स म 150/- मासिक का सेवा काय मिला है वह सपरिवार उज्जन है परन्तु उसका स्वास्थ्य क्षीण होता जा रहा है उसे दो बार लम्बी-लम्बी अवधि के लिये अस्पताल में भरती करवाया जा चुका है

× × ×

पुत्र ईश्वरलाल को एम्बुलेंस में उज्जैन से पाटन पहुंचा दिया गया है रात्रि का समय है आंखों से पानी बरस रहा है रोग से जूझता हुआ जर्जर शरीर दम तोड़ देता है बहिन शकुन्तला रो रही है पत्नी माधुरी देवी बेहोश है मां रत्न ज्योत्स्ना विलाप कर रही है भाई परमेश्वर किंकर्तव्य विमूढ़ सा खड़ा ताक रहा है और शर्माजी—उन्हें बार-बार पक्षाघात का दौरा सा पड़ता है यद्यपि किसी समय डाक्टर शिवचरण भटनागर ने कहा था कि महाराज आपका दिल तो शेर का सा है

× × ×

पुत्र अपने पीछे काफी गृहस्थी छोड़ गया है विधवा पत्नी चार पुत्र व दो पुत्रियां सबसे बड़ा पुत्र योगेश्वर अपनी बुआ शांति के पास जयपुर में रह कर द्वितीय वर्ष कला में अध्ययन कर रहा है सबसे छोटा सत्येश्वर तीन वर्ष का है

× × ×

आय का साधन पुत्री शकुन्तला व पुत्र परमेश्वर को मिलने वाला नगण्य सा वेतन है संचित पूंजी को बढ़ती हुई महंगाई बहुत कुछ निगल गई है और अब तो वह और भी तेजी से समाप्त होती जा रही है राजस्थान विश्वविद्यालय से एम ए (पूर्वार्द्ध) में कम अंक प्राप्त होने पर योगेश ने मध्य भारत वि वि में प्रवेश लिया है वह इन्दौर है छोटे भाई महेश्वर जयपुर में बी ए में पढ़ रहा है राजस्थान साहित्य अकादमी ने 10/ मासिक आदर वृत्ति दी है उससे कुछ राहत मिली है फिर भी प्रतीक्षा है बच्चे कब पढ़ लिखकर गृहस्थी संभालते हैं

× × ×

बेटा जो हो गया वह हो गया अब उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं शर्माजी अपने छोटे पुत्र परमेश्वर से कह रहे हैं परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये एक ट्रेडिंग कम्पनी में साझा किया परन्तु पार्टनरशिप के झगड़ों में सिलसिला बरबाद हो गया व भारी नुकसान लगा है वृद्ध पिता कह रहे हैं मैंने धन्धे के मौलों में लाखों खोये व लाखों कमाये हैं एक बार एक बहुत बड़ा सौदा कर बैठा था अचानक भाव नीचे जाने लगे आशंका थी कि जो कुछ कमाया है वह और जमीन जायदाद सब कुछ चला जावेगा वे दो महीने मैंने घोर मानसिक कष्ट में बिताये थे परन्तु सौदे की तिथि जब आई उस समय तक भाव वापिस कुछ बढ़ गये थे व सौदा बिना नफे-नुकसान के बराबर पर पूरा हो गया था उसके बाद से मैंने सट्टा न करने की

कसम खा ली भविष्य में ध्यान रखना कि बहकावे में आ कर किसी के चक्कर में न पड़ो

× × ×

शरीर क्षीण होता जा रहा है वर्षों से चला आया कमर व घुटनों का दर्द भी बढ़ता जा रहा है अभी 8 10 दिन पहले ही 80वीं वर्षगाठ मनाई गई है शर्मा जी 6 7 दिन से ज्वरग्रस्त हैं वैद्य कृष्णलाल मिश्र औषधि दे रहे हैं परन्तु कोई प्रभाव नहीं है वैद्यजी का कहना है कि इन्हें लीवर का कैंसर है पर तु इनके हृदय की मांसपेशियां इतनी मजबूत हैं कि वे इन्हें जीवित रख रही हैं

× × ×

30 जून 1961 आज नाड़ी क्षीण होती जा रही है दो दिन से भारी तड़पन है बराबर उठ ने का आग्रह करते हैं सहारे से उठकर थो ी देर बैठ रहते हैं व फिर लेट जाते हैं जीभ पर कांटे उभर आये हैं

रोते क्यों हो ? आंचल से शर्मा जी की आंखें पोंछते हुए र नप्यो स्ना देवी पूछती हैं

कुछ नहीं री ।।। और शब्द नहीं निकलते जबान तुतलाने लगी है दावि म किस समय जीवन लीला समाप्त हो जाये कहा नहीं जा सकता निरन्तर निगरानी रखनी है आधी रात तक परमेश्वर पास म रहा है बार-बार नाड़ी देखता रहा है नाड़ी लगातार क्षीण होती चली जा रही है बारह बजे शकुन्तला आ बैठती है लगभग 3 बजे जोरों की घरघराहट शकुन्तला की पुकार और यह क्या हुआ।
कुहराम गीतापाठ पौत्र मगेश द्वारा पाठ मौन भाव से मन्त्रजाप पड़ौसी आलाराम जी आय द्वारा फोन पर शिक्षा मन्त्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय को संदेश—प्रात सात बजे रेडियो न्यूज—राजमाता हीराकुंवर बा द्वारा रेशमी चादर भेजना—शवयात्रा—अग्निदेव द्वारा आत्मसातीकरण

समकालीन गद्य

नवरत्न जी के समय का गद्य-लेखन

हिन्दी गद्य के जिस मंच पर पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके समकालीन लेखक खड़े थे वहां पद्य से मुकाबला तो था ही लेकिन उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण एक विदेशी संस्कृति के भारी दबाव से बचाव की तैयारी थी। द्विवेदी समर्थ सामान्य और अभिजन पक्ष के लोग थे और उन्होंने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि विदेशी सत्ता के प्रभाव को तोड़ने के लिए भाषायी प्रभाव को तोड़ना जरूरी है। इस तरह ही साहित्यकारों के संघर्ष को जन आन्दोलन का रूप दिया जा सकता था। यद्यपि उन्होंने स्वयं भी साहित्यकारों की एक पूरी की पूरी पीढ़ी हिन्दी-गद्य कविता कहानी उपन्यास लिखने के साथ-साथ पत्रकारिता भी करने लगी। साहित्यिक पत्रकारिता के वे दिन अद्भुत उन्मेष के थे। सरस्वती हो या कि माधुरी या दूसरी कोई पत्रिका वह केवल साहित्य की नहीं थी बल्कि विस्तृत ज्ञान और घटनाओं को प्रकाश में लाने वाली थी। यों हिन्दी में एक साथ ज्ञान विज्ञान की अनन्त सामग्री प्रकाशित होने लगी। भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विदेशी भाषाओं में लिखे गए नाना अनुशासनों की इतनी बहुमूल्य सामग्री हिन्दी पत्रिकाओं में पढ़ने को मिलने लगी कि पाठक अंग्रेजी की अनिवार्यता का तर्क भूलते गये।

यह देखने की बात है कि राजस्थान जैसे पिछड़े और सामन्ती आतंक से दबे घिरे प्रांत में—जिसे तब राजपूताना कहते थे—राष्ट्रीय चेतना की रोशनी फैलाने का

वोस हिन्दी-समर्थकों ने किया उनमे सबसे आगे पण्डित गिरिधर शर्मा नवरत्न पण्डित रामनिवास शर्मा लज्जाराम मेहता लक्ष्मीसहाय माथुर कृष्णगोपाल माथुर कन्होमल भाल द ड नरेश भवानीसिंह हरिभाऊ उपाध्याय तथा दूसरे अनेक विद्वान लेखक थे इन लेखकों का काम था पत्र पत्रिकायें निकालना हिन्दी संस्थान संस्थाएं स्थापित करना विश्व महत्व की साहित्यिक अथवा दूसरे अनुशासनो की पुस्तकों का अनुवाद करना और रियासतो मे हिन्दी को राज-काज की भाषा बनाने के लिए दबाव डालना वे इस तरह स्वतन्त्रता संग्राम क हिस्सेदार और सांस्कृतिक मोर्चे पर सब सजग सिपाही थे सन् 1900 मे राजपूताने की एक छोटी सी रियासत से (झालावाड) प गिरिधर शर्मा ने विद्या भास्कर नामक पत्रिका निकाली जिसमे प्रकाशित होने वाला साहित्य मातृभूमि के लिए उत्सर्ग की अदम्य शक्ति देता था वहीं से बाद में प रामनिवास शर्मा ने ओरम नाम की पत्रिका निकाली जो सरस्वती और माधुरी के बराबर सम्मानित हुई प रामनिवास ने गद्य-लेखन का जबरदस्त काम किया ओरम की सम्पादकीय टिप्पणियाँ उनके विस्तृत ज्ञान को तो बताती ही हैं साथ ही उस शिल्प से भी परिचित कराती हैं जो गद्य को पद्य से अलग करता है शर्माजी उस समय तमाम हिन्दी की पत्रिकाओं में छपे

प गिरिधर शर्मा के समय लिखा जाने वाला गद्य दरअसल द्विवेदीकालीन गद्य परम्परा का है इसलिए उस समय के राजस्थान के चार हिन्दी लेखकों के आलेख यहाँ प्रस्तुत हैं ये आलेख शिक्षा हिन्दी भाषा वैज्ञानिक आविष्कारो और पत्रिकाओं म लिखी जाने वाली टिप्पणियों की प्रकृति से परिचित कराते हैं और उस समय के हिन्दी लेखन तथा शैलियो की जानकारी देने म सहायक होते हैं

यह तथ्य ध्यान आकर्षित करता है कि कुछ विषय जिन्हे हम अपनो के कारण मानते थे वे इतने पहले जाने पर भी ज्यो की त्यो बनी हुई हैं जैसे शिक्षा और भाषा की समस्याएं वे व्यापक जन हित से जुडे प्रश्न विरासत मे मिले होने क कारण अनुत्तरित नही हैं यदि उस तगडी शरारत और शातिराना खेल के हिस्से हैं जिसे अंग्रेज भी खेल रहे थे और जिन्हें अनुत्तरित रखना नव उपनिवेशवाद की ओर देखने वाली आज की नौकरशाही को भी पसन्द है इस सत्य से हम आज भी मुकर नहीं सकते कि भाषा और शिक्षा की लड़ाई अहम् होती है इसलिए सब से अधिक भ्रान्तियाँ और असमंजसता यहीं पैदा होती हैं और यहीं सबसे अधिक शक्तिशाली मोर्चा लगाना पड़ता है

लेखक कन्होमल धौलपुर लज्जाराम मेहता बूंदी कृष्णगोपाल माथुर भ रतपाटन तथा प रामनिवास शर्मा भास वाड के हैं

म प

कन्नोमल

शिक्षा-सुधार

इस समय सभी प्रकार के सुधारों का आंदोलन हो रहा है अधिकांश मनुष्यों का ध्यान राष्ट्रीय सुधार की ओर है पर परमावश्यक सुधार जो सब सुधारों का मूलाधार है शिक्षा-सुधार है शिक्षा दो प्रकार की है सार्वजनिक शिक्षा और उच्चकोटि की शिक्षा दोनों प्रकार की शिक्षा जो इस समय दी जा रही है हमारे प्रातिविकास के अनुकूल नहीं है न यह जातीय ही है और न वह देश और काल की आवश्यकता के अनुसार ही है उसके प्राप्त करने में जितना समय दिया जाता है जितना परिश्रम और व्यय किया जाता है उतना लाभ नहीं है सर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सत्य कहा है कि हमारी शिक्षा वैसी ही है जैसे किसी घोड़े के लिए गाड़ी घोड़ा गाड़ी में जोता जाता है वह उसे लिये लिये फिरता है पर उसे गाड़ी में जुतने की कोई इच्छा नहीं है और न वह उससे कोई लाभ ही उठा सकता है वह जानता है कि गाड़ी में जुतने के लिए ही उसे दाना चारा दिया जाता है यदि वह उसमें न जुते तो उसको अपना पेट भरना कठिन हो जायगा हम लोग भी शिक्षा की गाड़ी में इसी रूप से जुते रहते हैं पर न तो उसमें हमारी कुछ रुचि है और न उससे हम कुछ सच्चा लाभ ही उठाते हैं विद्याध्ययन का उद्देश्य केवल पेट भरना ही नहीं है प्रत्युत उससे लौकिक और पारमार्थिक चमत्कार को प्राप्त करना है जिससे सांसारिक सभ्यता और आध्यात्मिक

ज्ञान बद हमारे प्राचीन ऋषि और महर्षि विद्या को इसी तरह से पढ़ते थे और यही कारण है कि वे हमारे लिए विद्या और ज्ञान का ऐसा विशाल भण्डार छोड़ गए हैं किसी भी समय की प्राचीन कालीन सभ्यता में विद्या क्रय विक्रय का विषय नहीं था यह तो केवल नवीन सभ्यता में ही है

इस बात को जाने दीजिये इस पर तो हम फिर कभी लिखेंगे इस लेख का विषय तो उच्चकोटि की शिक्षा और विशेषतः सार्वजनिक शिक्षा ही है और इसी पर हम यहां विचार करना है कि ये दोनों प्रकार की शिक्षाएं कैसी होनी चाहिये ? और इनके प्रचार और प्रसार के क्या उपाय हैं ?

यदि मैट्रिकुलेशन परीक्षा तक पढ़ना प्रचलित सार्वजनिक शिक्षा है तो इतनी शिक्षा प्राप्त करने में ही लड़कों को 10 या 11 वर्ष लग जाते हैं और इस परीक्षा के पास करने पर उनकी योग्यता कुछ भी नहीं होती है न मातृभाषा ही आती है और न अंग्रेजी में ही पूरे होते हैं न लोग उनसे कोई काम भी अच्छा नहीं हो सकता है जब तक कोई दूसरी शिक्षा मिले या किसी दफ्तर में काम करते कुछ दिन हो जाय तब कहीं कुछ काम चला सकते हैं सार्वजनिक शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि उसके प्राप्त करने में न तो अधिक काल लगे और न उसे प्राप्त करने के बाद लड़का ऐसा बना ही रह जाए कि वह किसी तरह का काम भी न कर सके उसे कम से कम ऐसा योग्य अवश्य हो जाना चाहिए कि वह अपने और अपने घरवालों के लिए खाने पहनने लायक पैदा कर सके

अंग्रेजी राज्य में शिक्षा की व्यवस्था सरकार के हाथ में है वह जो कुछ करे वही ठीक है यह क्या हम जातीय और देशकाल के अनुकूल शिक्षा देने लगे इसके अतिरिक्त उनके विचार बदल रहे हैं जिनको व्याय में परिणत करने में लाखों रुपयों की आवश्यकता है देशी राज्यों में यह शिक्षा बड़ी सुगमता से प्रचलित हो सकती है क्योंकि राजा महाराजाओं को अपने राज्यों में सब कुछ करने का पूर्ण अधिकार है यह बात समझ में नहीं आती कि वे अंग्रेजी शिक्षा की क्यों नकल करते हैं ? वे अपनी प्रजा की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा दे सकते हैं यदि अंग्रेजी दफ्तर जो देश भाषा से भिन्न हैं अंग्रेजी दफ्तर अपनी भाषा के लिए रखे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है पर हमारे राजा महाराजा अपनी रियासतों में अंग्रेजी भाषा में दफ्तर रखते हैं यह बड़ा दुःख की है उन्हें तो अपने सब दफ्तर हिन्दी में ही रखने चाहिए क्योंकि उनकी अधिकांश प्रजा यही भाषा जानती है जब यह बात मानली तो उनको अपनी प्रजा हित के लिए शिक्षा भी वैसी ही देनी चाहिए न कि अधूरी अंग्रेजी शिक्षा सार्वजनिक शिक्षा तो देशी राज्यों में तत्काल ही प्रचलित हो सकती है, इस प्रकार

भी होनी चाहिए कि शिक्षा का मुख्य माध्यम हिन्दी हो अंग्रेजी और उर्दू द्वितीय भाषाओं के तौर पर पढ़ाई जाय शिक्षा प्राप्त करने में लड़के का 6 या 7 वर्षों से अधिक समय न लगे

पहले चार वर्षों की शिक्षा एक ही होनी चाहिए इस समय में लड़के को हिन्दी भाषा में लिखना पढ़ना बहुत अच्छी तरह आ जाना चाहिए पहले वर्ष में तो वह केवल हिन्दी का ही अभ्यास करे दूसरे वर्ष से उर्दू या अंग्रेजी द्वितीय भाषा के तौर पर यह चार वर्ष का पाठ्यक्रम ऐसा रखा जाय कि लड़का हिन्दी का अच्छा ज्ञाता हो जाय और कुछ उर्दू और अंग्रेजी से भी परिचित हो जाय इन शिक्षा संस्थाओं के लिए सामान्य ही और उसके प्रचार के लिए स्थान स्थान पर पाठशालाएं हों जब लड़का चार वर्ष की पढ़ाई पूरी कर ले और प्रवेशिका परीक्षा (जो इस शिक्षा को समाप्त करने पर होगी) पास कर ले तो उसे दो वर्ष की ऐसी शिक्षा दी जाय जो उसके लिए परमोपयोगी हो और जिसके द्वारा वह अपना जीवन निर्वाह भी कर सके ऐसी शिक्षा कैसे दी जा सकती है—इसे सुनिये —

यदि राज्य बड़ा हो तो प्रत्येक सूबे या प्रांत में और यदि छोटा हो तो सिर्फ राजधानी में ही एक लोक हितकारी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाय इस विद्यालय के निम्नलिखित स्कूल हों और प्रत्येक स्कूल में दो वर्षों की शिक्षा हो पूर्वोक्त चार वर्ष की शिक्षा प्राप्त करने के बाद लड़का चाहे जिस स्कूल में दो वर्षों की शिक्षा के लिए भर्ती हो और जब पढ़ चुके तो योग्यता का प्रमाणपत्र प्राप्त करे विश्वविद्यालय में ये स्कूल हों शिल्प कला स्कूल विज्ञान स्कूल व्यापारिक स्कूल औद्योगिक स्कूल कानून का स्कूल मेडिकल स्कूल आयुर्वेदिक स्कूल कृषि स्कूल इंजिनियरिंग स्कूल संस्कृत स्कूल क्लर्क या मुत्सद्दी स्कूल उपदेशक स्कूल इत्यादि जैसी राज्य की आवश्यकता हो वैसे ही एक स्कूल और बढ़ा दिया जाय इन सब स्कूलों में जो पुस्तक पढ़ाई जाय वे सब इस प्रणाली पर लिखी हों कि थोड़े में बहुत आ गया हो और उनमें इन 2 विषयों के मोटे मोटे सिद्धान्त सभी निर्दिष्ट हों ऐसी पुस्तकों की रचना करनी होगी और इस काम के लिए एक पुस्तक रचना-समिति स्थापित करनी होगी यह समिति इन पुस्तकों को स्वयं लिखे या अन्य विद्वानों से लिखवावें इन स्कूलों के पढ़े हुए लड़के सब आवश्यक कार्यों के लिए योग्य हो जायेंगे और राज्य के सब काम चला सकेंगे

ये लड़के कारीगर व्यापारी वकील डाक्टर, वैद्य कृषि ज्ञाता ओवरसियर पण्डित क्लर्क मुत्सद्दी उपदेशक आदि-आदि हो जायेंगे अर्थात् जितने प्रकार के मनुष्यों की राज्य में आवश्यकता है सब हो सकेंगे बाहर से आदमियों को बुलाने की जरूरत न रहेगी

इस विश्वविद्यालय में एक विशाल पुस्तकालय, एक वाचनालय और एक म्यूजियम भी रहेगा लड़कों को सब विषय हिन्दी में पढ़ाये जायेंगे परन्तु अन्यान्य विषयों के साथ एक घंटे अंग्रेजी और उर्दू की शिक्षा भी दी जावेगी क्योंकि इन दोनों भाषाओं से परिचय करना बड़ा जरूरी है जो लड़के इन विषयों में उच्च-शिक्षा प्राप्त करना चाहें वे या तो राज के खर्चे पर अन्य स्थानों में जाकर शिक्षा प्राप्त करें या इन्हीं नियमों पर सब राज्यों के लिए राजपूताना नाम का विश्वविद्यालय स्थापित किया जाय जिसमें उच्चकोटि की शिक्षा दी जाय यह प्रस्ताव पीछे हो सकता है

पहले तो प्रत्येक राज्य में ऐसे विश्वविद्यालयों के स्थापित होने की आवश्यकता है यदि इस कार्य के लिए सब राज्य नहीं मिल सकें तो जो राज्य ऐसा प्रबन्ध करना चाहें वही करें कम से कम उन राज्यों की प्रजा को तो शिक्षा मिल जायगी और उनकी देखा देखी दूसरे राज्यों में भी ऐसा प्रबन्ध होने लगेगा इन विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले लड़कों के लिए एक विशाल छात्रालय बनाना होगा, जहाँ पर लड़के राज्य के खर्च से अथवा अपने खर्च में रहें और इन स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करें यह विषय पूर्णतया एक लेख में नहीं लिखा जा सकता है, समय मिला तो इस विषय पर एक दो लेख फिर लिखूंगा यदि कोई महाशय इस विषय में मुझ से पत्र व्यवहार करेंगे तो मैं उन्हें इस सम्बन्ध में और बातें बताऊंगा लेख बड़ा हो गया है इसलिए इसे यहीं समाप्त करता हूं

('सौरभ' सितम्बर 1920 ई. में प्रकाशित)

मुझे देखकर कुछ कुछ आश्चर्य हुआ क्योंकि आप तो अपने नाम के अनुरूप हो हो, बच्चे की तरह बच्चन। हमने आपकी पुस्तक पढ़ी है। महाराजा साहब भी आपकी कविता के प्रेमी हैं। अभी नवयुवक हैं, आपकी ही उम्र के हैं। मैंने उन्हें हिन्दी पढ़ाई है।

—हरिवंश राय बच्चन

लज्जाराम मेहता

भारतवर्ष की राष्ट्रीय भाषा

उद्योग का प्रारम्भ

कोई 20-25 वर्ष की बात होगी जब हिन्दी को भारतवर्ष की सार्वजनिक भाषा में सर्वोच्च सिंहासन दिलाने का आंदोलन आरम्भ हुआ था। उस समय इस काम को भारत की वास्तविक उन्नति का, हिन्दुस्तान में राष्ट्रीयता पैदा करने का मूल सूत्र मान लेने पर भी इसके आंदोलन करने वालों तक में इने गिने कमवीरों को छोड़कर इसकी सफलता पर पूरा भरोसा न था। जो इस कार्य के शत्रु थे वे हिन्दी-उर्दू का पचड़ा आगे डाल कर इस उद्योग का बौने हाथों से धरती में पड़े पड़े चन्द्रमा को छू लेने के प्रयत्न के समान बतला कर हँसी उड़ाया करते थे और जो उदासीन थे जो भिन्न भाषा भाषी थे अथवा जिनका उद्देश्य अंग्रेजी को भारतवर्ष की जातीय भाषा बना लेने का था वे इसे निरर्थक बकवाद मानकर इससे उपेक्षा करते थे, घृणा करते थे और "युक्तियुक्त मुपादेय वचन बालकादपि"—इस सिद्धान्त को लातों से रौंद कर कहने वाला की ओर अपना बहरा कान कर देने के सिवाय कुछ नहीं करते थे। यहां तक कि जब मैंने मि॰ शारदा के सभा भवन में चौबेजी की प्रेरणा से इस विषय में कुछ कहा तब मि॰ कपूर महाशय जो सभापति थे उन्होंने वहीं हिन्दी उर्दू का भगड़ा पैदा करके इस बात

का घोर विरोध किया श्रोताओं में अधिकांश मरहठे और गुजराती थे बेशक उनसे किसी तरह का अनुमोदन पाने की आशा नहीं थी और उस समय बम्बई में श्री वेंकटेश्वर प्रेस के कार्यकारियों को छोड़कर हिन्दी जानने वालों की संख्या कठिनता से अंगुलियों के पोरवों से आगे नहीं बढ़ती थी किन्तु उस समय भी मेरी घोर निराशा में सदाशा का संचार करने वाले मेरे मन की मुरझाई हुई लता को लहलहा देने वाले एक महाराष्ट्र सज्जन खड़े हुए बहुत समय हो गये अब मुझको इनका पूरा नाम याद नहीं है पर यह इतना पता है नाम मि० साठे था यह हिन्दी भाषा बिल्कुल नहीं बोल सकते थे इन्होंने मराठी में मेरे प्रस्ताव का अनुमोदन किया और एक पुस्तक जिसकी इन्होंने रचना की थी और इन्होंने ही अपने खर्च से उसे प्रकाशित किया था उसी समय मुझे दी इस काम के प्रारम्भ के संक्षिप्त इतिहास का यह बहुत ही छोटा सा एक अंश है

उद्योग में सफलता

किन्तु इस आंदोलन के लिए हिन्दी हितैषियों के सतत उद्योग ने इतने वर्षों के अविश्रान्त परिश्रम से केवल इस विषय में कृतकार्यता ही प्राप्त करली हो सो नहीं वरन् संसार को दिखला दिया कि सच्चे हृदय का निरन्तर प्रयत्न का विघ्न बाधाओं से विरोध से न डरने का निष्फल होने पर भी हताश न होने का भी फल साथ का किस तरह सुफल फला करता है उन लोगों के सामने केवल एक यही प्रश्न न था जमाना उर्दू की टक्कर मानने का था वे भी नहीं चाहते थे कि हिन्दी उर्दू की परस्पर मुठभेड़ हो वे जानते थे कि हिन्दी और उर्दू एक जान दो तन हैं दोनों का शब्द कारण एक दोनों के क्रियापद एक और दोनों में भाव प्रकाशित करने का मार्ग एक फिर दोनों अलग अलग कैसे हो सकती हैं यदि दिखाने के लिए थोड़ी देर तक दोनों दो भी हो जायं तो दोनों और ईश्वर के समान एक हैं एक चने की दो दाल हैं लिपि के सवाल को उन्होंने सर एंटोनी (आजकल लार्ड) मेकडानल महोदय की सहायता से अवश्य ही हल कर लिया था किन्तु भाषा के विषय का विवाद मिटा नहीं अस्तु इस समय इस विषय को छेड़ कर न तो विषयान्तर में जाना अभीष्ट है और न समय ही इस बात के अनुकूल है इतना इस जगह अवश्य लिखना पड़ेगा कि हिन्दी उर्दू के विरोध की कुछ भी परवाह न कर हिन्दी के प्रचार में दत्तचित्त रहने के अतिरिक्त उन्होंने अपने मुख्य विषय को हाथ से नहीं जाने दिया उन्होंने साहित्य की उन्नति के लिए निरन्तर उद्योग किया व स्वर्ग में इस सफलता के श्रेय जिन महानुभावों पर है उनका नाम हिन्दी साहित्य में चिरस्मरणीय रहेगा यदि मैं भाग्यवश उनका यहां उल्लेख न भी करूं तो काल पाकर इस सफलता का सेहरा उन्हें अवश्य पहनाया जायगा

किन्तु इतना लिखने से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि इसका श्रेय केवल मुट्ठी भर हिन्दी कृतियों पर है, उनके आंदोलन को उनके उद्योग को भारतवर्ष की जनता ने, हिन्दी भाषा भाषियों ने अपनाया है पर-भाषा वालों ने उसका अनुमोदन किया है और सबसे बढ़कर यह कि प्रकृति ने उनका हाथ पकड़ कर नसंर्गिक सहायता दी है और इसीलिए केवल पच्चीस वर्ष के अरसे के जमाने में इतना काम हो गया है जितने के लिए कम से कम एक शताब्दी की आवश्यकता थी पहले समय में हिन्दी के अच्छे अच्छे लेखक अवश्य थे किन्तु पाठकों का और उनके अभाव से प्रकाशकों का नाम नहीं था दूसरे जमाने में पाठकों की संख्या लाख हजारों पर हो गई प्रकाशक अनेक खड़े हुए किन्तु लेखक नाम शेष हो गए अब न लेखकों का अभाव है न प्रकाशकों की कमी है और न पाठकों की न्यूनता है हिन्दी साहित्य के सब अंगों की पुष्टि की जा रही है और सब पूछिये तो पत्रकारिता के मैदान में हिन्दी सरपट दौड़ रही है राजनैतिक क्षेत्र में आ खड़ी है

राजनैतिक मैदान में हिन्दी

इतना होने पर भी जब तक देश के नेताओं को इसकी आवश्यकता नहीं हुई तब तक उन्होंने इस कार्य को अच्छा और आवश्यक समझने पर भी इसकी उपेक्षा करने में कमी नहीं की उनकी उपेक्षा भी सकारण थी उनका पहला कार्य अंग्रेजी भाषा के द्वारा अंग्रेजी भाषा भाषियों के अन्तःकरण पर, विलायती प्रजा के मन पर और साथ ही देश की गवर्नमेंट पर अपने विचार अंकित करने और बढ़ाने महाराष्ट्र मराठी गुजराती पंजाबी आदि को एक सूत्र में बांध लेने का था जितने समय में उन्हें इस काम में कृतकार्यता प्राप्त हुई उतनी ही या उससे लगभग समय हिन्दी को सार्वजनिक भाषा की योग्यता प्राप्त करने में लगा यह दोनों ओर की इस तरह अनुकूलता पर गत तीन वर्षों से उन लोगों ने हिन्दी को क्या अपनाया मानो प्रकृति ने उसका हाथ पकड़ कर भारतवर्ष की राष्ट्रीय अथवा सार्वजनिक भाषा के उच्च सिंहासन पर बिठला ही तो दिया अब समय यह आ गया कि जिसमें भारतवर्ष के भिन्न भिन्न और समस्त भाषा भाषी इसके सामने हाथ जोड़ खड़े रह कर एक तान से सब मिलकर इसकी आरती करें और छोटी बहन या यदि कोई महाशय छोटी कहने में बुरा मान जाए तो बड़ी बहन उर्दू पास खड़ी खड़ी इसकी बलैया लें और राजभाषा अंग्रेजी अपने ठाठ अपने गौरव अपनी प्रतिभा और अपने मान को हृदय कोष में धारण करते हुए भी इसे फूलों की माला पहनावे

इतना शीघ्र इतना बढ़ कर और इस तरह पर काम सिद्धि होने पर भी हिन्दी की राष्ट्रीयता जनता और सरकार के समक्ष साबित हो जाने पर भी एक बहुत बड़ा बहुत

हो जटिल प्रश्न हिन्दी वालों के सामने है वास्तव में यह बहुत उलझा हुआ है समय को देखते हुए अभी न तो उसे सुलझाने का ही अवसर है और न उसे इसी तरह उलझन में डाले रखने में कल्याण हो सकता है अब हिन्दी भाषा इस तरह भारतवर्ष की सामान्य भाषा स्वीकार करली गई तब लिपि का तो कोई प्रश्न ही नहीं रहा, वह सर्वसम्मत सिद्ध हो गया अब उसके विषय में कोई विवाद नहीं रहा अब बहस है केवल भाषा के स्टाइलों के विषय में

हिन्दी

स्वर्गीय बाबू अयोध्या प्रसाद जी खत्री ने अपनी पुस्तकों में कई वर्ष पूर्व इसके ठेठ हिन्दी हिन्दी पण्डित स्टाइल बाबू स्टाइल मौलवी स्टाइल और उर्दू ऐसे छः या सात स्टाइल माने थे इस तरह उनके अनेक स्टाइल अनेक से एक होकर अब तीन हो गये अथवा इस वादग्रस्त विषय को जाने दिजिए मुझे इस लेख में केवल तीन स्टाइलों का उल्लेख करना है एक हिन्दी दूसरा हिन्दुस्तानी और तीसरा उर्दू हिन्दुस्तानी का दूसरा नाम खड़ी बोली भी रक्खा जा सकता है किन्तु हैं ये दोनों भिन्न भिन्न परन्तु मुझे हिन्दी कविता की खड़ी बोली या ब्रज भाषा के झगड़े से इस समय कुछ मतलब नहीं है मुझे लेख समाप्त करने से पूर्व गद्य हिन्दी के उक्त तीनों रूपों के लिये यहां कुछ लिखना है

वर्तमान ढंग की गद्य रचना का प्रारंभ कबसे हुआ है सो खोज वाले जानें किन्तु इसके प्रथम लेखक स्वर्गीय लल्लू जी लाल माने जाते हैं यदि इस ढंग का प्रारंभ उस समय से भी मानलें तो कुछ हानि नहीं किन्तु इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है कि इसको परिमार्जित कर इसका प्रचार करने वाले भारतेन्दु जी थे उन्होंने जो ढांचा डाला उसी पर स्वर्गीय लेखकों ने रचना की और उन्हीं लोगों के मार्ग पर वर्तमान लेखक चल रहे हैं हिन्दी गद्य के प्राचीन और अर्वाचीन लेखकों के उद्योग से उनकी निरन्तर और समान रचना शैली ने इतना अवश्य कर दिया है कि पचीस वर्ष पहले जो भाषा क्लिष्ट समझी जाती थी जिसे समझने वाले इने गिने से थे और जिसे समझाने के लिए स्वर्गीय श्रीनिवासदासजी को अपने परीक्षा गुरु और रणधीर प्रेममोहिनी में सरल से सरल संस्कृत शब्दों के नीचे टिप्पणियां देकर उनका अर्थ समझाना पड़ता था उसकी क्लिष्ट से क्लिष्ट भाषा भी अब सरलता से समझी जा सकती है शाही जमाने के फारसी और आजकल के उर्दू दफ्तरों न जिन कायस्थों को और ऐसे ही और और कलम के नौकरों को यहां तक हिन्दी इसी हिन्दी से विमुख कर डाला था कि वे श्रीगणेशाय नमः की जगह बिस्मिल्लाह करते थे और उनके बालकों का विद्यारम्भ संस्कार होने के मतलब होता था आज ईश्वर कृपा से इनमें

सकता हिन्दी लेखक है हज़ारों हिन्दी पाठक हैं और आजकल के नव युवकों में हिन्दी न जानना गाली समझी जाती है केवल इतना ही नहीं किन्तु मुझे यह लिखने का साहस होता है कि अनेक मुसलमान सज्जन अब हिन्दी के सुलेखक दिखलाई देने लगे हैं और यदि इसका यही प्रवाह धाराप्रवाह रहा तो बीस वर्ष में इनका नम्बर भी सबसे ऊपर पहुंच जायगा ऐसा केवल ये लोग ही हिन्दी के भक्त बने हों सो नहीं किन्तु अब बंगालियों में महाराष्ट्रों में गुजरातियों में और राजस्थानियों में हिन्दी के अच्छे-अच्छे लेखक दिखलाई देने लगे हैं पाठकों की संख्या बढ़ती जा रही है और उनकी प्रान्तीय भाषाओं की साहित्य परिषद् हिन्दी का आदर करने लगी हैं अब मदरास प्रान्त भी हिन्दी प्रचार के उद्योग से खाली नहीं है और इसके लिए जहां भी अच्छा होनहार हमारी आंखों के सामने खड़ा हुआ मुसकरा रहा है

हिन्दुस्थानी

इसका दूसरा रूप हिन्दुस्थानी अथवा खड़ी बोली कहा जा सकता है इसके प्रथम लेखक मैं राजा शिवप्रसाद को मानता हूं ये भी वास्तविक लेखक नहीं कहे जा सकते क्योंकि पहले उन्होंने प्रचलित हिन्दी में अनेक ग्रंथों की रचना की फिर रंग उनका बदल गया उन्होंने खड़ी बोली में ठेठ हिन्दी के ठाठ लिखा अवश्य परन्तु उन्हें लाचार होकर प्रणाम नमस्कार की जगह माथा टेकना पड़ा और पण्डित अयोध्या सिंहजी ने अधखिले फूल और ऐसी ही एक ग्रंथ पोथी में वास्तव में सफलता अवश्य पाई किन्तु उन्हें भी स्त्री की जगह इस्तरी का प्रयोग करना पड़ा इसलिए मैं कहकर चलता हूं कि संस्कृत या फारसी की सहायता के बिना केवल अथवा ठेठ हिन्दी लिखना प्रकृति के विरुद्ध है इतना उल्लेख खड़ी बोली के विषय में है किन्तु प्रचलित हिन्दी की प्रसिद्धि में पहला नम्बर हिन्दुस्थानी का है राजा शिवप्रसाद जी के बाद इस प्रकार की भाषा लिखने का उद्योग पण्डित महावीरप्रसाद जी द्विवेदी ने मिलती लिबर्टी के अनुवाद में किया है अंगरेजों को भारत वर्ष की नौकरी के लिए हिन्दी सीखकर हायर प्रोफिसियेन्सी अथवा लोअर प्रोफिसियेन्सी की जो परीक्षाएं देनी पड़ती हैं उनकी भाषा यही हिन्दुस्थानी है गवर्नमेन्ट भी कुछ वर्षों से प्राइमरी स्कूलों के लिए ऐसी ही भाषा का प्रचार करना चाहती है जिसका स्वरूप एक हो और वह फारसी और नागरी अक्षरों में समानता से लिखी जावे देश के राजनैतिक नेताओं में से अधिकांश का झुकाव इसी ओर है यहां तक कि जिन महानुभावों ने हिन्दी के लिए अब तक बहुत कुछ कर डाला है जिनसे हिन्दी बहुत कुछ आशा रखती है जो भाजोरा हिन्दी को कभी भूलने वाला नहीं है और जो इस बात के लिए खूब प्रसिद्ध पा चुके हैं कि जब हिन्दी में व्याख्यान दें तब एक भी शब्द फारसी का और जब उर्दू

बोलें तब एक भी शब्द संस्कृत का न आने दें उनकी भाषा में भी अब खिचड़ी की ओर ढल जाने का आभास दिखलाई देने लगा है

उर्दू

इसका तीसरा स्टाइल उर्दू है इसको सलीस उर्दू और फसीह उर्दू—दो भागों में बाटना चाहिए इस विषय में अधिक लिखने का प्रयोजन नहीं है हाँ इतना अवश्य कह देना है कि फसीह उर्दू और वर्तमान हिन्दी के बीच में बहुत बड़ी खाई है वह खाई पाटकर एक नहीं की जा रही है दोनों ओर से यत्न यह हो रहा है कि दोनों भाषाएं दिन दिन अधिक-अधिक दूर होती जाय इस काम के लिए एक ओर संस्कृत के और दूसरी ओर फारसी के शब्द ठूसे जा रहे हैं सलीस उर्दू और हिन्दुस्थानी में कुछ विशेष अन्तर नहीं है काल पाकर थोड़े संस्कृत शब्दों के ग्रहण कर लेने के अनन्तर यदि दोनों एक हो जाय तो कुछ आश्चर्य नहीं ऐसी स्थिति में प्रश्न यह उठता है कि आगे के लिए भारत-वर्ष की सार्वजनिक भाषा का रूप ग्रहण करने के निमित्त हिन्दी को उक्त तीनों प्रकार के रूपों में से कौन सा स्टाइल अंगीकार करना चाहिये

होनहार पर विचार

तीनों रूपों का दिग्दर्शन करने से पाठक अवश्य अनुमान कर सकते हैं कि भाषा के विषय में दुनिया किधर को जा रही है मेरे ख्याल से इसके लिए दो ही मार्ग हैं एक यह कि प्रचलित हिन्दी को ही जारी रक्खा जावे और दूसरे राजनैतिक नेताओं की इच्छापूर्ण करने के लिए सौ डेढ़ सौ वर्ष के परिश्रम का मटियामेट करके हिन्दुस्थानी को स्वीकार कर लिया जाय दोनों में से कौन अच्छा है—सो बतलाने का अभी समय नहीं है इसी प्रश्न को हिन्दू मुसलमानों के मेल के समय उठाना मानो हिन्दी उर्दू के झगड़े को फिर से जगा कर जनता में खलबली पैदा कर देना है राजनैतिक आन्दोलन के आगे जो भाषा साहित्य के प्रश्न की कदर नहीं करते हैं वे अवश्य ही मेरे इस लेख को असामयिक कहे और बतलाए बिना नहीं रहेंगे किन्तु मुझे भय है कि यदि धारा प्रवाह को समय-समय पर स्थान स्थान पर बांध बांध कर न रोका जायगा तो हिन्दी भाषा एक और ही चौथा मार्ग अवलम्बन कर लेगी अभी हाल के ही एक दैनिक समाचार पत्र में मैं किसी सभा की रिपोर्ट पढ़ चुका हूं उस रिपोर्ट से ही मेरे मन में यह प्रश्न उत्पन्न हुआ है सम्भव है कि हिन्दी में इस तरह बेतहाशा दौड़ने से हिन्दी भाषा इस रिपोर्ट की सी भाषा हो जाय उस भाषा का नमूना यह है कि— हिन्दुओं की मजीमुश्शान कानफरेंस श्रीमान् के सभापतित्व में मुनअकिद हुई अथवा — एक

सम्पादक का ऐसा खिलाफ वाकेयात लिखना जिससे जनता भ्रम में पड़ जाने का अन्देशा है अत्यन्त काबिले अफसोस है यदि बेतहाशा दौड़ लगाते-लगाते हिन्दी इस नमूने की हिन्दी हो जाय तो मान लेना चाहिए कि हिन्दी साहित्य का सर्वनाश हो गया।

भाषा कैसी होनी चाहिये

ऐसी दशा में इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि भाषा का स्टाइल किस प्रकार का होना चाहिए इस लेख में नहीं आजकल के बर्ताव में हिन्दी हितैषियों का मुख्य उद्देश्य यह है कि हिन्दी ऐसी भाषा हो जो भारतवर्ष के एक छोर से दूसरे छोर तक सुगमता से सरलता से समझ में आ सके और उसके शब्द-बाहुल्य में उसकी सरलता में और उसी माधुर्य में न्यूनता न आने पावे वक्ता और लेखक के आन्तरिक भावों को करुण मधुर शब्दों में पूर्णता से प्रकाशित कर सके वही भाषा परन्तु क्या उक्त रिपोर्ट की भाषा से अथवा दूसरी चाल की हिन्दुस्थानी से यह काम अच्छी तरह हो सकता है इस प्रश्न का उत्तर नहीं के अतिरिक्त कुछ नहीं है मैं मानता हू सब ही विद्वान इस बात को बिना आनाकानी के स्वीकार करेंगे कि केवल मदरास की एक दो भाषाओं को छोड़ कर भारतवर्ष में जितनी भाषाएं प्रचलित हैं उन सबकी जननी संस्कृत है संस्कृत से ही वे सब भाषाएं निकली है और संस्कृत ही अन्यान्य भाषाओं के जानने वालों के लिए हिन्दी भाषा सिखा देने का सरलता से समझा देने का मुख्य साधन है मैं गुजराती हू बचपन की भाषा मेरी गुजराती है और हिन्दी थोड़ी बहुत मैं लिखने पढ़ने लगा हू यदि मराठी सीखने की इच्छा हो पाठशाला में बैठ कर पाठ रटने की मेरी उमर न हो और पढ़ाने वाला भी कोई योग्य गुरु मेरे निकट न हो तब मेरी इच्छापूर्ति का साधन क्या है ? अब से पच्चीस तीस वर्ष पूर्व जब यह प्रश्न मेरे अन्तःकरण में खड़ा हुआ तब संस्कृत के सहारे से ही मुझे कृतकार्यता प्राप्त हुई अब भी मैं उस मराठी को जितना अधिक समझ सकता हू जिसमें संस्कृत शब्दों का बाहुल्य है इतना महाराष्ट्रों के लिए सरल मराठी को नहीं भारतवर्ष के समस्त प्रान्तों में केवल संस्कृत शब्दों के द्वारा हिन्दी शीघ्र समझी जा सकती है हिन्दी में संस्कृत शब्दों का प्रयोग पढ़ने की अपेक्षा सब लोगों के अधिक अभ्यास में पढ़ जाने का उदाहरण बाबा श्रीनिवासदास जी के ग्रन्थों के हवाले से मैं ऊपर दे चुका हू

इतना कहने से मेरा प्रयोजन यह नहीं है कि प्रचलित हिन्दी में संस्कृत के शब्द ठूस-ठूस कर भर दिये जाय जहां तक बन सके भाषा सरल हो भाषा के लक्षण मैं ऊपर बता चुका हू मेरे विचार से न तो उक्त रिपोर्ट की सी भाषा का प्रचार होना आवश्यक है और न केवल हिन्दुस्थानी से काम चल सकेगा हिन्दुस्थानी बनाने का

परिणाम वही होगा जो रिपोर्ट की भाषा का है और रिपोर्ट की भाषा भारतवर्ष तो क्या त्रिलोकी में भी नहीं समझी जा सकती

इन बातों को लिखकर अपने हार्दिक भाव प्रकाशित कर देने पर भी मेरा आग्रह इस बात के लिए नहीं है। हाँ इतना अवश्य है कि समय अब आ गया है—जिसमें हिन्दी साहित्य सम्मेलन को हिन्दी हितैषियों को इस बात का विचार कर लेना चाहिए कि भाषा का स्टाइल कैसा होना चाहिए इस बात के लिए एक कमेटी नियत होना आवश्यक है जो बगाली गुजराती मराठी उर्दू आदि भाषाओं के विद्वानों की राय से रिपोर्ट करे कि भाषा कैसी होनी चाहिये नहीं तो कुछ समय में कोई रिपोर्ट का नमूना तयार है मेरा यह खयाल है और जहाँ तक मैं सोच सका हूँ सच्चा विचार है कि यदि अन्य भाषा भाषियों के इस विषय में वोट लिए जावेंगे तो केवल उर्दू वालों को छोड़कर सब ही प्रचलित हिन्दी को स्वीकार करने में कभी आनाकानी न करेंगे क्योंकि जो भाषा उर्दू वालों के लिए सरल है वह अन्य प्रान्त वालों के लिए क्लिष्ट है यहाँ तक कि संस्कृतहीन द्राविडी तेलगी भाषा वाले भी संस्कृत मिश्रित हिन्दी को ही पसन्द कर सकते हैं क्योंकि मदरास में संस्कृत का प्रचार अन्य प्रान्तों से विशेष पाया जाता है हाँ ऐसा करने से सम्भव है कि उर्दू वाले हमसे छूट जाएं पड़ोसी को जिससे चोली दामन का सा संग है उसे छोड़ देना सबसे अधिक मुझको अखरता है किन्तु प्रश्न इसीलिए गम्भीर है कि हिन्दुस्तानी ग्रहण करने से हमारी भाषा प्रान्तीय बनाई जा सकती है और प्रचलित हिन्दी से सब देशों इसके सिवाय संस्कृत के प्राचीन साहित्य से भी हम दूर हट जायगे इन्हीं बातों के सोच विचार के लिए मैंने कमेटी नियत करने की सम्मति दी है

(सौरभ सितम्बर 1920 ई० में प्रकाशित)

यदि द्विवेदीजी गुप्तजी और नवरत्न जी की त्रिवेणी का संगम न हुआ होता तो हिन्दी आज कभी भी इस स्थान पर नहीं पहुँच पाती जिस स्थान पर अब पहुँच सकी है।

—सूर्यनारायण व्यास

कृष्ण गोपाल माथुर

रेडियम् का आविष्कार

म्नाच सन् 1921 के 'विज्ञान' मे मैं रेडियम् की करामात पर कुछ बात लिख चुका हू आज यह बताना है कि रेडियम् के आविष्कार मे किन किन वैज्ञानिको ने मस्तिष्क लगाया और कैसे इसका आविष्कार किया

यूरेनियम धातु का आविष्कार

पाठक याद रखें कि यूरेनियम् धातु रेडियम् धातु की बडी बहन है दोनो का जनक पिच्ब्लैंड नामक एक पदार्थ है इस पदार्थ से सब से पहले यूरेनियम् धातु ही प्राप्त हुई इसके आविष्कारक हैं आण्टियन हेनरी बेकारल आपका जन्म सन् 1852 ईस्वी की 15वी दिसम्बर को फ्रास की पेरिस नगरी मे हुआ आपके पिता और पितामह विख्यात पदार्थतत्त्वज्ञ थे अतएव आपको इच्छा भी हुई कि मैं भी पदार्थतत्त्वानुशीलन मे ही अपना जीवन बिताऊ सब से पहले आप ने पौलिटेक्निक स्कूल मे विद्याध्ययन प्रारम्भ किया और सन् 1877 में वहा की पढाई समाप्त कर के इजीनियर हुए 8 साल के बाद आपने उसी इजीनियरिंग विभाग मे प्रथम श्रेणी का पद ग्रहण किया यह आपके कठिन परिश्रम और कार्यकुशलता का फल था इसके बाद आपने डाक्टरी की

निया पाई और सन् 1888 में डाक्टर आफ साइंस की उपाधि प्राप्त की आप के पिता नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम में अध्यापक थे उनकी मृत्यु के बाद सन् 1892 में आप अपने पिता की जगह म्यूजियम में अध्यापक हुए वहां आपको कई पदार्थों की जांच करने का मौका मिला वहीं आपने पिचब्लेंड नामक पदार्थ की जांच की मालूम हुआ कि इससे यूरेनियम् धातु निकल सकता है अतएव आपने सन् 1896 में उसी से यूरेनियम् धातु का आविष्कार कर डाला इस आविष्कार से आप बड़े यशस्वी हुए यह धातु बड़े विचित्र प्रकार की साबित हुई बिना उत्ताप प्रयोग के भी यह साधारण अपनी किरणें फेंका देती है इस आविष्कार के बाद बेकारल ने और भी आविष्कार करके अपना नाम कमाया

रेडियम् का आविष्कार

पोलैंड के अंतर्गत वारसा शहर में मेरीकुरी नाम की एक बहुत ही पदार्थविद्या में पारंगत स्त्री हो गई है सन् 1867 में इसका जन्म हुआ इसका पिता बड़ा विख्यात वैज्ञानिक था उसने एक वैज्ञानिक अनुसंधान मन्दिर भी निज का खोल रक्खा था मेरीकुरी की यहीं विद्या प्रारम्भ हुई इसने थोड़ी सी अवस्था में मन्दिर की शीशियों को साफ करते-करते प्रायः समस्त रासायनिक द्रव्यों के नाम सीख लिए बुद्धि इसकी बड़ी तेज थी इसके बाद इसने वारसा विश्वविद्यालय में नाम लिखाया और वहीं से सम्मान सूचक उपाधि के साथ शेष परीक्षा में उत्तीर्ण हुई उन दिनों पेरिस नगरी में लिप्मैन विज्ञानी का बड़ा नाम था अतएव मेरीकुरी ने पेरिस आकर इन्हीं महाशय के पास शिक्षा समाप्त की वहां पियरीकुरी नाम का एक विज्ञानी भी था मेरीकुरी ने सन् 1895 में उसके साथ विवाह कर लिया पियरीकुरी उन दिनों तड़ित विज्ञान के अनुसंधान में लगे हुए थे मेरीकुरी सरीखी योग्य वैज्ञानिका को पत्नी रूप में पाकर आप बहुत हर्षित हुए और अपने अनुसंधानों पर और भी जोर दिया फल यह हुआ कि आपने तड़ित विज्ञान में नाना प्रकार के आविष्कार कर डाले और खूब यश लूटा

इधर श्रीमती कुरी बेकारल द्वारा आविष्कृत यूरेनियम रश्मि को लेकर परीक्षा करने लगी परीक्षा करते करते जितने ही नूतन तथ्य उसने अपने स्वामी को बताये तब दोनों एक साथ मिलकर उस काम में दत्तचित्त हुए उन्होंने सोचा कि यूरेनियम रश्मि को लेकर परीक्षा करने में विशेष फल मिलने की आशा नहीं है यदि न यूरेनियम् के जनक पिचब्लेंड नामक पदार्थ को लेकर परीक्षा की जावेगी तो कुछ मिलेगा अतएव वे पिचब्लेंड नामक पदार्थ को लेकर परीक्षा करने लगे परीक्षा करते करते उन्होंने रेडियम् नामक एक बहुत ही अद्भुत नए धातु का आविष्कार किया पर इस में उनको कठोर परिश्रम और पूरा व्यय करना पड़ा कोई 27 मन पिचब्लेंड से वे कुछ

ग्रेन रेडियम निकाल सके और इस काम में उनका 20000 फ्रैंक* खर्च हो गया रासायनिक खोज पुस्तकों में ही नहीं हो जाती जिसमें नए तथ्य के आविष्कार में इतना समय, इतना परिश्रम और इतना व्यय होता तो स्वाभाविक बात है। 'विज्ञान मन्दिर' की स्थापना करते समय विज्ञानाचार्य सर जगदीश चन्द्र बोस ने अपने भाषण में कहा था कि 'मुझे अपने काम में बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आशा और निराशा से टकराना पड़ा परन्तु मैं अक्लान्त मन और शरीर को लेकर बराबर कार्यक्षेत्र में अग्रसर होता रहा। आज इतने दिनों के पश्चात् इस अवस्था को पहुंचा हूं।' अस्तु, हमारे अध्यवसायी दम्पत्ति ने भी किसी तरह रेडियम् का आविष्कार कर ही डाला। अपनी यह सफलता देखकर उनको हर्ष भी खूब हुआ। इनके इस आविष्कार की बात चारों ओर फैल गई और नोबल पुरस्कार समिति ने आपको सवा लाख रुपये का नोबल-पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस प्रकार रेडियम् का आविष्कार हुआ।

एक बार की बात है कि क्यूरी के हाथ से रेडियम् की शीशी एकाएक छूट कर जमीन पर गिर पड़ी और टूट गई। बस फिर क्या था, इतना बहुमूल्य और प्रयासलब्ध रेडियम् घर की चीज़ों में मिल गया। दम्पत्ति बड़े उदास हुए परन्तु दोनों ने बहुत कष्ट उठा कर उसको इकट्ठा किया। इसके बाद इस मामले में उन्होंने बड़ी सावधानी रक्खी।

अब दूसरे लेख में मैं यह बताने की चेष्टा करूंगा कि रेडियम् से किन किन विज्ञानियों ने क्या क्या आविष्कार किया और इसकी शक्ति किन किन रोगों के नाश करने के काम में लाई गई।

(सौरभ मई अगस्त 1921 ई. में प्रकाशित)

*फ्रांस का रुपया है। बेल्जियम् और स्विटज़रलैण्ड में भी यह चलता है। इसका मूल्य 9।। आनों के बराबर होता है।

विविध-विषय

1 महात्मा गांधी का व्यक्तित्व :

समस्त जगत के और विशेषतः भारत के महान् पुरुष महात्मा गांधी के व्यक्तित्व को विभिन्न दृष्टियों से देखते हैं परन्तु हमारी दृष्टि में वस्तुतः उनका तीनों प्रकारों व्यक्तित्व निम्नलिखित है —

1 उनकी नैतिक शक्तियां
2 उनकी विद्याबुद्धि
3 उनका काम

1 उनकी नैतिक शक्तियां

एक चरित्रशील की दृष्टि में सर्वाधिक उनकी नैतिक शक्तियां ही वस्तुतः उनकी सबसे बड़ी विशेषताएं हैं जब हम भूत और वर्तमानकालीन नाना जातियों और व्यक्तियों की नैतिक शक्तियों का अनुशीलन करते हैं और उनकी महात्मा गांधी की नैतिक शक्तियों के साथ मिलाते हैं तो हमें उनमें कठिनाई से ही एक व्यक्ति ऐसे मिलते हैं कि जिनको हम महात्मा गांधी के समकक्ष रख सकें किसी का यह कहना वस्तुतः सत्य

है कि गांधी जी सी निर्दोष सत्यपरायणता अपार दृढ़ता, अपूर्व सहिष्णुता, विलक्षण निर्भीकता, सच्ची देशहितैषिता, लोकोत्तर त्यागिता न्यायप्रियता और समदर्शिता आदि आदि गुण चिराग लेकर ढूंढने पर भी आजकल के ससार में कहीं देखने को नहीं मिलते गांधी वस्तुत नीति का देवता है ऐसे समय में जब कि ससार से भारतीय नैतिक बल का जनाजा निकलने वाला था एक ऐसे व्यक्ति के उत्पन्न होने की अत्यधिक आवश्यकता थी सो ईश्वर को धन्यवाद है कि उसने म गांधी को यहा भेज इस मुमुर्षु देश को नैतिक जीवन के सुधार का अवसर प्रदान किया

2 उनकी विद्या-बुद्धि

विद्या-बुद्धि की दृष्टि से भी गांधी बड़ा भारी आदमी है उसने समाज शास्त्र राजनीति शास्त्र आचार-शास्त्र में अभूतपूर्व परिवर्तन किये अब तक भारतवासियों की दृष्टि में अलग से ये विषय पृथक पृथक् थे परन्तु उसने बतलाया कि वस्तुत ये एक ही माला के मणि या एक ही अगी के अग हैं और ये एक दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकते उसने समाज शास्त्र के सार से उच्छृ खलता राजनीति शास्त्र के सार से हिंसा और आचार शास्त्र के सार से दम्भ का कलक दूर कर और जगत् और विशेषत भारत के सम्मुख समाज, राजनीति और आचार शास्त्र-सम्मत एक नवीन आदर्श सिद्धान्त रखा और अपने चरित्र से पूर्णत उसकी क्रियात्मकता का भी सबूत दिया

3 उनका काम

उनके काम के दो विभाग हैं—

एक — देश को स्वतन्त्रता के लिए तयार करना

दूसरा — उसे स्वतन्त्रता दिलाना

महात्मा गांधी पहली बात म पूर्णत कृतकार्य हैं उसने एक ऐसे देश को जो कि शताब्दियों से दूसरी जातियों और अपनी परम्परागत नाना निर्बलताओं का दास था, जिसकी प्रजा नाना धर्म जाति आदि आदि सकड़ो रेखाओं मे विभक्त थी कुछ ही महीनो म उसे जगा, उठा और स्वतन्त्रता के सग्राम के लिए तयार कर दिया यह भारत ही नहीं पृथ्वी भर के इतिहास मे एक अद्भुत बात है

अब रहा देश को स्वतन्त्रता दिलाना सो मन से तो आज भारतवासी अब अपने आपको स्वतन्त्र समझने लगे क्योंकि वे बलात् किसी बन्धन को इस समय स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं या कम से कम पुराने ढग के सब के सब बन्धन उनको हटा

3 प्रत्येक भारतवासी के साथ प्रेम एकता समानता और भ्रातृभाव का व्यवहार करना होगा।

4 अपने पापों और दोषों को दूर करना होगा

5 अपने को और अपने देश को अधिक से अधिक सभ्य और उन्नत बनाने में परिश्रम करना होगा

6 प्रत्येक बात की उत्तरदायिता को स्वीकार करना होगा और

7 समस्त मानव समाज की सुख-शान्ति और समृद्धि के लिए प्रयत्नशील बनना होगा

हिन्दी कविता का समालोचना का युग

प्रत्येक बात का आदिम युग उसके उत्साह-वृद्धि का युग होता है ऐसे ही एक समय था कि खड़ी हिन्दी बोली के कवियों को उत्साहित करने की आवश्यकता थी और इसी लिए उस समय के लोगों ने तात्कालिक कवियों को उत्साहित करना भी अपना कर्तव्य समझा इसी का यह फल है कि आज हम अपने समाज में हिंदी के कई सुयोग्य प्रतिभाशाली कवियों को देखते हैं परन्तु अब वह उत्साह का आदिम युग बीत गया अब समालोचन युग की बारी है इसलिए इस बात की आवश्यकता है कि कविता कौमुदी के सच्चे विकास के लिए योग्य समालोचक इस ओर ध्यान दें हम थोड़े समय से बराबर देखते आ रहे हैं कि साहित्य क्षेत्र में अनेक झाड़ झंखाड़ ऐसे पैदा होते जा रहे हैं कि यदि उनकी ठीक निदाई खुदाई न हुई तो यही नहीं कि वे मा[illegible]रमद पौधों को ही ले बैठेंगे परन्तु वे साहित्यिक शुद्ध विकास में भी विघ्नकर सिद्ध होंगे और इससे हिन्दी के स्थिर काव्य साहित्य को बहुत कुछ धक्का लगेगा हम देखते हैं कि समालोचना के अभाव से आजकल हिन्दी में अधिक बड़े कवियों की भी अनेक कविताएं प्रायः काव्य के गुणोत्कर्ष के कारण नहीं प्रत्युत उनके व्यक्तित्व के कारण ही आदर पाती हैं उनमें अर्थ सौन्दर्य आदि तो रहा दूर परन्तु छन्दोगणना आदि काव्यकला के मोटे मोटे दोषों की भी परवा नहीं की जाती इसका यह कारण नहीं है कि वे कवि नहीं हैं या कविता करना नहीं जानते परन्तु कारण केवल यही है कि समालोचना की भीति के अभाव में प्रमादपरायणता के कारण स्वभावतः उनसे ऐसी अशुद्धियां हो जाती हैं जो कि दोषग्राही और गुणदर्शी व्यक्तियों के लिए हास्य का कारण होती हैं

("धोरन" सम्पादक प रामनिवास शर्मा की सम्पादकीय टिप्पणियों से साभार)

श्रद्धा-स्मरण
—हरिभाऊ उपाध्याय
—डॉ. हरिवंशराय
—बनारसी दास चतुर्वे
—डॉ. रघुवीरसिंह
—युगलकिशोर चतुर्वेदी
—जवाहरलाल जैन
—डा प्रभुनारायण 'सहृदय'

हरिभाऊ उपाध्याय

नवरत्नजी-श्रद्धांजलि

पहली जुलाई को झालावाड़ से मुँह अँधेरे ही दुकाल आया नवरत्न जी नहीं रहे एक दिन पहले ही मैंने जयपुर से फोन द्वारा उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पूछताछ की तो मुझे बताया गया था कि उनकी अवस्था संदिग्ध है और कैंसर की आशंका है

नवरत्नजी इधर काफी दिनों से अस्वस्थ थे अवस्था की दृष्टि से पके आम थे फिर भी खबर सुनकर धक्का लगा बड़ी देर तक फिर नींद नहीं आई गई बातें ध्यान में आती रहीं

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने नया युग प्रवर्तन कर हिन्दी के विकास के लिये जिस राजप्रासाद के निर्माण में आधारभूत स्तंभों की रचना की थी उनमें से एक स्तंभ गिर गया

नवरत्न जी सच्चे अर्थों में द्विवेदी युग के सच्चे प्रतीक तो थे ही इसके अलावा वे नवयुग के सन्देशवाहक भी थे उनमें नये और पुराने इन दो युगों का अद्भुत सम्मिश्रण था वे दो युगों की संधि के सच्चे प्रतिनिधि थे उन्होंने अपने नेत्रों की ज्योति खोकर

भी अपनी पारसगुण युक्त दिव्यदृष्टि से दूसरों के मानस के अन्धकार को दूर किया और उनका अन्तर प्रकाशमान बनाया

व्यक्तित्व और जीवनवृत्त

गिरिधरजी का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली और सहज ही आकर्षित कर लेने वाला था सुडौल देह, उन्नत ललाट सौम्य और सरल स्वभाव

नवरत्न जी का जन्म विक्रम सं 1938 की ज्येष्ठ शु 8 को झालरापाटन में हुआ इनके पिता प ब्रजेश्वर शर्मा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे इसलिये प्राथमिक शिक्षा के बाद मुख्यतः आपको संस्कृत की ही शिक्षा दी गई नवरत्न जी को यह शिक्षा जयपुर और फिर काशी में मिली काशी में प शिवकुमार जी शास्त्री और महामहोपाध्याय प गंगाधरजी शास्त्री के निकट सम्पर्क में आने का आपको मौका मिला संस्कृत के अध्ययन के बाद का सारा ज्ञान आपने स्वाध्याय द्वारा ही प्राप्त किया संस्कृत व हिन्दी के अलावा बंगला गुजराती मराठी अरबी और फारसी व अंग्रेजी का अध्ययन भी आपने स्वयं किया राजस्थानी के तो आप विद्वान थे ही

नवरत्नजी का कृतित्व

परिश्रम नवरत्नजी की दूसरी प्रकृति बन गई थी उनकी रचनाओं की विविधता और संख्या देख कर आश्चर्य होता है गुजराती भाषा भाषी होते हुए भी खड़ी बोली में उन्होंने प्रथम प्रबन्ध काव्य सावित्री की रचना की रवीन्द्रनाथ ठाकुर की विश्व पूजित कृति गीतांजलि का सीधा बंगला से हिन्दी में आपने सबसे पहले पद्यमय अनुवाद किया इस अनुवाद को महाकवि टगोर ने भरतपुर में सुना था सुनने के बाद उन्होंने कहा था— मेरे भावों को व्यक्त करने में जितनी सफलता आपको मिली है अन्य किसी को नहीं मिली गुरुदेव के आदेश अनुरोध से गीतांजलि का संस्कृत में भी पद्यानुवाद किया यह कृति अभी तक अप्रकाशित ही पड़ी है उमर खय्याम का नवरत्नजी ने हिन्दी गुजराती और संस्कृत में पद्यमय अनुवाद किया है टगोर की प्रसिद्ध कृति गार्डनर का हिन्दी अनुवाद बागवान (दलबदल में) भृंग मदरिंग का अनुवाद 'फल संचय' तथा 'द क्रीसेंट मून' का गुजराती काव्यमय अनुवाद 'बालचन्द्र' के नाम से आपने ही किया है गुजराती के कवि सम्राट नान्हालाल दलपतराम कवि की काव्यकृतियों को आपने हिन्दी भारती को समर्पित किया है वे कृतियां हैं कुरु पलटा और महासुदर्शन प्रेमकुञ्ज जगत जयजयन्त अन्य गुजराती कृतियों के हिन्दी रूप हैं—सरस्वती चन्द्र राई का पर्वत आरोग्य दिग्दर्शन आदि मराठी भाषा से शुश्रूषा बंगला से विश्व कवि टगोर कृत

चित्रांगदा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं इसके अलावा तकनीकी विषयों पर भी आपने पुस्तकें लिखीं उदाहरण के लिये अर्थशास्त्र व्यापारशिक्षा शुश्रूषा कठिनाई में विद्याभ्यास आदि के नाम लिये जा सकते हैं अंग्रेजी से नवरत्नजी ने कवि स्काट शेक्सपीयर गोल्डस्मिथ वर्ड्सवर्थ टेनीसन आदि की रचनाओं के स्फुट काव्यमय अनुवाद किये हैं

हिन्दी निष्ठा

नवरत्न जी की हिन्दी निष्ठा अद्वितीय थी उनकी सबसे बड़ी आकांक्षा थी कि एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय जिसमें हर विषय की शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो प्रारम्भ से ही उनकी यह स्पष्ट धारणा थी कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो राष्ट्र भाषा बन सकती है उनका मत था कि संस्कृत अध्ययन के औचित्य से इनकार नहीं किया जा सकता लेकिन हिन्दी में ही वह क्षमता है कि यह देश के करोड़ों लोगों की बोल चाल की भाषा बन जाय अन्य भाषाओं की उत्तमोत्तम रचनाओं को हिन्दी भाषा का परिधान पहनाना होगा इसी कारणवश उन्होंने अनुवादों पर विशेष ध्यान दिया उनका मत था कि संसार भर की भाषाओं और उनके साहित्य से हिन्दी लेखकों और साहित्यकारों को भाव शब्द और विचार ग्रहण करना चाहिये नवरत्न जी ने अनेक बार यह विचार प्रकट किया था कि प्रादेशिक भाषायें अपने अपने प्रदेशों में चलें किन्तु जहां अखिल भारतीय शिक्षा के माध्यम का सम्बन्ध है उसकी भाषा हिन्दी ही होनी चाहिये इस सम्बन्ध में एक बड़ा रोचक संस्मरण याद आ रहा है

बम्बई में उस वर्ष हिन्दू महासभा के वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता पूज्य महामना मदन मोहन जी मालवीय कर रहे थे नवरत्न जी भी अधिवेशन में उपस्थित थे और लोगों के साथ जब उनके बोलने की बारी आई तो नवरत्न जी ने अपने भाषण में कहा— मालवीय जी ! आपको दुनिया आदर देती है तो दे ! परन्तु गिरिधर शर्मा से आप तभी आदर पा सकेंगे जब हिन्दू विश्वविद्यालय की जगह हिन्दी विश्वविद्यालय बन जायेंगे हिन्दू नाम काफी नहीं, हिन्दी के माध्यम से सब विषयों की शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये

इस घटना से नवरत्न जी की तेजस्विता का परिचय तो मिलता ही है साथ ही हिन्दी के प्रति उनका कितना अनन्य प्रेम था इसका भी पता लगता है

आधुनिक कविता और नवरत्न जी

नवरत्न जी को आधुनिक कविता की स्वच्छन्दता और स्वतंत्रता पसन्द

नापसन्द था कविता के सम्बन्ध में उनका विचार था— कविता वह जो हिय घसे जो काव्य हिय न घसे वह उन्हें नहीं जचता था

नवरत्न जी का अन्तिम काल काफी कष्ट से बीता कोई 24 वर्ष पूर्व उनकी नेत्र ज्योति जाती रही थी बड़ा परिवार था मृत्यु से कुछ समय पूर्व उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री ईश्वरलाल का शरीरान्त हो गया पर इन विषम आर्थिक परिस्थितियों में भी उन्होंने अपना धीरज नहीं खोया —

अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम् —अर्जुन की दो प्रतिज्ञाएं थीं — न तो दैन्य दरसाऊंगा न भागूंगा इसी तरह नवरत्न जी ने सब कष्टों के बावजूद न तो अपनी दीनता दिखलाई और न मैदान छोड़ कर ही भागे

यथा चतुर्भि कनकं परीक्ष्यते निघर्षणच्छेदन तापताडनैः
तथा चतुर्भि पुरुषः परीक्ष्यते त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा

(जिस प्रकार स्वर्णकार सोने को घिस कर काट कर गरम कर ठोक कर परीक्षा करता है उसी तरह जीवन की विषम परिस्थितियों ने नवरत्न जी के त्याग गुण शील और कर्म की परीक्षा ली और वे हर परीक्षा में खरे उतरे)

'रुजा गुणौघजननी जननीमिवार्या—
मत्यन्तशुद्धहृदयामनुवर्तमानम्
तेजस्विन सुखमसूनपि सन्त्यजन्ति
सत्यव्रतव्यसनिनो न पुन प्रतिज्ञाम् ॥

नवरत्न जी ने भी अपनी साहित्यसेवा की प्रतिज्ञा को नहीं छोड़ा प्राण भले ही छोड़ दिये दीनता नहीं दरसाई कष्ट भले ही झेला ऐसे पुरुषसिंह मानव मात्र के लिये आदर्श हैं उनके चल बसने पर अश्रुपूरित नयनों से भरे गले और शोकमय हृदय से श्रद्धाञ्जलि के ये कुछ शब्द सुमन अर्पित करने के सिवा हम और कर भी क्या सकते हैं ?

सरस्वती प्रयाग अगस्त 1961 ई

हरिवंशराय बच्चन

गिरिधर शर्मा—एक संस्मरण

समाचार पत्रों में पढ़ा कि पंडित गिरिधर शर्मा नवरत्न का स्वर्गवास हो गया यह दुखद समाचार अप्रत्याशित नहीं था अभी गत मास उन्होंने अपने जीवन के अस्सी वर्ष पूरे किये थे उस समय हिंदी के कई पत्रों में उनका जो संक्षिप्त परिचय छपा था उसमें उनकी दीर्घकालीन अस्वस्थता की चर्चा थी तीन-चार दिन हुए उनके पौत्र श्री योगेश शर्मा का पत्र आया था जिसमें उन्होंने लिखा था कि शर्माजी की हालत चिंताजनक है धर्मयुग में उनका जो चित्र छपा था वह भी रोगशय्या का था दुर्भाग्यवश वह रोगशय्या उनकी मृत्युशय्या सिद्ध हुई भगवान उनकी आत्मा को अपनी शरण में लें और उनके परिवार सदस्यों एवं उनके मित्रों को यह वियोग सहने की शक्ति दें

नयी पीढ़ी के लेखकों एवं पाठकों में उनका नाम अपरिचित सा हो सकता है लगभग तीस वर्ष से हिंदी में सक्रिय रूप से लिखना उन्होंने बंद कर दिया था वह द्विवेदी युग के लेखक थे द्विवेदीजी का दर्शन करने के लिए एक बार वह झालरापाटन से द्विवेदी जी के निवासस्थान दौलतपुर (रायबरेली) भी गए थे और द्विवेदी जी ने उनका बड़ा सम्मान किया था उन दिनों इस प्रकार की तीर्थ यात्रा को साहित्यकार धर्म का मुख्य अंग माना जाता था कोई किसी के लेख रचना में कोई गुण देख कर उससे प्रभावित हो उससे मिलने या सम्पर्क स्थापित करने का अवसर ढूंढता रहता था दिनकर जी की प्रारम्भिक कविताओं से आकर्षित हो एक बार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने कहीं कहा था कि यदि दिनकर अफ्रीका के जंगलों में रहते होते तो उनसे

मिलन को मैं यत्न भी पहुंचता लेखकों के पारस्परिक परिचय, नकट्य एवं सम्बन्ध का परिणाम यह था कि साहित्य-संसार में सद्भावना का एक स्निग्ध वातावरण बना हुआ था यदि कहीं स्पर्धा- प था भी तो वह जैसे एक परिवार के लोगों में था परिवार की मर्यादा से सीमित नियन्त्रित

जीवन आज अधिक व्यस्त हो गया है लेखकों के दृष्टिकोण बदल गए हैं और साहित्य क्षेत्र अधिक प्रतियोगितापूर्ण है पहले सब किसी के लिए कुछ-कुछ कर रहे थे आज सबको दूसरों को पीछे छोड़ते हुए या पीछे समझते हुए अपने को आगे बढ़ाना बढ़्यान है दूर-दूर बैठी जो कलमें एक-दूसरे पर विष उगला करती हैं यदि उन्हें कर दिया जाय तो मुझे विश्वास है कि वे सहसा रस भले ही न बरसाने लगें अपनी बहुत-सी अनावश्यक और अभद्र कटुता और तीक्ष्णता से मुक्त हो जायगी क्या कोई ऐसी तरकीब बतला सकता है जिससे इन साहित्यिक तीर्थ यात्राओं का महत्व फिर से नई पीढ़ी के लेखकों में बढ़ाया जा सके ?

नवरत्न जी के प्रथम दर्शन मुझे उनकी इसी प्रकार की साहित्यिक तीर्थयात्रा में हुए थे यह बात है सन् 1935 की मेरी मधुशाला निकल गयी थी और उसने मेरे विषय में एक विचित्र प्रकार का कौतूहल उत्पन्न कर दिया था कौन है यह आदमी ? क्या इसके पास बड़ी दौलत है ? क्या यह दिन रात नशे में धुत्त रहता है ? क्या वह जो लिखता है वह सब उसका अनुभूत सत्य है ? क्या वह मधुशाला में रहता है मधुबालाओं से घिरा एक आधुनिक उमर खय्याम की तरह ?—शायद कुछ इसी प्रकार की जिज्ञासा थी जिसने नवरत्न जी को लाकर मेरे मकान के सामने खड़ा कर दिया उन दिनों मैं अपने इलाहाबाद के मुट्ठीगंजवाले मकान में रहता था मैं घर के किसी मरीज की दवा लाने या किसी ट्यूशन पर गया हुआ था मेरी अनुपस्थिति में वह मेरे लिए एक पुर्जा छोड़कर वापस चले गए मैं लौटकर आया तो देखता हूं कि गली में बड़ी स्फूर्ति-सी है जो मिलता है वही कहता है एक बड़ी-सी मोटर आपके घर आयी थी कई आदमी थे जैसे मेरे घर पर किसी की मोटर आने से ही मुझे सम्मान मिल गया था और लोगों की दृष्टि में मेरा आदर बढ़ गया था पुर्जे में लिखा था हम तो आपकी मधुशाला देखने आए थे पर साकी ही गायब था हम महाराज बनारस की कोठी में ठहरे हैं शाम वहीं आपकी प्रतीक्षा करेंगे—गिरिधर शर्मा नवरत्न झालरापाटन वाले शर्मा जी के नाम से मैं अपरिचित नहीं था इतनी याद तो नहीं थी कि कभी 'सरस्वती' के पृष्ठों में उनकी रचना छपती थी पर उनका रुबाइयात उमर खय्याम का अनुवाद मैंने पढ़ा था और उसकी एक प्रति मेरे पास थी यह अनुवाद उनका 1931 में प्रकाशित हुआ था उस पुस्तक से जाना था या किसी और से सुन रखा था कि

वह झालरापाटन राज्य के राजपुरोहित हैं इसकी तो मैं कभी कल्पना ही नहीं कर सकता था कि वह मेरे घर पर आएँगे पुर्जा पढ़कर मैं यह सोचने लगा कि जब शर्माजी ने मधुशाला की कल्पना लेकर मेरे 255 नम्बर मुट्ठीगंज के अधकच्चे बेकलई किए हुए मकान को देखा होगा तब उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई होगी यदि उन्हें यह एहसास होगा कि चहक रहे सुन पीनेवाले महक रही ले मधुशाला तो मेरे घर के सूनेपन और मेरे मकान के आगे बहती हुई दुर्गन्धित नाली से उन्हें कितनी निराशा हुई होगी

शाम को मैं बलुआ घाट स्थित महाराज झालरापाटन की कोठी पर पहुँचा जो मेरे घर से बहुत दूर नहीं थी वास्तव में मधुशाला तो यहाँ थी बाहर कई मोटरें खड़ी फाटक पर राजस्थानी पीली पगड़ी में बन्दूकधारी पहरेदार मालूम हुआ महाराज झालरापाटन आए हुए हैं और कोठी में ठहरे हुए हैं पुरोहित जी उन्हीं की पार्टी में आए हुए हैं उनके पास पहुँचते ही मैंने उन्हें पहचान लिया उनकी पुस्तक में मैं उनका चित्र देख चुका था—भरा हुआ सांवला लम्बा शरीर बन्द कालर के कोट पर रेशमी पगड़ी ललाट पर चन्दन मुझे देखकर उन्हें कुछ आश्चर्य हुआ बोले आप तो अपने नाम के अनुरूप ही हो बच्चे की तरह बच्चन हमने आपकी पुस्तक पढ़ी है महाराज साहब भी आपकी कविता के प्रेमी हैं अभी नवयुवक हैं आपकी ही उम्र के हैं मैंने ही उन्हें हिन्दी पढ़ाई है मैं आपसे मिलने गया था तो वह भी मोटर में बैठे थे वह भी थोड़ी बहुत कविता करते हैं आपसे मिलने को उत्सुक हैं

उनकी बातें सुनते हुए मेरी कल्पना इतिहास को बेधती हुई उस प्राण-बलिदानी स्वामिभक्त झाला सरदार की ओर चली गयी जिसने हल्दीघाटी की लड़ाई में महाराणा प्रताप के छत्र को अपने सिर पर लगवाकर उनके निकट से शत्रुओं का दबाव अपने ऊपर ले लिया था और स्वयं वीरगति प्राप्त कर महाराणा को बचा लिया था उन्हीं के वंशज महाराज झालरापाटन को आज मैं साक्षात् देख सकूँगा मेरा कितना सौभाग्य है तभी ध्यान आया यह तो अच्छा हुआ कि जब वह मेरे घर पर पधारे तब मैं नहीं था नहीं तो मुझे गालिब के दो शेरों को उलट-पलट कर कुछ इस तरह कहना पड़ता

वो आए घर प' मेरे
    यह खुदा की रहमत है,
कभी हम उनको कभी
    बोरिए को देखते हैं

उनको बिठाने के लिए मेरे पास कमरे में सिवा एक लकड़ी के नंगे तख्त के और था ही क्या

शर्माजी ने कहा मैं तो एक प्रकार की तीसमारा पर निकला हू मेरी आँखों पर ग्लोनियाबिंद का आक्रमण हो रहा है सोचा इसके पूर्व कि मेरी आँखों की ज्योति पूरी तरह से चली जाए मैं अपने साहित्यिक बन्धुओं के दर्शन कर आऊ परिवार के किसी वृद्ध की वत्सलता से उन्होने मेरी शिक्षा-दीक्षा मेरी पारिवारिक स्थिति मेरी नौकरी मेरी तनख्वाह आदि के विषय मे पूछा सच्चाई को छिपाने की मेरी आदत न थी— मैं उन दिनो अग्रवाल विद्यालय में 35 रुपये प्रति मास पर काम कर रहा था यह सब सुनकर वह दुखी हुए और उन्होंने मेरे प्रति बड़ी सहानुभूति दिखलाई कहने लगे 'देखिए उर्दू के कितने शायरो को निजाम और नवाबों के यहां से वजीफे मिलते हैं पर हमारे राजे-महाराजे हिन्दी की ओर से उदासीन हैं मैं चाहता हू कि नवयुवक महाराज मे हिन्दी के प्रति कुछ प्रेम जगाऊ आप उनसे मिलें तो अपनी कुछ बहुत अच्छी कविताए सुनाए

पर मैं तो उनसे मिलने के लिए भद्रजनोचित पोशाक मे भी नहीं आया था वह मुझसे कह रहे थे— 'महाराज के सामने नंगे सिर जाने की प्रथा नहीं है और मैं आपको एक पगड़ी देता हू और हां महाराज को 'खमा घणी अन्नदाता' कहकर सम्बोधित करना चाहिए और मेरे मन मे मधुशाला की ये पक्तियां गूज रही थीं राज्य उलट जाए भूपों की भाग्य सुलक्ष्मी सो जाए जमे रहेंगे पीने वाले जगा करेगी मधुशाला और राव मे भेद हुआ है कभी नहीं मदिरालय मे मेरे मन में बड़ा तनाव हो रहा था और मैं महाराजा के दर्शन करके लौट आने का विचार कर रहा था कि बाहर खमा घणी अन्नदाता के स्वरो के बीच महाराज स्वयं कमरे मे आ गए दरबारी औपचारिकता की परवाह न करके उनके इस प्रकार आ जाने से हम दोनों अचकचा उठे—गोरा लम्बा भरा शरीर चेहरे पर मुस्कान और सरलता बदन पर बासंती रंग का राजस्थानी तनसुख मेरा मन तो उनके अदर परिव्याप्त काला सरदार के रक्षको होने कर रहा था शर्माजी ने मेरा और मेरे कवित्व का परिचय अतिशयोक्तियों में दिया बीच बीच में उनकी और महाराज की कुछ बात राजस्थानी बोली में भी होती *शर्माजी के सकेत पर मैंने कुछ कविताए और मधुशाला की रुबाइयां सुनाई* दोनों ने ही बड़ी सहृदयता से सुनीं महाराज चले गए तो पुरोहित जी ने मुझसे कहा महाराज आप से बहुत ही प्रभावित हुए हैं आपसे फिर मिलना चाहेंगे

दूसरे दिन उन्होंने मुझे फिर बुलाया और बातचीत के सिलसिले में मेरे सामने एक प्रस्ताव रख दिया— महाराज आपको अपने साथ रखना चाहते हैं आपका भाग्य जाग जायेगा—स्व मन्दिरे वा नृप मंदिरे वा—कवि की शोभा तो राज प्रासाद में ही होती है

मेरे गले में कुछ भरी हिचकियाँ अटक गयीं अपने प्रिय कवि पन्तजी के सत्ताकांक्षी शासन म बाहर लेने से मैं बहुत विरक्त था क्या मैं यही कुछ कहता मैंने निमन्त्रण से वह हिचकियाँ अपने गले से खींच लीं शर्माजी दरबारी आदमी थे मेरा हाल पहचान गए बोले 'भूलना कर रहे हो, पछताओगे'

दो-तीन दिन बाद शर्माजी के स्वागत में प्रयाग विश्वविद्यालय में सीनेट हाल में, एक कवि-सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसका सभापतित्व महाराज अलापुर ने किया शर्माजी का स्वर शान्त और गम्भीर था हालांकि कविताएं उन्होंने विनोदात्मक ही सुनायी थीं उन दिनों वह कुछ ऐसे पद्य लिख रहे थे जिनके अन्त में कोई कहावत फिट कर देते थे—अन्त म भी और शुरू में भी याद है, एक पद का अन्त हुआ था इस कहावत से

मयी पीछे कुत्ता खाए'

मगर अधिक रस-वर्षा था उनके 'रुबाइयाते उमर खय्याम' के अनुवाद से एक पंक्ति मात्र तक नहीं भूल सका

'वह गुलाब पर्सीली नगरी अरम कहाँ है ?'

अब तक तो उमर खैयाम के दर्जन से ऊपर अनुवाद हिन्दी में निकल चुके हैं शर्माजी सम्भवतः उसके सर्वप्रथम अनुवादक थे—इतने कि वह 'फिट्जजेराल्ड' के भी हिन्दी में अपना अनुवाद प्रकाशित करने के सौ वर्ष पूर्व उन्होंने 'रुबाइयात' का अनुवाद संस्कृत में भी प्रकाशित करा दिया था रुबाइयों के अनेक अनुवाद सामने आ जाने के बावजूद शर्माजी के अनुवाद की अपनी विशेषता है विचित्र बात है कि रुबाई के लिए जिस छंदोपंक्ति का उपयोग उन्होंने किया था, उसे अपनाने का साहस फिर किसी अनुवादक को नहीं हुआ अनुवाद अथवा स्वतन्त्र रुबाई की पंक्ति कितनी बड़ी रक्खी जाए यह अभी हिन्दी के लिए प्रयोगावस्था में है अधिकांश लोगों ने पंक्ति को जरूरत से बड़ी ही किया है छोटी पंक्तियों के प्रयोग कम हुए हैं शर्माजी की पंक्ति एक माध्यमिक स्थिति की ओर संकेत करती है अनुवाद में कम से कम इस रुबाई की पंक्ति म, मूल के विचारों को किसी भी तरह दबाया नहीं जा सकता उन्हें ठोक पीट के बिगाड़कर संक्षिप्त करके ही रक्खा जा सकता है इससे शर्माजी के अनुवाद में जो कसाव है जो तनाव है वह किसी अनुवाद में नहीं आ पाया है ऊपर उद्धृत पंक्ति भी इसका उदाहरण है अनुवाद नहीं होता अरम ही अपने समस्त गुलाबों के साथ अरम गायब हो गया है

शर्माजी उससे कम शब्दों में लगभग वही भाव और प्रभाव व्यक्त और उत्पन्न कर देते हैं

उस कवि सम्मेलन में मैंने 'प्याले का परिचय' सुनाया जिसमें ये पंक्तियां आती हैं —

मुझको न सके ले धन कुबेर
दिखलाकर अपना ठाठ-बाट
मुझको न सके ले नृपति मोल
दे माल खजाना राजपाट

अमरों ने अमृत दिखलाया आदि मुझसे शर्माजी की तीन दिन पहले जो बातचीत हो चुकी थी और जिसकी खबर महाराज साहब तक पहुंच गयी होगी उसके संदर्भ में इन पंक्तियों में एक अजीब नाटकीयता आ गयी शायद उन्होंने यह भी समझा हो कि मैंने ये पंक्तियां उक्त प्रसंग के बाद रचीं पर पूरी रचना कम से कम साल भर पुरानी थी इतना स्वाभिमान और इतनी उग्रता से अक्खड़ उन्हें कैसे सहन हो सकता था उनका रुख मेरी तरफ से बदल गया फिर न उन्होंने मुझे बुलाया ही और न मैं ही स्वयं गया

अब जब शर्माजी की मृत्यु का समाचार सुना तो ये सब बातें एक-एक करके मुझे याद आने लगीं सोचता हूं कि मेरे सामने जो प्रस्ताव उन्होंने रखा था उसमें उनकी कितनी वत्सलता कितनी सहृदयता कितनी हिन्दी के एक गरीब लेखक की सहायता करने की भावना थी—उनके रोष में भी कितना अपनत्व था

शर्माजी की मातृभाषा गुजराती थी उनके कुछ प्रकाशन गुजराती में भी हुए हैं हिन्दी को उन्होंने राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया था और उसके विकास में उन्होंने अपना सक्रिय और सृजनशील योग दिया था संस्कृत में उनकी मौलिक रचनाओं का संग्रह 'गिरिधर सप्तशती' के नाम से प्रकाशित हुआ था वह अपनी रचनाएं स्वयं प्रकाशित करते थे और परिचितों इष्ट मित्रों में बांट देते थे लेखन से धनार्जन उनका लक्ष्य नहीं था

(नवभारत 1961)

बनारसीदास चतुर्वेदी

राजगुरु स्व गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'

स्व गिरिधर शर्मा के दर्शन शुभ सर्वप्रथम फीरोजाबाद के भारती भवन के एक उत्सव मे हुए थे जो सम्भवत 1912 के आसपास हुआ था तत्पश्चात् जब मैं 1914 मे इन्दौर के राजकुमार कालिज में अध्यापक नियुक्त हुआ तो स्व माधवराव विनायक कीबे साहब के निवास स्थान पर मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति की जो मीटिंग हुई थी उसमें उनके दर्शन हुए यह समिति उन्हीं की प्रेरणा का फल थी उन दिनो गिरिधर शर्मा जी का नाम हिन्दी जगत मे काफी प्रसिद्ध हो चुका था और झालरापाटन के महाराज हिन्दी सेवको के आश्रयदाता थे जब वे टीकमगढ पधारे और महाराज वीरसिंहजू देव के अतिथि हुए तो उनके दर्शन भी शुभ हुए थे मैंने एक लेख भी विशाल भारत में उन पर छापा था

यह जानकर हर्ष हुआ कि गिरिधर शर्मा जी की शताब्दी मनाई जा रही है ऐसे शुभ अवसर पर उनकी मुख्य मुख्य रचनाओं का संग्रह भी छपना जरूरी है राजस्थान प्रदेशीय सम्मेलन को भी सक्रिय करना चाहिए

आज तो सम्पूर्ण वातावरण राजनैतिक चर्चाओ से ओत प्रोत है यह आवश्यक भी है एवं उचित है साहित्य रखते राज्य शासन चर्चा प्रयन्तो पर हमारा मुख्य ध्येय

साहित्य और संस्कृति का विकास करता है और साहित्य और संस्कृति का लक्ष्य मनुष्य है छोटे छोटे स्थानों के निय कियो की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए क्या क्या काम हो रहे हैं उनका लेखा जोखा रखना हमारा कर्तव्य है हमें छोटे छोटे कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन देना है और साथ साथ 'नवरत्न' जी जैसे पुराने कार्यकर्ताओं की स्मृति रक्षा भी आवश्यक है संस्कृत का श्लोक है—

> घृतमिव पयसि निगूढ
> भूते भूते वसति विज्ञान
> सतत मथितव्य
> मनसा मान दण्डेन ।।

अर्थात् जिस प्रकार दूध में घी छिपा हुआ है उसी प्रकार प्रत्येक प्राणी में कोई न कोई समझ बूझ छिपी है हमें मन रूपी मथनिया से उसे निरंतर मथना चाहिये

इस अवसर पर मैं स्व गिरिधर शर्मा जी को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं

— —

द्विवेदी जी से पहली मुलाकात

सन् 17 की बात है पंडितजी जुही में द्विवेदीजी से मिलने गए द्विवेदीजी उस समय शौच गए हुए थे वह बैठ गए और लगे पत्र-पत्रिकाओं के पन्ने उलटने द्विवेदीजी शौच से लौटे-स्नान पर अनेक हाथ में लोटा-उन्होंने देखा कि कोई अपरिचित व्यक्ति निःसंकोच भाव से उनकी पत्र-पत्रिकाओं के पन्ने उलट-पलट रहा है वह ठहर गए पूछा आप कौन हैं ?

पंडितजी ने उत्तर दिया — मनुष्य

द्विवेदीजी बोले हो तो ठीक है पर यहां कैसे घुस आए

पंडितजी —अपना अधिकार समझ कर पहले आप निवृत्त हो लें फिर सब बताया जाएगा

द्विवेदीजी भौंहें तन गई चेहरा तमतमा गया परन्तु परिचय पाने पर द्विवेदीजी हर्षातिरेक से विमुग्ध हो गये नयनों में प्रमाश्रु छलक आए दौड़ कर पंडितजी को स्नेह लिंगन में बांध लिया

रघुवीर सिंह

स्वर्गीय प. गिरिधर शर्मा "नवरत्न"

कोई सत्तर वर्ष पूर्व की बात है मैं उस समय मान्य पाठ्य-पुस्तक हिंदी शिक्षावली पांचवां भाग[1] का अध्ययन समाप्त कर आगे पाठ्यपुस्तक बालविनोद चौथा भाग[2] प्रारम्भ करने वाला था तब बाल विनोद के दूसरे और तीसरे भाग[3] मेरे हाथ आये मैंने उन्हें पूरा पढ़ा तीसरे भाग मे एक पाठ पुस्तक-प्रेम था जो तब की सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका 'सरस्वती' से यथावत् उद्धृत किया गया था इसी प्रकार तीन और पाठ थे जिन्हें सरस्वती से उद्धृत करते समय थोड़ा-बहुत परिवर्तित कर दिया गया था वे थे— 'ईश विनय' तथा 'ग्रीष्म-वर्णन' उसी तरह बाल विनोद" दूसरे भाग में भी दो पाठ ग्रीष्म ऋतु और गिलहरी सरस्वती से उद्धृत किये गये थे कालान्तर में सरस्वती के पूर्वकालीन खण्ड देखने को मिले तो पता लगा कि प. गिरिधर शर्मा नवरत्न' ने उनकी रचना की थी इनमें से जिस पाठ की मेरे मन पर गहरी छाप पड़ी थी वह था पुस्तक प्रेम तब से अब भी कोई नई पुस्तक मेरे हाथ में आ जाती मुझे अनायास ही इसकी पंक्तियां स्मरण हो आती थीं

बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक से ही हिन्दी पद्य की भाषा और शैली में विशिष्ट परिवर्तन होने लगे थे खड़ी बोली के आचार्य प. महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा

---

[1] हिंदी शिक्षावली पांचवां भाग सपादक प. दीन दयाल तिवारी व लाला सीताराम प्रकाशक "इंडियन प्रेस इलाहाबाद" चौदहवां पुनर्मुद्रण 1913 ई

[2] बाल विनोद चौथा भाग सम्पादक प. रामजीलाल शर्मा प्रकाशक इंडियन प्रेस इलाहाबाद 1910 ई

[3] बाल विनोद' दूसरा भाग व तीसरा भाग सपादक प. रामजी लाल शर्मा प्रकाशक इंडियन प्रेस इलाहाबाद 1910 ई

से हिन्दी-काव्य मे खडी बोली की जो नवीन धारा प्रवाहित हुई थी उसी परपरा में प गिरिधर शर्मा ने भी अपनी कविताए लिखी थीं उनके कई काव्य ग्रथ प्रकाशित हुए जिनमें उल्लेखनीय हैं जयाजयत, भीष्म प्रतिज्ञा, सुन्दया, मारव्य-दोहावली वेद-स्तुति, योगी तथा आमान विजय आगे चल कर उन्होंने अतुकान्त छन्द लेखन को भी अपनाया और अपने 'सावित्री' काव्य की रचना ऐसे ही छन्दों मे की उन्होंने कविश्रेष्ठ रवीन्द्र नाथ ठाकुर के गीता-जलि, बागवान, फल-सचय तथा चित्रागदा शीर्षक काव्य-सकलनो के हिन्दी अनुवाद किये जिनका तब विशेष स्वागत हुआ था

अग्रेजी आधिपत्य-काल मे तत्कालीन देशी राज्यो मे शिक्षा-साधनो और सुविधाओं का अभाव था तथा जनसाधारण की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नही थी, जिससे विद्याभ्यास सहज संभव नहीं था, अत तब श्री नवरत्न जी का ग्रथ-"कठिनाई मे विद्याभ्यास' का पूरा स्वागत तथा विशेष प्रसार हुआ मैंने भी उस ग्रथ को बडी रुचि और उत्सुकता से पढा था

श्री नवरत्न जी भूतपूर्व झालावाड राज्य के राजघराने के राजगुरु थे, और झालावाड नगर से कोई तीन मील दक्षिण मे स्थित झालरापाटन नगर मे निवास करते थे वे राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक थे अत सन् 1914 ई मे श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, के निजी भवन की आवश्यकता पर उन्होंने प्रेरक भाषण दिया, जिसके फलस्वरूप भवन निर्माण का आयोजन हुआ और अतत नवम्बर, 1918 ई मे समिति अपने निजी भवन मे स्थापित हो गई

सन् 1918 ई मे इन्दौर मे हुए हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के आठवे अधिवेशन मे श्री नवरत्न जी ने विशेष उत्साह और लगन के साथ भाग लिया और इन्दौर में मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना मे भी वे अग्रणी हुए अन्य दो-चार विशिष्ट पुरुषों के साथ श्री नवरत्नजी के महती प्रयास और परिश्रम से ही मार्च 1927 ई में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सत्रहवा अधिवेशन भरतपुर में आयोजित किया जा सका

कविश्रेष्ठ रवीन्द्रनाथ ठाकुर इस मे सम्मिलित हुए थे यह सम्मेलन की महान उपलब्धि थी इसी अधिवेशन में सभापति प गौरीशकर ओझा को 'साहित्य वाचस्पति' की मानद उपाधि भेंट कर हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, ने एक सर्वथा नई गौरव-पूर्ण परम्परा का आरम्भ किया पुन इसके द्वारा राजस्थान में हिन्दी की दुदुभी बजने लगी

मुझे निश्चित रूप से यह स्मरण नहीं है कि श्री नवरत्न जी से सर्वप्रथम मेरी

भट कब और कहा हुई परन्तु मेरा विश्वास है कि अप्रैल 1935 ई में इन्दौर मे हुए हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के चौबीसवे अधिवेशन मे हुई होगी उस सम्मेलन मे मैं उपस्थित था और वहा से भी भाग से स 2003 वि (946 ई) मे कराची मे हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के चौतीसवे अधिवेशन मे हिन्दी साहित्य-सम्मेलन ने दूसरी बार अपनी सर्वोच्च उपाधि साहित्य वाचस्पति से [ ] के जिन मनीषियो और साहित्यिकों का सम्मान किया गया उनमे प गिरिधर शर्मा नवरत्न भी थे जो सर्वथा उचित तथा उनकी अनथक महती सेवाओ के अनुरूप ही था

श्री नवरत्न जी से मेरी अन्तिम भट सन् 1949 ई के उत्तरार्द्ध में हुई थी राज्यो के विलीनीकरण के बाद भारत-सरकार ने भूतपूर्व नरेशो की समुचित योग्यताओ से लाभ उठाने के लिए उन्हे विदेश सेवा मे नियुक्त कर दूतावास म भेजने का काम शुरू किया इस क्रम मे झालावाड नरेश महाराज राणा हरिश्चन्द्रसिंह जी को बर्मा मे नियुक्त किया गया उनके विदाई समारोहो में सम्मिलित होने मे सब झालावाड गया था उस अवसर पर झालरापाटन नगर मे जो समारोह आयोजित हुआ उसमे झालावाड नरेश के साथ मैं झालरापाटन गया उससे पहिले हिन्दी साहित्य-सम्मेलन ने सन् 1948 ई के मेरठ अधिवेशन में मुझे मगलाप्रसाद पारितोषिक दिया गया था तब हिन्दी साहित्य-सम्मेलन द्वारा दिये जाने वाले इस मगलाप्रसाद पारितोषिक का अपना विशिष्ट महत्व था और इसे एक गौरवपूर्ण उपलब्धि माना जाता था अत इस अवसर पर श्री नवरत्न जी ने महाराज राणा हरिश्चन्द्रसिंह जी को मेरी इस उपलब्धि की जानकारी देते हुए इसे हिन्दी साहित्य का नोबल पुरस्कार वर्णित कर मेरी इस सम्प्राप्ति को विशेष रूपेण गौरवान्वित किया था

स्वर्गीय प गिरिधर शर्मा नवरत्न की साहित्य-साधना की परम्परा आज भी उनकी विदुषी पुत्री सुश्री शकुन्तला कुमारी रेणु मे यथावत् चल रही है जो स्वर्गीय श्री गिरिधर शर्मा नवरत्न की सूक्ति मुक्तावली को प्रकाशित करवाने वाली हैं

सीताराम (म प्र)

युगलकिशोर चतुर्वेदी

जन जागृति के कवि नवरत्नजी

झालरापाटन (राजस्थान) निवासी स्व० पं० गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' के साथ मेरा परिचय काफी समय पूर्व से रहा है भरतपुर से उनका पुराना पारिवारिक सम्बन्ध रहने के कारण युवावस्था में उनका यहाँ प्रायः आना-जाना रहता था जहाँ तक मुझे स्मरण है उस समय कवि के रूप में इतने प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय नहीं हुए थे जितने संस्कृत के उद्भट विद्वान् तथा वेदान्त दर्शन के प्रकाण्ड पंडित के रूप में जाने जाते थे उन दिनों उनके भाषण बड़े गंभीर तथा दार्शनिक होते थे और वे कई-कई घंटों तक चलते रहते थे फिर भी श्रोतागण उन्हें ध्यान से सुनते और प्रभावित होते थे

बचपन की यादों में 'नवरत्नजी' की कविताओं की याद अब भी सुरक्षित है उनकी कविताओं में राष्ट्रीयता और ओजस्विता कूट कूट कर भरी थी इन्हीं से प्रभावित हुआ मैं जीवन भर उनका प्रशंसक बना रहा

मुझे उनके निकट सम्पर्क में आने तथा प्रेमपूर्ण आतिथ्य ग्रहण करने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है अतः अब उनके देहावसान का दुखद समाचार पढ़ा तो उससे मर्मान्तिक वेदना का अनुभव करना तथा उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना स्वभाव

स्वाभाविक था परन्तु मेरे पास उन्हें श्रद्धाञ्जलि देने के लिए शब्द ही कहा थे ? तब से लेकर आज तक मैं यही अनुभव करता रहा हूँ कि ४० वर्ष पूर्व देश प्रेम हिन्दी की भक्ति तथा साम्प्रदायिक एकता के जिन उदात्त भावों को उन्होंने अपनी कविताओं में गुम्फित किया उन्हें प्रचारित प्रसारित करना ही उन्हें सच्ची श्रद्धाञ्जलि देना है आज जब हम पूर्ण स्वतन्त्र हैं और राष्ट्रीयता के प्रबल समर्थक हैं तब तो नवरत्न जी की भावोदीप्त और राष्ट्रीय ओज से भरी कविताओं को पढ़ाना और उन्हें जन जन तक पहुँचाना और भी आवश्यक है

सब प्रथम हम उनके स्वदेश प्रेम की एक रचना लें

उन्होंने लिखा —

> उदय न होगा भानु पूर्व छोड़ पश्चिम में
>
> मातृधरा शक्ति कहीं धरा की न जावेगी
>
> हिलेगा न हिमालय चाहे जैसी हवा चले
>
> मणिमय दीप की न ज्योति बुझ पायेगी
>
> बहेगी न उल्टी गंगा झरेंगे न और सिर
>
> प्रकृति स्वधर्म से न कभी चूक जावगी
>
> टरेंगे न ब्रह्मवाक्य भोगेंगे स्वराज्य हम
>
> सम्पदा यहाँ की यहीं फीछी लौट आवेगी

× × ×

जब कवि की स्वराज्य के प्रति इतनी तीव्र उत्कण्ठा तथा उसकी प्राप्ति के अवश्य भावी होने में ऐसी दृढ़ आस्था है तो उसमें देशप्रेम की भावना की उतनी ही तीव्र उत्कण्ठा होना भी स्वाभाविक है अपने देश के प्रति उनके जो विचार हैं उसके उत्थान हेतु देशवासियों के मध्य क्या भाव होने चाहिए तथा तदर्थ किन-किन विशेष कर्तव्यों का पालन किया जाना आवश्यक है इस तथ्य को व्यक्त करने के लिए उनकी निम्न लिखित कविता कितनी मार्मिक है इसे भावना प्रधान सहृदय व्यक्ति ही अनुभव कर सकता है —

> मेरा देश देश का मैं देश मेरा जीव प्राण
>
> मेरा सामान मेरे देश की बड़ाई में
>
> जियूँगा स्वदेश हित मरूँगा स्वदेश हेतु
>
> देश के लिए न कभी करूँगा बुराई मैं

भीषण भयंकर भैसाणा में भी भूल के भी
भूलूंगा न देश हित राम की दुहाई मैं
जब लौं रहेगी पास सर बस लुटा दूंगा
ईश को भी भुला दूंगा देश की भलाई मैं

× × ×

जो व्यक्ति जीवित रहते देश के हित में सर्वस्व लुटाने के लिए कृतसंकल्पी हो उसके लिए देश की भलाई में ईश्वर को भुला देना कोई अचम्भे की बात नहीं।

राजस्थान जैसे राजनैतिक चेतना की दृष्टि से पिछड़े प्रदेश के झालावाड़ जैसे छोटे से राज्य के दरबारी कवि के हृदय में देशप्रेम की इतनी प्रबल लालसा उस युग में प्रकट करना, जब देशभक्ति की चर्चा करना या 'स्वराज्य' शब्द का उच्चारण तक करना अक्षम्य अपराध माना जाता था, सराहनीय साहस ही कहा जा सकता है।

स्वदेश के प्रति असीम प्रेम तथा उसकी भलाई के लिए सर्वस्व निछावर करने की प्रबल इच्छा हो परन्तु देशोत्थान के लिए वहां के निवासियों में पारस्परिक प्रेम तथा भिन्न भिन्न धर्म और सम्प्रदायों के प्रति आदर एवं सम्मान के भाव न होकर उनके द्वारा असहिष्णुता का परिचय दिया जाता हो तो उस देश का कैसे भला हो सकता है? अथवा ऐसे लोगों की मातृभूमि कष्टकाराएं क्यों न भोगे? इस ओर इंगित करते हुए कवि ने कितने सुन्दर विचार व्यक्त किये हैं —

'जाना नहीं अच्छा कभी जैनियों के मन्दिर में'
'किसी भांति अच्छी नहीं कृष्ण की उपासना'
'शम्भु का स्मरण किये होता जाना क्या है, कहो!'
राम नाम लेने से क्या सिद्ध होगी कामना?
'म्लेच्छ हैं मुसलमान हिन्दू सबके काफिर हैं'
ऐसी ही परस्पर में बुरी यहां भावना
प्रेम नहीं आपस का, एक फिर क्यों कर हो?
क्या न भोगे हिन्द माता नयी नयी यातना??

× × ×

अब बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में यदि हमारे देश के लोग भिन्न भिन्न सम्प्रदायों के प्रति सहिष्णुता की बात करें तो कोई असाधारण बात नहीं क्योंकि अब तो पिछले

चार दशकों से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के उपदेशों और कांग्रेस के निरन्तर प्रचार ने इन भावों को जनसाधारण तक पहुंचा दिया है परन्तु इस शताब्दी के दूसरे दशक के आरम्भ में साम्प्रदायिक एकता का इतने स्पष्ट शब्दों में संदेश सुनाना विशिष्ट दृष्टि के विचारक या कबीर जैसे समाज सुधारकों के लिये ही संभव हो सकता है

इतने ऊंचे दर्जे के देशभक्त स्वराज्य प्राप्ति के लिये मर मिटने वाले तथा साम्प्रदायिक एकता के ऐसे दृढ़ पक्षधर कवि का अपनी मातृभाषा के प्रति आत्मीयता के कैसे भाव होने चाहिए इसका भी दिग्दर्शन उन्होंने अपनी कविताओं द्वारा प्रचुर मात्रा में कराया है नवरत्नजी की मान्यता थी—

> अंगरेजी जर्मन ग्रीक, फ्रेंच लटिन त्यों
> रशियन जापानी चीनी प्राकृत प्रमाणी हो
> तमिल तलंगी तूलू द्रविड़ मराठी ब्राह्मी
> उड़िया बंगाली पाली गुजराती छानी हो
> जितनी अनाम आप भाषा जग जाहिर है
> फारसी अरबी तुर्की सब मन मानी हो
> जनम हुआ है तो भी मेरे जान मानव को
> हिन्द में जनम पा के हिन्दी जो न जानी हो

यह है किसी समय की उपेक्षित तथा अपमानकालीन राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति अगाध प्रेम ! जिससे प्रेरित होकर संस्कृत के उद्भट विद्वान तथा अन्य कितने ही प्रादेशिक भाषाओं के पण्डित होते हुए भी उन्होंने भावमयी काव्यधारा हिन्दी के माध्यम द्वारा ही प्रवाहित करना समीचीन समझा साथ ही आपकी कविता रीतिकालीन शृंगारी कवियों की भांति ऐश्वर्य और विपुल वैभव की गोद में पले हुए राजा महाराजाओं के मनोरंजन अथवा बौद्धिक विलास के लिये न होकर भारत जैसे पिछड़े हुए, रोजी रोटी के अभाव में रत देश के जनसाधारण को प्रेरणा देने तथा उनका पथ प्रदर्शन करने के लिये ही है इसीलिये झालावाड़ नरेश के राजकवि होते हुए भी नवरत्न जी जनकवि माने जाते हैं इनके अतिरिक्त विविध विषयों से संबंधित आपकी और भी उपयोगी रचनाएं हैं जिनको प्रकाश में लाने की ओर राजस्थान सरकार अथवा राजस्थान साहित्य अकादमी को अविलम्ब ही चेष्टा करनी चाहिये

अशोक माथुर सी स्कीम,
जयपुर,

जवाहरलाल जैन

राजस्थान के मूर्द्धन्य राष्ट्रीय कवि

हो चित्त में निर्भयता जहां ऊंचा जहां पर मस्तक होवे ।
स्वतन्त्र हो ज्ञान सदा जहां पर होवे जरा भी उसमें न बाधा ।

× × ×

होवे जहां पौरुष-स्रोत भारी बहे जहां से शुचि कर्मधारा
दिशा दिशा में बहती हुई जो सदैव अच्छे फल दे हजारों ।
कुरीतियों की मरु बालुराशि विचार स्रोत पथ में न रोके ।
नेता जहां तू सब काम का हो विचार आमोद प्रमोद का हो ।

× × ×

स्वतन्त्रता के उस स्वर्ग में तू, मेरे प्रभो भारत को बिठादे ।

1929 का वर्ष झालरापाटन में एक छोटे एक मंजिले घर के खुले आंगन में, रात्रि के प्रारम्भ में 45 वर्षीय प्रौढ़ कवि ने अपनी रचनाएं 20 वर्षीय [illegible] को अत्यन्त प्रेम से सुनाईं। इनमें बंगला भाषा से अनूदित हिन्दी गीतांजलि का उपर्युक्त पद भी था। *मैंने सबको गीतांजलि की कविता का बहुत विस्तार से महाराना कालेज में*

अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष श्री निशिकान्त दत्त से अध्ययन किया था। जितना आनंद मुझे अंग्रेजी काव्य को सुनकर और समझकर आता था उससे कहीं अधिक आनंद कवि नवरत्नजी से हिन्दी पद्यों को सुनकर आता। तभी से मेरा भक्ति संबंध कविजी से आरंभ हुआ जो पूरे परिवार के साथ स्नेह संबंध में विस्तृत हुआ। बाद में उनके पुत्र ईश्वरलाल शर्मा और पुत्री शकुन्तला रेणु से मैत्री संबंध गहरा हुआ क्योंकि ईश्वरलालजी दैनिक नवज्योति से संबद्ध होकर मेरे साथ कई वर्ष रहे। शकुन्तला की काव्य प्रतिभा से अधिक उसकी पितृसेवा और पितृभक्ति ने मुझे प्रभावित किया। शकुन्तला ने नवरत्नजी की अप्रकाशित विपुल साहित्य-संपत्ति का बड़े परिश्रम से संयोजन तथा संपादन करके रखा है।

फिर तो नवरत्नजी के साथ कई बार मिलना हुआ और हर बार उनसे मिलना काव्य-चर्चा और राष्ट्रीय चर्चा का उद्दाम प्रसंग ही बन गया। उनका हृदय काव्यपूर्ण था तो दृष्टि राष्ट्रीय। नवरत्नजी का कवित्व निर्झर अजस्र था। वह रात दिन झरता ही रहता था, बातचीत में, विनोद में, घूमने फिरने में, काव्य रचना में, अनुवाद में, कहानी उपन्यास में—शायद उनका प्रत्येक श्वास तक काव्यमय हो गया था। पिछले बीस वर्षों से उनकी दृष्टि क्षीण होकर समाप्त हो गई थी, तब से शकुन्तला को अपनी रचनाएं लिखवा देते थे पर जिस गति से वह लिख पाती थी उनकी रचना की गति उससे कहीं अधिक तीव्र रहती थी। उनकी जन्म-शताब्दी के अवसर पर उनकी सारी अप्रकाशित रचनाओं का संग्रह प्रकाशित हो सके तो वह हमारी नवरत्नजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

नवरत्नजी हिन्दी के पंडित और भक्त तो थे ही। वे हिन्दी को स्वतन्त्र हिन्द की राष्ट्रभाषा मानते थे और उसे इस पद पर आसीन देखते थे। हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, फारसी, उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती और अंग्रेजी का ज्ञान भी गहरा और व्यापक था। इन सब भाषाओं की अनेक उत्तम रचनाओं का अनुवाद उन्होंने अपने जीवन में किया। इन सब भाषाओं से उन्हें प्रेम था पर इसके साथ ही उनका दृढ़ विश्वास था कि हिन्द के निवासी को तो हरेक को हिन्दी आनी ही चाहिये। उनका मानना था—

> जन्म हुआ है तो भी मेरे जान मानव का
> हिन्द में जन्म पाके हिन्दी जो न जानी हो।

नवरत्नजी को अपने देश के प्रति अगाध प्रेम था। उन्होंने अपने आप को देश के साथ एकाकार करके कहा था—

> मेरा देश-देश का मैं, देश मेरा जीवन प्राण
> मेरा सम्मान मेरे देश की बड़ाई में

जिऊगा स्वदेश हित मरूगा स्वदेश काज ।
देश के लिये न कभी करूगा बुराई मैं ॥
भीषण भयकर प्रसग मे भी भूल करके भी
भूलू गा न देश हित राम की दुहाई मैं ॥
जब लो रहेगी सास सवस्व भी लुटा दू गा ।
ईश को भी झुका लू गा देश की भलाई मे ।

ईश को भी झुका लेने का साहस और तपस्या कवि में ही हो सकती है ईशोपनिषद के ऋषि ने 'कविर्मनीषी परिभू स्वय भु' कह कर ईश्वर की परिभाषा की है

इतना ही नहीं नवरत्न जी ने यह भी चाहा है—मेरो धन मेरो तन मेरो मन मेरो जीव मेरो सब लग देश की भलाई म

नवरत्न जी की अपने देश की परिभाषा भी व्यापक से व्यापक और सूक्ष्म से सूक्ष्म थी इसका बडा मनोरजक वर्णन उन्होंने निम्नलिखित पद्य मे किया है—

ईश के प्रपच बीच सार व्योम मडल है
व्योम मडल मांहि सूर्यचक्र बलिहारी है ।
सूर्यचक्र बीच सार भूमि है सुहानी सारी
सारी भूमि मांहि एशिया की भूमि प्यारी है ।
एशिया मे भारत भारत मांहि राजस्थान
राजस्थान बीच झालावाड शोभाधारी है ।
झालावाड मेहू सार जननी महाजनों की
जन्म भूमि प्राण प्यारी पाटन हमारी है ।

नवरत्न जी ने अपने देशप्रेम का प्रारम्भ ईश्वर की सृष्टि की परिधि से करके उसकी पूर्णता अपनी जन्म भूमि झालरापाटन नगर के बिन्दु मे की गनीमत है कि कविजी पाटन पर रुक गये वे अपनी प्रतिभा से अपनी जन्म भूमि को झालरापाटन के अपने छोटे से जराजीर्ण सफद घर में भी केन्द्रित कर सकते थे कौन रोक सकता था—जहा न पहुचे रवि वहा पहुचे कवि

जब यह देश गुलामी की अंधेरी रात में बेहोश था, तब कवि ने देश को जगाया उसे साहस बंधाया था—

> उदय न होगा भानु पूर्व छोड़ पश्चिम में
> आकर्षण शक्ति धरा की न कहीं जायेगी।
> हिलेगा न हिमाचल चाहे जैसी हवा चले
> मणिमय दिये की न ज्योति बुझ पायेगी।
> बहेगी न उल्टी गंगा, झुकेंगे न वीर सिर
> प्रकृति स्वधर्म से न कहीं चूक पायेगी।
> टरेंगे न ब्रह्म वाक्य, भोगेंगे स्वराज्य सुख
> संपदा यहां की यहीं पीछे लौट आयेगी।

और सचमुच 1947 में स्वराज्य आ गया अंग्रेज इस देश से चले गये, पर अंग्रेजियत' यहां छोड़ गये जो भारतीय राज्यकर्ताओं की छत्रछाया में दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ रही है फिर भी आशा है कि नवरत्नजी के ब्रह्म-वाक्य सिद्ध हो के रहेंगे और हम स्वराज्य सुख भोगेंगे और इस 'हमारे देश के अंतिम नागरिकों को सबसे पहले शामिल किया जायेगा कहना न होगा कि जिस स्वतंत्रता के स्वर्ग की प्रार्थना रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने तथा उनका अनुसरण करके नवरत्नजी ने की थी, उससे हम अभी कोसों दूर हैं पर इन कवियों की दृष्टि हम आश्वस्त भी करती है

कवि ने मृत्यु के पश्चात् अपने स्मारक पर अंकित करने के लिये अपना चरित्र सूत्ररूप में स्वयं लिख दिया था—

> अनुचित सत्ता अधीभूत हो शीश झुकाना,
> कायरता का काम सदा जिसने था जाना।।
> रहा सदा स्वाधीन किया निश्चल का चाहा।
> किया सदा उपकार उच्चतर चरित निभाहा।।
> दु:खों से ना डिगा, न फूला सुख में आकर
> सोता है इस ठौर यही कवि गिरधर नागर।।

इस नागर कवि के कर कमलों में उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर हार्दिक श्रद्धांजलि

प्रभनारायण सहृदय

"नवरत्न" संस्मरण के दर्पण में

वीरप्रसू राजस्थान की धरा न केवल जुझारू मात्र ही नहीं है वरन साहित्य संगीत चित्रकला वस्तुकला मूर्तिकला प्राय सभी क्षेत्रो मे उसका अपना अनोखा स्थान रहा है वर्तमान महाराजस्थान तत्कालीन रियासतो का पुज है रियासतो की अपनी अपनी अलग-अलग विशेषताए आज राजस्थान म एकीभूत होकर देश को गौरवान्वित कर रही है इस एकीकरण मे स्वार्जित सौष्ठव की प्रभा क्षीण नही हो पाई है इस कथन की पुष्टि प्रस्तुत संस्मरण आलेख म झालरापाटन के राजगुरु पडित प्रवर स्व गिरिधर शर्मा नवरत्न के व्यक्तित्व के आधार पर प्रकाश हो जाती है

व्यक्तित्व

स्व गिरिधर शर्मा नवरत्न एव पिताम्बर धवल वस्त्र धारण किये हुए कभी रियासती पदा मे तो कभी समाज सुधारक गाधियन वेशभूषा मे सदय प्रमुख मुहुलभरे वार्तालाप के धनी अपनी मस्तानी चाल के साथ किसी गभीर कल्पना म खोये हुए अकबरकालीन अलग अलग नवरत्नो को अपने पुष्ट-पृथुल शरीर म समोये हुए एकीभूत नवरत्ना के प्रभापुज प्राचीन तथा अर्वाचीन साहित्य क्षितिज के देदीप्यमान नक्षत्र होने के नाते सर्वकालीन एव ऐसे साहित्यकार थे जिनकी रचनाओं म युग बोलता है

आपसे प्रस्तुत लेख के लेखक का प्रथम परिचय अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के झोपी की तुलसी बगिया मे होने वाले अधिवेशन में हुआ था यहीं आपने लेखक को अपनी प्रसिद्ध कविता मस्त कलदर सुनाई थी इस कविता म आपका निर्द्वन्द्व व्यक्तित्व मूर्तिमान हो रहा था तभी से आप लेखक के मन और मस्तिष्क पर छाये हुए थे

साधारण मानव विशेष मानव और महामानव इन तीनों रूपों का समन्वितरूप सुधारक मानव मानव की इन विभिन्न कोटियों में से मैं अपने निजी अनुभव से स्व गिरिधर शर्मा नवरत्न को सुधारक मानव मानता हूं सुधारक मानव मे साधारण से लेकर महामानव तक के गुण स्वतः अनुस्यूत रहते हैं तभी उनमें सुधार की बहुमुखी क्षमता आती है नवरत्न जी मनसा वाचा और कर्मणा प्रयासों के सोपान पर चलते रहने के अपने उत्साह को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्ति देकर सदैव मानव को ऊंचा उठाने की प्रेरणा देने में कृत संकल्प रहे यह कार्य न सरल है न ही सर्वसाधारण इसके सम्पादन के लिए सक्षम ही होता है देवात्मा या ऋषि अंश ही मानव सुधार कार्य का प्रतिफलित कर सकता है मानव सुधार इकाई रूप से समाज सुधार के विस्तृत क्षेत्र को अपने दायरे में समेट लेता है

कविवर हमारे चरित्रनायक का स्वभाव था विशेष आपका सम्मोहन मन्त्र था समाज सुधार और देशभक्ति का प्रचार था आपका साध्य जिसकी सफलतापूर्वक पूर्ति के लिए आपने राष्ट्र भारती (हिन्दी) को ही एक मात्र साधन के रूप में अपनाया था

नवरत्न जी स्वभाव से ही सर्वधर्मसमभावी थे सम्प्रदायवाद तथा मतपथवाद को पारस्परिक कलह वैमनस्य और ईर्ष्या का स्रोत मानकर सदैव उसे व्यक्ति समाज और देश के लिए घातक मानते रहे अपनी कविताओं में धर्म के नाम पर आपसी विद्रोह के विरुद्ध ये उद्‌गार द्रष्टव्य हैं —

> जाता नहीं अच्छ कभी जनियो का मंदिर में
> किसी भांति मन्दो नहीं कृष्ण की उपासना
> शम्भु का स्मरण किये होता जाता क्या है ?
> राम के न लिए से क्या सिद्ध होगी कामना ?
> हैं म्लेच्छ मुसलमान हिन्दू वह काफिर हैं।
> ऐसी ही परस्पर में बुरी बढ़ी भावना।
> प्रेम न हो आपस का एक फिर क्यों कर हो ?
> क्यों न भीगे हिन्द माता ? क्यों कर पी मर सता ?

इस कविता में युग बोल रहा है और साथ ही भारतीय समाज का आपसी द्वन्द्व भी साकार हो उठा है नवरत्न जी सुधारक थे उन्हें पाखण्ड पसंद नहीं वे सच्चे समाजवादी थे समता के हामी (पक्षधर) और प्रचलित सम्प्रदायवाद के कट्टर विरोधी थे प्रस्तुत कविता का एक एक शब्द इस नग्न सत्य को मुखरित कर रहा है

नवरत्न का कुशल कवि देशप्रेम में एकनिष्ठ होकर भी मानवता के व्यापक

दायरे को अपने में समेटे हुए है निम्न कविता में कवि के हृदय की विशालता ने अपनी जन्मभूमि के प्रेम को जिस प्रकार अंक में समेटा है देखते ही बनता है —

देश के प्रथम सार्वभौममण्डल है
व्योममण्डल मांहि भूमण्डल बलिहारी है
भूमण्डल बीच सारभूमि है गुहनी सारी
सारी भूमि मांहि एशिया की भूमि प्यारी है
एशिया में भारत और भारत मांहि राजस्थान
राजस्थान बीच झालावाड़ शोभा वारी है
झालावाड़ गेह सार जननी महाजनों की
जन्मभूमि प्राणप्यारी पाटन हमारी है।

अपनी जन्मभूमि पाटन के पाटम्बर में ब्रह्माण्ड को समेट कर ला रख नवरत्न जी जैसे नवरत्न-केसरी का ही काम था

आपकी अन्य रचनाओं में भी देशप्रेम और राष्ट्रीयता के भाव प्रचुर मात्रा में परिलक्षित होते हैं निम्न उदाहरणों से यह कथन स्वयं ही प्रमाणित है—

मेरा देश देश का मैं देश मेरा जीवन प्राण
मेरा सम्मान मेरे देश की बड़ाई में।

तथा

चर्चा जहां देश की हो मेरी जीभ वहीं खुले
और न खुले कहीं खुदा की खुदाई में।

× × ×

इन पंक्तियों में देशप्रेम की सीमा हो गयी खुदा की खुदाई एक तरफ और कवि का देशप्रेम एक तरफ इसी प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति भी आपने जो कुछ लिखा तन्मय होकर लिखा है निम्नलिखित पंक्तियां आपके हिन्दी अनुराग की मुंह बोलती सवाहिय हैं —

अंग्रेजी जर्मन फ्रेंच ग्रीक लेटिन चाहे
रशियन जापानी चीनी प्राकृतिक मगधानी हो।
तमिल तेलगू कुन्नू द्राविड़ी मराठी बाह्मी
उड़िया बंगाली पाली गुजराती पुरानी हो।
जितनी जगत आर्य भाषा सब जाहिर है
फारसी ऐराबी तुर्की शबनम आनी हो।
जन्म वृथा है तो भी मेरे जाने मानव का
हिन्द में जन्म लेकर हिन्दी न जानी हो।

विवेचना

मूलचन्द पाठक

पंडित गिरिधर शर्मा नवरत्न एवं उनका संस्कृत कृतित्व

नाना देश नाना भाषा रम्या: प्रिय विराजन्ते ।
किन्तु यदास्मत्य स्वारस्य संस्कृतस्यास्ति ॥
(गिरिधरसप्तशती 697)

विभिन्न देशों में अनेकानेक सुन्दर भाषाएं विद्यमान हैं पर हम सत्य कहते हैं कि संस्कृत का अपना ही कुछ विलक्षण सौन्दर्य है

राजस्थान में झालावाड़ से लगभग तीन मील दूर स्थित झालरापाटन अपने सुरम्य प्राकृतिक परिवेश एवं प्राचीन मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है इसी कस्बे के एक कोने में सरस्वती के मौन साधक प. गिरिधर शर्मा नवरत्न का आवास नवरत्न सरस्वती भवन उनकी पुण्य स्मृति को सहेज कर उपेक्षित सा खड़ा मन में एक टीस सी जगा देता है

संयोग से मैं पंडित जी का सम्बन्धी हूँ वे मेरे चचेरे भाई के श्वसुर थे मेरे

साहब के विवाह में मैं सम्मिलित हुआ था पर तब मेरी नादान उम्र थी साहित्य और साहित्यकार शब्द भी तब मेरे लिए अपरिचित थे उस विवाह की कुछ स्मृतियाँ मेरे मन में शेष हैं पर उनका पंडित जी के व्यक्तित्व या साहित्य से कोई सम्बन्ध नहीं है

मुझे पंडित जी को पहली बार अच्छी तरह देखने और उनके निकट सम्पर्क में आने का अवसर सन् 1951 में मिला उस समय मैं कॉलेज में आ चुका था तथा साहित्य मेरा प्रिय विषय था तब किसी पारिवारिक काम से मुझे जयपुर से पाटन जाना पड़ा गया तो एक दो दिन के लिए ही था पर आग्रहवश पाँच सात दिन रुक जाना पड़ा शायद मेरा मन भी यह चाहता था पंडित जी के प्रति मेरे मन में गहरी श्रद्धा थी मुझे अयाचित ही उनका सान्निध्य मिल गया

उस समय पंडित जी की उम्र लगभग 70 वर्ष की रही होगी अनेक वर्षों से वे अन्धत्व से ग्रस्त थे उनका बाह्य व्यक्तित्व गरिमामय एवं प्रभावशाली था कद काठी अच्छी थी पर स्वास्थ्य ढलाव पर था अन्धता ने उन्हें गतिहीन कर दिया था जिसका असर उनकी शारीरिक दशा पर भी पड़ना स्वाभाविक था उनकी चारपाई घर की पोली में घुसते ही एक बरामदानुमा कमरे में जो चौक की ओर खुलता था बिछी रहती थी वहीं वे बैठे या लेटे रहते थे बीच बीच में वे कुछ बोलते या किसी को बुलाते रहते शायद अकेलापन उन्हें रास नहीं आता था घर के लोग स्वभावत अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त रहते यह सम्भव नहीं था कि उनके हर बुलावे का उत्तर दिया जाता या कोई उनके पास लगातार मौजूद रहता पंडित जी की पत्नी श्रीमती रत्नज्योत्स्ना देवी एवं पुत्री सुश्री शकुन्तला कुमारी रेणु अपनी व्यस्तताओं में भी उन्हें सम्भालती रहती थीं

वहाँ मैं फुरसत में था तो अधिक से अधिक समय पंडित जी के पास गुजारता कभी वे अखबार पढ़वाते तो कभी कोई पुस्तक उस उम्र में भी उनकी अध्ययन में पर्याप्त रुचि थी शारीरिक असमर्थता तो थी पर उनका मन सदैव क्रियाशील रहता वे ध्यानस्थ होकर कुछ सोचते रहते मन ही मन कविता बनती रहती जब वह पूरी हो जाती तो लिखने के लिए आवाज देते पास बैठाकर लिखवाते लिखवाकर एक-एक अक्षर पढ़वाते वर्तनी ठीक कराते रचना कभी संस्कृत की होती कभी हिन्दी की एक दो बार उन्होंने मुझ से भी लिखवाया उनकी पुत्री शकुन्तला जी इन फुटकर रचनाओं को एक कापी में उतार देती प्राय प्रतिदिन यही क्रम चलता

पंडित जी की अन्धताजन्य विवशता देखकर खेद होता विशेष रूप से इसलिए भी कि जवानी में वे बड़े श्रमशील व्यक्ति रहे थे उन्होंने दूर-दूर की यात्राएं कीं अनेक

संस्थाओं की स्थापना की साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया विद्वानों का सम्मान किया झालावाड़ नरेश श्री भवानीसिंह जी उन पर बड़े कृपालु थे उनके पुत्र राजेन्द्रसिंह जी भी उनका बहुत सम्मान करते थे पंडित जी वंश परम्परा से राजगुरु थे दरबार के प्रमुख विद्वानों में उनका स्थान था संयोग से राजा विद्याव्यसनी एवं साहित्यरसिक थे उनके यहाँ कवियों और विद्वानों का जमघट लगा रहता दूर-दूर से गुणीजन आते तथा राजसम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त करते पंडित जी इन सारी साहित्यिक गतिविधियों के सूत्रधार थे बाहर के विद्वान अतिथि उनके घर आते गोष्ठियाँ होतीं चहल पहल रहती अचानक से उनकी इस व्यस्तताकुल जीवनचर्या को सहसा कुण्ठित कर दिया गतिशीलता एकाएक रुक गयी घूमना-फिरना बंद हो गया बिस्तर से लगकर रह गये धीरे धीरे स्वास्थ्य भी गिरता गया किन्तु हिम्मत नहीं हारी प्रतिभा एवं वैदुष्य की पूँजी पास थी बैठे-बैठे ही साहित्य-साधना करते रहे समाज को अपने मन की निधि देते रहे

पंडित जी का मकान साधारण था रईसी नहीं थी पर आर्थिक कष्ट भी नहीं था अभ्यागत सम्मान व सत्कार थी घर का काम अच्छी तरह चलता था अतिथियों का भी अच्छा सत्कार होता था ब्राह्मणोचित सादा रहन सहन था आज की तरह आवश्यकताएं बहुत अधिक नहीं थीं

घर का वातावरण पुस्तकमय था हर कमरे में पुस्तकों के अम्बार थे घर में कोई और सामान शायद ही दिखाई देता जिधर दृष्टि जाती उधर पुस्तकें ही पुस्तकें मेरी पुस्तकों में विशेष रुचि थी इसलिए जब भी मौका मिलता मैं कौतूहलवश उन्हें उलटता पलटता अधिकतर संस्कृत व हिन्दी की पुस्तकें थीं—प्रायः लेखकों द्वारा भेंटस्वरूप दी हुई पुस्तकें इतनी थीं कि उनकी उचित संभाल संभव नहीं थी थोड़ी इधर उधर बिखरी थीं संभव है कुछ खास पुस्तकें निश्चित स्थान पर संभाल कर रखी गयी हों पर अधिकतर अव्यवस्थित थीं

पुस्तकों को देखने से पता लगा कि पंडितजी का देश के चोटी के विद्वानों एवं लेखकों से सम्पर्क या परिचय था वे अपनी नवप्रकाशित पुस्तकें उनके पास भेजते थे उस जमाने के शायद ही किसी प्रतिष्ठित हिन्दी लेखक की स्वहस्ताक्षरित रचनाएं उनके भण्डार में न रही हों

पंडितजी अपने जीवन के संस्मरण सुनाते उनकी सम्भाषण शैली रोचक थी किस तरह गांधीजी से मिले ? कब कहां किन विद्वानों के सम्पर्क में आये ? पं महावीर प्रसाद द्विवेदी से पहली मुलाकात का रोचक प्रसंग भी उन्होंने सुनाया बड़ी अद्भुत थी उनकी

स्मृतियों की सम्पदा वस्तुत साहित्यिक संस्मरणों एव जीवन अनुभवो के वे एक जीवित संग्रहालय थे

पंडितजी का व्यक्तित्व पाण्डित्यमय था उनकी आकृति एव मुद्रा भी वैदुष्य की परिचायक थी पर उनमें अहं का लेशमात्र भी नहीं था वे मूलत सहृदय थे—स्नेह और करुणा से ओतप्रोत वृद्धावस्था एव अन्धता के कारण उनके व्यवहार में निरीहता एव दैन्य का भाव-यदा कदा दिखायी दे जाता था

उन दिनों पंडितजी के शरीर मे पीड़ा रहती थी क्योंकि कोई मिलने वाला उनके पास आकर बैठना वे अपना हाथ या पाव लम्बा कर दबाने का सकेत करते मुझे खुशी है कि उक्त प्रवास मे मुझे भी उनकी इस तरह की सेवा करने का किंचित् अवसर मिला

पांच छह दिन यों ही बीत गये पर इस दौरान एक ऐसे व्यक्तित्व का परिचय मिला जो असाधारण क्षमताओं एवं सभावनाओं से परिपूर्ण होते हुए भी शारीरिक विवशता के कारण असमय में ही कुंठित होकर रह गया तथा अपनी प्रतिभा के विभिन्न आयामों को जीवन-कर्म में पूर्णतया रूपान्तरित नहीं कर सका

नवरत्नजी को संस्कृत विद्या पैतृक परम्परा से प्राप्त हुई थी अपने पिता पंडित घनेश्वर शर्मा से उन्होंने संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त किया बाद में पाटन जयपुर एव वाराणसी के विद्वानों के सान्निध्य मे रहकर संस्कृत साहित्य एवं शास्त्रों का गंभीर अध्ययन किया उर्दू फारसी आदि भाषाएं भी सीखीं गुजराती उनकी मातृभाषा थी अंग्रेजी मराठी बंगला आदि का भी अभ्यास किया पिता की मृत्यु के पश्चात् उन्हें अपना अध्ययन-क्रम बीच में ही छोड़ना पड़ा झालावाड़ नरेश भवानीसिंह जी की सत्प्रेरणा से वे साहित्य साधना में दत्तचित्त हो गये

पंडित गिरिधर शर्मा का संस्कृत कृतित्व विस्तृत एवं विविध कहा जा सकता है उसमें लगभग 30 35 रचनाएं सम्मिलित हैं इनमें से लगभग एक तिहाई ही प्रकाशित हुई हैं शेष अभी तक अप्रकाशित हैं प्रकाशित रचनाओं मे 1– श्री भवानीसिंह कारकरत्नम्, 2 अमरसूक्तिसुधाकर 3 श्री भवानीसिंहसद्गुणगुच्छ 4 नवरत्ननीति 5– गिरिधरसप्तशती 6– प्रेमपयोधि 7 योगी 8– यमेदरस 9– न्यायवाणगुम्फ 10– सौरमण्डलम्, 11– आपाविजयम् आदि उल्लेखनीय हैं दुर्भाग्य से ये सभी रचनाएं अब उपलब्ध नहीं होतीं

अप्रकाशित रचनाओं में कुछ अनुवाद हैं जैसे कवीन्द्र रवीन्द्र की गीतांजलि का,

फारसी के करीमा और गुलिस्ता का तथा अंग्रेजी कवि ग्रे की एक शोकान्तगीतिका चाणक्य के नीतिसूत्रों पर चाणक्यसूत्रकारिका तथा मयूर कवि के सूर्यशतक पर संस्कृत टीका भी आपने लिखी मौलिक रचनाओं में श्रमभक्तिविंशति आत्मनिवेदनम्, नवरत्नोपदेश नक्षत्रमाला प्रश्नोत्तरमाला नवरत्नसुभाषितानि भारतवन्दना मातृभूमिवन्दना राजस्थानवन्दना पराम्बावन्दना रत्नज्योत्स्नाष्टकम् गणाष्टकम् बालकृष्णाष्टकम् नागरत्नम् आदि परिगणनीय हैं

नवरत्नजी का उक्त कृतित्व संख्या की दृष्टि से प्रभावशाली है पर मात्रा की दृष्टि से उतना विपुल नहीं है तथापि इसे बहुत क्षीण भी नहीं कहा जा सकता विषयवस्तु एवं शैली की दृष्टि से उसमें पर्याप्त वैविध्य है उनकी कुछ रचनाएं प्रशस्तिपरक हैं कुछ देशभक्ति के गीत हैं कुछ ईश्वरभक्ति देवस्तुति एवं दार्शनिकता से ओतप्रोत हैं तो शेष सभी नीतिपरक उन्होंने विभिन्न भाषाओं की कतिपय प्रसिद्ध कृतियों का संस्कृत में अनुवाद भी किया है इनमें उमरखय्याम की रुबाइयों तथा गीताञ्जलि के अनुवाद महत्वपूर्ण हैं

पण्डितजी मुख्यत पद्यकार हैं गद्य का उन्होंने विरल ही प्रयोग किया है— केवल दो कृतियों में ये दो कृतियां व्याकरण एवं छन्दशास्त्र से सम्बन्धित हैं इनका मूलभाग पद्यात्मक है पर उस पर व्याख्या संस्कृत गद्य में प्रस्तुत की गयी है पण्डितजी में गद्य लेखन की अच्छी क्षमता है पर दुर्भाग्य से उन्होंने इस माध्यम का अधिक उपयोग नहीं किया

नवरत्न जी के साहित्यिक व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास 19वीं सदी के अन्तिम भाग तथा 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध के भारतीय जनजागरण एवं स्वातन्त्र्य आन्दोलन की विराट चेतना के प्रभाव में हुआ इस युग की स्वातन्त्र्य भावना रूढ़िमुक्त समाज सुधार की आकांक्षा स्वदेशी प्रेम तथा देश के नैतिक पुनर्निर्माण की चेतना ने नवरत्नजी को गहराई से प्रभावित किया तथा उनके काव्य को एक निश्चित दिशा दी वे संस्कृत की प्रगतिशील परम्परा के अनुगामी हैं अपने युग की आधुनिकता को उन्होंने सहज भाव से स्वीकार किया है सामान्य संस्कृत पण्डितों के समान वे अतीतोन्मुखी एवं रूढ़िवादी नहीं हैं विगत के प्रति गौरव का भाव रखते हुए भी उन्होंने आधुनिक विचारों को यथाशक्ति अपनाया है यही कारण है कि वे अपनी रचनाओं के परम्परावादी के रूप में नहीं अपितु अपने युग की चेतना के सहभागी के रूप में ही स्मरण किये जाएंगे

पण्डितजी मूल रूप से मुक्तक कवि हैं प्रबन्ध रचना में उन्होंने रुचि नहीं दिखाई

उनका कृतित्व अधिकतर नीतिपरक स्फुट पद्यो गीतियों, लघु कविताओं तथा सुभाषितो के रूप मे प्रस्फुटित हुआ है उनकी लम्बी रचनाए जैसे अमरसूक्ति-सुधाकर, प्रेमपयोधि तथा गीताञ्जलि आदि अनुवाद है या गिरिधरसप्तशती, आर्योपदेशरत्नमाला आदि मुक्तक पद्यो के सकलन है सभवत राजदरबार से सबध के कारण या जीवन के उत्तरभाग मे अधे हो जाने के कारण वे अब महाकाव्य की रचना मे प्रवृत्त नहीं हुए

नवरत्नजी के काव्य की कुछ दिशाए स्पष्टत पहचानी जा सकती हैं वे झालावाड नरेश के राजगुरु एव आश्रित कवि थे ये राजा स्वय भी बडे गुणवान्, प्रजावत्सल एव विद्वान् थे ऐसे आदर्श राजा को पाकर कवि का उनके विषय मे मौन रहना सभव नहीं था वैसे भी संस्कृत मे आश्रयदाता राजा के प्रशस्तिगान की पुरानी परम्परा रही है राजस्थानी का चारण-काव्य उसी परम्परा मे आता है नवरत्नजी यद्यपि नर-वर्णन के पक्षधर नहीं है पर राजा के सद्‌गुणो पर वे इतने मुग्ध है कि उनकी प्रशसा मे लेखनी उठाने का लोभ-सवरण नहीं कर सके 'भवानीसिहकारकरत्नम्" तथा 'भवानीसिहसद्वृत्तगुच्छ' वैसे तो क्रमश व्याकरणशास्त्र और छन्दशास्त्र के ग्रथ हैं पर लेखक का वास्तविक उद्देश्य शास्त्र के आवरण मे राजा का यशोगान करना ही रहा है यह जरूर है कि पुराने दरबारी कवियो के समान उन्होंने अतिरजित वर्णन नहीं किया है राजा तो उपलक्ष्यमात्र है जिसके माध्यम से कवि ने आदर्श एव प्रजावत्सल शासक के सद्‌गुणो का ही महात्म्य गाया है फिर भी यह कहना गलत नहीं होगा कि कवि के मन मे अपने अन्नदाता को प्रसन्न करने की भी प्रच्छन्न भावना रही है

नवरत्नजी के काव्य का दूसरा महत्वपूर्ण स्वर राष्ट्रीय भावना का है जैसा कि कहा जा चुका है पडित गिरिधर शर्मा के कवि-व्यक्तित्व का निर्माण एव विकास भारतीय स्वातन्त्र्य-आदोलन के समानान्तर हुआ वे स्वय इस आदोलन मे सक्रिय रूप से शामिल नहीं हुए पर मन से वे इसके समर्थक थे उनकी अनेक कविताओ मे राष्ट्रीयता देशप्रेम एव राष्ट्रभक्ति का स्वर मुखरित हुआ ये कविताए सख्या मे अल्प-मात्र ही हैं, पर उनमे कवि की स्वातन्त्र्य कामना, देशप्रेम एव उसके लिए सर्वस्व-त्याग की भावना व्यक्त हुई है जैसे

> देशो मे सकलप्रियो विजयते देश नमाम्यादराद्
> देशेनाऽक्षधियस्ति मेऽप्यनुपमा देशाय स्वस्त्यस्तु मे ।
> देशात् कोऽपि मम प्रियो न भुवने देशस्य भक्तोऽस्म्यह,
> देशेऽस्तु रति सदैव विमला हे देश ! तुभ्य नम ॥

नवरत्न जी के काव्य की तीसरी भावदिशा भगवद्भक्ति के रूप में प्रकट हुई है धार्मिक आस्था की दृष्टि से वे वल्लभ सम्प्रदाय की पुष्टिमार्गीय शाखा के अनुयायी हैं पोडशी, भक्तेदरम, आत्मनिवेदनम्, श्रीकृष्णाष्टकम्, राधाष्टकम् आदि कवित्त ग्रंथों में कवि की आराध्य श्रीकृष्ण के प्रति अनुरक्ति, दैन्य, दर्शनाभिलाषा, आत्मसमर्पण, अनुग्रह-याचना आदि विविध भाव निबद्ध हैं भक्तेदरम में कवि ने भगवान के साथ अपने तादात्म्य का विभिन्न प्रकार से निरूपण किया है

नवरत्नजी की भक्तिभावना पुष्टिमार्ग के साम्प्रदायिक आग्रहों से ग्रस्त है तथापि उसमें यत्र-तत्र कवि की भाव प्रवणता एवं समर्पण भाव की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति देखी जा सकती है विशेष रूप से आत्मनिवेदनम् में

कवि नवरत्न के काव्य की अन्तिम किन्तु सबसे महत्वपूर्ण प्रवृत्ति एवं दिशा है नीतिविवेचन वे मुख्यत नीतिकवि हैं उनके काव्य के अन्य सभी पक्ष गौण हैं संस्कृत में नीतिकाव्य की सुदीर्घ परम्परा रही कौटिल्य, बृहस्पति, विदुर आदि प्रधान नीतिकार प्रसिद्ध हैं परवर्ती काल में भर्तृहरि का नीतिशतक, पंचतन्त्र तथा हितोपदेश संस्कृत के विभिन्न काव्यों में नीतितत्त्व के निरूपण की व्यापक प्रवृत्ति एवं सुभाषित संग्रहों में संकलित असंख्य पद्य संस्कृत नीतिकाव्य की मूल्यवान धरोहर है नवरत्नजी का नीतिकाव्य इसी परम्परा की नयी कड़ी है सभी समय कवियों ने अपने युग में जीवन मूल्यों एवं सामाजिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में नीतितत्त्व का अभिनव निरूपण किया है नवरत्नजी भी अपने नीति विवेचन में युगीन स्थितियों एवं प्रवृत्तियों से प्रभावित हुए हैं उसमें उनके जीवन विवेक एवं समाज दर्शन की स्पष्ट अभिव्यक्ति देखी जा सकती है

गिरधरसप्तशती नवरत्नजी का प्रमुख नीतिकाव्य है इसमें सात सौ पद्यों में लेखक ने परिवार, समाज, राष्ट्र एवं जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपना चिन्तन सरल किन्तु प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है इसमें छोटे से छोटे विषय से लेकर गंभीरतम विषय पर कवि ने अपने विचार प्रकट किये हैं

समाज में स्त्री के कार्यक्षेत्र के बारे में कवि का दृष्टिकोण इस प्रकार व्यक्त हुआ है—

> बाला इव बाला सम्यक् पाठ्या परिन्वद ध्ययेम् ।
> गृहसाम्राज्ञी सा स्याद्, न स्यात् सम्मेलनी सभा चपला ॥

लड़कों के समान लड़कियों को भी शिक्षा दी जाय किन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि वे घर की स्वामिनी हों सम्मेलनों की चपल शोभा नहीं

निर्बल के श्रम का शक्तिशाली द्वारा किस प्रकार शोषण किया जाता है इसका वर्णन निम्न पद्य मे किया गया है —

> मूषको बिलानि विदधाति तेषु भुजगा वसन्ति शक्तिमुग्न ।
> निबलकृतश्रमस्य बलवन्तो भु जते नितराम् ॥

चुहियाएं बिल बनाती हैं किन्तु उनमे शक्तिशाली सर्प निवास करते हैं निर्बल द्वारा किये गये श्रम के फल को बलवान लोग यो ही हड़प जाते हैं

एक अन्य श्लोक मे आधुनिक शिक्षा पर व्यग्य करते हुए कवि ने कहा है —

> सकलानि पुस्तकानि प्रणाशयोग्यानिह मन्ये ।
> पित्तर सुता कुबुद्धि येरा पठनेन मन्यन्ते ।

मेरे मतानुसार उन सब पुस्तको को नष्ट कर देना चाहिये जिन्हें पढ कर पुत्रगण पिता को मूर्ख मानने लगते हैं स्त्रियों विशेष मे विधवा विवाह का समर्थन करते हुए नवरत्नजी ने कहा है—

> यदि विधवा ब्रह्मचर्य प पालयितु चिर न शक्ता स्यात्
> समय प्रतीक्षमाणा निरीक्ष्य योग्य पति कुर्यात् ।

यदि कोई विधवा अधिक समय तक ब्रह्मचर्य का पालन न कर सके तो उसे समय की प्रतीक्षा करते हुए योग्य पति देखकर विवाह कर लेना चाहिये

गिरधरसप्तशती मे कवि कही सीधे उपदेश देता है कहीं अपना मन्तव्यमात्र प्रकट कर चुप हो जाता है कहीं किसी बात पर छोटी टिप्पणी करता है तो कहीं हास्य एव व्यग्य का सहारा लेकर सबको हसा देता है जैसे

> छित्वा नासा स्वीयां स्वय भ्रमन् गदति जनो नीच ।
> किमभून्नासा छि ना कि त्वपशकुन परस्याभूत् ।

नीच व्यक्ति अपनी नाक स्वय ही काट कर घूम घूम के कहता है कि मेरी नाक कट गयी तो क्या हुआ दूसरे का तो अपशकुन हो गया

सप्तशती की अनेक सूक्तियों में एक परिचित सा घरेलूपन दृष्टिगत होता है कवि कुक्कुर की तरह मौन देखकर कवि हम मार्ग दर्शन देता है उपनीत समझाता है लोकव्यवहार की शि1 देता है कवि का उद्देश्य हमारे जीवन एव व्यवहार को अधिक सयत सतुलित एव विवेकयुक्त बनाया है

गिरिधरशास्त्री तथा अन्य कृतियों में कवि आधुनिकता के प्रति ग्रहणशील रहा है संस्कृत का लेखक होते हुए भी वह रूढ़िवादी एवं पुरातनपंथी नहीं है नये विचारों के लिए उसमें खुलापन है अपने समाज और परिवेश के प्रति उसमें पर्याप्त जागरूकता है

पंडितजी का अधिकांश काव्य विचार-प्रधान है उसमें मननशीलता है भावों की तरलता एवं कल्पना की रंगीनी उतनी नहीं चित्रात्मकता का भी उसमें प्राय अभाव है भाव एवं कल्पना की भाषा बिम्बमयी होती है पर नवरत्न जी की कविता में विचारों का बाहुल्य है जिसके कारण उसमें बिम्ब और चित्र प्राय नहीं उभरते साथ उपदेशात्मकता तथा सपाटबयानी भी प्राय आ जाती है सरलता सादगी एवं स्पष्टता के गुण उसमें है एक जानी पहचानी निकटता भी है किन्तु गहरी अनुभूति में निमग्न करने वाली तन्मयता उसमें विरल ही है वह हमें अनुभूतियों की प्रक्रिया में से गुजरने का अवसर नहीं देती उनका बौद्धिक सार एवं निष्कर्ष ही हमारे सामने प्रस्तुत करती है वह मुख्यत नीतिपरक सूक्तियों की कविता है जिसमें निराकार विचार अधिक है भावमय चित्र कम

पंडित जी की कविता जीवन के धरातल को अधिक छूती है उसकी गहराई में नहीं उतरती वे जीवन को उसके दैनंदिन बाह्य व्यवहार में ही अधिक देख सके हैं उसकी आन्तरिकता में कम

द्विवेदी युग की हिंदी कविता के समान नवरत्नजी का संस्कृत काव्य वर्णनात्मक तथा इतिवृत्तपरक है. उसमें सौंदर्य के सूक्ष्म स्पन्दन एवं बिंदु की गहरी पकड़ कभी-कभी ही देखने को मिलती है

तथापि वे जीवन-परिदृश्य के कुशल पर्यवेक्षक हैं इसमें संदेह नहीं जीवन की सर्वसामान्य अनुभूतियों एवं प्रवृत्तियों को उन्होंने अच्छी तरह देखा परखा और सूत्रबद्ध किया है किन्तु उनका अतिक्रमण कर वे अन्तस्तल की गहराइयों में नहीं जा सके यही उनके काव्य की सीमा है एवं शक्ति भी

नवरत्नजी की प्रतिभा प्रथम कोटि की नहीं है उसमें मौलिकता की भी कमी है सप्तशती के अनेक पद्यों में उन्होंने प्राचीन संस्कृत कवियों की सूक्तियों को अपनी भाषा में मात्र दोहरा दिया है अनुवाद-कार्य में उनकी अतिशय रुचि भी संकेत देती है कि उनमें सर्जनात्मक क्षमता की कुछ न कुछ कमी है काव्य रचना के सभी बाह्य उपकरण उनके पास हैं पर मौलिक उपादान पर्याप्त मात्रा में नहीं है उनकी कविता को पढ़ते

हुए प्रम लगता है कि जो बात कही गयी है वह हम सबकी जानी पहचानी भी है, उसमें नयापन नहीं है उसे पद्य में ढालने की कला मात्र उनकी है

नवलजी का संस्कृत भाषा पर अच्छा अधिकार है उन्होंने हिन्दी व संस्कृत दोनों में पर्याप्त लिखा है पर उनकी प्रथम प्रमपात्र संस्कृत है हिन्दी की हिन्द की अपेक्षा संस्कृत को उनकी देन कहीं अधिक प्रतीत होती है वे अपने समय के एक ऐसे संस्कृत रचनाकार हैं जिन्होंने इस पुरानी भाषा को लोकजीवन के निकट लाकर सामान्य जन की आशा आकांक्षा एवं वचारिकता की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया उनकी रचनाएँ सरल प्रवाहमय एवं प्रसादगुण से परिपूर्ण है उसमें न कृत्रिमता है और न अलंकरण की प्रवृत्ति संस्कृत के पुराने कवियों की तरह शब्द क्रीड़ा में भी उनकी रुचि नहीं है पंडिताऊपन से रहित उनकी भाषा सहज व्यावहारिक एवं मुहावरेदार है लोकभाषा के अनेक दैनिक प्रयोगों को उन्होंने संस्कृत में अपनाया है

पंडितजी की भाषा संस्कृत की शक्तिमत्ता की परिचायक है विभिन्न भाषाओं की कृतियों का संस्कृत में अनुवाद कर उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि यह भाषा दुरूह तथा अपरिचित भाषाओं के भावों विचारों और मुहावरों को भी अपने में ढालकर सशक्त रूप में अभिव्यक्त कर सकती है

पण्डितजी ने अपनी रचनाओं में विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है संस्कृत छन्दों के अलावा उन्होंने हिन्दी के भी अनेक लोकप्रिय छन्दों को यथावसर ग्रहण किया है नन्ददास के भ्रमरगीत के अनुवाद प्रमपयोधि में उन्होंने मूलकृति के छन्द का संस्कृत में बड़ी दक्षता से उपयोग किया है हिन्दी की गीत शैली भी उन्होंने अपनायी किन्तु उनका सबसे प्रिय छन्द संस्कृत का आर्याछन्द ही है

आधुनिक संस्कृत लेखकों में नवलजी का अपना स्थान है अपने समकालीन समाज की विविध प्रवृत्तियों को संस्कृत में अभिव्यक्त करने का तो सफल प्रयास उन्होंने किया ही उसे आधुनिक विचारों की अभिव्यक्ति का सक्षम माध्यम भी बनाया संस्कृत प्रत्येक युग के चिन्तन मनन एवं श्रेष्ठतम विचारों को अपने में संचित करती रही है नवलजी का काव्य संस्कृत की इसी सनातन प्रवृत्ति का आधुनिक संस्करण कहा जा सकता है

संस्कृत विभाग
सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर

जीवन सिंह

द्विवेदी युगीन साहित्य के प्रतिमान

मनुष्य की जीवन-यात्रा में समय के पड़ावों को साफ-साफ देखा जा सकता है इतिहास इसी की सूचना है और अपनी यात्रा का सबक भी मनुष्य की अन्य यात्राओं की तरह इसकी साहित्य यात्रा भी चलती है, जिसमें रचनाकार अपने समय के सरोकारों को व्यक्त करने का प्रयास करते हैं हिन्दी में आधुनिक भावों और विचारों को सृजित एवं प्रेरित करने वालों में पहला नाम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का है भारतेन्दु ने अपने अल्प-जीवन में अनेक परिवर्तनकारी काम किए उनकी सबसे बड़ी बात यह है कि जिस साहित्य को पिछले दो सौ बरसों से जन-जीवन का वियोग सहन करना पड़ा था, उस साहित्य को उन्होंने जन जीवन की वास्तविकताओं से जोड़ा अब साहित्य का मतलब किसी राजा या महाराजा को रिझाना नहीं था और न ही किसी ईश्वरीय महापुरुष के जीवन-चरित को गद्य या पद्य में अनुवाद करने तक सीमित था दुनिया के दूसरे देशों के साहित्य एवं जीवन को देख-जान कर हमारे देश के नागरिक का मन भी बदलने लगा था उसे भी यह अनुभव होने लगा था कि साहित्य का संसार, जीवन से उतना स्वतन्त्र एवं पृथक नहीं है, जितना कि पिछले रचनाकारों ने मान रखा है उन्हें यह लगा कि जीवन की सारी व्यवस्थाओं, सोच-विचार तथा मानव-संबंधों का संचालन करने में राजनीति तथा शासनसत्ता का अत्यधिक स्थान है राजनीति

मनुष्य की संचालक है वह नीति निर्माण करने का अधिकार रखती है इस कारण अब नीति की नियता भी वही है और शिक्षा भी उसके अधिकार से बाहर नहीं है इसका प्रभाव मनुष्य के सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन पर होता है जीवन के ये सभी पक्ष उस समय के साहित्यकार को उत्तेजित करने लगे थे और यह कविता की पुरानी रीतियों से अपना पीछा छुड़ाने के लिए व्यग्र रहने लगा था उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पुराने परिवेश को नवीनता देने एवं यथार्थ सम्बद्ध करने की दृष्टि से सर्वाधिक व्यग्रता एवं सक्रियता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र में दिखाई पड़ती है इनके सबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने एक वाक्य में जैसे सब कुछ कह दिया है—भारतेंदु के समय भाषा का निखरा हुआ शिष्ट सामान्य रूप प्रकट हुआ था लेकिन इससे भी बड़ा काम उन्होंने यह किया कि साहित्य को नवीन मार्ग दिखाया और उसे वे शिक्षित जनता के साहचर्य में ले आए

इस समय तक पुराने साहित्य की प्रतिष्ठा थी हिन्दी-कविता का पाठक रस अलंकार नायक नायिका भेद आदि से बने सरकार से तत्कालीन काव्य का मूल्यांकन करता था उसके पास ऐसे प्रतिमान अभी तक नहीं थे जो साहित्य की परख किसी अन्य गम्भीर आधार पर कर सकें पुरानी रीतियों और परिपाटियों पर चलने वाले साहित्य के प्रतिमान थे तो सही किन्तु वे मनुष्य जीवन के सम्पूर्ण यथार्थ की दृष्टि से बहुत छोटे पड़ते थे वे अमीरों रईसों राजाओं महाराजाओं की जरूरतों को पूरा करते थे इस कारण रस अलंकार और नायक नायिका भेद से आगे भी कोई संसार है यहां तक उनकी दृष्टि नहीं पहुंच पाती थी वे यह नहीं सोच पाते थे कि समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग दिन रात परिश्रम करता है खून-पसीना एक करता है फिर भी उसकी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति नहीं हो पाती ? दूसरी ओर उनके आदर्श राजा महाराजा सामंत एवं रईस बड़े अधिकारी कोई बड़ा काम न करने के बावजूद इतने सम्पन्न और समृद्ध है ? ये प्रश्न उठते भी थे तो भाग्यवाद से यह इनका समाधान कर लेता था कहने का मतलब यह है कि साहित्य के भीतर ऐसे प्रश्न उठाना आदमी के सोच को साहित्य के माध्यम से इस ओर मोड़ना साहित्य राजनीति एवं समाज-सभी दृष्टियों से कम खतरनाक नहीं था

भारतेंदु ने पहली बार अभिव्यक्ति के इसी खतरे को उठाकर हिन्दी साहित्य को पुराने रास्ते से हटाकर नए रास्ते की ओर मोड़ा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इस संबंध में बहुत सही लिखा कि भारतेंदु ने उस साहित्य को दूसरी ओर मोड़कर हमारे जीवन के साथ फिर से लगा दिया इस प्रकार हमारे जीवन और साहित्य के बीच जो विच्छेद पड़ रहा था उसे उन्होंने दूर किया

कहने की आवश्यकता नहीं कि हिंदी साहित्य में भारतेन्दु ने जो युग तरकारी काम किया था आगे चलकर उसका विकास आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं अन्य युगीन रचनाकारों के द्वारा हुआ साहित्य और जीवन के प्रगाढ़ संबंध की स्थापना तथा साहित्य की भाषा पर आए नए दायित्व को ध्यान में रखते हुए द्विवेदी जी ने एक नए वातावरण का निर्माण किया उन्होंने भारतेन्दु के जमाने में आए परिवर्तन को समृद्ध किया तथा उसकी कमियों से सीख लेते हुए आगे बढ़ने का उद्योग किया उनकी प्रेरणा और अनुभवी नेतृत्व से तत्कालीन साहित्य में जीवन एवं साहित्य के संबंधों के नए पक्ष उद्घाटित हुए जो साहित्य के लिए प्रतिमान बने आचार्य शुक्ल ने इस समय को द्वितीय उत्थान कहा है तथा इसका समय संवत् 1950 से 1975 स्थिर किया है

जैसा कि हम कह चुके हैं कि द्विवेदी युग के पहले ही हमारे देश के सामाजिक—राजनैतिक परिवेश में हलचल दिखाई देती है अब अंग्रेजी राज की आलोचना प्रारम्भ हो चुकी थी यद्यपि अंग्रेज राज सुख-साज सजे सब भारी प धन विदेश चलि जात यहै अति ख्वारी में भारतेंदु ने भारतीय मानस की दुविधाजनक स्थिति को स्पष्ट कर दिया था बात यह है कि अंग्रेज राज के प्रति सम्मोहन का भाव पूरी तरह नष्ट नहीं हो पाया था सन् 1900 के आसपास भी ऐसी स्थिति थी कि अंग्रेजी राज को न तो पूरी तरह स्वीकार किया जा रहा था और न ही उसका सम्पूर्ण विरोध हो रहा था फिर भी इतना अवश्य था कि नवजागरण की आकांक्षा उस समय के हरेक रचनाकार के मन में थी नवजागरण की भावना उस समय की रचना के प्रतिमानों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी थी ये रचनाकार अपने समय की पहचान पुराने सिद्धांतों के साथ नए विचारों से करना चाहते थे द्विवेदी युग से पहले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र बालकृष्ण भट्ट आदि रचनाकारों में नूतन और पुरातन के संघर्ष को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है और यह भी देखा जा सकता है कि इस संघर्ष में नए विचार सफल होते हैं रचनाकार का पक्ष नूतन का पक्ष बनता है आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसको ध्यान में रखते हुए बालकृष्ण भट्ट के संदर्भ में सही लिखा है कि "नूतन और पुरातन का वह संघर्षकाल था इससे भट्ट जी को लिखने की पर्याप्त सामग्री मिल जाया करती थी समय के प्रतिकूल पुराने बद्धमूल विचारों को उखाड़ने और परिस्थिति के अनुकूल नए विचारों को जमाने में उनकी लेखनी सदा तत्पर रहती थी"

द्विवेदी युग में कला के इन्हीं प्रतिमानों को रचनाकारों ने अपना उद्देश्य बनाया किन्तु भारतेन्दु युगीन रचनाकारों जैसी स्पष्टता नवीनता तथा विचारों की यथार्थता इस युग में नहीं आ पाई भारतेंदु युग में रचना के नए प्रतिमानों को जितनी स्वाभाविक निश्छलता के साथ स्थापित किया गया था और उन्हें रचना का जितना गम्भीर एवं

व्यापक आधार मिला था उतना द्विवेदी युग में नहीं मिल सका यद्यपि द्विवेदी युग की रचना भारतेंदु युग के प्रतिमानों की परम्परा पर ही आगे बढ़ी किन्तु जहाँ स्वाभाविक स्वच्छन्दता का रास्ता बनना चाहिए था वह इस युग में नहीं बन पाया कविता के भीतर श्रीधर पाठक अकेले ऐसे रचनाकार थे जिसमें सीधी सादी खड़ी बोली और जनता के बीच प्रचलित लय के साथ रचना की संश्लिष्ट मार्मिकता देखने को मिलती है इस युग में श्रीधर पाठक ने भारतेंदु युग की परम्परा का विकास कर कविता की संरचना, अभिव्यंजना शैली प्रकृति का स्वरूप निरीक्षण तथा जीवन के नए पक्षों को उद्घाटित किया था उनकी स्वच्छन्दता का मार्ग सच्चा एवं स्वाभाविक था पुरानी कविता में जीवन के विभिन्न विषयों के स्वरूप निरीक्षण पर उतना ध्यान नहीं दिया गया था जितना कि उसकी शास्त्रबद्धता पर वे प्रकृति का वर्णन प्रकृति के विभिन्न रूपों को देखकर नहीं कर रहे थे अपितु काव्यशास्त्री ग्रन्थों में प्रकृति के स्वरूप वर्णन को पढ़कर वे प्रकृति पर लिखते थे, इससे चित्रण में सच्ची और स्वाभाविक स्वच्छन्दता नहीं आ पाती थी श्रीधर पाठक ने पुस्तकीय-स्पंदनों को प्रमाण न मानकर जीवन स्पंदनों को ही प्रामाणिक माना इसका परिणाम यह हुआ कि रचना को जीवन में विचरण करने का नया प्रकार मिला रीतिकाल में प्रकृति के नाम पर रूढ़िबद्ध ऋतु वर्णन लिखे जाते थे जिनमें ऋतुओं के शास्त्रीय अनुभव वर्णित होते थे श्रीधर पाठक ने इस बन्धन से कविता को मुक्ति दिलाई उन्होंने गुनवन्त हेमन्त कविता में हेमन्त ऋतु में पैदा होने वाली मूली मटर को समाविष्ट कर कविता के लिए उन्मुक्त विचरण करने का नया द्वार खोला

लेकिन पाठक जी जैसी उन्मुक्तता टिकाऊ नहीं रह सकी इस परम्परा के स्थान पर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की परम्परा का विकास हुआ द्विवेदी जी नवजागरण और नए विचारों के पक्षधर थे किन्तु उनकी शर्तें कुछ इस तरह की थी कि वे रीतिकालीन सामन्तवाद से तो मुक्ति चाहते थे पर संस्कृत-कालीन सामन्ती परिवेश का अभिव्यंजना शैली एवं संरचना का समर्थन करते थे नए विचारों के प्रति उदारता उनमें थी किन्तु नए विचारों के लिए अति-प्राचीन शिल्प के प्रति मोह उनमें स्पष्ट दिखाई देता है इस प्रकार, वे रीतिवाद से मुक्ति चाहते थे किन्तु पुरानी कुलीनता के साथ इसका परिणाम यह हुआ कि इस युग में राष्ट्रीय पुनरुत्थान की भावना प्रबल हुई इस प्रसंग में आचार्य शुक्ल का यह उद्धरण विचारणीय है— खेद है कि सच्ची और स्वाभाविक स्वच्छन्दता का यह मार्ग हमारे काव्य क्षेत्र के बीच चल न पाया बात यह है कि उसी समय पिछले संस्कृत काव्य के संस्कारों के साथ पं. महावीर प्रसाद जी द्विवेदी हिन्दी साहित्य क्षेत्र में आए, जिनका प्रभाव गद्य साहित्य और काव्य निर्माण दोनों पर बहुत ही व्यापक पड़ा हिंदी में परम्परा से व्यवहृत छन्दों के स्थान पर संस्कृत के वृत्तों

का चलन हुआ जिसके कारण संस्कृत पदावली का समावेश बढ़ने लगा भक्तिकाल और रीतिकाल की परिपाटी के स्थान पर पिछले सारे साहित्य की पद्धति की ओर लोगों का ध्यान गया द्विवेदी जी सरस्वती पत्रिका द्वारा बराबर कविता में बोलचाल की सीधी सादी भाषा का आग्रह करते रहे जिससे इतिवृत्तात्मक (मैटर आफ फैक्ट) पद्यों का खड़ी बोली में ढेर लगने लगा

कहने की आवश्यकता नहीं कि महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपने समय के यथार्थ को पहचाना तो था किन्तु वे भारतीय जीवन की समग्रता में युगीन यथार्थ को नहीं समझ पाए थे वे रीतिवाद के विरोधी थे रूढ़ियों के विरोधी थे किन्तु सुधारवाद उनके चिन्तन की सीमा बन चुका था इस कारण उनके सपने का व्यापक स्वरूप नहीं बन पाया भारत के समग्र भविष्य को वे विश्लेषित विवेचित नहीं कर पाए इस सबके बावजूद इस युग के साहित्य का मुख्य प्रतिपाद्य नए विषयों एवं नए विचारों से सम्बन्ध जीवन यथार्थ को उद्घाटित करता रहा श्रीधर पाठक की कविता में विधवाओं की वेदना और शिक्षा प्रसार का समर्थन तत्कालीन साहित्यिक परिवेश की देन है पौराणिकता में तार्किक दृष्टि को अधिक महत्व देने की बात भी इस युग में सामने आई अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध ने प्रियप्रवास में श्रीकृष्ण को ब्रज के रक्षक नेता के रूप में दिखाया तथा उनके कार्यों को तार्किक परिणति देने का प्रयास किया गोवर्धन पर्वत को कृष्ण द्वारा उंगली पर उठाने की लोकप्रचलित घटना को हरिऔध ने आधुनिक मानव-मन को ग्राह्य बनाने के लिए इस तर्क का सहारा लिया—

> लख अपार प्रसार गिरीन्द्र में
> ब्रज धराधिप के प्रिय-पुत्र का ।
> सकल लोग लगे कहने उसे
> रख लिया उंगली पर श्याम ने ।।

इस प्रकार चमत्कारों पर विश्वास करने वाले मानव मन को उसके अपने ही कर्मों पर भरोसा रखने की सहज सीख दी जाने लगी थी जिस प्रकार हरिऔध ने कृष्ण के कार्यों में ईश्वरत्व के स्थान पर महापुरुषत्व को स्थापित किया उसी तरह मैथिलीशरण गुप्त जैसे भक्त कवि को भी राम की सारी ईश्वरता के बावजूद उनके मनुजत्व को रेखांकित करना पड़ा साकेत में उनके राम जहां एक ओर मध्यकालीन राम की छाया लिए रहते हैं वहां दूसरी ओर वे आधुनिक मनुष्य की प्रश्ना को भी स्पष्ट करने वाले बन जाते हैं साकेत के राम भी मनुज अवतारी हैं लेकिन उनके मनुष्यत्व का पक्ष अधिक व्यापक एवं आधुनिक है

मैं आर्यों का आदर्श बताने आया
जन-सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया ।

× × ×

भव में नव-वैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया ।
संदेश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया ।

राम सीता लक्ष्मण कृष्ण आदि के चरित्र भारतीय मानस में एक निश्चित स्वरूप प्राप्त कर चुके हैं अत इस युग के कवियों के सामने यह समस्या थी कि लोकमानस मे रची-बसी इनकी प्रतिमाओं को युगानुरूप नवीनता का बाना कैसे पहनाया जाय जिससे उनका परम्परागत स्वरूप भी विकृत न हो तथा जन जीवन के व्यापक सम्बन्धों का उद्घाटन भी हो जाय यह काम हरिऔध और गुप्त जी ने अपनी सीमाओं के भीतर किया है इस सदर्भ म गुप्त जी की नई भावनाओं और नए विचारों का स्वागत करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य के इतिहास मे अपनी टिप्पणी इन शब्दो म की है रामायण के भिन्न भिन्न पात्रो के परम्परा से प्रतिष्ठित स्वरूपो को विकृत न करके उनके भीतर ही आधुनिक आंदोलनों की भावनाए जैसे किसानो और श्रमजीवियो के साथ सहानुभूति युद्धप्रथा की मीमासा राज्य व्यवस्था म प्रजा का अधिकार और सत्याग्रह विश्वबन्धुत्व मनुष्यत्व गौरव के साथ झलकाई गई हैं दरअसल उस समय जिन उद्देश्यो को लेकर सामाजिक राजनीतिक आंदोलन चल रहे थे कविता के माध्यम से गुप्त जी उन्हें अधिक प्रभावी बनाकर साहित्यिक सांस्कृतिक समर्थन एव सहयोग कर रहे थे इस प्रकार व परिवर्तन के पक्षधर तो थे लेकिन इनका परिवर्तन कतिपय सामाजिक राजनैतिक सुधारो तक सीमित होकर रह जाने वाला था परिवर्तन की जैसी समग्र चेतना भारतदुकालीन रचनाकारों म और आगे चलकर बालमुकुन्द गुप्त म मिलती है वैसी इस युग के रचनाकारों म नहीं वे एक ओर अपनी शास्त्र को प्रगतिशीलता का वाहक मानते थे दूसरी ओर तत्कालीन विसंगतियों को भी उजागर करना चाहते थे इस कारण इनकी दृष्टि सुदूर अतीत की ओर तो जाती थी निकट भविष्य की ओर नहीं य सुधार चाहते थे परिवर्तन नहीं इ ह सामंतवादी-पूँजीवादी शोषण की वास्तविकता कम समझ म आती थी

इस युग के गद्य साहित्य ने रचनाकारो की चेतना का स्वर कविता की अपेक्षा उच्चा एव विकसित हुआ बालमुकुन्द गुप्त ने भारतेन्दु युग की चेतना का विकास किया तथा इनके साथ व द्वावीरप्रसाद द्विवेदी माधव प्रसाद मिश्र ने रूढ़िवादिता का विरोध किया

भारतीय समाज की नैतिकता पर सबसे अधिक प्रहार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने किए हमें यहां यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि अपने समय के यथार्थ को जितनी सम्पूर्णता में सरदार पूर्णसिंह देख सके थे उनका इस काल का कोई दूसरा रचनाकार नहीं पूर्णसिंह ने परिमाण की दृष्टि से अधिक नहीं लिखा लेकिन जो लिखा है वह इस युग की चेतना के स्तर में सबसे आगे है उस समय साधु संन्यासियों पंडित आदि मौलवियों की अकर्मण्यता की उजागर करने वाला तथा सारी संस्कृति सभ्यता को श्रम से जोड़ने वाला वह अकेला ही लेखक था—जिसका नाम था अध्यापक पूर्णसिंह रीतिवाद और रूढ़ियों के विरोधी दो एक लेखक भी थे लेकिन तत्कालीन संस्कृति के सामन्ती आधारों के यथार्थ की इतनी सूक्ष्म पहचान रखने वाले अकेले अध्यापक पूर्णसिंह ही थे उनके मजदूरी और श्रम विषयक ये विचार आज भी साहित्य का अभिमान बने हुए हैं इनकी प्रासंगिकता आज भी असंदिग्ध है —

जब तक जीवन के अरण्य में पादरी मौलवी पण्डित और साधु-संन्यासी हल कुदाल और खुरपा लेकर मजदूरी न करेंगे तब तक उनका मन और उनकी बुद्धि अनन्तकाल बीत जाने तक मलिन मानसिक जुआ खेलती रहेगी उनका चिन्तन बासी उनका ध्यान बासी उनकी पुस्तक बासी उनका विश्वास बासी और उनका खुदा भी बासी हो गया है'

देखने की बात यह है कि सामाजिक राजनैतिक यथार्थ को देखने समझने की दो दृष्टियां इस समय के रचनाकारों में थी एक ओर ऐसे रचनाकार और लेखक थे जो देश की प्रकृति में अंग्रेजों की विकास बुद्धि एवं व्यवहार कौशल के कायल थे और वे अपने देश की उन्नति भी उसी पद्धति पर करते थे इसलिए उनका विशेष जोर सुधारों पर था वे देश की उन्नति चाहते थे राष्ट्र प्रेम तो इनके भीतर था किन्तु वह देश की उन्नति तक सीमित था दूसरी ओर ऐसे विचारक और साहित्यकार भी थे जो केवल उन्नति या छोटे-बड़े सुधारों की अपेक्षा देश की मुक्ति चाहते थे अंग्रेजों की सारी बौद्धिक कुशलता के बावजूद वे साहित्य सर्जक उन्हें शोषक और उपनिवेशवादी साम्राज्यवादी मानते थे और यह समझने लगे थे कि अंग्रेजों का शासन रहते हुए हम अपनी संस्कृति एवं सभ्यता का मुक्त विकास नहीं कर सकते इसके लिए आवश्यक है कि अंग्रेजी शासन से देश की मुक्ति मिले उल्लेखनीय है कि तत्कालीन भारतीय राजनीति में भी विचारों की उक्त दोनों धाराएं उस समय विद्यमान थीं कहना न होगा कि आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के राष्ट्र प्रेम एवं देशोद्धार सम्बन्धी विचारों पर पहली धारा का प्रभाव अधिक था वे विचारों से सुधारवादी थे यह उनकी बहुत बड़ी सीमा थी उनके इन विचारों का प्रसार उस समय के लेखकों पर भी था कविता

में अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध मैथिलीशरण गुप्त रामचरित उपाध्याय गिरिधर शर्मा नवरत्न लोचनप्रसाद पाण्डेय रामदेवीप्रसाद पूर्ण आदि के राजनीतिक विचारों पर सुधारवाद का असर स्पष्ट दिखाई देता है देश प्रेम की भावना इनमें कूट-कूट कर भरी थी किन्तु वह सामाजिक राजनैतिक या आर्थिक सुधारों का अतिक्रमण कर भारतीय शोषित-पीड़ित जन की वास्तविक मुक्ति तक पहुँचने के बजाय देशोन्नति से ही सन्तुष्ट हो जाती थी इसके साथ दूसरी धारा वह थी जो सुधारवाद का अतिक्रमण कर देश मुक्ति की चेतना जगा कर साम्राज्यवाद के विरोध की नीति पर चल रही थी यह धारा बालकृष्ण भट्ट काशीनाथ खत्री बालमुकुन्द गुप्त आदि रचनाकारों में देखी जा सकती है वास्तविकता यह है कि इस युग में देश प्रेम की भावना का विकास जितना भाववादी स्तर पर हुआ उतना यथार्थवादी स्तर पर नहीं हो पाया उसका स्वर रहा तो सही किन्तु प्रबलता सुधारवादी दृष्टि की रही

इस युग में साहित्य के वस्तुपक्ष के अनुरूप शिल्प और रूप का निर्माण हुआ इस काल के कवियों की प्रथम-चिन्ता राष्ट्रीय पुनरुत्थान के अनुकूल पड़ती थी पुनरुत्थान की भावना के कारण ही ये रचनाकार छन्द विधान के लिए पीछे की ओर लौटे संस्कृत के वृत्तों को स्वयं पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने मान्यता दिलवाई उनका सुधारवाद उन्हें भविष्य की बजाय अतीत की ओर ले गया कहने की आवश्यकता नहीं कि यदि द्विवेदी जी की दृष्टि भारतीय जीवन के समग्र यथार्थ पर होती तो उनके आगमन के समय ही खड़ी बोली को छन्द के कृत्रिम बन्धन से मुक्ति मिल जाती जो थोड़ा आगे चलकर निराला के हाथों मिली द्विवेदी जी की पथप्रदर्शन की सुधारवादी दृष्टि का प्रभाव यह पड़ा कि ये रचनाकार वस्तु विधान की तरह रूपविधान में भी कुछ सुधार ही कर सके नए जीवन-यथार्थ के अनुरूप उसमें समग्र परिवर्तन नहीं कर पाए

कविता के रूप विधान की दृष्टि से इस युग के प्रतिमानों पर विचार करें तो दिखाई देगा कि प्रगीतात्मक एवं प्रबन्ध दोनों तरह की रचनाओं का इस युग में बोलबाला रहा राष्ट्रीय पुनरुत्थान की भावना तथा देश प्रेम के विचार से लिखी गई रचनाओं में दोनों तरह का मेल नजर आता है गुप्त जी ने साकेत और यशोधरा को यद्यपि प्रबन्ध स्वरूप प्रदान किया है किन्तु उनके उद्देश्य के अनुरूप उनमें प्रबन्ध का गठन सम्पूर्ण नहीं हो पाया इसी तरह हरिऔध जी के प्रियप्रवास में प्रबन्ध और प्रगीत का मेल ही हुआ है श्रीधर पाठक और रामनरेश त्रिपाठी के विचार अतीत की अपेक्षा वर्तमान से अधिक सम्बद्ध थे इसलिए इनकी कविता के प्रतिमान प्रगीतात्मक रूप को अधिक पुष्ट करते हैं

वस्तुतः यह युग भाषा निर्माण का युग था उस समय खड़ी बोली में सहज काव्य [illegible] र काव्यभाषा का स्वरूप स्थिर करने की सबसे बड़ी समस्या थी क्योंकि

जी की परम्परा में है जबकि परवर्ती कविताओं में ठेठ देहाती बोलचाल की भाषा है भाषा के मध्यवर्गीय स्तर को प्रतिष्ठित करने का परिणाम यह निकला कि इस युग की अधिकतर कविताएं इतिवृत्तात्मक (मैटर आफ फैक्ट) हो गई उनमें वह लाक्षणिकता वह चित्रमयी भावना और वह वक्रता बहुत कम आ पाई जो रस-संचार की गति को तीव्र और मन को प्रकम्पित करती है

हरिऔध की काव्यभाषा में जहां एक ओर ठेठ हिन्दी का ठाठ है वहां दूसरी ओर संस्कृत की समस्त पदावली का कौशल भी हरिऔध जी ने भाषा के दूसरे रूप को द्विवेदी जी के प्रभाव से ग्रहण किया किन्तु यहां भी उन्होंने अपनी राह बनाई उन्होंने संस्कृत छंदों और पदविन्यास को अपनाकर भी कोमलकांत पदावली से पीठ नहीं फेरी इसका कारण था ठेठ बोली पर उनका अधिकार बहरहाल वे हिंदी के स्वभाव की रक्षा कर पाने में सफल हुए जिसमें द्विवेदी जी उतनी सफलता प्राप्त नहीं कर सके थे गुप्त जी की प्रारम्भिक कविताओं में गद्यात्मकता और इतिवृत्तात्मकता है लेकिन उनकी कालानुसरण की क्षमता के कारण आगे चलकर गुप्त जी की भाषा में सरसता और कोमलता के लक्षण दिखाई देते हैं

भाषा के बिगड़ने का पूरा माहौल इस युग में था लेकिन गद्य और कविता दोनों की भाषा के वास्तविक कौशल को प्राप्त करने का संघर्ष करने वाले रचनाकार भी इस युग में कम नहीं थे जैसे आज भी अनेक लेखक ऐसे हैं जो हिंदी के पदविन्यास और उसकी ठेठ प्रकृति के जानकार नहीं हैं वे अधकचरा हिन्दी लेखक हैं, वैसे ही उस जमाने में संस्कृत अंग्रेजी और अरबी-फारसी के पूरे विद्वानों ने हिंदी को अपने ढंग से बनाने का प्रयास किया था इसके अलावा भारत की अन्य प्रादेशिक भाषाओं विशेषकर बंगला का प्रभाव हिंदी-भाषा पर पड़ रहा था दरअसल भाषा का निर्माण और विकास विचारों भावों से होता है जैसे हमारे विचार होंगे वैसी ही हमारी भाषा होगी इस युग में विचारों में राष्ट्रीय अभिजात का बोलबाला रहा तथा अंग्रेजी सत्ता एवं ज्ञान विज्ञान का प्रसार भी मन के किसी कोने में छुपा बैठा है इसलिए गद्य की भाषा या कविता की भाषा का स्वरूप नवशिक्षित वर्ग की बोलचाल को आधार मानकर चला है इसका परिणाम हुआ कि जिस तरह की सरसता कोमलकांत पदावली की जरूरत थी वह उस समय नहीं आ पाई वह तब ही आ पाई जबकि विचारों का अभिजातवर्गीय आधार बदला वह जब आम किसान-मजदूर और मध्यवर्ग के वैचारिक आधार को पुष्ट करने वाली बनी निराला की परवर्ती कविताएं जहां एक ओर नए विचारों को प्रकाशित करती हैं वहां दूसरी ओर भाषा के नूतन पक्ष का आविष्कार भी करती हैं

भगवतीलाल व्यास

घनीभूत संवेदना के कवि नवरत्न जी

पं गिरिधर शर्मा नवरत्न (सन् 1881-1961) ने जिन दिनों काव्य सृजन आरम्भ किया वह समय देश तथा हिन्दी दोनों के लिए कठिन परीक्षा का समय था उस समय खड़ी बोली में काव्य रचना एक दुस्साहस समझा जाता था क्योंकि प्रचलित ब्रज काव्य परम्परा से हट कर एक अलग रास्ता बनाना पूरी परम्परा को नाराज करना था किन्तु यह कार्य भारतेंदु काल से ही प्रारम्भ हो गया था भाषा, छन्द, विषयवस्तु आदि विविध पक्षों को लेकर प्रयोग करने की छटपटाहट इन दिनों की काव्य रचना में सहज ही देखी जा सकती है महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे आचार्यों ने तो अपना पूरा जीवन ही खड़ी बोली के खुरदरेपन को सवारने तथा उसे सुललित साहित्यिक भाषा का दर्जा प्रदान करने में होम दिया

यदि हम द्विवेदी काल के कवियों की रचनाओं को विश्लेषित करें तो एक महत्त्वपूर्ण बिंदु और सामने आता है और वह यह कि कविता के माध्यम से आज़ादी की लड़ाई में साझीदार होने की ललक इस समय तक स्वतंत्रता-संग्राम एक जन आन्दोलन का रूप धारण कर चुका था इसलिए कवियों, लेखकों और बुद्धिजीवियों ने इसमें अपना योग देना अवश्य कर्त्तव्य समझा जन आन्दोलन का हिस्सा बनकर जनभावना

मे पयहार द्वारा ही वन सारो थे इसलिए यह कहा जाता प्रसगत न होगा कि स्वतन्त्रता सग्राम और खडी बोली का र परम्परा ने एक दूसरे को ताकत पहुच ई है समृद्ध किया है

त कालीन साहि यिक पत्र-पत्रिकाओ मे सरस्व ती पत्रिका प्रमुख थी जिसका सम्पादन हिन्दी के कर्मठ स्वनामधन्य द्विवेदी द्वारा समय-समय पर किया गया सामग्री की दृष्टि से विविध विषयो को समाहित किये हुए भी यह पत्रिका प्राजादी की लडाई म शत्रु का कारगर हथियार साबित हुई सन् 1910 20 वाले दशक के ग्रक उठाकर देखने पर यह तथ्य पुष्ट होता है इन प्रको मे सवश्री मथिलीशरण गुप्त रामचरित उपाध्याय कामता प्रसादगुरु रूपनार यण पाडेय सियाराम शरण गुप्त पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी केशवप्रसाद मिश्र प गिरिधर शर्मा नवरत्न प्रभृति कृतिकारो की रचनाए प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप मे दासताजन्य पीडा व्यक्त करती हुई बेडियो को काट फकने का ग्राह्वान करती है

प गिरिधर शर्मा नवरत्न ने काव्य रचना सन् 1900 के प्रासपास प्रारम्भ की तथा सरस्वती सहित अन्य पत्र पत्रिकाओ मे माध्यम से प्रकाशित होने लगे गुजराती भाष भाषी होने के बावजूद नवर न जी को अपने पिता प ब्रजेश्वर शर्मा से सस्कृत ज्ञान विरासत मे मिल था इसक अतिरिक्त वे बगला मराठी अरबी फारसी तथा अग्रेजी भाषाओ क भी अच्छे ज्ञाता थे उन्होने रवी द्रनाथ ठाकुर की गीताजलि का तथा उमर खयाम की रुब यो का अनुवा द भी किया था ये अनुवाद अपने समय मे काफी चर्चित रहे

स्वतन्त्र काव्य रचना की दृष्टि से पण्डित जी के काव्य को हम निम्नाकित वर्गों मे बाट सकते हैं—

(क) खण्ड काव्य—सत्यवान और सावित्री की कथा पर पडित जी ने सरसर्गों म सती सावित्री नामक खण्ड काव्य की रचना सन् 1907 म की उल्लेखनीय है कि चार सर्गों वाले इस लघु खण्ड क व्य म अतुकान्त काव्य शैली का प्रयोग किया गया है यह खण्ड काव्य सन् 1911 मे गुजरात से प्रकाशित हुप्रा था

(ख) लम्बी कविताए—कुछ पौराणिक प्रसगो को प्राधार बना कर पडित जी ने लम्बी रचनाओ का सृजन भी किया है ऐसी रचनाए इतिवृत्तात्मक ही अधिक बन पडी है विजेता कुणाल विश्वामित्र ग्रौर मेनका प दि कविताए प्रापकी लम्बी कविताओ मे से प्रतिनिधि रचनाए कही जा सकती है

(इ) **स्फुट विषयों पर छोटी कविताएं** – पंडित जी की काव्य प्रतिभा उनकी छोटी कविताओं और छंदों में ही मुखरित हुई है गिरिधर गरिमा में स्फुट विषयों पर उनकी 35 छोटी कविताएं संकलित हैं जबकि काव्य कुञ्ज में 53 छंद हैं

दोनों ही कृतियों की रचनाओं को विषय वस्तु की दृष्टि से निम्नलिखित वर्गों में बांट सकते हैं.

1 ईश वंदना
2 राष्ट्र प्रेम
3 ऋतु वर्णन
4 सामाजिक समस्याएं एवम् विसंगतियां
5 भाषा प्रेम
6 पराधीनताजन्य स्थिति पर व्यंग्य
7 उपदेश एवम् उद्बोधन
8 विविध-पुस्तक प्रेम श्रम सहकार, विद्यानुराग धार्मिक सहिष्णुता आदि

श्री नवरत्न की भाषा

पंडित गिरिधर शर्मा नवरत्न की काव्य भाषा में दो धाराएं स्पष्ट देखने को मिलती हैं—

1 संस्कृतनिष्ठ सामासिक पदावली युक्त भाषा
2 सरल बोलचाल की भाषा

दोनों प्रकार की भाषा धाराओं के निम्नांकित उदाहरण द्रष्टव्य हैं

सामासिक पदावली

शस्य कारिणी शस्त्र धारिणी
श्रम वारिणी दुःख हारिणी
विश्व तारिणी कार्य कारिणी
महाशक्ति अवदात
वंदे मातरम्

(रचनाकाल सन् 1913 उल्लेखनीय है कि यह गीत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन सन् 1915 में गाया जाने वाला प्रथम राष्ट्रगान था)

सरल बोलचाल की भाषा—

जो हाथ पर अपने
नहिं हैं हिलाते
खाना बिना श्रम किये
डट के उड़ाते
आलस्य में समय यों
अपना बिताते
वे मूढ़ कुछ जग से
मर क्यों न जाते ?

कहीं-कहीं ब्रज परम्परा के दर्शन छन्द और भाषा दोनों दृष्टियों से होते हैं जैसे पुस्तक-महत्व पर लिखा गया यह छन्द—

दिखाय जगतरूप देवे ज्ञान रंजन को
जासों जगनाह कौन जन सुख पावै ना ?
दर्शियां कविंदन की मधुर-मधुर भाखें
सौ सौ बार पूछे हू बताव उकताव ना
विश्व के महान् मतिमान विद्वानन की
वानिय सुनाव सरसाव हरसाव ना
ऐसे भ्रात ऐसे साधु ऐसे गुरु पुस्तक है
धन्य है जिये वे जो उन मन लाव ना ।

हिन्द और हिन्दी प्रेम केन्द्रीय स्वर—

नवरत्न जी के काव्य में देश प्रेम और भाषा प्रेम पग-पग पर देखने को मिलता है देश की पराधीनता से वे भी अन्य कवि मनीषियों की तरह चिन्तित थे तथा इससे मुक्ति का मार्ग वे राष्ट्रीय एकता में देखते थे भाषा राष्ट्रीय ऐक्य का मुख्य सूत्र है इस बात को आज समझ कर भी अनसमझा किया जा रहा है किन्तु उस समय के लगभग सब कवियों ने एकता के लिए एक भाषा की आवश्यकता बड़ी गहराई से महसूस की थी पंडित 'नवरत्न' जी के इस छंद में राष्ट्रीय एकता का आह्वान करते हुए राष्ट्र भाषा के पद पर हिन्दी को प्रतिष्ठित किया गया है

श्रीयुत बंकिमचन्द्र चटर्जी का बंगाल
प्रेमभाव धार भाषा लगे लोग हरखा
पंजाब लाजपत का तिलक का महाराष्ट्र
मालवा मे गले मिल सभी सूबे सरसन

नवरत्न राजस्थान मध्य हिंद वाले धाये
देश के फिरगी के करेंजे लगे धरकन
उत्कल बिहार की कथा सारा देश एक हुवा
राष्ट्रभाषा हिन्दी की पूजा की देख फरकन
(काव्य कुंज से)

देश के प्रति पूर्ण निष्ठा उनके काव्य का केंद्रीय स्वर है वे देश को आराध्य की तरह पूजते थे रसखान ने मानुष हौं तो वही रसखानि— सवये मे जिस प्रकार हर स्थिति मे अपने आराध्य कृष्ण के सानिध्य की कामना की है उसी उत्कटता के साथ नवरत्न जी देश-हित मे सर्वस्व समर्पण की कामना करते हैं।

चर्चा जहा देश की हो मेरी जीभ वहीं खुले
और नहीं खुले कहीं खदा की लड़ाई मे
मेरे कान गान सुनें सांचे देशभक्त के
और गान भाव कभी मेरे ना सुनाई मे
मेरे भव रग चढ़ एक देश प्रेम को ही
और रंग भग हो के बूड जा तराई मे
मेरो तन मेरो धन मेरो मन मेरो जीव
मेरो सब लगे प्रभो देश की भलाई मे

सामाजिक विसगतियो पर पैनी नजर—

यद्यपि नवरत्न जी के काव्य का मूल स्वर राष्ट्रप्रेम है किन्तु सामाजिक विसगतियों के प्रति भी वे उदासीन नही हैं सामाजिक कुरीतियो और विसगतियो के प्रति उनकी यह चिन्ता उनके काव्य मे यत्र-तत्र प्रकट हुई है

सामाजिक कुरीतिया हो अथवा विसगतिया सबके मूल मे बुनियादी रूप से आर्थिक विषमता ही उत्तरदायी है इस बात को कवि भली तरह जानता है तथा प्रसगानुसार रेखांकित भी करता है उदाहरण के लिए वृद्ध विवाह शीर्षक कविता की निम्नांकित पक्तियां द्रष्टव्य है

एक महाजन था धनदास द्रव्य बहुत था उसके पास
जिसके थे सब नाती पोते ऐसी तो था उसकी पोती
पाच नारिया परम चुका था फिर भी इसका जी न भरा था
फिर भी कर लो एक सगाई दस हजार कामना ठहराई

काव्य की दृष्टि से ये पंक्तियाँ भले ही उत्कृष्टता की कसौटी पर खरी न उतरें किन्तु ये पंक्तियाँ भाव प्रवणता की दृष्टि से अपने समय का तथा कवि की संवेदना का जीवन्त दस्तावेज जरूर हैं

प्रमाण है ऋतु वर्णन का कवि ग्रीष्म ऋतु की भयंकरता का वर्णन कर रहा है मगर उसकी सजग दृष्टि वर्ग-वैषम्य को चित्रित करती हुई अपना सामाजिक दायित्व पूरा करती है

> धायान के नौकर सारे पंखा खींच खींच कर हारे
> टट्टी छिड़क बेदम मारे फिर भी ये सब सूने बिचारे
> मिलता है मुश्किल से पानी उस पर भी है खैंचातानी
> पनिहारिन पानी भरती है आपस में लड़ लड़ मरती है

इस तरह पं गिरिधर शर्मा नवरत्न की कविता में विस्तार और चमत्कार के गुण भले ही कम मात्रा में मिलें किन्तु घनीभूत संवेदना के स्वर स्पष्ट रूप से सुने जा सकते हैं उनकी दृष्टि में कवि जनोचित वह उदात्तता निर्भीकता और ओज विद्यमान है जो उनके कृतित्व को स्मरणीय बनाने के लिए पर्याप्त है

35 फतहपुरा खारोलबस्ती
उदयपुर (राज)

मालवीय जी हिन्दी युनिवर्सिटी बनाइये

1918 में बम्बई में कांग्रेस अधिवेशन के साथ-साथ हिन्दू महासभा का भी उत्सव हुआ था जिसकी अध्यक्षता मालवीय जी ने की थी। मालवीय जी तथा अपार जन समूह के सामने पंडित नवरत्न जी ने सिंह गर्जना कर कहा था मालवीय जी जनता आपका आदर करती है तो करे पर गिरिधर शर्मा से आप उसी समय सम्मान पायेंगे जब कि हिन्दू युनिवर्सिटी हिन्दी विश्वविद्यालय में परिवर्तित हो जावेगी।

कलानाथ शास्त्री

नवरत्न जी की संस्कृत सर्जना

राजस्थान के जिन मनीषियों ने हिन्दी और संस्कृत में विपुल साहित्य रचना करके अपने चरणचिह्न इतिहास की पगडंडी पर छोड़े हैं उनमें झालरापाटन के पं० गिरिधर शर्मा नवरत्न का नाम अग्रणी पंक्ति में आता है। राजस्थान के एक बहुत कम विद्वान और साहित्यकार हैं जिनका नाम साहित्य के इतिहासकारों ने अपने लिखे इतिहासों में शामिल करने का कष्ट उठाना उचित समझा। मेरे विनीत मत में इसके अनेक कारण हो सकते हैं जिनका उल्लेख मैं अन्यत्र भी कर चुका हूँ। राजस्थान के किसी साहित्यकार ने हिन्दी और संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध इतिहास नहीं लिखे। अन्य राज्यों के जिन विद्वानों ने लिखे थे चाहे काशी के हों या प्रयाग के, बाहर के कुछ विद्वानों का कृतित्व ही उन तक पहुँच पाया, कुछ को उन्होंने उल्लेखनीय नहीं माना, जब ऐसा उन्हें आवश्यक लगा। जैसे गुलेरी जी काशी में कुछ वर्ष रहे, वैसे भी उनका कृतित्व की चमक भौगोलिक सीमाओं में दबने वाली नहीं थी। दूसरे, राजस्थान के अनेक संतों, साहित्यकारों और विद्वानों ने बहुत सी रचना हिन्दी के साथ साथ राजस्थानी में और लोक भाषाओं में भी की। तीसरे, पिछली पीढ़ी के राजस्थान के विद्वान और साहित्यकार अपने स्वयं के संगठन या संस्थाएं बनाने की अपेक्षा नागरी प्रचारिणी सभा जैसे संगठनों को तन मन धन से सहयोग देने में गौरव समझते थे और अपने सम्मान की अपेक्षा अन्यों के सम्मान में संतोष अनुभव करते थे।

इन सभी स्थितियों के बावजूद जिन सौभाग्यशाली विद्वानों का कृतित्व इतिहास

की सामग्री बना या राजस्थान की सीमाओं के बाहर प्रकाश में लाया उनमें नवलरामजी भी हैं यह क्या हमारे लिए गौरव की बात नहीं है? इस वर्ष उनकी जन्मशती है उनके हिन्दी साहित्य के कृतित्व के बारे में इतिहासकारों ने बहुत कुछ लिखा है संस्कृत में भी उनका कृतित्व उतना ही उल्लेखनीय है बल्कि मेरे विचार में उससे भी कहीं अधिक

प. गिरिधर शर्मा नवलरामजी का जन्म झालरापाटन में ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी सं. 1938 में हुआ था और प्रारंभिक शिक्षा उनकी वहीं शुरू हुई यह शिक्षा प्रमुखतः संस्कृत की थी जयपुर आकर भी उन्होंने मूर्धन्य विद्वानों से संस्कृत का गहन अध्ययन किया काशी से भी संस्कृत का वैदुष्य प्राप्त किया उन दिनों संस्कृत के वैदुष्य के बिना सामान्यतः विद्वता की ख्याति वैसे भी नहीं मिलती थी चाहे वह साहित्य रचना किसी भी भाषा में करता हो यही कारण है कि इसकी शाम के अधिकांश हिन्दी साहित्यकार संस्कृत के प्रौढ़ विद्वान थे प. श्रीधर पाठक हरिऔध प. पद्मसिंह शर्मा बालकृष्ण भट्ट आदि संस्कृत से ही हिन्दी में आये महावीर प्रसाद द्विवेदी चन्द्रधर शर्मा गुलेरी आदि तो संस्कृत में बड़ी अच्छी कविता लिखते थे उनके बाद भी यह परम्परा चलती रही उदयशंकर भट्ट हजारी प्रसाद द्विवेदी विद्यानिवास मिश्र द्विजेन्द्रनाथ मिश्र आदि संस्कृत के विद्वान होकर हिन्दी में साहित्य रचना करने लगे

संस्कृत में अनुवाद

नवलरामजी गुजराती ब्राह्मणों की अभ्यन्तर उपजाति के थे अतः गुजराती तो उनकी मातृभाषा थी ही गुजराती के उत्कृष्ट साहित्य का अध्ययन भी उन्होंने गहराई से किया था हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य भी रुचि से पढ़ा उर्दू और बंगला साहित्य में भी उनका अच्छा ज्ञान था अपनी युवावस्था से ही उन्होंने संस्कृत में बहुत अच्छी कविता करना शुरू कर दिया था श्री कृष्ण गंगा आदि के लिए स्तुतियां तो उन्होंने प्राचीन संस्कृत की परिपाटी के अनुरूप ही लिखीं किन्तु बहुभाषाविद् होने का यह परिणाम तो होना ही था कि वे अन्य भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य का संस्कृत में अनुवाद करने की भी सोचते जिस प्रकार उन्होंने रविबाबू की गीतांजलि का और गुजराती के कवि नानालाल दलपतराय के साहित्य का हिन्दी में अनुवाद किया उसी प्रकार उमर खैयाम की रुबाइयों का और नन्ददास के भ्रमर गीत का संस्कृत में अनुवाद किया इस दृष्टि से अन्य भाषाओं के साहित्य के संस्कृत में अनुवाद करने वाले विद्वानों में इनका नाम बहुत प्रतिष्ठा से लिया जाता है

उमर खैयाम का अनुवाद उन्होंने सीधे न करके फीटजराल्ड के अंग्रेजी अनुवाद से किया था 75 रुबाइयों का फिटजराल्ड ने प्रथमतः अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित किया था उन्हीं का अमरसूक्ति सुधाकर शीर्षक से नवलरामजी ने संस्कृत अनुवाद प्रकाशित किया 1929 में इस अनुवाद में फिटजराल्ड का अंग्रेजी अनुवाद भी साथ ही

रूप है मूलतः विद्वान द्वारा किया गया अनुवाद होने के कारण इसमे जो सार्वभौमिक उत्कर्ष और शैली का सौन्दर्य परिलक्षित होता है उस पर कुछ कहना अनावश्यक है अनुवाद संस्कृत के छन्दों में हुआ है और अनुवादक ने कहीं कहीं थोड़ी स्वतन्त्रता भी ली है ऐसी स्वतन्त्रता फिट्जराल्ड ने भी ली थी इस कारण संस्कृत अनुवाद उमर खय्याम से थोड़ा दूर चला जाता तो अस्वाभाविक नहीं किन्तु इसकी सहज शैली और सुन्दर शुद्ध भाषा बरबस हृदय को खींच लेती है

ब्रजभाषा मे 'भ्रमरगीत' प्रसिद्ध है। इसे नन्ददास का लिखा माना जाता है जो अष्टछाप के एक प्रमुख कवि थे इसमें रोला और दोहा के अन्त मे 10 मात्रा का एक टिकरा कवि ने और लिख दिया है जिससे भावों का अनुष्ठापन हो गया है और छन्द भी चुटीला बन जाता है कुछ आधुनिक कवियो ने भी इसी परिपाटी पर चुभदार दोहे लिखे हैं नवरत्नजी ने इस भ्रमरगीत का संस्कृत अनुवाद ठीक उन्हीं छन्दों मे किया टुक भी उसी प्रकार आकार मे लगाई जो देखते ही बनती है भ्रमरबोधि नाम से यह अनुवाद 1951 मे छपा अंग्रेजी की प्रसिद्ध कविता दी हरमिट (गोल्डस्मिथ द्वारा लिखित) का भी संस्कृत मे अनुवाद इन्होंने योगी शीर्षक से किया है इसका हिन्दी अनुवाद भी उन्होंने एकान्तवासी योगी शीर्षक से किया है यह ज्ञात हुआ है कि शेख सादी के फारसी काव्य गुलिस्तां के अनेक पद्यो का संस्कृत मे अनुवाद इन्होंने 'नीतिकौमुदीपानम्' शीर्षक से किया था जो अब तक अप्रकाशित है

इस प्रकार उत्कृष्ट साहित्य का विभिन्न भाषाओ मे अनुवाद करने वाले साहित्यकारो मे नवरत्नजी विशेषत उल्लेखनीय है ये अनुवाद कार्य उन्होंने 20वीं सदी के प्रारम्भ मे ही शुरू कर दिया था उन्होंने गुजराती बंगला और अंग्रेजी से कविताओ उपन्यासो और नाटको का हिन्दी में अनुवाद किया है मराठी मे भी यथेष्ट और व्यापार मराठी, गुजराती, चौरे, सैनी, के, डिंग्री, प, जगदीश सिंह, देव, प्रभाव, व्यतिरिक्त ... ने शतकों का गुजराती मे अनुवाद किया है इस प्रकार विभिन्न भाषाओ मे विभिन्न भाषाओ से अनुवाद काम करने वाले बहुत कम विद्वान हुए है

महाकवि माघ के शिशुपालवध के दो सर्गों का अनुवाद इन्होंने हिन्दी माघ नाम से संवत् 1985 मे छपाया था इसी प्रकार का एक अन्य अनुवाद है पद्यरत्नप्रभा यह पंडितराज जगन्नाथ के सुप्रसिद्ध काव्य भामिनीविलास से संकलित अन्योक्तियो का हिन्दी मे अनुवाद है ये अन्योक्तियाँ अभूतपूर्व उत्कृष्ट शैली मे लिखी गई है और संस्कृत साहित्य मे बहुत समादृत है स्वयं नवरत्नजी ने भामिनीविलास के इस अन्योक्ति संकलन की (जिसे जगन्नाथ ने भामिनीविलास नाम दिया) अपनी भूमिका मे भूरि भूरि प्रशंसा की है इस अनुवाद की विशेषता यह है कि संस्कृत के विभिन्न छन्दो मे रचे

शैली में यह अनुवाद किया गया है एवं प्रकार के छोटे से छोटे मिनी छंद से लेकर शस्कत के बड़े से बड़े छंद का प्रयोग इसमें उन्होंने किया है व 1980 (सन् 1923) में प्रकाशित ये पद्य हरिऔध की पद्धति से संस्कृत के छन्दों में लिखे गये उत्कृष्ट हिन्दी पद्य हैं प रामचन्द्र शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में नवरत्न जी के संस्कृत और हिन्दी पर समान अधिकार का सराहना के साथ उल्लेख किया है जसा ऊपर लिखा जा चुका है राजस्थान के बहुत कम ऐसे साहित्यकार हैं जो इस इतिहास में उल्लेख पा सके हैं गुलेरीजी नवरत्नजी जयपुर के पुरोहित प्रतापनारायण कविरत्न आदि कुछ ही ऐसे सौभाग्यशाली हैं

मौलिक रचनाएं

नवरत्नजी ने बाल्यकाल से ही संस्कृत में काव्यरचना शुरू कर दी थी वे झालावाड़ नरेश के राजगुरु थे राजा भवानीसिंह उनको बड़ी श्रद्धा से देखते थे इन्हीं भवानीसिंह को लक्ष्य करके नवरत्नजी ने अनेक कविताएं लिखीं 1924 में भवानीसिंह कारकरनम् छपी जिसमें राजा की वर्ता कम आदि विभिन्न कारकों के रूप में अनूठी काव्यशैली में चित्रित किया गया है इसमें उन्होंने अपनी ओर से भाष्य भी लिखा है जिसमें व्याकरण के सिद्धान्तों का अच्छा प्रतिपादन है सन् 1926 में सद्वृत्तपुष्पगुच्छ छपा जिसमें इनके यश का वर्णन है

इन्होंने नीति और उपदेश के बड़े सरस संस्कृत काव्य लिखे हैं नीति सम्बन्धी 700 पद्यों का एक संकलन गिरिधरसप्तशती नाम से प्रकाशित हो चुका है इससे पूर्व 'नवरत्न नीति' आर्योपदेश-रत्नमाला (सन् 1941) आदि नामों से इन्होंने नीति के पद्य प्रकाशित किये थे इनमें छोटे छोटे आर्या छन्दों में सरल शैली में नीति की बात बताई गई है पुस्तकों के अच्छे संग्रह के बिना कोई विद्वान् नहीं हो सकता यह बड़े सरल शब्दों में वे कहते हैं

> लभ्यानि पुस्तकानि प्राप्यानि भवन्तु वा प्रतीक्ष्याणि।
> सम्पाद्यारण्यखिलानि प्राग स्याद् पुस्तकी पुरुष ॥

बहुधा मणि को अनभिज्ञ ठुकरा दिया जाता है और काच को लोग सिर पर धारण कर लिये जाते हैं किन्तु उससे उनकी कीमत में एक नहीं पड़ता जब कीमत लगाई जाती है तो जौहरी कांच और मणि के फर्क को साफ कर देता है

> लुठति मणि पादाग्रे काचो वा शिरसि धार्यते पुरुष ।
> क्रयविक्रयवेलायां काचः काचो मणिर्मणिरेव ॥

नवरत्नजी की 20 रचनाएं 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में निकलने वाली सभी

प्रतिष्ठित संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में छपी थीं संस्कृत चन्द्रिका (शोलापुर, महाराष्ट्र), संस्कृत रत्नाकर (जयपुर), सुप्रभातम् (काशी) आदि पत्र इनकी रचनाएं बड़े आदर के साथ छापते थे इनकी अनेक संस्कृत कृतियां अब भी अप्रकाशित हैं इनमें कुछ तो नीति के पद्य हैं, कुछ स्तुतियां हैं और कुछ अनुवाद हैं आत्मनिवेदनम् प्रश्नोत्तर-रत्नमाला, न्यायवाक्सुधा आदि अनेक ऐसी पाण्डुलिपियां प्रकाशन की प्रतीक्षा म हैं

यश का विस्तार :

नवरत्नजी का जितना कृतित्व संस्कृत में रहा है उतना ही हिन्दी म भी उन्होंने सरस्वती, सुधा, माधुरी आदि तत्कालीन शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में खूब लिखा स्वयं विद्याभास्कर नामक पत्र का सम्पादन किया इन्दौर म मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर मे हिन्दी साहित्य समिति, कोटा मे भारतेन्दु समिति जैसी संस्थाओं की स्थापना में उनका प्रमुख हाथ रहा संवत् 1974 में इन्दौर में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आठवें अधिवेशन मे गांधीजी ने अध्यक्षता की थी नवरत्न जी भी उसमें सम्मिलित हुए थ वहां उन्होंने गांधीजी को राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को स्वतन्त्र भारत समाज का माध्यम बनाने का पुरजोर अनुरोध किया जिसे गांधीजी ने स्वीकार किया इनका संस्कृत जगत् और हिन्दी जगत् म समान रूप से सम्मान था यह सब कुछ होते हुए भी हम अब अनुभव करते हैं कि उनके विशाल कृतित्व को जो सम्मान और यश मिलना चाहिए था वह उन्हें नहीं मिल पाया इसका एक कारण तो यह था कि नवरत्नजी झालरापाटन छोड़कर कहीं नहीं गये एकान्त साधना और निरन्तर लेखन उन्हें बहुत प्रिय थे दूसरा कारण यह तो है ही कि हम राजस्थानियों को अपने विद्वानों और साहित्यकारों को उतना सम्मान देना नहीं आता, उनके उचित आकलन एवं विज्ञापन उस तरह पूजना हम नहीं जानते जिससे अन्य प्रदेशों के व्यक्ति उनके दूर रह भी देश भर में और के उन प्रदेशों म भी सम्मान प्राप्त कर सकें यद्यपि, हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इन्हें साहित्यवाचस्पति उपाधि दी किन्तु राजस्थान मे इनका कोई बड़ा अभिनन्दन हुआ हो, या अभिनन्दन ग्रन्थ निकला हो याद नहीं पड़ता सन् 1960 में जब ये 80 वर्ष के हुए थे तो कुछ साहित्यकारों और मित्रों तथा शिष्यों ने इनके सम्मान म एक आयोजन अवश्य किया था जुलाई, 1961 म इनका निधन हो गया आज हम जब उनके कृतित्व का आकलन करते हैं तो लगता है वे एक ऐसी विभूति थे जो अपने वैदुष्य और साहित्य रचना की छाप उस युग पर तो छोड़ ही गये जिसे उन्होंने अपने सान्निध्य से गौरवान्वित किया, ऐसा कालजयी साहित्य भी छोड़ गये हैं जिस पर भावी पीढ़ियां गर्व करेंगी

विष्णु चन्द्र पाठक

स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रेरक कवि गिरिधर शर्मा 'नवरत्न'

सन् 1881 में तत्कालीन राजपूताना के एक प्राचीन नगर झालरापाटन (झालावाड़) में एक ऐसे बालक ने जन्म लिया जो आगे चलकर हिन्दी राष्ट्र भाषा का ख्याति प्राप्त तथा ओजस्वी वक्ता बना, स्वतन्त्रता की लगन भरी काव्य धारा का प्रणेता बना तथा देश के कोने कोने में जिसने अपने प्रखर व्यक्तित्व द्वारा भोग विलास में डूबे सामन्तों तथा राजाओं को राष्ट्र प्रेम का संजीवन मन्त्र प्रदान किया। यह बालक था गिरिधर जो बाद में पंडित गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गुजराती हिन्दी अंग्रेजी बंगला फारसी उर्दू मराठी आदि भाषाओं में काव्य-सृजन करने वाले प्रायः उनके प्रसिद्ध ग्रन्थों के अनुवाद करने वाले नवरत्न ने राष्ट्रीय तथा हिन्दी प्रेम से ओत प्रोत सहस्रों रचनायें लिखीं। बावन वर्ष की आयु में उनकी आंखों की रोशनी जाती रही तब भी वे बोल बोलकर रचनायें लिखवाते रहे। अंग्रेजी के विख्यात कवि मिल्टन की तरह उसी भावावेग और गति से लिखती रहीं उनकी पत्नी श्रीमती रत्न ज्योत्स्ना देवी। पंडितजी का अटूट विश्वास था कि स्वतंत्रता को लोकभाषा हिन्दी के द्वारा ही अंकुरित किया जा सकेगा इसलिए उन्होंने इस गरीब निवाज भाषा को अपनाया।

नवरत्न जी हिन्दी साहित्य सम्मेलन में पूरे जोश के साथ भाग लिया करते थे। वे हिन्दी भाषा के समर्थ पक्षधर थे। सम्मेलन के मंच से पढ़ी गयी हिन्दी-प्रेम तथा

राष्ट्रीय भावनाओं के आवेग से लिखी गयीं उनकी अमर रचनाएं श्रोताओं को मन मुग्ध करने के साथ-साथ असहाय भावों के आंदोलन विलोडन का प्रमुख आधार बनती थीं यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन उस समय कांग्रेस के अधिवेशनों से किसी भी प्रकार कम नहीं होते थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने पंडित जी को साहित्य वाचस्पति की उपाधि से सम्मानित कर उनके अटूट हिन्दी प्रेम को ही सम्मानित किया था नवरत्न जी की मातृ वंदना रचना देश पर मर मिटने वाले नौजवान क्रान्तिकारियों का कण्ठहार थी इस विषय पर 1897 में गोपालदास की लिखी भारत भजन वली तथा 1901 में गुरुप्रसाद द्वारा लिखी गयी भारत संगीत शीर्षक रचनाएं मिलती हैं किन्तु भाव तथा भाषा की दृष्टि से नवरत्न जी की मातृ वन्दना कविता अधिक महत्वपूर्ण है हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान गोपालसिंह क्षेम ने हिन्दी साहित्य कोश में नवरत्न जी के काव्य का विवेचन करते हुए ठीक ही लिखा है -- जिस समय अधिकांश कवि मध्यकालीन वातावरण में ही सांस ले रहे थे और काव्यधारा ह्रासोन्मुखी हो रही थी स्व का भाव का यह जागरण देशप्रेम का शंखनाद ही माना जायेगा अपने अतीत के प्रति निष्क्रिय मोह एवं प्रतिक्रियात्मक आसक्ति तथा राष्ट्रीयता में प्रसार करते हुए जागरण पर जो शंखनाद किया उसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता

परतन्त्रता के दिनों में अंग्रेजों ने बड़ी चतुराई से अपनी सभ्यता को देशवासियों पर लाद दिया था अन्न तक आते आते हमने यह जाने स्वीकार ही कर लिया था कि हमारा भी आधार उन्हीं के पास है नवरत्न जी ने बार बार और हर स्तर पर इस सांस्कृतिक पराधीनता के भाव को तोड़ने का प्रयत्न किया सन् 9 8 में इन्दौर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन पर स्वागत गान के रूप में गाई राष्ट्र गान कविता में उपर्युक्त सत्य पूरी प्रखरता के साथ व्यक्त हुआ है पंडितजी का यह राष्ट्रगान हिन्दी भाषा का ऐसा प्रथम गान था जिसे विशाल जन समूह ने मंच पर खड़े हो कर अपार उल्लास और समर्पण भाव के साथ गाया था राष्ट्र गान में भारत की प्राकृतिक श्री का यह वर्णन द्रष्टव्य है --

> हिम गिरि ऊंचे मस्तकवाला है तेरा दृढ़ पहरेवाला
> जलनिधि गर्जन करे निराला रिपुओं का मद हरने वाला
> पंजाबी गुजरात निवासी बंगाली हों या ब्रजवासी
> राजस्थानी या मद्रासी सब के सब हैं भारतवासी
> तेरे सुत प्रिय देश ! जय देश ! जय देश !

गांधी दासता तथा सन 1857 की विफल क्रांति के बाद जहाँ अंग्रेजों के विरुद्ध एक शब्द तक बोलना कठिन हो गया था वहां हिन्दी के स्वाधीनता प्रेमी कवियों के नवरत्न जी एक छोटे रजवाड़ के छोटे से नगर में बैठ राष्ट्रीयता का शंखनाद कर रहे थे। जीवनमुक्त कविता में उन्होंने देशवासियों में स्वाभिमान और कर्मठता को लक्ष्य करते हुए लिखा —

> जो प्राम-गौरव नहीं जन भारते हैं
> अन्याय हू प सब ठौर पसारते हैं
> वह आत्मगौरव मना जड़ मारते हैं
> मनुष्य जन्म अपना वृथा हारते हैं

नवरत्न जी ने अपने काव्य में राष्ट्रहित को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया था उनका जीवन और राष्ट्रहित एकाकार हो गये थे। देश हित लम्बी कविता में उनकी जीवन-कामना का एक ऊर्ध्वमुखी सपना इस प्रकार व्यक्त हुआ है —

> मेरे सग रग बढ़ एक देश प्रेम की ही
> और रग मय हो के बढ़ जात नाहीं मे
> मेरो धन मेरो तन मेरो मन मेरो ओज
> मेरो सब लगे प्रभु देश की भलाई मे

यह तथ्य रेखांकित करने योग्य है कि पण्डित जी की काव्य रचना का समय कोई साधारण नहीं था। स्वदेश प्रेम की बात करना खांडे की धार पर चलना था उस समय कांग्रेस पार्टी तक अपना काम प्रस्ताव पारित करने तक सीमित किये थी लेकिन पण्डितजी निर्भीकता के साथ जन चित्त में देश प्रेम का भाव भरने का काम कर रहे थे

> उठो उठो शीघ्र करो न देरी
> है एक ही तो यह बात मेरी
> स्वदेश सेवाव्रत को उठाओ
> प्रधान कर्तव्य सपूत का है
> प्रसन्न माँ को रखना सदैव
> हे भाइयो ! भारतभूमि माँ की
> सेवा करो धर्म यही तुम्हारा

नवरत्न जी ने भारत के जन जन में स्वदेश प्रेम का शंखनाद फूंक कर यहां के निवासियों के मुरझाये मनों में अपना देश अपनी धरती अपनी सभ्यता अपनी संस्कृति

तथा अपनी परम्पराओं से प्रेम करने की सतत प्रेरणा दी उन्होंने अपने काव्य द्वारा अपनी धरती से पावन अनुराग का सलिल पैदा करने का महान् काम किया है इसके लिये उन्होंने देश के कण कण को महत्व प्रदान किया थोथे सम्मान धर्मभीरु जातिगत रूढ़ियों में जकड़े लोगों को उन्होंने ललकार कहा तुम्हारा असली अन्नदाता भारत है यहां की मिट्टी है इसलिए विदेशियों की चाटुकारिता छोड़ कर गुलामी की चादर को उतार कर फेंक दो कोई काम करने में अपमान नहीं है वे लोग जो अपनी शानशौकत का प्रदर्शन करते हैं वे देश जो अपने धन दौलत पर इतराते हैं उनके रोजाना हजम करते हैं यही भाव मातृवन्दना की निम्नांकित छंद में व्यक्त हुआ है—

कोई वस्त्र बुने करे जुलाहे का काम कोई,
करता सुनारी कोई शिल्प काज सारता है
मोचापन करे कोई बनाते मिठाई कोई,
तथा कोई फकीर भालत सवारता है
दीपक बारे कोई रंग नाचे कोई-कोई
सेवकी में द्रव्य पाय उमर गुजारता है
सब देश चाकर हैं भारत के वाह-वाह
एक मात्र अन्नदाता सरदार भारत है

नवरत्न जी के समय में हिन्दी में बाल साहित्य का नितान्त अभाव था प्राचीन बालकों की अलौकिक कथाओं तक ही बाल साहित्य की परिधि थी ऐसे समय में नवरत्न जी ने आगे बढ़कर बच्चों के लिए सुन्दर तथा प्रेरणादायी काव्य रचनाएं लिखी इन रचनाओं में बाल मनोरंजन ही नहीं एक नैतिक मूल्य सम्बोध भी है 'बच्चा' कविता में वे भारत में प्रजातंत्र की स्थापना का सपना देखते हैं लिखा है—

[illegible]
शान बढ़ाऊंगा, सुधि जन मन का
प्रजातंत्र स्थापित कर दूंगा
मैं अपनी धुन का हूं पक्का
भारत माता का हूं बच्चा

राष्ट्र प्रेम के कारण ही नवरत्नजी राष्ट्र-नेताओं के प्रति आदर भाव के साथ समर्पित थे उनके लिए गोपालकृष्ण गांधी बालगंगाधर तिलक पुरुषों के नाम नहीं थे दिव्य आदर्श के पुंज थे पंडित जी इन राष्ट्र नेताओं के महान् जीवनादर्शों से अपने हृदय का कोना-कोना प्रकाशित करते रहते थे यही कारण है कि गोपाल कृष्ण

गोखले और तिलक की मृत्यु पर उन्होंने हृदयविदारक कवितायें लिखीं इन दोनों राष्ट्र नेताओं पर लिखी रचनायें उनके प्रति पंडित जी के उत्कट प्रेम को ही व्यक्त नहीं करती बल्कि स्वतंत्रता-संग्राम में उन दोनों (गोखले और तिलक) की महत्वपूर्ण तथा रचनात्मक भूमिका को भी रेखांकित करती हैं गोखले के लिए उन्होंने लिखा—

> बुद्धिधन ! नीतिधन !! पूत भारत माता के !!!
> राजनीति तत्व वेत्ता, पथ दिया पारावार
> चला कहा गया कहा ? मा के अते प्यारे भाई
> गोखले गोपाल कृष्ण मचाकर हाहाकार

'मां के अते प्यारे भाई' से लक्षित होने वाला 'सहोदरत्व' विशेष रूप से द्रष्टव्य है

इसी प्रकार तिलक की मृत्यु पर लिखी ये पंक्तियां बहुत मार्मिक हैं —

> वह स्वराज्य महापथ दर्शक
> प्रभु परायण, नीति पयोनिधि
> वह महामति, कृष्ण सखा महान्
> तिलक आज गया उठ ही गया
>
> समय के बल से लड़ता रहा
> प्रबल गर्जन भी करता रहा
> सुभट केसरि जो न हटा कभी
> तिलक आज गया उठ ही गया

तिलक के उठ जाने का शोक भावुकता ही नहीं है यह दुःख की विकट घड़ी है खास तौर पर इसलिए कि अभी गांधी पूरी तरह स्थापित नहीं हुए थे और देश छिन्न भिन्न था नेतृत्व देने वाले तिलक उठ गये थे छिन्न भिन्न देश की आर्त स्थिति का वर्णन करते हुए उन्होंने निम्नलिखित कवित्त लिखा—

> छिन्न भिन्न राज्य तीन सौ छियासी राज्य
> लोग बाग भिन्न भिन्न भाषा को उचारत हैं
> सैकड़ों हैं जाति पाति संगठन ठीक नहीं,
> भांति-भांति सारे जन न्यारी-न्यारी धारत हैं

मन अकुराके महादेश दशा देख-देख
धीरज का न पता कहीं बुद्धि माद्य भाग्य है।
भारत लग के वारो ज्ञान शक्तिदाता क ऊ
देता है न साथो का सो गिरो जात भाल है।

लार्ड कर्जन ने भा तीयो का शोषण करने तथा स्वतन्त्रता सग्राम को भेद भरी नीति से कुचलने मे अपनी प्रमुख भूमिका निभाई थी उस समय वह बड क्रान्तिकारी शूरवीरो तक मे इतनी हिम्मत हो थी कि अपनी लेखनी से तत्कालीन धूर्त सम्राज सरकार पर सीधा आक्रमण कर सक लेकिन नवरत्न जी ने बा॒क की गोली मे भी गहरी मार करने वाला आक्रमण किया उन्होने निर्भीकतापूर्वक लिखा —

एहनिश दिन दिन देख्या हरामी हुआ
दुरजन कर्जन ने करता पसार की।
एमर्सन लगा गया सभ्य तोबन का तौक
फलत न फूल शाही अपनो बघार की।
एबटाल प की न लाजथा दूर किये
फोजर भो हेसर न धूम धाम धार ली।
कहे काल कवि दुष्ट मिटो न तो घोटा दम
भारत की जान जीनभाव न भार मी।

पण्डितजी प्रवासी गुजराती थे अत उनकी मातृभाषा गुजराती थी किन्तु उन्होने गुजराती के स्थान पर हिन्दी की उन्नति को अपना जीवनध्येय बना लिया था भरतपुर मे हिन्दी साहित्य इन्दौर म हिन्दी साहित्य समिति तथा सन् 1907 मे जयपुर मे पण्डित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के साथ मिलकर साहित्य सस तथा कोटा मे भारतेन्दु समिति आदि सस्थाओ के निर्माण मे नवरत्नजी का प्रमुख योगदान आज भी उनके हिंदी प्रेम का साक्षी है

सन् 9 8 म बम्बई की हिन्द महासभा के अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए मालवीयजी से इसी हिंदी लेखक न कहा था मालवीय जी जनता यदि आदर करती है तो बरं पर गिरिधर शर्मा से आप उसी समय सम्मान पायेंगे जब हिन्दू विश्वविद्यालय हिंदी विश्वविद्यालय मे परिवर्तित हो जावेगा पडितजी के इस कथन से अनेक ख्यातिनामा लोग रुष्ट हो गय थे किन्तु सहृदय और भाषा की सच्चाई को जानने वाले मालवीयजी न कहा नवरत्नजी ठीक कहते हैं राष्ट्रभाषा के हित के लिए यह आवश्यक है

नवरत्नजी का पक्का विश्वास था कि हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार तथा उसके माध्यम से ही राष्ट्र की अखंडता स्थापित की जा सकती है तथा गरीब पिछड़े हुए जीवन भर अभावों में पिसते फिर भी प्रसन्न तथा संतुष्ट रहने वाले हजारों हजार लोगों की सांस्कृतिक धरोहर को बचाया जा सकता है उन्होंने दूसरी भाषाओं में भी साहित्य सृजन किया लेकिन वहां भी वे हिन्दी नहीं भूले उर्दू में हिन्दी का यशगान करते हुए कलन्दर (नवरत्नजी का उर्दू तखल्लुस) ने कुछ शानदार शेर लिखे थे इस प्रकार थे

सुनो ऐ हिंद के बच्चो तुम्हारी है जुबां हिंदी
तुम्हारा हो यही नारा हमारी है जुबां हिन्दी
पढ़ो हिंदी लिखो हिंदी करो सब काम हिंदी में
भरो आला ख्यालों से तुम्हारी महजबीं हिन्दी
हजारों लफ्ज आयेंगे नये आ जाय क्या डर है
पचा लेगी उन्हें हिन्दी कि है जिंदा जुबां हिन्दी
कलन्दर मुर्शिदे कामिल वह ही सरपनो हो तुम
जुबां है हिंद की हिन्दी पढ़ेगा सब जहां हिन्दी

स्वातंत्रता संग्राम के अमर गायक तथा अपनी उदात्त कविता से सूने हुए हृदयों में राष्ट्रीयता का ज्वालामुखी धधकाने वाले इस निडर राष्ट्रभाषा हिंदी प्रेमी को मैं श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता हूं

पं. गिरिधर शर्मा ने भारत का जो चित्र खींचा उसमें सभी प्रान्त भारत के अविच्छिन्न अंग माने गये।

— 'संस्कृति के चार अध्याय' रामधारीसिंह दिनकर'

श्याम सुन्दर शर्मा

हिन्द में जनम पाके हिन्दी जो न जानी हो

पण्डित गिरिधर शर्मा नवरत्न के राष्ट्र-प्रेम को हिन्दी प्रेम के द्वारा ही समझा जा सकता है उनका यह अटूट विश्वास था कि जब तक हिन्दी देश की भाषा नहीं होगी स्वतंत्रता प्राप्त होना सम्भव नहीं है इसलिए उन्होंने राष्ट्र भाषा का उसी तरह गुणगान प्रारम्भ किया जैसे वे राष्ट्र का कर रहे थे इसी समझ के कारण जब पण्डितजी को एक धुन सवार हुई कि हिन्दी भाषा को देश में कैसे स्थापित किया जाए झालावाड़ से काम शुरू किया वहाँ हिन्दी समिति खोली इस काम में सहयोग देने वाले रहे श्री कृष्ण गोपाल माथुर जो अब सुना है कि उज्जैन में रहते हैं झालावाड़ के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री लालचन्द सेठी जो लालचंद विनोदीराम फर्म के मालिक थे इनके सहयोग से हिन्दी प्रेमी बन गये वे पण्डितजी को अपना गुरु मानते थे यद्यपि दोनों की उम्र में ज्यादा फर्क नहीं था इनकी एक फैक्ट्री उज्जैन में थी एवं इन्दौर में भी थी अत: इसी माध्यम से उज्जैन तथा इन्दौर में मध्य भारत हिन्दी समिति की स्थापना हो गई इन्दौर के तत्कालीन प्रधान सरदार कीबे को इन्होंने इस कार्य में सहयोगी पाया इन्दौर इनका कार्यक्षेत्र बन गया और वहां हिन्दी की जबरदस्त उन्नति हुई वहाँ के महान राजा होल्करों की मातृभाषा मराठी थी किन्तु वे दूरदृष्टा थे जानते थे कि

हिन्दी के बिना भारत का काम नहीं चल सकता है हिंदी को अपनाया और खूब अपनाया बड़ा प्रचार हुआ नागरी भाषा का

महामना मालवीय जी से भी इनका परिचय हो गया और उनसे तो इन्होंने यह भी कह दिया कि 'हिन्दू विश्वविद्यालय न बना कर हिन्दी विश्वविद्यालय बनाइये मालवीय जी इनसे सहमत हो गए लेकिन उस समय यह संभव नहीं हुआ वरा सकत हो गया जो पढ़ाई आज अंग्रेजी मे हो रही है हिन्दी में सम्भव नहीं हुई यही भारत का दुर्भाग्य है लार्ड मैकाले ने जो अंग्रेजी की पढ़ाई की नींव डाली भारतीयों को सब प्रकार से अंग्रेजी भक्त बनाया वह भक्ति आज भी वैसी की वैसी है 200 से ऊपर देश की राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं मे एक भी ऐसी नहीं जिसमे हिन्दी के जरिए शोध पढ़ाई या दफ्तर काम हो रहा हो बहुभाषी देश होने के कारण अनेक विज्ञान विषयो के धुरन्धर विद्वान अपनी मातृभाषा या अंग्रेजी जानते हैं

पंडितजी चाहते थे कि अंग्रेजी तथा यूरोप की अन्य समृद्ध भाषाओं में जो महान् ग्रंथ हैं उनका हिन्दी मे अनुवाद हो और सब विषयो पर मौलिक ग्रंथ लिखे जाएं हिंदी की समृद्धि के लिए पंडित गिरिधर शर्मा सारे भारत मे विचरते रहे उनका परिचय महात्मा गांधी से भी हुआ और उन्होंने गांधीजी को हिन्दी राष्ट्रभाषा बनाने का गुरु मंत्र दिया 1918 में इन्दौर मे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन हुआ जिसके स्वागताध्यक्ष नवरत्न जी थे इस सम्मेलन मे गांधी जी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित की

हिन्दी की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका सरस्वती जब तक चली और जब तक पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी उसका सम्पादन करते रहे तब तक नवरत्नजी की कवितायें तथा लेख उसमे छपते रहे भारत के सभी प्रसिद्ध पत्रों मे इनकी रचनायें छपती थी इनके काशी नागरी प्रचारिणी सभा से भी अच्छे सम्बन्ध थे वे हमेशा कहते थे—सभा द्वारा संस्कृत तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओं के उच्च तथा सुन्दर काव्य ग्रन्थ तथा अन्य शास्त्र पुस्तकें हिन्दी अनुवादित होनी चाहिए ताकि हिन्दी भाषा पूरी तरह समृद्ध व सम्पन्न होकर राष्ट्र भाषा ही नहीं सब भाषाओं की महारानी बन जावे उनका विश्वास था कि राष्ट्र भाषा की समृद्धि प्रांतीय भाषाओं का विकास तो करेगी ही साथ ही उर्दू को भी समुन्नत करेगी हिन्दी दूसरी भाषाओं की प्रतिद्वन्द्वी नहीं है प्रान्तीय भाषाओं का यथास्थान छीन कर हिन्दी का लाभ होने वाला नहीं है पंडितजी हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा और केन्द्र भाषा के रूप मे स्थापित देखना चाहते थे वे चाहते थे कि हिन्दी का आदर हो वह शासन बोली न समझी जाये

गिरिधर जी ने पड़ोसी राज्य कोटा मे हिन्दी का प्रचार और प्रसार करने म

योगदान दिया। कोटा के महाराव भीमसिंह जी से मिले और हिन्दी को मुख्य स्थान देने की प्रार्थना की। कोटा में भारतेन्दु समिति की स्थापना की जिसने हिन्दी को बढ़ाने और बलवती बनाने में खूब काम किया। राज्य का समस्त काम हिन्दी में होने लगा हिन्दी की अनेक पाठशालाएं खुलीं। भारतेन्दु समिति अब भी सभा सम्मेलन बुलाती है साहित्यकारों का सम्मान करती है, उन्हें प्रोत्साहन देती है। कोटा के पास रणबांकुरे हाडाओं की राजधानी बून्दी है। वह भी पंडित जी का कार्यक्षेत्र बनी। वह सूर्यमल्ल मिश्रण लज्जाशंकर मेहता जैसे सिद्ध साहित्यकारों की जन्मस्थली है। श्री लज्जाशंकर मेहता ने हिन्दी की जीवन भर सेवा की। ऋषिदत्त मेहता स्वतन्त्रता सेनानी थे और हिन्दी पत्रकारिता के स्तम्भ तथा सुयोग्य सम्पादक थे पंडित जी इन सब को हिन्दी-सेवा की प्रेरणा देते रहे।

भरतपुर में नवरत्न जी का काफी आना जाना था। वहां के महाराजा कृष्णसिंहजी बड़े स्वतन्त्र स्वभाव के अलमस्त जाट थे। अंग्रेजों से कतई नहीं डरते थे जो चाहते निद्वन्द्व करते थे। हिन्दी के अनन्य प्रेमी थे पंडित जी की प्रेरणा से उन्होंने 1927 में भरतपुर में अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलन का अधिवेशन आयोजित किया। इस अधिवेशन के सभापति थे महामना मालवीय जी। मैं भी उसमें भाग लेने गया था। इन्दौर के उपप्रधान मन्त्री सरदार कीबे तथा श्रीमती कीबे भी आई थीं। भरतपुर में राज्य का सब काम हिन्दी में होता था।

अलवर की बात ही मत पूछिये। वहां के राजा जयसिंह निडर तथा दबंग थे। वे हिन्दी ब्रजभाषा में कविता लिखते थे और अंग्रेजी विरोधी थे। हिन्दी के वे जबरदस्त हिमायती थे। राज्य का सब काम हिन्दी में होता था। राजा जयसिंह झालावाड़ नरेश सुकवि सुधाकर के अनन्य मित्रों में थे। पंडित जी से प्रायः उनका मिलना होता था।

करौली धौलपुर भी हिन्दी के प्रभाव से अछूते नहीं थे। धौलपुर के तत्कालीन महाराजा बड़े समझदार व्यक्ति थे। नाना हनुमान जी (जो हिन्दी भाषा के भक्त तथा लेखक थे) उनके यहां न्याय शासन में उच्चाधिकारी थे। उनके कारण हिन्दी का खूब प्रचार तथा प्रसार था।

जयपुर एक बड़ी रियासत थी किन्तु वहां के राजा किसी से मिलते नहीं थे। उनके दिवान टोंक के नवाब सर फय्याज़ अली खां थे। उनके मन में हिन्दी के लिए कोई उत्साह नहीं था। राज काज उर्दू में होता था परन्तु हिन्दी के लिए लड़ने वाले कम नहीं थे। पंडित जी जयपुर आते जाते रहते थे। किसी समय वहां संस्कृत के पांच सौ पंडित थे। उन्हीं में से भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने हिन्दी का प्रचार किया। उन्होंने

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाएं शुरू करवाई सम्मेलन का कार्य संभाला खुद पढाते कमलाकर गुरुजी पढाते यमुनानारायण जी न दमोच म पढात

पंडित जी की मूल रचनाएं तथा अनुवाद पुस्तकों की संख्या इतनी है कि गिनती सहज नहीं उन्होंने अपने जीवनकाल मे 100 से ऊपर पुस्तक लिखी है उनमें बहुत सी अप्रकाशित हैं नवरत्न जी ने आखिरी समय तक कोन कोन कर श्रीमद्भागवत का दशम् स्कंध हिन्दी मे छन्दबद्ध कराया पता नहीं वह कहा है ? यह सुनने में आया है कि एक बार घर मे आग लग गयी थी तब बहुत सी हस्तलिखित सामग्री स्वाहा हो गयी

अक्षर शिक्षा विख्यात गुजराती मे सबसे उत्तम है संस्कृत मे अमर कवि की रुबाइयों का सुन्दर श्लोको मे अनुवाद इस पुस्तक का नाम अमर सूक्ति सुधाकर है इस पुस्तक मे 75 पद्य हैं एक से एक सुन्दर इन रुबाइयो मे समय की अनन्तता जीवन की विनाशशीलता अल्पकालीनता तथा अनिश्चयता का मार्मिक विवेचन है पंडित जी ने हिन्दी तथा गुजराती म भी इसका अनुवाद किया है संस्कृत में भवानीसिंह सद्वृत्त पुष्पगुच्छ एक लघु काव्य-पुस्तिका है जो लगभग साठ पृष्ठों की है जैनियों के प्रमुख 'भक्तामर स्तोत्र' का हिन्दी अनुवाद कर पंडित जी ने सर्वधर्म समभाव की आस्था का परिचय दिया उन्होंने कई अंग्रेजी कविताओं का अनुवाद किया जिसमें गोल्डस्मिथ की हर्मिट नाम की एक कविता भी है योगी शीर्षक से यह अनुवाद छोटी पुस्तक के रूप म प्रकाशित हुआ है उन्होंने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कीसेन्ट मून किंवा शिशु नाम की प्रसिद्ध बंगला रचना का गुजराती मे अनुवाद किया जो वि स 1982 म छपा था उसका नाम है बालक आनन्दों का नन्दन कानन

'व्यापार शिक्षा' पंडितजी की हिन्दी में मौलिक रचना है जिससे इनकी बहुमुखी प्रतिभा का अन्दाज सहज ही लग जाता है व्यापार जैसे टेक्निकल काम मे भी उनकी रस या जानकारी थी अथवा रुचि न म से इस कठिन विषय पर हिन्दी म मौलिक पुस्तक 80 वर्ष पूर्व छप गई थी शुश्रुषा नाम से नर्सिंग विषय पर इनकी मौलिक पुस्तक भी छपी कठिन ई मे विद्याभ्यास अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है संस्कृत के परम विख्यात कवि माघ के 'शिशुपाल वध' संस्कृत महाकाव्य के प्रथम व द्वितीय सर्ग का हिन्दी मे रूपान्तर हिन्दी माघ वि स 1985 में होल्कर ग्रन्थमाला 70वीं संख्या के अन्तर्गत प्रकाशित किया गया पण्डितजी ने भर्तृहरि के नीति शतक का गुजराती रूपान्तर किया जो वि स 1984 मे छपा गुजराती भाषा के वरेण्य कवि नानालाल दलपतराय के प्रेम कुंज नाटक का हिन्दी म रूपान्तरण पंडितजी द्वारा वि स 1985 मे किया गया पंडितराज जगन्नाथ के भामिनी विलास के अन्योक्ति

प्रकरण का इन्होंने हिन्दी पद्यों में रूपान्तर किया गुजरात के कवि नान्हालाल के प्रसिद्ध नाटक जया जयन्त का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करने का श्रेय पण्डितजी को ही है यह एक अद्भुत मनोवैज्ञानिक नाट्यकृति है इसमें भोग और योग का अन्तर्द्वन्द्व चित्रित हुआ है जया योग की प्रतीक है तो जयन्त भोग का आखिर जया की जयन्त पर विजय होती है

गिरिधर सप्तशती संस्कृत के सुप्रसिद्ध आर्या छन्द में लिखे 700 श्लोकों की सुन्दर एवं दिव्य कृति है नवरत्न नीति अथवा आप्तोपदेश रत्नमाला 111 श्लोकों की उपदेश प्रधान पुस्तक है कविता कुसुम (अंग्रेजी साहित्य के बगीचे के रंग बिरंगे फूल) हिन्दी में वि सं 1982 में छपा पंचम देव स्तुति में हिन्दुओं के पंच देवताओं विष्णु शिव गणेश सूर्य एवं दुर्गा की स्तुतियां हैं पण्डितजी ने आरोग्य दिग्दर्शन नाम से स्वास्थ्य सम्बन्धी मौलिक ग्रंथ लिखा जापान विजय काव्यम् गौर मंडल काव्यम् काव्य कलाप नीतिमुकुट आदि संस्कृत की मौलिक कृतियां हैं

अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि नन्ददास के भ्रमर गीत का संस्कृत में प्रेम पयोधि नाम से अनुवाद किया जो वल्लभ सम्प्रदाय के भक्तों के लिए महान् उपलब्धि थी प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की गीतांजलि से सर्वप्रथम हिन्दी पाठकों को परिचित कराने का श्रेय भी पण्डितजी को ही जाता है इस अनुवाद के सम्बन्ध में पण्डितजी ने स्वयं लिखा है— गीतांजलि बंगभाषा में है उसका माधुर्य अनुपम है अनुभव का विषय है कहने का नहीं इसके भाषान्तर अंग्रेजी फ्रेंच जर्मन आदि में हुए हैं वे सब गद्य भाषान्तर हैं मैंने यह भाषान्तर पद्य में किया है एक गीतमय पुस्तक का भाषान्तर गेयतापूर्ण पद्यों में करना कठिन व्यापार है सात वर्ष में मैं इसे पूर्ण कर सका हूं जगत् की सारी भाषाओं में सर्वप्रथम पद्यमय भाषान्तर यह मेरी गीतांजलि है

पं गिरिधर शर्मा नवरत्न अत्यन्त सरल स्वभाव के सीधे-सादे प्राणी थे झालावाड़ दरबार के गुरु होने के कारण उन्हें स्वर्ण कड़ा पहनने को दिया गया था जिसे उन्होंने कभी नहीं पहना वह धन पद विद्या का अभिमान नहीं था संस्कृत फारसी उर्दू और बंगला के ज्ञाता होने के अलावा हिन्दी और गुजराती के वे असाधारण विद्वान् थे उन्हें सरस्वती का वरदान प्राप्त था उनकी एक भी कृति ऐसी नहीं जो दोषपूर्ण या भद्दी हो जो कुछ उन्होंने लिखा उस बचन कर दिया

नरेन्द्र सहाय सक्सेना

पण्डित श्री गिरिधर शर्मा "नवरत्न" : एक मूल्यांकन

हिन्दी साहित्य के लिए यह दुर्भाग्य है कि जीवित अवस्था में वह अपने महारथियों को पूछता और निधन के पश्चात् श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित करता है महाप्राण निराला इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं इसी प्रकार पं० गिरिधर शर्मा नवरत्न तथा पं० रामनिवास शर्मा की स्थिति रही है अपने जीवन काल में यश उनसे दूर-दूर रहा अब भी उनका मूल्यांकन नहीं हुआ है

जिसने एक बार भी पंडित गिरिधर शर्मा नवरत्न से साक्षात्कार किया वह उनके भव्य डीलडौल एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व को भुला सके ऐसा सम्भव न था मैंने पंडित गिरिधर शर्मा का नाम सुना था, आचार्य के रूप में सन् 1941 ई० में श्री नन्द चतुर्वेदी से परिचय हुआ और उन्होंने ही सर्वप्रथम मुझे नवरत्न जी के विषय में बताया चतुर्वेदी जी ने कहा था कि वे उनके काव्यगुरु हैं जिस श्रद्धा से उन्होंने यह सब कुछ कहा था वह आज तक शुभ स्मरण है तभी उनके दर्शन करने की इच्छा बलवती हो उठी थी

इसके पश्चात् सन् 1950 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन कोटा में हुआ वहां भी उनकी बहुत चर्चा रही किन्तु उनके ठोस सुझावों को कार्यान्वित करने के लिए किसी के पास समय न था सम्मेलन के गुटबाज लोगों ने उन्हें क्रियान्वित करने की चिंता नहीं की।

अवश्य ही अपनी असमर्थता के कारण वे तीस वर्षों से हिन्दी जगत के समक्ष सक्रिय रूप से न आ सके किन्तु हिंदी के प्रति नवरत्न जी का प्रेम लेशमात्र भी कम नहीं हुआ लेखनी का काम उन्होंने मुझे सौंप दिया फलस्वरूप हिंदी साहित्य को कई सुयोग्य शिष्य मिले।

सन् 1955 ई. में झालरापाटन में तहसीलदार नियुक्त होकर गया था उन दिनों जागीर पुनःग्रहण के अन्तर्गत मुआवजे के दावे भरे जा रहे थे स्वयं स्वामी जी भी उसी सिलसिले में तहसील में पधारे थे अपने कनिष्ठ पुत्र परमेश्वरजी को लेकर सर्वप्रथम तभी उनके दर्शन करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ उनका भरा हुआ शरीर कृश हो गया था किन्तु ललाट की चमक में कोई कमी नहीं थी नेत्र ज्योतिविहीन होने पर भी सुन्दरता से उठ जाते थे इन्हें देखकर आसानी से कहा जा सकता था कि उनमें किसी समय सर्वेक्षण की पैनी दृष्टि रही होगी।

जागीर उन्मूलन के विषय में झालावाड़ जिले के लगभग समस्त प्रमुख जागीरदारों से मेरा वार्तालाप हुआ किन्तु राजस्थान सरकार को कोई भी क्षमा न कर सका था सबके मन में रोष था

जागीर एकमात्र आधार होते हुए भी शर्मा जी ने अपने निर्विकार भाव से मुझे आश्चर्यचकित कर दिया था उनके मन में तनिक भी रोष न था इस विषय को लेकर संताप से वे बहुत दूर थे उन्होंने मुस्कराहट की भांति उसका स्वागत किया और बतलाया कि यह उनका सौभाग्य है कि इस राष्ट्रीय यज्ञ में उनका भी "पत्र-पुष्प" का योगदान हुआ है

नवरत्न जी गंभीर हो गये थे मैंने आश्चर्यचकित हो कारण पूछा तो उन्होंने और भी स्पष्ट करते हुए कहा कि यदि यही पुनीत काम 30 (तीस) वर्ष पूर्व हुआ होता तो मैं तहसील के द्वार पर मुआवजा लेने न आता

मैंने अपनी विमनस्कता अनुभव कर खेद प्रकट किया तो शर्मा जी एक बालक की तरह सरल हो गये थे अपने स्वाभाविक स्नेह से उन्होंने बतलाया था कि वह

तहसील तक जाने म तनिक भी खेद नही हुआ दुःख इसी बात का है कि वे मुआवजा लिये बिना न रह सके

द्विवेदी युग के साहित्य महारथी नवरत्न जी के नवीनतम विचारों ने मुझे प्रभावित कर दिया था बाद में पता चला कि शर्मा जी पत्र पत्रिकाएँ पढ़वा कर अपने आपको समय के साथ रखते है उनकी ज्ञान गरिमा उनकी बुद्धिमत्ता कुछ ऐसी थी जिसका उदाहरण अन्यत्र मिलना अब तो सम्भव नहीं है

शर्मा जी की सर्वतोमुखी प्रतिभा न तत्कालीन हिंदी साहित्य को नयी दिशा दी अपनी साधना से उन्होंने हिंदी साहित्य को अनेक प्रकार से सम्पन्न किया

अनुवादक के रूप मे–

सर्वत्र ही अनुवाद मूल लेखन से अधिक कठिन माना गया है लेखन को कल्पना के लिये विस्तृत क्षेत्र खुला मिलता है जबकि अनुवादक को सीमित अधिकतम सफल अनुवादक वही होता है जिसकी विद्या बुद्धि अथाह हो इस कठिनतम दुस्तर कार्य में शर्मा जी की मेधा ने निखार पाया और वे तत्कालीन हिन्दी साहित्य को ऐसे रत्न दे गये जिनका अभी हम मूल्यांकन भी नही कर सके है पंडित गिरिधर शर्मा हिन्दी के मिल्टन थे मिल्टन की भांति सर्वदा स्मरणीय रहेंगे कैसी समता है दोनों मे! मिल्टन ने अपने भारी भरकम व्यक्तित्व से तत्कालीन आंग्ल साहित्य को नया मोड़ दिया शर्मा जी ने वही काम अपने अनुवादो से किया मिल्टन अपनी वृद्धावस्था मे नेत्रहीन हो कर अपनी पुत्री की सहायता से साहित्य सेवा करते रह शर्मा जी की भी नेत्र ज्योति जाने के पश्चात् उनकी विदुषी पुत्री शकुन्तला कुमारी ने आजन्म कौमार्य व्रत धारण करके साहित्यिक कृति म योगदान दिया

शर्मा जी के अनुवादो ने हिन्दी साहित्य को क्या दिया इसका मूल्यांकन तो अभी भविष्य के गर्भ है जब कभी कोई साहित्यिक मनीषी हिन्दी साहित्य में प्रवृत्त विविध गतिविधियों पर सामूहिक विचार करेगा उस समय उसे शर्मा जी के अनुवादों के मूल्यांकन का अवसर मिल सकता है जिस प्रकार जायसी और तुलसीदास को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य म प्रतिष्ठित किया वैसा ही स्थान नवरत्न जी को भी आचार्य शोध पश्चात् प्राप्त होगा इसम तनिक भी सन्देह नहीं है

उनकी रुबाइयात उमर खय्याम के हिन्दी अनुवाद ने बच्चन को प्रेरणा दी और हिन्दी काव्याङ्गण म प्रथम बार मधुशाला के हाला के प्याले ढाल ढाल कर काव्यप्रेमियो को दिये सम्प्रति भी यह अनुवाद हिन्दी काव्य जगत म अनोखा, अनूठा माना जाता है

इस विषय में बच्चन ने लिखा है मगर अधिक रस बरसा था सावे फिट्जजेराल्ड उमर खय्याम के अनुवाद से एक पंक्ति अब तक नहीं भूल सका हूं—

वह गुलाब गर्वीली नगरी इरम कहा है ?

अब तक तो हिन्दी में उमर खय्याम के दर्जनों से ऊपर अनुवाद निकल चुके हैं शर्मा जी सम्भवत उसके प्रथम अनुवादक थे रुबाइयों के अनेक अनुवाद सामने आ जाने के बावजूद शर्मा जी के अनुवाद की अपनी विशेषता है 'विचित्र बात है कि रुबाइयों के लिये जिस छोटी पंक्ति का प्रयोग उन्होंने किया था उसे अपनाने का साहस फिर किसी भी अनुवादक का नहीं हुआ अनुवाद में स्वर्ण की पंक्ति दिल नहीं रही कभी जब यह अभी हिन्दी के लिये प्रयोगावस्था में है ज्यादा लोगों ने पंक्ति को ज्यादा बड़ी ही किया है छोटी पंक्तियों के प्रयोग कम ही हुए हैं

शर्मा जी की पंक्ति एक आध्यात्मिक स्थिति की ओर संकेत करती है अनुवाद में कम से कम इस लम्बाई की पंक्ति में मूल के विचारों को किसी भी तरह बढ़ाया नहीं जा सकता और थोड़ में सिमटा कर संक्षिप्त में ही रखा जा सकता है उससे शर्मा जी के अनुवाद में जो कसाव है जो संयम है, वह किसी भी अनुवाद में नहीं आ पाया है"

बच्चन जी की उपर्युक्त पंक्तियां शर्मा जी के प्रत्येक अनुवाद पर लागू होती हैं शर्मा जी ने जिसका अनुवाद किया प्रथम उसको आत्मसात करके ही कलम उठाई इसीलिए उनके अनुवाद आज भी हिन्दी जगत में आदर्श के रूप में स्वीकार किये जाते हैं

व्याख्यान उमर खय्याम का हिन्दी अनुवाद करने के दो वर्ष बाद उन्होंने उमर खय्याम का संस्कृत अनुवाद अमर सूक्ति सुधाकर संस्कृत साहित्य को भेंट किया नवीन प्रेरणा के लिए नव भावसृजन के हेतु ! किंतु हिंदी जैसा स्वागत उसका नहीं हुआ उसका मूल्य पहचान का अनन्त मरकनजों न । और उसकी कीमत 1 पाउण्ड होते हुए भी अमन विद्वान न खरीदी।

इसी टक्कर का दूसरा पद्यबद्ध अनुवाद शर्मा जी ने हिंदी को दिया यदि कुलगुरु रवीन्द्र की विश्वविख्यात गीतांजलि था यह भी सर्वप्रथम अनुवाद था इसके पश्चात् हिन्दी साहित्य में एक नया मोड़ आ गया बंगला की ओर हिंदी साहित्यमर्मियों की श्रद्धाभक्ति बन गई और उसके शब्द एवं साहित्य का अधिक मनन अनुशीलन होने लगा इसका प्रभाव हमारी हिन्दी कविता पर स्पष्ट लक्षित है इसी सिलसिले में शर्मा जी

न रवीन्द्रनाथ की दूसरी पुस्तक 'गाकार' का हिंदी अनुवाद करवाया किया और इसी प्रकार 'चित्रांगदा' का अनुवाद हिंदी में करके शर्माजी ने नव्य साहित्य का मार्ग प्रशस्त किया कई नवोदित लेखकों ने उससे प्रेरणा पाई

यही नहीं शर्माजी बंगला विचारधारा से हिन्दी साहित्यिकों को परिचित करा के बैठ गये हों उन्होंने गुजराती साहित्य के हिंदी अनुवाद द्वारा तत्कालीन हिन्दी साहित्य में क्रांति उत्पन्न कर दी गुजराती उनकी अपनी भाषा थी इस कारण उसके अनुवाद अधिक सफल हुए हैं गुजराती के कवि सम्राट श्री दलपतराम कवि को सर्व प्रथम हिंदी से परिचित करवाने का श्रेय उन्हीं को जाता है इस कवि के जया जयन्त प्रेमकुञ्ज उषा युग पलटा महासुदर्शन का हिंदी अनुवाद उन्होंने किया इस प्रकार गुजराती विचारधारा से परिचित होने की हिंदी कवियों को नवीन प्रेरणा मिली और वे शक्तिशाली काव्य रचना में सफल हो सके

उस कठिन युग में जबकि पठन-पाठन के इतने साधन न थे युवक निराशाभिमुख थे शर्माजी ने कठिनाई में विद्याभ्यास का अनुवाद करके उन्हें एक प्रेरणा व सम्बल दिया

उपन्यास क्षेत्र में आपने गोवर्द्धनराम माधवराम त्रिपाठी कृत सरस्वती चन्द्र का हिन्दी अनुवाद कर मार्गदर्शन किया इसी प्रकार मराठी की अलभ्य पुस्तक शुश्रूषा का हिन्दी अनुवाद करके आपने भारती का भंडार भरा

संस्कृत में अमर समास की व्याख्या के अतिरिक्त उन्होंने कादम्बरलम् तथा सद्वृत्तपुष्पगुच्छ और लिखी थी

नवरत्नजी कवि के रूप में

शर्मा जी द्वारा विरचित कविताओं का अधिक उल्लेख सम्प्रति हमें उपलब्ध नहीं है सम्भव है उनके अप्रकाशित साहित्य में दबा पड़ा हो किन्तु जो कुछ कविताएँ उपलब्ध हैं वे बेजोड़ तथा अद्भुत हैं वे ऐसी कविताएं हैं जिन्होंने अधिकांश प्रेरणा दी और नवोदित कवियों का मार्ग प्रशस्त किया

श्री गोपीवल्लभ उपाध्याय उनकी एक कविता से कितने प्रभावित हुए यह उन्हीं के शब्दों में सुनिये—इससे पूर्व मुझे पण्डितजी की प्रसिद्ध कविता पुस्तक प्रेम पढ़ने को मिल चुकी थी जो पहले सरस्वती और बाद में प लोचन प्रसाद पाण्डेय ने कविता

कुसुम माला में संग्रह कर इंडियन प्रेस में छपाई थी यह कविता मुझे इतनी प्रिय लगी कि मैं सदैव ही इसे गुनगुनाया करता था और अब भी यह मुझे इतनी ही प्रिय है

उपाध्यायजी ने इस कविता से अपनी काव्य साधना में पर्याप्त प्रेरणा ली और अपनी कई कविताएं आपसे सुधरवाई इस प्रकार के संस्मरण न जाने कितने उनके मित्रों शिष्यों व सहयोगियों से प्राप्त हो सकते हैं परिश्रम तो इसमें अवश्य होगा किन्तु परिश्रम के अनुपात में जो इनका मूल्य होगा वह सम्प्रति आंकना अवश्य कठिन होगा किन्तु भविष्य में नहीं

ऐसी ही एक घटना मुझे आज भी स्मरण है राजस्थान निर्माण के पश्चात् झालावाड़ जिले के अन्तर्गत सन् 1949 में सर्वप्रथम पचपहाड़ तहसील में नियुक्त हुआ एक दिन एक सज्जन ने मुझे अपना परिचय निरंतर हरि के नाम से दिया व हर प्रकार से विचित्र थे बोलचाल वेशभूषा क्रियाकलाप तथा गुणों में उन्होंने बड़े आदर से रायल साइज़ की छपी हुई शर्मा जी की किसी पत्र में प्रकाशित 'बच्चा' शीर्षक कविता निकाली और मुझे यह बताया कि अब उनका यह ध्येय है कि इस कविता को अधिकाधिक मात्रा में छपा कर होनहार बच्चों में वितरण करें कितनी प्रतियां वे इस समय तक छपवा कर बांट चुके थे यह तो मुझे स्मरण नहीं है लेकिन उन्होंने कई हजार के ऊपर संख्या बताई थी मुझे सकायक उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ मुझे सन्देह हुआ कि कहीं यह शर्माजी के नाम से धोखा तो नहीं हो रहा है किन्तु ऐसी कोई बात नहीं थी मैंने उस कविता की 500 (पांच सौ) प्रतियां छपा कर उनको दी और वे धन्यवाद दे विभोर हो कर चले गये थे

'सरस्वती', 'केसरी', 'बी. एच. यू. पूना' में प्रकाशित होने वाले 'चित्रमय जगत' में भी इनकी कविताएं प्रकाशित होती थी परन्तु स्फुट रूप में होने के कारण उनकी रूपरेखा निश्चित नहीं हो सकी शर्माजी अपनी कविताओं के प्रति कितने जागरूक थे इसका एक उदाहरण पर्याप्त होगा एक बार उन्होंने अपनी एक कविता 'मेरा देश' चित्रमय जगत में प्रकाशनार्थ भिजवाई सम्पादक महोदय ने उसमें कुछ परिवर्तन कर दिया तो शर्मा जी इनके सिर हो गये जब तक वह अपने मूल रूप में नहीं छपी शर्मा जी ने चैन नहीं लिया इतना अधिकार था शर्मा जी को अपनी भाषा और अपने भावों पर कि उसकी शुद्धता और उसकी उपयुक्तता को लेकर वे किसी से भी लोहा लेने को तत्पर रहते थे

उर्दू फारसी के विद्वान होने के नाते इनकी गति उर्दू नज्में लिखने में भी थी वहां वे अपने उपनाम 'कलन्दर' के नाम से लिखा करते थे 'पञ्ची विलास पलेस' (झालावाड़

नरेश्वर के निवास स्थान) पर कवि गोष्ठियाँ तथा मुशायरे जमा करते थे वहां शर्माजी का उच्चकोटि के विचारों तथा प्रतिभाशालियों से वास्ता पड़ता था इस कारण स्तत सम्पर्क से उनकी प्रतिभा बहुमुखी हो उठी थी

दक्ष व्याख्याता

प्राय लेखक वक्ता नहीं होते पर नवरत्न जी के भाषण जिन्होंने सुने हैं वे उनके पाण्डित्य और ज्ञान से अवश्य प्रभावित हुए हैं उज्जैन वाले श्री सूर्यनारायण जी व्यास ने पण्डितजी विषयक अपने संस्मरण में लिखा है और इसका समर्थन किया है न चन तथ श्री पी त्रिरंभ जी उपाध्याय ने प्रयाग विश्वविद्यालय में लॉ कॉलेज के हॉल में महाराजा झालावाड़ (श्री राजेन्द्र सिंह सुधाकर') के सभापतित्व में एक कवि सम्मेलन हुआ था वहां श्री बच्चन पंडितजी से प्रभावित हुए थे तो श्री गोपीवल्लभ उपाध्याय का कथन है कि वे शाजापुर (मध्य भारत) में अपने बाल्यकाल में सुने पंडित जी के भाषण अब तक विस्मृत नहीं कर पाये हैं उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा है— सन 1927 में इन्दौर मध्य भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रथमाधिवेशन खिलचीपुर नरेश महाराजा साहब दुर्जनसालसिंह जी की अध्यक्षता में हुआ था इसका आयोजन श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर (जिसके संस्थापक स्वयं प गिरिधर शर्मा नवरत्न थे) के तत्त्वावधान में हुआ था इसी के साथ विराट कवि सम्मेलन भी हुआ था इसकी अध्यक्षता पूज्यपाद पण्डित जी ने की थी इस अवसर पर दिया गया आपका प्रवचन काव्य साहित्य पर एक अपूर्व प्रबन्ध के रूप में ही हुआ था उसकी प्रत्येक पंक्ति से साहित्य की रसधारा प्रवाहित होती थी भाषा भाव और विवेचन की दृष्टि से वैसा भाषण कदाचित ही कहीं हुआ होगा

झालावाड़ निवासियों को तो पण्डित जी के भाषण यदा-कदा सुनने का सौभाग्य प्राप्त होता ही रहता था वे उनकी वाणी की विचक्षणता को अभी भी नहीं भूले हैं

सम्पादन-कार्य

साहित्य प्रसार का यह प्रमुख क्षेत्र भी आपसे अछूता नहीं रहा झालावाड़ से ही आपने विद्याभास्कर नामक एक पत्र निकाला किन्तु इसका जीवनकाल अधिक समय तक नहीं रह सका आपके अनुज श्री माणिक्यलाल शर्मा (वासुदेव शर्मा) की आकस्मिक अकाल मृत्यु ने आपको इस ओर से विरत कर दिया अत यह पत्र कुछ अंक निकलने के पश्चात् ही बन्द हो गया

इस थोड़े से समय में ही अपनी अद्भुत मेधा के कारण एक सफल सम्पादक के

सभी गुण प्राप्त कर लिये थे अपने शिष्यों की सम्पादन सम्बन्धी समस्यायें ये सुलझाते थे और अपने बहुमूल्य परामर्श से उनका पथ प्रदर्शन किया करते थे इस क्षेत्र में भी उनकी सेवायें बहुमूल्य हैं

'चित्रमय जगत' के भूतपूर्व सम्पादक श्री गोपीवल्लभ जी उपाध्याय आपका आभार प्रदर्शन करते थे— किन्तु पत्र की साहित्यिक सामग्री की प्राप्ति के लिए पण्डितजी ही मेरे सहायक सिद्ध हुए पण्डितजी बारबार परामर्श के द्वारा मेरा उत्साहवर्द्धन करते रहे आपने कुछ कवितायें भी भेजी और झालावाड़ नरेश स्व भवानी सिंहजी का विलायत से वापस पधारने पर सचित्र लेखादि देकर सहयोग दिया था

संस्थापन कार्य

मध्य भारत के विद्वानों तथा राजस्थान के कतिपय साहित्यसेवियों के अतिरिक्त सम्भवत बहुत कम हिन्दी प्रेमियों को यह ज्ञात होगा कि श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर, जिसके तत्वावधान में वीणा उनकी सेवा 34 वर्षों से कर रही है के संस्थापक श्री गिरिधर शर्मा नवरत्न थे हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना आपने सन् 1914 ई में की इस संस्थापन कार्य में पण्डित जी को डा सरजू प्रसाद जी तिवारी, मेजर भिकेल आप्टा साहब एव सरदार माधव राव विनायक राव किबे का सहयोग प्राप्त हुआ था इसके पश्चात् इस संस्था की नींव दृढ़ करने में आप तन-मन से जुट गये इसके लिए आपको बार-बार इन्दौर आना पड़ता था किन्तु कभी आपके मस्तक पर इस परेशानी से सल नहीं आया समिति के तत्वावधान में जो उत्सव सम्मेलन अथवा साहित्यिक गोष्ठियां होतीं उनमें आपका सक्रिय सहयोग उपस्थ होता था आपने सन् 1912 में झालरापाटन में श्री राजपूताना हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना की साथ ही हिन्दी के उत्थान के हेतु सन् 1912 ई में ही भरतपुर में हिन्दी समिति की स्थापना की थी

आपके सतत प्रयत्न से कोटा में भारतेन्दु समिति की नींव पड़ी इस संस्थान ने भी राजस्थान में हिन्दी साहित्य की इस क्षेत्र में बहुत बड़ी सेवा की है किन्तु उसका दायरा अधिक विस्तृत न हो सका पार्टीबाजी में पड़ने के कारण इस संस्था की प्रगति अवरुद्ध हुई और अब उसकी सेवायें पूर्ववत् नहीं रही हैं

साहित्यिक यात्री

द्विवेदी युग के लेखकों तथा साहित्यिकों में आपस में कैसा सौहार्द था, परस्पर

लेखकगण जिस प्रकार स्नेह स्थापित करते थे ! आजकल सब एकदम बदल गया है वह सह नुभूति वह स्नेह तथा सौहृद सब कुछ मात्र स्वप्न सा प्रतीत होता है

उस समय लेखकों म गुटबाजी न थी एक दूसरे पर छींटे नहीं उछाले जाते थे अनुभव प्र प्त लेखक तथा सम्प दक नवोदित साहित्य सेवकों को प्रोत्साहन देने के यत्न मे रहते थ उनकी भूल उनकी खामियां बतलाकर उन्हें मार्गदर्शन देते थे और आज बड़े लेखक एसे पत्रों का उत्तर देना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं बड़े सम्पादक उनकी रचनाओं की प्रकाशन र वापस लिखने के अतिरिक्त जो भी उनके पास आया हुआ होता है और कुछ नहीं करते उनकी एक निश्चित पंक्ति के कभी दर्शन नहीं हो पाते

वीणा इस समय अवश्य अपनी परम्परा बनाये हुए है आज भी सुयोग्य सम्पादकगण काम को न देखकर रचना को देखता है आज भी वहां नवोदित लेखकगण स्थान प ते हैं वीणा ने क ई साहित्य प्रतिभाओं की स्थापना हिन्दी साहित्य में दर म की है इसके अतिरिक्त उनको पत्र लिखने पर निराश नहीं होना पड़ता पत्र का उत्तर स्नेहसिक्त प्राप्त होता है यदि वीणा का अनुसरण हिन्दी के अन्य पत्र पत्रिकाएं भी करें तो वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी का भण्डार जो हम कई वर्षों से भरना च हते है उसके भरने म अधिक समय भी नहीं लगे

ऐसी बात नहीं कि इस प्रति द्विवेदी युग में केवल छोटे लेखक ही दिग्गजों से सम्बन्ध स्थापित करते हो लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार स्वयं पहल करने म नहीं हिचकिचाते थे इन पुराने दिनों की याद कर डा हरिवंशराय बच्चन ने लिखा है उन दिनों इस प्रकार की सौहार्दता को स्थिर करने का मुख्य प्रेम माना जाता था कोई किसी के लेख आदि म कोई गुण दोष देखता तो उससे प्रभावित होकर उससे मिलता या उससे संपर्क स्थापित करने का अवसर ढ़ढता रहता था दिनकरजी की प्रारंभिक रचनाओं से प्रभावित हो एक बार पंडित बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने कहा था यदि दिनकर मधीरा के जंगल म रहते होते तो उनसे मिलने मैं वहां भी पहुंचता लेखकों के पारस्परिक परिचय संपर्क एवं सम्ब ध का परिणाम यह था कि साहि य संसार म सद्भावना की एक स्नि ध वातावरण बना हुआ था यदि कहीं *ईर्ष्या द्वेष था भी तो वह उसी एक परिवार के लोगों में था परिवार की सीमा से* सीमित नियत्रित

इस प्रकार की साहित्यिक यात्राएं पण्डितजी ने अपने जीवनकाल में बहुत की थीं विस्तार भय से कतिपय यात्राओं का ही विवरण देना म ने उचित होगा

सम्भवत सर्वप्रथम यात्रा शर्माजी ने उस युग के शीर्ष आचार्य प महावीर प्रसाद द्विवेदी के यहां आचार्यप्रवर के निवास स्थान दौलतपुर (रायबरेली) जाकर की थी द्विवेदी जी ने स्नेहसिक्त हो उनका बड़ा भारी सम्मान किया फिर तो उनकी यात्राओं का जो तांता लगा तो जब तक वे असमर्थ न हो गये जारी रहा।

उनके शाहपुर के भाषणों शाहजापुर के सन् 1927 ई के विराट कवि सम्मेलन का सभापतित्व तथा प्रयाग विश्वविद्यालय के लोक लेक्चर्स के कार्यक्रम पर हम पहले ही विचार कर चुके हैं यह सब कार्यकलाप उनकी साहित्यिक यात्राओं की सफलतादायक घटनायें थी

सन् 1918 ई में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आठवें अधिवेशन का आयोजन इन्दौर नगरी में किया गया पण्डितजी वहां पहुंचे और जिस उत्साह तथा परिश्रम से उसका प्रबन्ध उन्होंने किया उसको उसमें भाग लेने वाले सज्जन आज तक नहीं भूले हैं यह सब क्यों पुराने तथा नये साहित्यिकों से मैत्री दृढ करने तथा परिचय प्राप्त करने के लिए सन् 1928 में नवरत्न जी को ऐसा ही ऐतिहासिक सभार मनाने का पुन अवसर प्राप्त हुआ इस शुभ अवसर पर पुण्यश्लोक महामहोपाध्याय श्री गौरीशंकरजी ओझा के सभापतित्व में विजय पु कवि रवीन्द्र पर इस बार सत्कार भरतपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन में किया गया था इस पद पर भी उन्होंने अपने स्वाभाविक उत्साह तथा कर्मण्यता का पूर्ण परिचय दिया इसी अवसर पर विराट कवि सम्मेलन में नवरत्नजी को सर्वश्रेष्ठ कवि घोषित करके स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया था

सन् 1935 की लोमहर्षक श्री गोपीवल्लभ जी उपाध्याय के मुख से सुनी है इसके बाद जब सन् 1935 में पुन इन्दौर में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का विराट अधिवेशन महात्मा गांधी के सभापतित्व में हुआ उसमें भी पं हलजी ने तन-मन धन से उद्योग किया था यद्यपि पण्डितजी के नेत्रों में विकार हो जाने से दृष्टि क्षीण हो चुकी थी फिर भी मुझे साथ लेकर मेरे कन्धे पर हाथ रखे बराबर इधर-उधर फिरते तथा साहित्य महारथियों के पास आते जाते रहे उनके साथ मुझे कई विद्वानों से परिचय तथा सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था इस प्रकार की एक यात्रा उन्होंने सम्भवत युग की जिज्ञासा से प्रेरित होकर की—"कौन है यह आदमी ? क्या इसके पास बड़ी दौलत है ? क्या यह दिन रात नशे में पड़ा रहता है ? क्या यह जो कुछ लिखता है वह उसका अनुभव सत्य है ? यह मधुशाला में रहता है ? मधुर स्वर से घिरा हुआ एक आधुनिक उमर खय्याम की तरह इलाहाबाद के मुट्ठीगंज में स्थित बच्चन के निवासस्थान के समक्ष लाकर खड़ा कर दिया था बच्चन बाहर से आने पर

उनको एक परचा मिला— "हम तो आपकी मधुशाला देखने आये थे पर साकी ही गायब था हम महाराज बनारस की कोठी में ठहरे हैं अब वहीं आपकी प्रतीक्षा करेंगे" गिरिधर शर्मा नवरत्न झालरापाटन वाले अपने संस्मरण में बच्चन ने एक ऐसी घटना पर प्रकाश डाला है जिस पर एकाएक विश्वास नहीं होगा अवश्य ही इसका महत्व इतर लोगों पर न हो किन्तु जो राजदरबारों के निकट सम्पर्क में रहे हैं उनके लिए तो बहुत ही महत्वपूर्ण है उन्होंने लिखा कि उनकी भूरिभूरि प्रशंसा करके नवरत्नजी ने उनको झालावाड़ दरबार में लेने का पूरा प्रयत्न किया था किन्तु वे (बच्चन) अड़ रहे

> मुझको न ले सके धनकुबेर
>
> दिखला कर अपना ठाठ बाट
>
> मुझको न सके ले नृपति मोल
>
> दे माल खजाना राजपाट

इससे वे रुष्ट हुए थे जिन्न भी अक्सर राजदरबारों का यह रवैया रहता था कि जो एक दफा वहां जम गया वह दूसरे को पैर रखने न देता था हमेशा ऐसा वातावरण बनाये रखते इसके लिए आवश्यक होता था कि राजा उसके अलावा कम से कम उसके क्षेत्र में अन्य का विचार न कर सके बच्चन जी ने कहा है कि महाराजा झालावाड़ (श्री सुधाकर) उनकी मधुशाला से बहुत प्रभावित थे जिसमें नवरत्न जी का बहुत हाथ था

विविध भाषा ज्ञान

उर्दू फारसी के ज्ञाता ही नहीं अपितु वे भारी विद्वान थे तभी तो इतनी सफलता से वे उमर खैयाम की रुबाइयात का हिन्दी पद्यबद्ध अनुवाद इतनी सफलता से कर सके उर्दू में तो वे कलन्दर के नाम से शायरी किया ही करते थे गुजराती उनकी अपनी भाषा थी और उसके कितने ही ग्रंथ रत्नों का हिन्दी अनुवाद उन्होंने किया मराठी पर भी उनका पूरा अधिकार था तभी गुभूष का हिन्दी अनुवाद वे पूर्ण सफलता से कर सके संस्कृत पर उनका अधिकार हिन्दी के समान ही था तभी उन्होंने रुबाइयात उमर खैयाम का पद्यबद्ध अनुवाद देववाणी संस्कृत में किया इसके अतिरिक्त अन्यान्य छोटी-बड़ी पुस्तकों की भी रचना उन्होंने इस भाषा में की संस्कृत रचनाओं का संग्रह गिरिधर-सप्तशती के नाम से प्रकाशित हुआ है (अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवियों की अनेक उत्तमोत्तम कविताओं का भी आपने हिन्दी में पद्यबद्ध रूपान्तर किया है जो कविता कुसुम के नाम से भाग-1 2 प्रकाशित हुआ है 3 रा भाग अभी अप्रकाशित है) रवीन्द्र टैगोर के ग्रंथ मूल बंगला से ही हिन्दी में भाषान्तरित हुए हैं जिनकी स्वयं रवि ठाकुर ने सराहना की है

नयी धाराओं के प्रवर्तक

अपनी इस उपरोक्त साहित्य साधना के अतिरिक्त उन्होंने उस समय हिन्दी साहित्य में नये प्रयोग भी किये थे जिनको हम सर्वथा भूल गये हैं जिनमें से कई तो पल्लवित पुष्पित हो रहे हैं और कई को 'नये प्रयोग' नामकरण करके आगे बढ़ाया जा रहा है पूज्यपाद श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध को अतुकान्त काव्य का प्रवर्तक तथा सूत्रधार माना जाता है किन्तु गिरिधर शर्मा ने उनका प्रयोग बहुत पहले कर लिया था उनका अतुकान्त एक छन्द अवलोकन करें —

'मैं जो नया ग्रन्थ विलोकता हूँ
भाता मुझे सो नव मित्र सा है
देखूं उसे मैं नित बार बार
मानो मिला मित्र मुझे पुराना'

इसी प्रकार कवि त्रिलोचन शास्त्री को हिन्दी काव्य में 'सॉनेट' का प्रवर्तक माना जाता है किन्तु शर्मा जी इस पर भी पूर्व में ही प्रयोग कर चुके थे चित्रमय जगत् में प्रकाशित उनके सॉनेट के अंश का नमूना अवलोकन कीजिये—

जो नर धन वाला है वही सुखी है सुकवि भी है

राजस्थानी डिंगल पद की कितनी सुन्दर भावव्यंजना है उपरोक्त पंक्ति में जननी जण जे भामरा मत जण जे गुणवन्त मायाजा के द्वार प पड्या रहे गुणवन्त

सम्मान

नवरत्नजी की सेवाओं को जितना देखा परखा गया उसी के अनुरूप उनका सम्मान हुआ वास्तविक मूल्यांकन तो उनका अभी हुआ ही नहीं जो उनको परखा जाना था हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने उनको 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि से विभूषित किया इन्दौर की विद्वत् सभा ने उनके पाण्डित्य से प्रभावित तथा अभिभूत हो कर उन्हें प्राच्यविद्यामहार्णव कहा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति के लिए भी उनका नाम प्रस्तावित हुआ पत्र पत्रिकाओं में लेख भी प्रकाशित हुए किन्तु सम्मेलन गुटबाजी से ऊपर नहीं उठ सका

पद्मविभूषण प सूर्य नारायण जी व्यास ने उनको सम्मानित करने का प्रतिम यत्न किया था उन्हें राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हो जो विशिष्ट विद्वानों को भारत सरकार द्वारा दिया जाता है उसके लिये मैंने प्रयास भी किया था और महामहिम राष्ट्रपतिजी (डा राजेन्द्र प्रसाद जी) ने मेरा प्रस्ताव अपने समर्थन के साथ गृह विभाग की ओर भिजवा भी दिया था किन्तु उसके पूर्व कि उसका कोई नतीजा निकलता— ऐ काल तेरे पहियों की घर-घर आखिर पिसती चली गई यह गिरिधर" साहित्य महारथी प गिरिधर शर्मा नवरत्न 1 जुलाई सन् 1961 को 81 वर्ष की अवस्था में स्वर्गारोही हुए

सारांश यह कि जिस भी दिशा मे शर्माजी का पर बढा लक्ष्य प्राप्ति के बगर पीछा नहीं हटा साहित्य के जिस भी अंग को उन्होंने छुआ उसमें आगामी पीढ़ी के लिये मार्ग प्रशस्त करके ही छोड़ा और जिस मस्तक पर उनका एक बार वरदहस्त पड़ा वह वह वगर विद्वान हुए नहीं रह सका ऐसी महिमा साधक निष्ठा श्री नवरत्नजी की यदि असमय में नव ज्योति उनको धोखा न देती तो उनकी गणना भारत में इन गिने शीर्षस्थ विद्वानों में होती

मालवा और राजपूताने में हिन्दी साहित्य के प्रचार में उन्होंने (नवरत्नजी) बड़ा काम किया।

—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

मनोहर प्रभाकर

स्वभाषा और स्वदेश के गायक गिरिधर जी

किसी भी धरती की अपनी समृद्ध साहित्यिक परम्परा का निर्माण पेशेवर लेखकों द्वारा नहीं, उन वागीश्वरों द्वारा हुआ है, जो समर्पित भाव से सृजनधर्मिता को अंगीकार करते हैं पण्डित गिरिधर शर्मा ऐसे ही वागीश्वरों में से एक थे ज्येष्ठ-शुक्ला अष्टमी, सवत्–1938 को झालरापाटन में जन्मे पण्डित गिरिधर शर्मा की शिक्षा, झालरापाटन जयपुर और काशी में परम्परागत ढंग से हुई वे संस्कृत फारसी, बंगला और गुजराती के उद्भट विद्वान थे झालावाड़ नरेश के संरक्षण में वे आजीवन साहित्य की साधना में लगे रहे महामना पण्डित मदन मोहन जी मालवीय ने जब बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना का बीड़ा उठाया तो पण्डित जी ने उसके निर्माण में सक्रिय योगदान दिया बहुत कम लोगों को इस बात का अहसास है कि महात्मा गांधी को हिन्दी के क्षेत्र में लाने का श्रेय भी नवरत्न जी को ही था उन्होंने मध्यभारत साहित्य समिति की स्थापना की और हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर तथा भारतेन्दु साहित्य समिति-कोटा के निर्माण और उत्थान में उनका बड़ा भारी योगदान रहा

ब्रिटिश शासन काल में जब अंग्रेजी और फारसी की तूती राज दरबारों में बोलती थी, तो नवरत्न जी ने हिन्दी को राजभाषा बनाने का अनुष्ठान प्रारम्भ किया झालावाड़, भरतपुर, जयपुर और कोटा में राजकाज में हिन्दी के प्रयोग की दिशा में उनकी ऐतिहासिक भूमिका रही

पण्डित गिरिधर शर्मा उच्च कोटि के कवि एवं अनुवादक थे राजस्थान में आधुनिक राष्ट्रीय काव्यधारा के वे अग्रणी कवि थे, जिन्होंने 'मातृवन्दना' नामक

अपने काव्य संग्रह मे सवप्रथम संस्कृत के स्तवनों से प्रभावित देशानुराग की कविताओं को स्थान दिया इस संग्रह की रचनाओं मे मातृभूमि की वन्दना अनेक रूपों मे हुई है कभी कवि अपने गौरव को स्मरण करता है तो कभी वह देश भक्ति मे डब कर देश हित के लिए अपने आपको समर्पित करने का संकल्प करता है भारत के गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण करते वे एक स्थान पर कहते हैं

> कौन महारानी लक्ष्मी सा था युद्धवीर ?
> कौन माता कर्ण के सा कहीं दानवीर था ?
> जाकर विलोक जाति-जातियों का इतिहास
> आयजाति तेरे जैसा किस मे समीर था ?

इसी प्रकार 'जयदेश' नामक एक अन्य रचना मे वे भारत को 'वेदोद्गाता भाग्य विधाता' कहकर उसके महिमा मंडित सांस्कृतिक वैभव का स्मरण कराते हैं विभिन्नता में अभिन्नता के दर्शन कराते हुए वे देश की भौगोलिक एकता को राष्ट्रीय एकता के रूप मे निम्न शब्दों मे चित्रित करते हैं

> पंजाबी गुजरात निवासी
> बंगाली हो या ब्रजवासी
> राजस्थानी या मद्रासी
> सबके सब हैं भारतवासी
> तेरे सुत प्रिय देश
> जय देश ! जय देश ! !

देश को सर्वस्व समझकर उसके हित राम की दुहाई देकर जब कवि जीने और मरने की प्रतिज्ञा करता है तो उसका देशानुराग अपने प्रखरतम स्वरूप मे उजागर होता है वह कहता है

> मेरा देश देश का मैं देश मेरा जीव प्राण
> मेरा सम्मान मेरे देश की बढ़ाई मे
> जीऊगा स्वदेश हित मरूगा स्वदेश काज
> देश के लिए कभी न करूगा बुराई मैं
> भीषण भयंकर प्रवाह मे भी भूल के भी
> भूलूगा न देशहित राम की दुहाई मैं
> जब लौं रहेगी सांस सर्वस्व लुटा दूगा
> ईश को भी झुका लूगा देश की भलाई मे

कवि का अन्तर देशानुराग की भावनाओं से इतना अभिभूत है कि वह केवल

देश प्रेम के रंग में ही डूबे रहना चाहता है क्योंकि उसकी दृष्टि से दूसरे सभी रंग भंग होकर बह जाते हैं यह अपना सर्वस्व देश पर न्योछावर कर देना चाहता है

धर्मों जन्मी देश की हो मेरी जीभ कभी खुले
और न हो मुझे कहीं खुदा की खुदाई में
मेरे मुख गान गान साथै देश भक्तन के
और गान भाव कभी मेरे न सुनाई में
मेरे अंग रंग चढ़े एक देश प्रेम को ही
और रंग भंग होके बह जात बहाई में
मेरो धन मेरो तन मेरो मन मेरो जीव
मेरो सब लगे प्रभु देश की भलाई में

नवरत्न जी ने ही सर्वप्रथम उमर खय्याम की रुबाइयों का हिन्दी और संस्कृत में अनुवाद किया खय्याम की रुबाइयों में निहित जीवन की क्षण भंगुरता और आनन्द भावना को उन्होंने सरल हिन्दी में उतारा खय्याम की बहुत प्रसिद्ध रुबाई जिसमें प्रेयसी के सानिध्य की स्वर्ग के रूप में कल्पना की गई है उन्होंने इस प्रकार रूपान्तरित की है —

हो अपूर्व रसराज लतान्तर की छाया हो ।
सुधापूर्ण हो कुम्भ रोट टुकड़ा हो, तू हो —
गाती सुमधुर गान विजन में बैठ पास मम
आह वही तो विजन बन है मुझ स्वर्ग सम ॥

नवरत्न जी की मान्यता थी कि अंग्रेजी बंगला गुजराती और फारसी में जो उदार साहित्य उपलब्ध है उसे हिन्दी के माध्यम से लोगों को उपलब्ध कराया जाये अपनी इस कल्पना को उन्होंने पूरी सामर्थ्य के साथ मूर्त रूप दिया अंग्रेजी के प्रख्यात कवि गोल्डस्मिथ की हर्मिट नामक रचना का अनुवाद उन्होंने योगी नाम से किया इस अनुवाद के आमुख में इन्दौर के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर सिरेमल बापना ने लिखा है कि पंडित जी के जीवन का लक्ष्य हिन्दी को दुनिया की अन्य समर्थ भाषाओं के समकक्ष बनाने में योगदान देना रहा है और वे एक हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए भी प्रयत्नशील रहे हैं गोल्ड स्मिथ की कृति 'हर्मिट' के अनुवाद में हुए मोह और प्रेम की परिभाषा उन्होंने निम्न शब्दों में की है —

हन्त हन्त ओ हुए भाग्य हम तक पहुँचाता ।
है वह लघुतर अधिर दिवस का या दो दिनका
और जिसे जन छलबल करके है हथियाता
वह उससे भी अधिक अधिकतर चपल माता ।

और मिलता क्या है ? केवल एक नाश है
मोह नींद है बुद्धि चेतना का विराम है।
और अभी तक भ्रम एक यत घुन ही घुन है
है पृथ्वी पर सभ्य नहीं वह मनुष्य ही है।

नवरत्न जी ने इन्दौर और झालावाड नरेश की आर्थिक सहायता से दो दर्जन से भी अधिक संस्कृत और बंगला तथा गुजराती के ग्रन्थों के अनुवाद हिन्दी पाठकों को दिये उनके उल्लेखनीय हिन्दी अनुवादों में रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कृति फ्रूट गर्दरिंग कवि माघरचित शिशुपालवध तथा गुजराती के कवि-नान्हालाल दलपतराम कृत जया जयन्त आदि प्रमुख हैं कवि हाल की गाथा सप्तशती की ही तरह उन्होंने संस्कृत में गिरिधर सप्तशती रचना की इसी प्रकार खय्याम की चुनी हुई रुबाइयों को भी वे अमर सूक्ति सुधाकर' के नाम से संस्कृत में लाये

नीति विषयक उनकी रचनाओं में नवरत्न नीति उनकी प्रमुख रचना है

बाल-साहित्य की रचना के क्षेत्र में भी पण्डितजी ने अनेक प्रयत्न किये रवीन्द्रनाथ की पद्य कथाओं का गुजराती अनुवाद उन्होंने बालबन्धु के नाम से किया है जो बहुत लोकप्रिय हुआ इस प्रकार पण्डित जी जीवन पर्यन्त निष्काम भाव से साहित्य साधना में लगे रहे पण्डित जी की मान्यता थी कि पुरस्कारों और सम्मान की भावना से प्रेरित होकर कोई महान् रचना नहीं की जा सकती जया जयन्त की भूमिका में उन्होंने स्पष्ट कहा है कि श्रीमद्भागवत महाभारत रामायण आदि ग्रन्थ के टुकड़ों की मोहताज नहीं भीष्म और हनुमान साहित्य-जगत में सहज पैदा नहीं हुए उनकी उत्पत्ति का मूल्य स्थूल सम्पत्ति नहीं नवरत्न जी की साहित्य सम्पदा के बारे में भी यही बात अक्षरश लागू होती है उन्होंने किसी पुरस्कार अथवा सम्मान की कामना जीवन में नहीं की साहित्य रसिकों की सेवा ही उनके जीवन का ध्येय रहा उनके यही संस्कार विरासत में मिले उनकी पुत्री सुश्री शकुन्तला रेणु को जो राजस्थान की प्रमुख गद्य गीत लेखिकाओं और कवयित्रियों में रही हैं रेणु जी को इस बात का बहुत अफसोस है कि उनके पिताश्री का पर्याप्त साहित्य अभी अप्रकाशित पड़ा है आज उस साहित्य की उपादेयता भाषा के अध्ययन की दृष्टि से निश्चय ही बहुत महत्व की हो सकती है बशर्ते कि उसे हिन्दी संसार के सम्मुख लाया जाय

नवरत्न जी आज से 25 वर्ष पूर्व 1 जून ई 1961 को गोलोकवासी हुए थे किन्तु 25 वर्षों में कितनी बार हमने सार्वजनिक रूप से उनका स्मरण किया? क्या यह उदासीनता हमारी घोर कृतघ्नता की परिचायक नहीं ?

सी 118 गगन मार्ग
बापूनगर जयपुर

रामचरण 'महेन्द्र'

पण्डित गिरिधर शर्मा की अमूल्य कृति 'कठिनाई में विद्याभ्यास'

साहित्यकार पंडित गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' के लेखन का उद्देश्य उपयोगी ज्ञानवर्द्धक और सुरुचिपूर्ण साहित्य का सृजन था उन दिनों हिन्दी साहित्य में अनेक विषयों पर पुस्तक उपलब्ध नहीं थीं कुछ क्षेत्र तो बिलकुल खाली पड़े हुए थे वे चाहते थे कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा के महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो अतः उन्होंने अनेक नवीन ज्ञानवर्द्धक विषयों पर अपनी लेखनी चलाई उपयोगी ग्रंथों का अनुवाद किया वे उस साहित्य को महत्व देते थे जो व्यक्ति, समाज और देश को आगे बढ़ाने जन साधारण की ज्ञानवृद्धि करने युवकों का स्वर्णिम भविष्य निर्माण करने में सहायक हो वे यह मानते थे कि कहानी उपन्यास कविता आदि से भी अधिक महत्वपूर्ण साहित्य निबन्ध-साहित्य है जिसकी परिधि में सब कुछ उपयोगी और ज्ञानवर्द्धक साहित्य आ जाता है मनुष्य को सही दिशाओं में विकसित करने की दृष्टि से उन्होंने उपयोगी साहित्य का निर्माण किया था जहां उन्होंने अनेक उपयोगी मौलिक पुस्तकें लिखीं वहीं दूसरी भाषाओं से भी नए विषयों पर ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों को हिन्दी में अनूदित भी किया था ऐसी ही एक उपयोगी पुस्तक है उनकी 'कठिनाई में विद्याभ्यास' * यह पुस्तक हिन्दी के भण्डार में एक अमूल्य रत्न है अध्ययन के लिए नई-नई प्रेरणा

---

*प्रकाशक हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय बम्बई लार्ड क्रे महाशय की अंग्रेजी पुस्तक Pursuit of knowledge under difficulties प्रथम संस्करण 1914 में प्रकाशित

देकर स्वाध्याय की ओर बढ़ाने वाली विद्यार्थियों के लिए सर्वाधिक प्रेरक और उत्साहवर्धक पुस्तक है यह लेखक के उद्देश्य की सफलता नैतिकता और विशालता की प्रतिबिम्ब है

कठिनाई में विद्याभ्यास का प्रथम संस्करण सन् 1914 में पहली बार प्रकाशित हुआ था जो हृदय उपरान्त द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ स्वस्थ सुरुचिपूर्ण और गम्भीर साहित्य कम बिकता है यही कारण है कि पुस्तक का प्रचार देरी से हुआ था

पुस्तक के लेखन का उद्देश्य क्या था ? लेखक ने स्वयं पुस्तक के प्रथम संस्करण में स्पष्ट किया है अंग्रेजी भाषा में लार्ड ब्रूहम महाशय की लिखी हुई एक पुस्तक है– Pursuit of knowledge under defficulties इस पुस्तक में ऐसे विद्यानुरागी सज्जनों के वृत्तान्त दिये गये हैं जिन्होंने अत्यन्त प्रतिकूल संयोगों में भी विद्याभ्यास किया है यह पुस्तक विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाने के लिए सिद्ध मन्त्र का काम देने की है इसी का संक्षिप्त संस्करण मद्रास की क्रिश्चियन लिट्रेरी सोसाइटी ने प्रकाशित किया है इस पुस्तक का गुजराती अनुवाद सुप्रसिद्ध साहित्यानुरागी भिक्षुक अखण्डानन्दजी के सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय ने प्रकाशित किया है हिन्दी भाषा जानने वाले सज्जन भी इस पुस्तक से लाभ उठावें इस विचार से हमने यह अनुवाद हिन्दी में किया है लेखक ने अनुवाद में भाव स्पष्ट करने का विशेष ध्यान रखा है शब्दों का चयन इस तरह किया है कि पाठक मूल ग्रन्थकार के अभिप्राय को सहज ही ग्रहण कर ले जनहित और ज्ञान भण्डार में वृद्धि करना ही लेखक का उत्तम आदर्श रहा है

पुस्तक के नामकरण के विषय में वे लिखते हैं इस पुस्तक का नाम हमने 'कठिनाई में विद्याभ्यास' इसलिये किया है कि Difficulty का भाव दुःख शब्द की अपेक्षा कठिनाई शब्द से विशेष व्यक्त होता है शब्दों के गूढ़ अर्थों पर सदैव उनकी दृष्टि रही थी इस पुस्तक में बहुत से पाश्चात्य विद्वानों की योग्यता प्राप्त करने स्वाध्याय द्वारा उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के अनेक उदाहरण दिये गये हैं लेकिन लेखक की इच्छा थी कि वे भारतीय विद्वानों का भी उल्लेख करते जिन्होंने अत्यन्त कठिनाई में विद्याभ्यास किया है जैसे श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर भट्ट बलदेव प्रसाद दीवान बहादुर प परमानन्द चतुर्वेदी सर गुरुदास बनर्जी सर रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर सर भवानीसिंह जी डा सरयूप्रसाद प महावीर प्रसाद द्विवेदी प गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा इत्यादि परन्तु इन महापुरुषों का वृत्तान्त अलग ही एक पुस्तक में लिखने का निश्चय कर इसे केवल अनुवाद रखना ही ठीक समझा खेद है प गिरिधर

शर्मा जी की यह ग्रन्थ आकांक्षापूर्ण न हो सकी अन्यथा प्राचीन भारतीय विद्वानों के सम्बन्ध में एक उपयोगी ग्रन्थ हमारे पास होता

कठिनाई में विद्याभ्यास पुस्तक में पण्डित गिरिधर शर्मा ने यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य की उन्नति में गरीबी विघ्न नहीं है उनके गरीबी मिटाने का साधन ज्ञान और बुद्धि का विकास है यदि आदमी पढ़ा लिखा है तो देर सवेर वह अवश्य उन्नति करेगा इसके अतिरिक्त उनकी दृष्टि में ज्ञानवृद्धि में स्वयं एक दैवी अनिर्वचनीय आनन्द है जिसे विद्वान् ही जान सकते हैं वे लिखते हैं —

इन्द्रियों को तृप्त करने से जो आनन्द उत्पन्न होता है वह क्षणिक है इन्द्रियां अपने विषयों से तृप्त नहीं होतीं परन्तु वे हमें अधिकाधिक भोग भोगने में प्रवृत्त करती हैं और परिणाम में हमारी हानि करती हैं किन्तु विद्या विनोद बड़ी अच्छी चीज है यह ज्ञान को बढ़ाती है और इसका परिणाम सुखदायक है [1]

जनता में सुरुचि और सदिच्छा विकसित करना उनका उद्देश्य था जिसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीकों से उन्होंने प्रस्तुत किया है एक स्थान पर लिखते हैं यथार्थ ज्ञान हम इस बात का पात्र बनाता है कि हम उपयोगी हों तथा महान् बनें आगे चलकर वे कहते हैं अपना सुख बढ़ाने का सबसे अच्छा रास्ता यह है कि हम दूसरों के सुख की वृद्धि करें इस प्रकार उदात्त तत्त्व की वृद्धि के लिए उन्होंने प्रयत्न जारी रखा था पूरी पुस्तक में तरह-तरह के उदाहरण देकर उन्होंने दिखाया है कि गरीबी विद्याभ्यास में बाधक नहीं है ज्ञान की वृद्धि रुपया कमाने के लिए नहीं वरन् आत्मोन्नति की दृष्टि से करना चाहिए वे आगे कहते हैं ज्ञान का लाभ करने के लिए बहुत दीर्घ समय तक बलपूर्वक मनोनिग्रह कर एक ही काम में दृढ़ उत्साह के साथ लगे रहने की आवश्यकता है ऐसा होने से हरेक बात की प्राप्ति हो सकती है ये दृष्टान्त उन गरीबों को उपयोगी और उत्साह देने वाले हैं जो इस प्रकार ज्ञानाभ्यास करना चाहते हैं विघ्न चाहे जैसे प्रबल क्यों न हों उनसे निराश होने का कोई कारण नहीं [2]

इस पुस्तक में सब विषय इस प्रकार हैं 1 अपने परिश्रम से सुशिक्षित हुए विद्वान् 2– मरसाहित्य प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता 3 साहित्यप्रेमी व्यापारी 4– विज्ञान के विद्वान् 5 जहाजी और प्रवासी 6– विद्वान् मोची 7 जेल में साहित्यसेवा 8 विद्यानुरागी राजा महाराजा 9 सुप्रसिद्ध अन्धे मनुष्य 10– शक्ति से अधिक अभ्यास करने के बुरे परिणाम —इन सभी प्रकरणों में लेखक ने उदाहरण दे देकर

---

[1] देखिए कठिनाई में विद्याभ्यास पृष्ठ 7 वही पृष्ठ 9

स्पष्ट किया है कि मनुष्य को सदा हर प्रतिकूल परिस्थिति में भी अपनी योग्यता और बुद्धि बढ़ाते रहना चाहिए यह गम्भीर उपयोगी और ज्ञानवर्द्धक तत्वों से भरपूर ग्रंथ है हिन्दी में स्केट भाषण की शाला में प्रारम्भ सुधार विषयों की पुस्तकों की कमी देखकर ही शर्मा जी ने विवेक और सद्भावनाओं की वृद्धि करने वाले इस ग्रंथ को तैयार किया था इस ग्रंथ में सदाचार का व्यवहारिक स्वरूप चित्रित किया गया है इस ग्रंथ की सामग्री अपने आसपास की गरीब निःसहाय साधनहीन जिन्दगी से बटोरी गई है और लेखक ने उन्हें ईमानदारी के साथ पेश किया है रोजगारों के जीवन को उन्होंने सवारने का जो प्रयास किया है उसमें भले ही साहित्य की शैली-सौन्दर्य या कलात्मक दृष्टि से कच्चापन हो परन्तु इस कच्चेपन में जीवन को सवारने और विकसित करने का अपना सौंदर्य आनन्द है

पण्डित गिरिधर शर्मा अपनी पीढ़ी के सामपथ्य न लेखक थे वे कल्पना के नहीं यथार्थ के साधक थे और उन्होंने मानव जीवन को सभी रूपों में स्वीकार किया था इसी से उनकी लेखन-कला महज कला के लिए नहीं जीवन के लिए थी जीवन के विविध रूपों के लिए थी उनके विषय में ये पंक्तियां सही उतरती हैं—

कला-कौशल वह सब अपदर्थ सृजन साहित्य सभी वह व्यर्थ
रहे जो जन-जीवन में व्याप्त न आए जो जीवन के अर्थ !

उन्होंने जो भी लिखा कहा रूप वर लिखा है कल्पना के गुब्बारे नहीं उड़ाये हैं उन्होंने दुःख संघर्षमय जीवन व्यतीत किया था पर वे आस्थावान व्यक्ति थे उनके साहित्य में जीवन के व्यापक सत्य भरे पड़े हैं

नयापुरा कोटा (राजस्थान)

शकुन्तला रेणु से पूरन सरमा की बातचीत

राजस्थान की धरती जहाँ वीरता व बहादुरी की असंख्य गौरव गाथाओं को अपने इतिहास के पृष्ठों पर समेटे हुये है—वहीं कला साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी यहाँ एक से बढ़कर एक महान मनीषियों ने जन्म लिया है। देश की कोई भी धारा हो राजस्थान हर काल में—पूर्ण सजगता और चेतना से उस धारा से सघनता से जुड़ा रहा है। विद्यावाचस्पति पं. गिरधर शर्मा 'नवरत्न' भी एक ऐसा ही नाम है, जो हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक काल से झालरापाटन में 6 जून 1881 को जन्मे और साहित्य की प्रमुख धारा से अपने स्वर्गवास (जुलाई 1961) तक जुड़े रहे। यह वह काल था जब हिन्दी अपने सुदृढ़ होने के लिए जमीन तलाश कर स्थापना व मान्यताओं के लिए प्रभावी रूप से संघर्षरत थी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', अमरनाथ झा, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, द्विवेदीजी, हिन्दीसेवी कवि मिथिला कोकिल एवं पं. श्यामनारायण पाण्डेय हिन्दी में रचना करके इसे विभिन्न प्रादेशिक भाषा साहित्य से जोड़कर जन-जन तक पहुँचा रहे थे। पं. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' भी इसी आंदोलन में पूरी निष्ठा से सक्रिय थे। इनके सम्पूर्ण साहित्य में राष्ट्रीयता की प्रखर गंध है एवं तत्कालीन राजनैतिक चेतना में इन्होंने अपने साहित्य द्वारा महती भूमिका निभाई है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में पं. रामचन्द्र शुक्ल ने 'हरिऔध' के 'प्रिय प्रवास' को हिन्दी का प्रथम अतुकान्त प्रबन्ध काव्य माना है—जबकि वस्तुस्थिति यह है कि पं. गिरधर शर्मा की सती-सावित्री कृति गुजरात से 1907 में ही 'प्रिय-प्रवास' से पूर्व अतुकान्त प्रबन्ध-काव्य शैली में प्रकाशित हो चुकी

थी यह विडम्बना ही है कि सती सावित्री के स्थान पर यह श्रेय आज भी त्रिय प्रवास को ही मिला हुआ है पण्डितजी ने हिन्दी गुजराती एवं संस्कृत मे असीम साहित्य की रचनाकर—गुजराती पाठकों को हिन्दी की मुख्यधारा से जोड़ने का भरसक प्रयास किया है विश्व की अन्य भाषाओं से भी उन्होंने अनुवाद कर हिन्दी-संस्कृत व गुजराती भाषाओं को एक निधी रूप में सौंपे हैं

पण्डितजी ने अपने जीवन काल मे लगभग सत्तर पुस्तकों की रचना की है— जिनमे से 40 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं तथा शेष सभी अप्रकाशित हैं इन्होंने फारसी के करीमा का हिन्दी संस्कृत एवं गुजराती में अनुवाद किया—जो सटीक और सशक्त है उमर खय्याम की पचहत्तर रुबाइयां भी इन्होंने इन्हीं तीनों भाषाओं में अनुवादित की फारसी के शेख सादी की रचनाओं का भी हिन्दी व गुजराती मे अनुवाद किया है विश्व साहित्य की ये तीनों प्रतिनिधि रचनाओं का पद्यानुवाद जहां पण्डित गिरिधर शर्मा नवरत्न की गहन अध्ययनशीलता दार्शनिकता एवं चिंतन का द्योतक है—वहीं विविध विषयों की गंभीरता उनके सम्पूर्ण साहित्य पर अमिट छाप डालती है पण्डितजी अपने अंतिम दिनों में आंखों की ज्योति क्षीण होने से देखने मे असमर्थ थे तब वे अपनी पुत्री कुमारी शकुन्तला रेणु को डिक्टेशन दिया करते थे शकुन्तला जी उसे लिखतीं और साहित्य साधना का यह अनवरत क्रम आजीवन चलता रहा

शकुन्तला जी की उम्र इस समय 62 वर्ष है आपने शादी नहीं की है मार्च के एक रविवार की सुबह जब मैं उनका पता पूछता-पूछता जयपुर के पारम्परिक प्राचीन क्षेत्र ब्रह्मपुरी में पहाड़ी की तलहटी में ठीक गढ़गणेश के नीचे स्थित उनके निवास पर पहुंचा तो छत आड मे बने एक मात्र कमरे मे एक वृद्ध महिला कोई पुस्तक पढ़ रही थीं मैंने धीरे से पूछा यहां शकुन्तला जी रहती हैं न ?

'आइये मैं ही शकुन्तला हूं पुस्तक को पास के बक्से पर रखकर वे खड़ी हो गई मैंने विनम्रता से अपना स्थान लिया और अपने परिचय के बाद उनके पिता के बारे में संक्षिप्त जानकारी देने के बारे मे कहा पिता का स्मरण आते ही शकुन्तला जी एक बारगी अतीत के सागर में खो गई चेहरे पर गम्भीरता एक पल को कुछ गहराई तत्पश्चात् चश्मे में से झांकती आंखों में चमक लौटी और वे स्मित हास्य के साथ बोलीं —बापू जी के साथ जो समय गुजरा है—मुझे पता ही नहीं चला—सब कुछ ऐसे बीत गया जैसे कोई एक पल हो बहुत मजा सुख था उस समय साहित्यकारों का आना-जाना कविता-साहित्य की ही दिनारम्भ से बातें होतीं जो देर रात तक चलतीं

मैंने कहा—मैं मुख्य[1] रूप से यह जानना चाहूंगा कि बापू जी का सती सावित्री

प्राय बहुत 'हरिऔधजी' के प्रिय-प्रवास के पूर्व प्रकाशित है फिर भी उसे प्रिय-प्रवास की जैसी मान्यता नहीं मिली है मेरा मतलब हिन्दी का पहला महाकाव्य प्रबन्ध काव्य 'सती सावित्री' होना चाहिए

होना तो चाहिये क्योंकि सती-सावित्री का प्रकाशन 1907 में हो चुका था— जबकि प्रिय प्रवास इसके बाद की रचना है लेकिन ऐसी गलतियां एक नहीं अनेक हैं बापूजी इस मामले में सदैव बेपरवाह रहे जिनका उनके लिए कोई प्रचार प्रसार व पक्षपात का कारण नहीं था केवल एक लक्ष्य था—जिसमें व्यय थे जन सामान्य के व्यापक कल्याण एवं साहित्य की श्रीवृद्धि में लगे थे मैंने एक बार बापूजी को उनकी जीवनी लिखने के बारे में प्रश्न करना चाहा तो उनका जवाब था— छिछिया हमारे जैसे पता नहीं कितने ही हो गये और पता नहीं कितने हो जायेंगे फिर इसके बाद मैं कभी उनसे जीवनी लिखने के बारे में कहने का साहस नहीं जुटा पाई सामयिक जन चेतना से जुड़कर सदैव राष्ट्रीयता का जयनाद करते रहे व दोनों

मैंने पूछा— क्या कभी उनकी रचनाओं में जो राष्ट्रीय भाव का आधिक्य था— वह बाधक रहा यानि ब्रिटिश सरकार ने उनके लेखन को आपत्तिजनक माना ?

हां—ब्रिटिश सरकार की उस पर नजर जरूर थी लेकिन झालावाड़ नरेश महाराजा भवानी सिंह का उन्हें पूरा संरक्षण प्राप्त था इस सभी पक्षों की ओर से बापूजी को कोई ऐसी उल्लेखनीय बाधा नहीं आई स्वयं महाराणा भवानीसिंह प्रकाण्ड विद्वान गुणीजनों का सम्मान करने वाले एवं साहित्य प्रेमी सदाशय व्यक्ति थे बापूजी ने लेकिन राजा महाराजाओं को भी नहीं बख्शा उनकी शराबखोरी व भोग विलास की लत को भी उन्होंने ललकारा और इसके दुष्परिणामों से आगाह किया लेकिन भवानीसिंह जी न सिर्फ बापूजी के गुणों की कद्र की यह उस समय झालावाड़ व राजस्थान के लिए बहुत बड़े गौरव की बात थी कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा सबसे प्रथम जिन दो व्यक्तियों को विद्यावाचस्पति की मानद उपाधि से अलंकृत किया—उनमें बापूजी राजस्थान से अकेले थे उन्हीं दिनों बापूजी पंडित मदन मोहनजी मालवीय के सम्पर्क में आये और हिन्दू यूनिवर्सिटी के लिए बम्बई व अन्य कई शहरों की इसके चन्दे के लिए यात्राएं कीं मालवीयजी से भी बापूजी कभी कभी कड़वी बात कह देते थे—लेकिन वे उसी पन्थपात भाव से नहीं लेते थे बाद में मालवीय जी उन्हें बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राच्य शिक्षा विभाग का अध्यक्ष बनाकर ले जाना चाहते थे—लेकिन झालावाड़ नरेश ने विनम्रता से मना कर दिया कि आपको तो और भी विद्वान मिल जायेंगे—लेकिन हमें तो ऐसे महापुरुष कहां मिलेंगे ?

मैंने अगला प्रश्न किया—'तो क्या पण्डितजी झालावाड़ के राजकवि थे?'

'नही, लेकिन दर्जा कहीं कम न था महाराजा का पूर्ण स्नेह व कृपा थी 'राजकवि बनाने की तो डॉ हरिवंशराय बच्चन से विनय की गई थी लेकिन उन्होंने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया एक बार बापूजी और महाराज भवानीसिंह जी इलाहाबाद गये थे उन दिनो बच्चन की मधुशाला की धूम थी और बच्चन जी इससे देशव्यापी ख्याति अर्जित कर चुके थे उन दिनो बच्चनजी पर केवल कविता का नशा था और वे विपन्नता से जूझ रहे थे लेकिन शराबी तनिक छाप भी बच्चनजी के व्यक्तित्व पर किसी रूप मे अंकित नहीं थी बापूजी व महाराज उस गली मे गये जहा वे एक कमरे मे रहा करते थे उनका कमरा अत्यंत गन्दी गली में था जब बापूजी व महाराजा कमरे पर पहुचे तो बच्चनजी कमरे पर नही थे और ताला टगा था बापूजी कविता मे कमरे के किवाडो पर ऐसा कुछ लिखकर आये जिसका आशय यह था कि हम आये और आप नहीं मिले, हम अमुक होटल मे ठहरे हुए हैं—शाम को बच्चनजी आ धमके वही मस्त मौला फक्कीरपन देर रात उस दिन महाराजा के साथ बच्चनजी कविता पढते रहे महाराजा ने राजकवि बनाने का प्रस्ताव रखा, वह बच्चनजी ने अस्वीकार कर कहा कि हम तो जैसे हैं, वही ठीक है बच्चनजी झालावाड़ नरेश की इस महानता से बडे प्रभावित हुए थे क्योंकि वैसे भी महाराजा आमतौर पर रियासत मे कवि सम्मेलन करवाते रहते थे जिसमे तत्कालीन सुप्रसिद्ध कवियों को आमन्त्रित किया जाता था उनमे स्नेहीजी, हितैषीजी, श्यामनारायण जी पाण्डेय, गुप्तजी व झा साहब मुख्य हैं' शकुन्तला जी लगातार बोल रही थीं

तभी मैंने उनसे बीच मे ही पूछा—'पण्डितजी महात्मागांधी के सम्पर्क मे कब आये?'

'गांधीजी ने स्वतन्त्रता के लिए शंखनाद किया हुआ था हर राष्ट्रीय कवि उनसे किसी न किसी प्रकार उस समय जुड़ ही गया था कांग्रेस के पन्द्रहवें सम्मेलन के लिए बापूजी ने उस समय राष्ट्रीय गीत लिखा था वहीं से गांधी जी इस बात के लिए भी प्रेरित हुए कि कांग्रेस का समस्त कामकाज अंग्रेजी की एवज हिन्दी मे ही होना चाहिए राष्ट्रभाषा को सम्मान दिलवाने में बापूजी ने सदैव अगुवाई की बाद मे एक बार बापूजी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के आठवें अधिवेशन का गांधी जी को सभापति भी बनाया इसके बाद बापूजी की राष्ट्रपिता से घनिष्ठता बढती रही एक बार झालरापाटन स्वयं विनोबाजी भी 1960 मे राजस्थान यात्रा के समय बापूजी से मिलने आये थे घण्टे-दो घण्टे तक खूब जमकर बातें हुईं'

'क्या आप उस राष्ट्रीय गीत की कुछ पंक्तियाँ सुना पायेंगी ?' मैंने अनुरोध किया

'हाँ मुझे पूरा याद नहीं है कुछ छन्द याद हैं उस समय 'जनगणमन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता' का जन्म नहीं हो पाया था यह बाद में बापूजी था जो राष्ट्रीय गीत कांग्रेस सम्मेलन में पढ़ा गया, वह इस प्रकार है —

जय जय प्यारे देश
रम्य हमारे देश
        जय जय भारत देश।
युग के तारे-जग उजियारे
हिम के प्यारे देश
        जय जय भारत देश।
वेदोद्भव-भाग्य विधाता
सब सुखदाता देश
        जय जय भारत देश।
हिमगिरि ऊँचे मस्तक वाला
है तेरा दृढ़ गहरे वाला
जलनिधि गजन भरे निराला
रिपुओं का मद हरने वाला
        तू प्राकृत दुर्गेश
        जय जय भारत देश
शोभा सिंधु नदी की भारी
ब्रह्मपुत्र नद की छवि न्यारी
गंगा-जमना की बलिहारी
जिसने तेरी भूमि सुधारी
        तारे लोक विशेष
        जय जय भारत देश।'

'कोई ऐसा संस्मरण याद है—जिससे आपने बापूजी की गहरी संवेदना मिलती हो ?'

'एक नहीं—सैकड़ों घटनाएं हैं लेकिन नारी शिक्षा में राजस्थान में किये गये

उनके प्रयास भी अविस्मरणीय हैं महाराजा भवानीसिंह जी भी बापूजी की इस बात से सहमत हुए और गढ़ में नारी शिक्षा की प्रथम पाठशाला का श्रीगणेश किया लेकिन उस समय महिला शिक्षिका के लिये भी किसी को तैयार करना सहज नहीं था इसलिए पिताजी ने अपनी बुआजी श्रीमती मैत्री बाई एवं श्रीमती गंगा बाई को इस कार्य के लिये नियुक्त किया और यहां से महिलाओं में शिक्षा के जागरण का मन्त्र फूंका गया यह बापूजी की दूरदृष्टि और गहन चिन्तन परिपक्वता का ही द्योतक है कि उन्होंने उस युग में भी नारी शिक्षा की ओर तत्परता से ध्यान दिया शकुन्तला जी ने बड़ी दृढ़ता से यह बात कही

मैंने पूछा — पण्डित जी के अप्रकाशित साहित्य के प्रकाशन की दिशा में भी कभी कोई प्रयत्न हुये हैं ?

नहीं कोई ध्यान ही नहीं देता सारा साहित्य व उनकी पाण्डुलिपियां कुछ मेरे पास व अधिक तो राजपूत सभा के कार्यालय में गढ़ से ढकी खराब हो रही हैं हालांकि जो छप है—वह पुस्तकालयों में सुरक्षा है लेकिन शनैः शनैः वह भी दुर्लभ होता जा रहा है राज्य सरकार ने भी कभी कोई ध्यान नहीं दिया न ही किसी साहित्यिक संस्था ने इसमें आगे आकर पहल की शोधार्थी आते हैं तो मैं उन्हें वह सामग्री उनके काम के लिये देने के बाद पुनः प्राप्त कर लेती हूं वरना यह साहित्य भी अप्राप्त प्राय हो जाता बापूजी ने इतना जन साहित्य लिखा है कि यह मानव-समाज व साहित्य के लिए अत्यन्त उपयोगी हो सकता है उन्होंने स्वयं भरतपुर में हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना की थी-साहित्य नये लेखन प्रकाशन में आ सके शकुन्तला जी की इस बात पर मैंने प्रश्न किया—ऐसा है आपने तो वह युग भी देखा है—जब साहित्यकार साहित्य को पूरी तरह सेवा भाव से समर्पित था और आज का लेखक भी देख रही हैं—क्या इन दोनों में कोई साम्य या भेद पाती हैं आप ?

लेखक तो सब अब भी हैं लेकिन आज के लेखक में धैर्य नहीं है पहले लेखक का अपने विषय में गहन सांगोपांग बड़ा विस्तारित अध्ययन होता था अब तो जो कुछ लिखा-वही लेखन बन गया अब लेखक जनोपयोगी व रचनात्मक कृतियां नहीं लिख पा रहा उसका कारण यह है कि वह विषय के सागर में गहरे उतरना चाहता शकुन्तला जी बोली

मैंने यहां बात आपके संबंध में सुना है आपका भी साहित्य से गहरा लगाव रहा है जरा उस पर भी संक्षिप्त में बताईएगा

हसकर बोलीं मेरा क्या लिखना-पढ़ना मैंने एक तो 'दीवाने हाफिज' का हिन्दी में अनुवाद किया है इसके अलावा भी कीटस व बायरन की अंग्रेजी कविताओं को हिन्दी मे रचा है सती-सीता लघुकाव्य संकलन का प्रकाशन जिसमे नारी चेतना का गहन दार्शनिक विवेचन का प्रयास मैंने किया है एक कविता संकलन प्रकाशनाधीन है छपने का कभी शौक नहीं रहा आत्म सुख के लिए लिखती और पढ़ती हू और कोई विशेष बात मुझमे नहीं है

इस बीच म हो वे स्वयं चाय बना लाईं और नमकीन भी खाने के लिए ले आई मेरी मनाही के बाद भी उनका आग्रह ऐसा था कि मैं कुछ नही कह पाया घर मे सजने वाली सो कमरे मे सब कुछ अपत साधारण—कोई दिखावा नहीं घरेलू वातावरण जब उनसे प्रणाम कर मैं निकला तो मन मे बीसियो बातें उमड रही थी—बाहर कोलाहल था—वाहनो से भरी सडकें थी और असीम शोर था

सिकन्दरा 303326
(जयपुर राजस्थान)

आनन्द लक्ष्मण खांडेकर

नवरत्न जी का प्रकाशित-अप्रकाशित लेखन

— मूल निवासी पूर्वज — ग्राम पच्छे — भावनगर — गुजरात —

एक बार भरतपुर के महाराजा जयसिंह जी ने अपने दरबार में शास्त्रों और वेदों से सम्बन्धित विद्वानों को कामा में आमन्त्रित किया—पूर्व पुरुष और उनके पुत्र तो कामा में ही रहे—परन्तु पंडित बलराम जी भट्ट आत्मज पंडित राधावल्लभ जी भट्ट बाद में कामा से जयपुर आ गये

बलराम जी भट्ट को गोविन्द देव जी के मन्दिर में भागवत गद्दी के अधिकारी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया मंदिर के भागवत गद्दी का जो रिकार्ड है उसमें ई० सन् 1825 में उनका नाम अंकित है

जयपुर से उदयपुर के महाराणा ने उन्हें अपने यहाँ आमंत्रित किया कुछ वर्ष उदयपुर में रहने के बाद झाला जालिमसिंह के निमंत्रण पर बलराम जी कोटा आ गये

झाला जालिमसिंह ने अपने पुत्र माधोसिंह के शिक्षक के रूप में उन्हें रखा

पंडित बलराम के पुत्र गणपतराम हुए—उन्होंने माधोसिंह के पुत्र मदनसिंह के शिक्षा गुरु के रूप में कार्य किया

मदनसिंह झालावाड़ के प्रथम शासक बनने पर वे उन्हें झालावाड़ ले आये और राजगुरु के रूप में सम्मानित किया—तब से यह परिवार राजगुरु के रूप में चला आ रहा है

प. गणेशराम के पुत्र बृजेश्वर भट्ट हुए और उनके पुत्र गिरिधर शर्मा हुए

पंडित गिरिधर शर्मा का जन्म झालावाड़ में ही ज्येष्ठ शुक्ला 8 विक्रम सम्वत् 1938 (6 जून 1881) को हुआ—

प्रारम्भिक शिक्षा झालावाड़ में हुई उसके बाद जयपुर में पंडित कृष्णधर नाहूजी शास्त्री तथा प्रसिद्ध श्रीधर जी शास्त्री (वर्तमान में नाहरगढ़ मार्ग जयपुर में श्रीधर पुस्तकालय कार्यरत है वह सग्रह उन्हीं का है) से शिक्षा ग्रहण की इसके बाद काशी गए वहां पर गंगाधर जी शास्त्री के शिष्यत्व में महामहोपाध्याय की उपाधि प्राप्त की पंडित जी गंगाधर जी शास्त्री उस काल के महान पंडितों में से एक थे ब्रिटिश सरकार ने भी उन्हें C I A से सम्मानित कर रखा था

काशी से लौटने पर राजगुरु के रूप में सम्मानित रहे

पंडित जी अपने पिता की चौथी सन्तान थी इनके भाई एक और भाई हुआ परन्तु पंडित जी लम्बा जीवन प्राप्त कर सके इनके एक भाई 7 वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हुए एक की 19 वर्ष और एक 32 वर्ष की आयु में देवगामी बने एक बहिन 1½ की ही आयु प्राप्त कर सकी

पंडित जी के दो विवाह हुए प्रथम पत्नी 15 वर्ष की आयु में प्रसूती हुई प्रसव काल में ही बालक और माता का स्वर्गवास हो गया इनकी प्रथम पत्नी का नाम गोरतीदेवी था दूसरा विवाह रत्न ज्योत्स्नादेवी से हुआ दोनों पति पत्नी जयपुर की थीं पंडित जी का स्वर्गवास 1 जुलाई 1961 को तथा इनकी पत्नी का स्वर्गवास 2 फरवरी 1960 को हुआ

पंडित जी के सात सन्तानें हुईं इनके प्रथम पुत्र ईश्वरलाल शर्मा भी कवि, दार्शनिक और साधक हुए 44 वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हुए द्वितीय पुत्र परमानन्द

$2\frac{1}{2}$ वर्ष की आयु प्राप्त कर सका तीसरे पुत्र श्री परमेश्वर शर्मा जीवित हैं वे 58 वर्ष के हैं तथा ट्रेनिंग स्कूल से सीनियर टीचर के पद से सेवानिवृत्त हुए

इनके चार पुत्रियों में से एक की मृत्यु $1\frac{1}{2}$ वर्ष की आयु में ही हो गई थी श्रीमती शांतिदेवी पद्मा जयपुर रहती हैं कुमारी रेणु शर्मा का जन्म सन् 1921 में हुआ तथा अविवाहित ही रहीं इन्होंने भी अपना जीवन साहित्य को समर्पित कर दिया सैकण्डरी स्कूल से प्रधानाध्यापिका पद से सेवा निवृत्त हुईं

आपके पिता बहुत ही स्वाभिमानी थे महाराजा ने उन्हें एक हवेली बख्शीश करना चाहा तो उन्होंने स्वीकार नहीं किया वर्तमान मकान उनके पिता का ही खरीदा हुआ है

भवानी परमानन्द पुस्तकालय – झालावाड़ के आप साहित्य विभाग के अध्यक्ष थे महाराणा भवानीसिंह जी की इच्छा थी कि इस पुस्तकालय में विभिन्न विषय की पुस्तकें रहें तथा आधुनिकतम प्रकाशन हों

—महाराजा राजेन्द्र सिंह सुधाकर के आप काव्य गुरु थे

—सन् 1937 में ही आपकी आँखों की रोशनी चली गई थी, इसके बावजूद आपकी रचनाएं निरन्तर होती रहीं

—सन् 1935 में भारतेन्दु समिति कोटा के वार्षिक उत्सव की आपने अध्यक्षता की

प्रकाशित और अप्रकाशित रचनाएं

प्रकाशित .

संस्कृत·

1 अमर सूक्ति सुधाकर
2 सद्वृत्त पुष्प गुच्छ
3. कराक रत्नम्
4 जापान विजयनम्
5 न्याय वाक्य सुधा
6 सौर मण्डलम्
7 अभेद रसः

8 ईश्वर प्रार्थना

9 योगी

10 नवरत्न गीति

11 प्रेम ज्योति

12 गिरधर सप्तशती

हिन्दी

1 राई का पर्वत (नाटक) 2 उषा (भावगद्य) 3 जया जयन्त (नाटक) 4 युग पलटा 5 महासुदर्शन 6 सरस्वती चन्द्र भाग 1 (उपन्यास) 7 स्निग्ध माध (पद्यगद्य) 8 अमर वचन सुधा (काव्य) 9 प्रेम कुञ्ज (नाटक) 10 बागवान 11 चित्रांगदा (नाटक) 12 फलसंचय (काव्य) 13 गीताञ्जली (काव्यमय अनुवाद) 14 आरोग्य दिग्दर्शन (स्वास्थ्य ग्रंथ) 15 सुधापद (परिचर्या) 16 अर्थ शास्त्र 17 व्यापार शिक्षा 18 कठिनाई से विद्याभ्यास 19 पद्य रत्न प्रभा (अन्योक्ति) 20 ऋतु विनोद 21 भीष्म प्रतिज्ञा 22 कविता कुसुम भाग 1 23 कविता कुसुम भाग 2 24 ईश्वर प्रार्थना 25 पञ्चस्तुति 26 सावित्रि (अनुवाद खण्ड काव्य) 27 सुकन्या (पद्यमय जीवन रेखा) 28 संसार में सुख कहा है? (पद्य) 29 सच्चे सुख की कुंजिया (गद्य) 30 नवरत्न वर्णमाला 31 सर्वोदय प्रसार बोध

× × ×

जैन साहित्य :

प्रकाशित

1 भक्तामर (हिन्दी पद्य) 2 कल्याण मन्दिर (हिन्दी पद्य) 3 रत्नकरण्ड श्रावकाचार 4 बारह भावना 5 धन स्तवरत्नमाला 6 एकीभाव 7 विषापहार 8 भूपाल चौबीसी

अप्रकाशित

1 श्री भक्तामर समस्या पूर्ति (संस्कृत) 2 सूक्ति मुक्तावली (हिन्दी काव्य) 3 श्री कल्याण मंदिर (समस्या पूर्ति संस्कृत) 4 सभारञ्जन स्तोत्र 5 सामायिक चतुर्विंशतिस्तवन

× × ×

मदन विलास — सम्पादित
विद्याभास्कर — मासिक पत्र

× × ×

—पंडित गिरिधर शर्मा

अप्रकाशित साहित्य

संस्कृत

1 करुणाप्रशस्ति 2 करुणानिधि 3 नागरांगम् 4 चाणक्य सूत्रकारिका 5 श्रम चतुर्विंशति 6 नक्षत्र माला 7 नवरत्नोपदेश 8 अ गनिवेदनम् 9 प्रश्नोत्तर रत्नमाला 10 नीति सौंदर्योद्यानम 11 गीताञ्जली 12 उपदेशावलि 13 श्री वीरेश्वरशास्त्रि महाभागा 14 श्री बालकृष्णाष्टकम् श्री गंगाष्टकम् श्री रत्न ज्योत्स्नाष्टकम्–अभिनव कारकरत्नम्, 15 अभिनव सद्वृत्तपुष्पगुच्छ 16 षोडशी 17 पद्यस्फुट 18 उमरखयाम (मूल फारसी से संस्कृत में अनुवाद)

हिन्दी

1 श्रीमद्भागवत (हिन्दी पद्य) 2 पचपीत (हिन्दी पद्य) 3 आनन्द लहरी 4 महिम्नस्तोत्र 5 शेखनीति 6 उमरखयाम (फारसी से) 7 न्याय दोहावली 8 सांख्य दोहावली 9 वेदान्त दोहावली 10 शुद्धाद्वैत मार्तण्ड दोहावली 11 तत्त्वदीप दोहावली 12 भर्तृहरि शतक 13 विष्णुस्तवन बाबा ताहिर की रुबाइयां 15 चाणक्य दोहावली तथा अन्य स्फुट

गुजराती

1 नीतिशतक 2 बालचन्द्र 3 नवरत्न वर्णमाला 4 आनन्द लहरी आदि

× × ×

परिशिष्ट

संस्कृत

अनन्तरसपुस्तकं तरुतले स्थितिर्निर्जने
सुवासितपात्रकं घृतकमिश्ररोटी मयी।
घने निकटमास्थ त्वमपि गानमाला यदि
भवेद् यदि समस्तमटवी मम स्वर्हि तद् ॥
(सभाषितसुधाकर)

श्रृंगार रस से भरी पुस्तक हो एकान्त में वृक्ष की छाया में बैठे हो सुरा से भरा पात्र हो घी चने की मिस्सी रोटी हो वन में पास बैठी तुम गा रही होओ अगर यह सब हो तो वह निर्जन भी मुझे स्वर्ग हो जावेगा

दीनोऽस्मि दीनोऽप्यधि दीनबन्धो !
चिन्त्योऽस्ति तेऽस्तित्वमिदं न किं मत् ।
अहो-महत्त्वं तव किन्तु किं तन्-
न विद्यते मत्परमाणुरूपात् ।
(प्रभेदरत्न से)

हे दीनबन्धु ! मैं अत्यन्त दीन हूं पर क्या आपका यह दीनबन्धुत्व मुझ दीन के कारण नहीं है माना कि आप बहुत बड़े हैं पर आपका यह बड़प्पन क्या मेरे परम लघुत्व की देन नहीं है

देशो मे सकलप्रियो विजयते देशं नमाम्यादराद्
देशेनन्द्धविरश्मि मेऽप्यनुरमा देशाय स्वरूपस्तु मे ।
देशाद् कोऽपि मम प्रियो न भुवने देशस्य भक्तोऽस्म्यहं,
देशे मे रतु रति सदैव विमला हे देश ! तुभ्य नम ॥
(नवरत्नसुभाषितानी से)

सबका प्रिय मेरा देश सर्वोत्तम है इसे आदर से नमन करता हू इस देश के कारण ही मेरी शोभा है मेरे इस देश का कल्याण हो मुझे संसार मे देश से अधिक प्रिय कुछ भी नही है मैं देश का भक्त हू मेरा देश पर निर्मल प्रेम हो हे देश ! तुम्हे प्रणाम ।

कि रक्ष्य स्वातन्त्र्य कि भक्ष्य स्वश्रमार्जित भोज्यम् ।
कि त्याज्य दुराचरण कि ग्राह्य निर्मलात्मना वृत्तम् ॥
(प्रश्नोत्तर रत्नमाला से)

किसकी रक्षा करे ? स्वतन्त्रता की क्या खाना चाहिये ? अपने श्रम से अर्जित भोजन क्या छोड़ा जाय ? दुराचरण क्या अपनाया जाय ? निर्मल हृदय वाले व्यक्तियो का चरित्र

प्रशस्यः सदा लोके य श्रमी दिव्यदर्शन ।
निरतो विश्वसेवाया काल यापयति श्रमात् ॥
(श्रमचतुर्विंशति से)

दिव्य दृष्टि से सम्पन्न श्रमी (मेहनतकश) सदैव प्रशसनीय है जो सबकी सेवा मे तत्पर हो परिश्रम करते हुए समय बिताता है

न सा शिक्षा शिक्षा विकसति न यस्यास्तनुभृता
प्रभा नीति स्फूर्ति प्रबलतरसत्ता श्रमरति ।
सुविद्या धीशक्ति कृतिकुशलता सामयिकता
जगत्सेवाभाव सुचिरसिरता वाक्यपटुता ॥
(नवरत्नसुभाषितानि से)

वह शिक्षा शिक्षा नहीं है जिससे व्यक्तियों मे तेज नीति स्फूर्ति प्रबल अस्मिता श्रम के प्रति प्रेम विद्या बौद्धिक शक्ति सामयिकता कर्मण्यता विश्वसेवा की भावना निर्मल सहृदयता तथा वचनपटुता का विकास न हो

मातापित्रोर्महिमा क्व स्वभावे भवेत्सुताना च ।
पीतं कृत्रिमदुग्धं शिक्षा प्राप्ता विदेशीया ।।

(नवरत्नसुभाषितानि से)

उस सन्तति के स्वभाव में माता पिता का सम्मान कैसे पैदा हो सकता है जिसने दूध नकली पीया हो और शिक्षा विदेशी प्राप्त की हो

क खलु दूरीकुर्याद् प्रजाजनानां घन मनस्तापम् ।
यत्र शासनारूढा लोका लोचननिमीलितक्रीडा ।

(नवरत्नसुभाषितानि से)

वहा प्रजा के मन की गहरी पीडा को कौन दूर करेगा जहा शासन मे आरूढ लोग आँखमिचौनी खेल रहे हो

न हिन्दव सम्प्रति पारतन्त्र्य
स्वातन्त्र्यपूर्णा न च हिन्दलोका ।
दास्यस्त्रियो ये प्रवदन्ति तेषा
जाति कथ स्यान्न चिराय दासी ।

(नवरत्नसुभाषितानि से)

इस समय न हिन्दू पूर्णतया स्वतन्त्र है और न हिन्द के निवासी ही जो अपनी स्त्रियो को दासी बतलाते हैं उनकी जाति चिरकाल तक दासी क्यो न रहेगी

जातौ जातौ वादो राष्ट्रे राष्ट्रे विवादसमृद्धि ।
परमात्मनोऽखिला भू परमात्मनो एव मानवास्सर्वे ।।

(गिरिधरसप्तशती से)

हर जाति मे हर राष्ट्र मे झगड़ा पैदा हो रहे हैं समस्त भूमि ईश्वर की है तथा सब मनुष्य भी ईश्वर के ही हैं

हर्म्या या प्रासादा दृश्यन्ते ये सुसज्जिता रम्या ।
ते निर्मिता बुभुक्षितमनुजानामस्थिमांसरक्तेभ्य ।।

(गिरिधरसप्तशती से)

सुसज्जित और सुन्दर लगने वाले महल और भवन भूखे लोगो की हड्डी मांस और रक्त से बने हैं

साम्सर्पूर्णां यात्रां कुर्वन् पुरुषो विशालदृष्टि स्यात् ।
गृह एव स । निवसन् भवति न क कूपमण्डूक ॥
(गिरिधरसप्तशती से)

साहसपूर्ण यात्राएं करते हुए मनुष्य को अपनी दृष्टि विशाल बनानी चाहिए सदैव घर में ही रहते हुए कौन कूपमण्डूक नहीं हो जाता ?

नीति परा प्रिय मेऽस्ति जीवनसहचरी सदा नीति ।
नीतिं विना न जीवितुमिच्छामि क्वाप्यहं निमिषम् ॥
(गिरिधरसप्तशती से)

नीति मेरी परम प्रेयसी है यह सदैव मेरी जीवनसंगिनी रही है मैं नीति के बिना एक पल भी कहीं जीना नहीं चाहता

(अगस्त 1924 में 'चित्राङ्गदा' का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ इसके प्रकाशक थे— जीतमल लूणिया सस्ता हिंदी साहित्य मंदिर बनारस सिटी मूल्य छह आना पृष्ठ संख्या—48 मूल लेखक रवीन्द्रनाथ ठाकुर अनु गिरिधर शर्मा नवरत्न)

(अनुवाद अंश पृष्ठ 43)

चित्राङ्गदा हे कौन्तेय ! यदि मैं इस लालित्य की इस कोमल भोलेपन की और स्पर्श से भी कुम्हलाने वाले शिरीष पुष्प से भी सुकुमार इस रूप को पराये वस्त्रों के समान छिन्न भिन्न कर घृणा के साथ पैरों में फेंक दूं तो क्या आप उसे सहन कर सकोगे ? कामिनी की कपट कला और जादूभरे मायाजाल को दूर कर यदि लचीली लता की तरह संकोच से न लचकूं और पर्वत के तेजस्वी तरुण तरु के समान आनंद वायु से लहराती हुई सीधी और समुन्नत खड़ी हो जाऊं तो क्या पुरुष की निगाह में अच्छी जचूंगी ? रहने भी दो उसकी अपेक्षा यही अच्छा है ! यह यौवन मेरा कीमती धन है इसे संभाल कर मैं बड़ी सावधानी से रखूंगी आपके आने की बाट देखती रहूंगी समय पर जब आप आवेंगे तब लबालब भरे हुए देहपात्र से आपको सुधापान कराऊंगी सुखस्वच्छंद करते-करते आपको थकावट जान पड़े तब आनंद से काम करने को चले जाना जब मैं पुरानी हो जाऊं तब मैं आप कहेंगे वहीं पर वहीं कहीं पास ही पड़ी रहूंगी नाथ ! रात की सहचरी यदि दिन की कर्म सहचरी बने और दहने हाथ का जैसे बांया हाथ साथ देता है वैसे ही पुरुष का साथ स्त्री दे तो क्या यह वीर के प्राणों को सुखदायी जान पड़ेगी ?

अर्जुन—मैं तेरे रहस्य को कुछ भी नहीं समझ पाता हूं इतने दिन से आप हूं

तो भी कुछ पता नहीं चलता ऐसा भान होता है कि सदा साथ रह कर तू मुझे धोखे में रख रही है देवता के समान प्रतिमा के भीतर रह कर तू मुझे अनमोल चुम्बन-रत्न और आलिंगन सुधा दान कर रही है तू स्वयं कुछ लेती नहीं है मना छोड़ कर कुछ चाहती तक नहीं है यह अभाव-हीन और भावहीन प्रेम अन्तःकरण में परिताप पैदा किये देता है तेजस्विनी ! बात बात के बोध में तेरा परिचय मिल रहा है उसके सामने यह सौन्दर्य-राशि मुझे केवल मिट्टी की मूर्ति जैसी पड़ती है निपुण कारीगर की बनाई एक यवनिका मालूम होती है बीच बीच में और एक सवाल उठता है कि इस तुझे धारण करने में असमर्थ है वह उलझन करता हुआ काँप रहा है छिद्र प्रकट हो रहे काली हुई मैं जान पड़ता है आँसू भरे हुए हैं और वे बीच-बीच में टपकल करते उमड़ पड़ते हैं कि मुहूर्त भर में परदा फट पड़ेगा साधक के सामने आगे पहले मनोहर माया की छाया पड़ जाती है उसके बाद वेश-भूषा से रहित सीधा सादा सत्य भीतर और बाहर प्रकाश फैलाता हुआ देख पड़ता है

तेरा यही सत्य स्वरूप कहाँ है ? मुझे उसका दान कर और मेरा जो कुछ सत्य स्वरूप हो उसे ग्रहण कर बस ऐसा मिलन ही सदा सर्वदा का मिलन है उसमें किसी तरह का उपराम नहीं होता—किसी प्रकार की थकावट नहीं होती ये आँसू क्यों ? बाहु में मुँह को छुपाकर यह व्याकुलता कैसी ? क्या मैंने कुछ चोट पहुँचाई प्रिय ? अच्छा इस बात को ही जाने दो यह मनोहर रूप ही मेरे पुण्यों का धन है यही मेरा सौभाग्य है कि यौवन-यमुना की परली पार से मस्त समीर के साथ आता हुआ संगीत बीच बीच में सुनाई पड़ता है यह वेदना भरा सुख या अधिक सुख और आशा की अधिक आशा है यह वेदना हृदय से भी बहुत बड़ी है इसी से जान पड़ता है कि यह हृदय की व्यथा है

(संवत 1985 में गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' के नवरत्न सरस्वती भवन झालरापाटन से कवि न्हानालाल दलपतराम कृत प्रेमकुंज का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हुआ इसके पूर्व वे जयाजयन्त, उषा, कुरुक्षेत्र और महामुदान का अनुवाद कर चुके थे यहाँ 'प्रेमकुंज' का एक अंश प्रस्तुत करने के पूर्व न्हानालाल की प्रस्तावना से कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं —

'आज का जगत प्रेम की पुनः स्थापना की प्रतिज्ञा माँग रहा है आजकल पशु-प्रेम को प्रेम समझ प्रेम के नाम पर बहुत सी भूलें और पाप हुए हैं और होते हैं इस युग में प्रेमपदार्थ के स्थान पर प्रेम प्रतिबिम्ब का पूजन चल पड़ा है भूलों हुओं को मार्ग दिखाने के लिए भी संसार सम्राट प्रेमदेव की सच्ची स्तुति करना इस समय आवश्यक है

इसी प्रेमराजा की यह पुण्यकथा है सब काल और सब देश के प्रेमसुजनों के लिए, इसके परिमल सच्चे होंगे तो संसार भर में सत्कार पायेंगे ही)

अनुवाद पाठ   पृष्ठ 102, पंक्ति 3 से 2

वीरेन्द्र — प्रेम मंदिर के प्रेमपुजारियो !
प्रेम सरोवर के जल पीने वाले पुण्यवानो !
प्रेमकुंज के परम रसिक जनो !
प्रेमोत्सव के आशा भरे उत्सवियो !
प्यासा जगत् माँगता है आज
प्रोत्साहन के रस पिलाने वाले योगीन्द्र को
प्रेरणा के अमृत पिलाने वाले पैगम्बर को
वृद्ध प्राचीन जगत् को
थक चढ़ी है जीवन की
उतार हुए हैं आयुष्य के
खिर पड़े हैं मनुष्य जाति की
उड़ने की पाखों के पीछे,
कान बहरा गये हैं
सुनते नहीं हैं जीवन मंत्र
आँखें अंधियार गई हैं
उकेलती नहीं हैं वेद संहिता
नहीं झेले जाते और नहीं पढ़े जाते
संसार के लोगों में गर्जते हुए महाशब्द
श्रमित हैं चिरयात्रा के श्रम से
मनुवंश की दसो इंद्रियाँ
इस थकावट को दूर कर प्रोत्साहन भरे
पैरों में उमंग की उड़ान प्रेरे-पोसे,
हिये में ज्वलन्त ज्योति का उल्लास जगावे
आत्मा के पाखें प्रकटावे
ऐसा चाहिए जगत के लिये योगीन्द्र
मानव जाति के महासागर में
आनन्द भरती की उभार देने वाला देवचन्द्र
उर-उर में प्रेम सरोवर रचे

घर-घर में प्रेम कुंज सरसे
और कुंज-कुंज में प्रेमोल्लास सरसावे
गुली-गली में प्रदीप्त करे रसज्योति
जकड़े हुए खोल दे अन्तर के बद्धार
और जगत को झुलावे स्नेहहिंडोले पर
ऐसे प्रेममंदिर के पुजारियों के
भवनिवासियों को है मम अभिलाष
पुण्योज्ज्वल, सुधासोहन, जगजन्त
रसस्रुधायें स्वाते महानुभाव स्मरि
इस युग का अवनी का अवनीन्द्र

*

ईश्वरलाल 'रत्नाकर'

[ईश्वरलाल रत्नाकर प. गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' के कवि पुत्र थे उनका जन्म सन् 1912 में हुआ और मृत्यु 1956 में ईश्वर दादा दार्शनिक रुचि के थे उन्होंने हिन्दी में ही कवितायें लिखीं अपने यशस्वी पिता के कारण उनका यश दब कर रह गया अन्यथा उनकी प्रतिभा और रचना-क्षमता शिखर कवियों की सी थी

1948 में जब सर्वश्री मनमोहन ठाकोर, रामनाथ 'कमलाकर', शान्तिलाल भारद्वाज, जगदीश चतुर्वेदी, नन्द चतुर्वेदी ने मिलकर हाड़ौती प्रगतिशील लेखक संघ बनाया था तब ईश्वर दादा ने उसकी सदस्यता स्वीकार की थी उस अवसर पर आयोजित कवि-गोष्ठी में उन्होंने अपने महाकाव्य कुरुक्षेत्र से कुछ अंश सुनाये थे सिर्फ चवालीस वर्ष की आयु में ही उनकी मृत्यु हो गयी इसलिए यह ग्रंथ अधूरा रह गया, फिर भी यह कहने में कोई संकोच नहीं होता है कि ईश्वरदादा यदि इस काव्य-कृति को पूरी कर पाते तो उनकी कीर्ति अमन्द नहीं रहती

उस दिन की प्रतीक्षा ही की जा सकती है जब कोई बहुत बड़ा संयोग हो और उनकी पूरी, अधूरी रचना-पुस्तकें छपें और पढ़ने को मिलें]

यह जग है शतरंज रात्रि-दिन जिसके हैं खाने अविराम
संसृति के कर का मोहरा बनता है यहां मनुज अविश्राम
इधर-उधर चालें चलते पिटते-कुटते अन्तिम क्षण में
पेटी में हो बन्द, खेल का कर देते हैं यहीं विराम

कन्दुक कभी न करती हाँ – ना के प्रश्नावलि पूर्ण प्रलाप
किन्तु खिलाड़ी जिधर फेंकता उधर चली जाती चुपचाप
जिसने मुझको इस भू पर फेंका है इसका सारा भेद
वही जानता है, हाँ, केवल वही जानता अपने आप

लिख देती है लिख कर आगे बढ़ जाती वह अंगुली चपल
तेरे ये जीवन के सब आचार विचार परम निर्मल
उसकी अर्द्ध पंक्ति को भी ये बदल सकेंगे नहीं कभी
एक शब्द को भी धोने में होंगे तेरे अश्रु विफल

वह प्याला अनुमान मात्र है कहते हैं हम जिसे गगन
चौरासी में चक्कर खाते जिसके नीचे हम धर तन
है सर्वथा व्यर्थ ही इसके आगे फैलाना निज हाथ
हम अधीन, उस प्रकृति के फंदे में इसका भी जीवन

निर्मित हुआ प्रथम मही की रज से यह अंतिम नर कंकाल
प्रथम बीज से ही विकसित है यह अंतिम खलिहान विशाल
लिखे गये थे प्रथम उषा में ही वे सब कल्याणमय शब्द
जिन्हें प्रकट कर रहे अरे हाँ। यह अस्तगत संध्याकाल

उन स्वर्गिक तुरगों के कंधों पर चढ़ कर जब किया प्रयाण
मैं कहता हूँ छोड़ दिया जब हमने अपना सदय स्थान
पार्थिव और अपार्थिव दोनों पहले से निश्चित हमन भ
सत्वर वहाँ जमाये उनमें वे प्रभुचक्र प्रबल बलवान

रक्तिम मधु से रहे छलकता यदि प्रतिपल मेरा जीवन
तो चिन्ता ना कुछ भी कहते रहें मुझे सूफी सज्जन
बनें अरे मेरे लोहे से ऐसी एक युक्ति अनमोल
जिससे बन्द सुरालय वह बन जावे बस उन्मुक्त भवन

मधुर साथ ज्वाला वीणा म मेरे भर दे प्रेम अपार
तथा जला दे क्रोध वह्नि है मुझ को केवल यही विचार
यदि पानालय मे भी उसकी एक झलक हम पा जावें
अधिक श्रेष्ठ यह उस मन्दिर से जहा मरे होती य" द्वार

तूने ही तो मेरे मग मे खोदे गह्वर गर्त विशाल
और मार्ग से च्युत करने को मुझ को भ्रमित बिछाये जाल
संसृति की कडियो से मुझ को क्या न बांधता है तू ही
क्या तू मुझ पर नहीं सदय है भये मेरा पतन कराल

ओरे तूने किया विनिर्मित अतिशय तुच्छ धूलि से नर
और अदम के साथ नियोजित किया भुजग गहाविषधर
उन पापों के लिए कि जिससे मानवता रंजित होती
मनुजवश से क्षमा माग औ उसको भी वह प्रदान कर